श्रीमद्भट्टोजीदीक्षितकृत वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीस्थ

प्रयोगार्थ प्रकाश

(पूर्व मध्यमा से उत्तर मध्यमा तक)

5·5 VHP

श्रीमद्भट्टोजीदीक्षितकृत वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीस्थ

प्रयोगार्थ प्रकाश

(पूर्व मध्यमा से उत्तर मध्यमा तक)

❖

लेखक

हरिराम त्रिपाठी

पूर्व प्राचार्य

श्री विद्याधर्म सञ्जीवन संस्कृत महाविद्यालय

देवरिया (उ०प्र०)

मो० : ९४५४९१८१४१

❖

सम्पादक

डॉ० जितेन्द्र मिश्र

अध्यापक

श्री नन्दलाल बाजोरिया संस्कृत महाविद्यालय

अस्सी, वाराणसी (उ०प्र०)

मो० : ९४१५९९३०००

❖

मुद्रक

हिन्द प्रिन्टिंग वर्क्स

भदैनी, वाराणसी

श्रीमद्भट्टोजीदीक्षितकृत वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीस्थ

प्रयोगार्थ प्रकाश

(पूर्व मध्यमा से उत्तर मध्यमा तक)

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2013 ई0

मूल्य : दो सौ पचास रुपये (रु0 250/-)

मुद्रक
हिन्द प्रिन्टिंग वर्क्स
भदैनी, वाराणसी-221005 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2310088, मो0 : 9838289377

श्रीमते रामानुजाय नमः

ज्ञानानन्दमयं देवं, निर्मलस्फटिकाकृतिम्।
आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे।।

विद्वद्वरेण्य भूसुर–भासुर–पदकंज–मकरन्द–लोलुप आचार्य प्रवर पद–वाक्य–प्रमाण–पारावारीण साम्बसदाशिवोपासक पंक्तिपावन विप्रकुल–महार्णव पूर्णेन्दु श्रीहरिरामत्रिपाठी के द्वारा सम्पादित ग्रन्थ श्रीमद्भट्टोजी दीक्षित कृत प्रयोगार्थ प्रकाश का अवलोकन किया।

पण्डित जी ने कलश में महार्णव भरने का स्तुत्य प्रयास किया है। लोकहितरत एवं पण्डित त्रिपाठी ने विविध शैली का प्रयोग इस अनूठे ग्रन्थ में किया है, जो विद्वज्जन ग्राह्य होते हुए भी सर्वजन ग्राह्य हैं। विद्यार्थियों के लिए तो यह कल्पवृक्ष ही है।

यदि इस ग्रन्थ का सम्यक् अध्ययन कर लिया जाय तो "लघु सिद्धान्त कौमुदी" आदि दिव्य ग्रन्थों में अनायास ही प्रवेश सम्भव है।

"इतिशम्"
जय श्रीमन्नारायण

मंगलाशासकः

जगद्गुरु स्वामी राजनारायणाचार्य जी महाराज
श्री लक्ष्मी–वेंकटेश्वर देवस्थानम्
रामानुजाचार्य मार्ग, कसया रोड, देवरिया
(उ0प्र0)

निगमारण्यसुगीतंवेदाङ्गंसमीरितंव्याकरणम्
किमपि समीड्य पुरुषं ननु शब्दब्रह्मविचाराय।।1।।
वैदिकलौकिकशब्दाः उदात्तानुदात्त स्वरित युताः।
प्रोक्तव्याहिं सुविज्ञैरिहामुष्मिफलाभिलषितैः।।2।।
वैयाकरणसिद्धान्त इहत्रस्हरेराम त्रिपाठिनापि।
सुप्रयोगविधया ये स्युस्तेऽपि सर्वोपकाराय।।3।।
पंचसंधि सुप्रयुक्ताहि षड्लिंगाऽव्ययाभीष्टाः क्रियार्थाः।
नवगणीसनन्तादिषुमध्येतद्धितप्रयोगाश्च।।4।।
प्रकृतिप्रत्ययार्था हि सुयुक्ताः प्रयोगाः सुरभारतीयाः।
पुण्यप्रदाभ्राजन्त इहामुत्र हि सुशान्तिकराय।।5।।
त्रिमुनि व्याकरणं सत् त्रिपथगामिनां मुमुक्षूणां च वै।
सत्यं हरिहरभाषितमिदं प्रयोगाधीनं सहजम्।।6।।
भावानीतं गीतं सरलं सरसं शुद्धं वाक्यं वै।
भुक्तिमुक्तिप्रदाने सुरभारतीवचः पुण्याय।।7।।
भूर्भुवः स्वः मन्त्रोऽपि संस्कृतभाषा सुविद्यानां शुभः।
धर्मार्थकाममोक्षेषु भाषितः सुप्रयोगाधीनः।।8।।
मंगलाष्टकं पुण्यं त्रिपाठिवर्य कीर्ति निर्धारणाय।
भवतु प्रसाद युक्तं सुखदायप्रेरणाप्रदाय।।9।।

व्याकरणप्रयोग शुभाशंसी – रामनारायणाचार्यः

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

अर्थज्ञानं विनाध्ययनं शुष्काध्ययनम् अतोऽर्थज्ञानं परमावश्यकम् अतएव भगवता भाष्यकारेणोक्तम्–

"यदधीतमविज्ञानं निगदेनैव शब्यते।
अनग्नाविव शुष्कैधो न तज्ज्वलति कर्हिचित्।।

इति मनसि निधाय विद्वद्वरेणा युष्मता हरिराम त्रिपाठिना वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदीस्थ प्रयोगार्थ जिज्ञासूनां कृते, धात्वर्थ जिज्ञासूनांच कृते सुकरतार्थं प्रयोगार्थानां धात्वर्थानांच सङ्ग्रहः कृतः।

अस्वस्थता वशाद् मया स्थाली पुलक न्यायेन यत्र तत्र निरीक्षितम्।

आशास्ते ग्रन्थस्य प्रकाशनेन धात्वर्थ प्रयोगार्थ जिज्ञासूनां महानुपकारो भविष्यति। पण्डितप्रवरस्य हरिराम त्रिपाठीमहोदयस्य प्रतिष्ठापि वर्धिष्यते। इति शम्।

द्वारका प्रसाद द्विवेदी
श्रीविद्यासदनम्
सुकुलपुरा, वाराणसी

समर्पण

श्री गोलोकवासिनी माताश्री सुगना देवी

एवं

श्री गोलोकवासी पिताश्री गङ्गाराम त्रिपाठी

की सेवा में

सादर समर्पित

- हरिराम त्रिपाठी

प्रस्तावना

ब्रह्म की सृष्टि में जीवमात्र अपने मनोगत भावों की अभिव्यक्ति जिस माध्यम से करता है। उसका एक मात्र साधन भाषा है। भाषा ही पारस्परिक सम्बन्धों को जोड़ता है और तोड़ता भी है। यद्यपि चेष्टा आदि के माध्यम से प्राणिमात्र अपने भावों की अभिव्यक्ति कर लेता है, किन्तु कभी–कभी मनोगत भावों की अभिव्यक्ति भ्रमात्मक हो जाती है। अतः भ्रम की दशा में भाषा ही अभिव्यक्ति का एकमात्र साधन है। भाषा मानव जाति और पशु जाति की मित्रता प्रदान करती है। किसी ने कहा कि वाङ्मयीशक्ति ही दैवी शक्ति है– तांविश्वरूपापशवोवदन्ति विश्वरूपा का तात्पर्य है समुदायरूपा। "पशवः" शब्द का अर्थ है प्राणिमात्र। तभी तो भगवान शिव का दूसरा नाम है पशुपति।

भाषा और विचारों को सही रूप में या सुसंस्कृत रूप में बांधने वाली विद्या का नाम व्याकरण है। व्याकरण वेदाङ्ग के साथ शास्त्र है। शास्त्र का अर्थ होता है शासन। यह शासन शब्द को शासित करता है। अतः व्याकरण का अपर नाम शब्दानुशासन है।

भारतीय वाङ्मय के अध्ययन और अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि ब्रह्मा से लेकर इन्द्रादि देवता और अनन्त ज्ञान वाले ऋषि और मुनियों के समय तक व्याकरण शास्त्र विधायें प्रकाशित हो चुकी थी। गार्ग्य, गालव, काश्यप, आपिशलि, चाक्रवर्मण, भारद्वाज, शाकटायन, शाकल्य, सेनक स्फोटायन आदि शब्द शास्त्रियों द्वारा परिवर्तित होकर व्याकरण शास्त्र के महान् विभूषित त्रिमुनी पाणिनि कात्यायन और पतञ्जलि के पास पहुंचा।

पाणिनि व्याकरण शास्त्र व्याकरण शास्त्रों में ख्यातिप्राप्त और सुपरिचित ग्रन्थ नाम से जाना जाता है। पणीऽस्यास्तीति पणीतस्यापत्यं पाणिन, पाणिनस्यापत्यं पाणिनो युवा पाणिनि, इति व्याख्या के अनुसार इनके पिता का नाम पाणिन समझा जाता है। पतञ्जलि ने दाक्षिपुत्र शब्द से इनको सम्बोधित किया। इनकी माता दक्ष कुल में उत्पन्न हुई थी इससे प्रतीत होता है इनके गुरू का नाम वर्ष था। पाणिनि ने शब्द साधुत्व के लिए सूत्रों की रचना की। पाणिनि ने महेश्वर की हजारों वर्ष तक कठोर तपस्या की थी। उस तपस्या के प्रभाव से महेश्वर जी पें नृत किया और अन्त में अपने डमरू से चौदह सूत्रों को निकाला। इन्हीं चौदह सूत्रों के आधार पर चार हजार के लगभग सूत्रों की रचना की। सूत्रों की व्याख्या भगवान पतञ्जलि ने की। सूत्र की भाष्य व्याख्या में कात्यायन ने वार्तिक का निर्माण किया। इसलिए कात्यायन को वार्तिककार भी कहते हैं।

भाष्यकार पतञ्जलि के द्वारा पाणिनि सूत्रों की व्याख्या को अति संक्षिप्त रूप में सिद्धान्त के तौर पर सूत्रवृत्ति या सूत्रार्थ की रचना की। इन्ही सूत्रवृत्तियों के आधार पर या सूत्रार्थ के आधार पर शब्द की व्युत्पत्ति या रचना बताई गयी।

अध्ययन काल में शब्द व्युत्पत्ति का ज्ञान बहुत श्रम के बाद किञ्चिन्मात्र होता था किन्तु शब्दार्थ ज्ञान नही के बराबर था। अध्यापन काल में शब्दार्थ ज्ञान की उत्कण्ठा बनी और विचार किया कि यदि बालकों का शब्दार्थ ज्ञान के साथ शब्द व्युत्पत्ति का भी बोध कराया जाय तो छात्रों को शब्द रचना के साथ शब्दार्थ का ज्ञान होगा जिससे वह अनुवाद रचना या बोलचाल की भाषा में उनको सुगमता मिलेगी। अध्ययन काल में गुरू जी से शब्द रचना या शब्द व्युत्पत्ति से शब्द तो जान लेते हैं किन्तु समयाभाव के कारण उनके गुरू जी अर्थ का बोध नही करा पाते हैं। अर्थ का बोध न होने के कारण छात्रों को शब्द प्रयोग करने में कठिनाई पड़ती होगी।

अतः छात्रों को सुगमतापूर्व शब्दार्थ ज्ञान होवे और उनको समय समय प्रयोग करके बौद्धिक विकास के साथ संस्कृत भाषा का विकास होवे। पूर्व माध्यमा और उत्तर मध्यमा के पाठयक्रम के अनुसार इसको चार भागों में विभक्त किया गया है। इस पुस्तक में सूत्रों के उदाहरणरूप में जो प्रयोग हैं। उनका एक से अधिक अर्थ देने की कोशिश की गयी है।

अस्तु छात्रों से अनुरोध है कि पुस्तक को अवश्य पढकर लाभ उठावें।

विद्वच्चरणचञ्चरीकः

आचार्य हरिराम त्रिपाठी

पूर्व प्राचार्य

श्रीविद्याधर्म सञ्जीवन संस्कृत महाविद्यालय, देवरिया

विषयानुक्रमणिका

प्रथम भाग

1.	अच सन्धि प्रकरणम्	2–4
2.	प्रकृतिभाव सन्धि प्रकरणम्	5
3.	हल सन्धि प्रकरणम्	6–7
4.	विसर्ग सन्धि प्रकरणम्	8–9
5.	स्वादि सन्धि प्रकरणम्	10
6.	अजन्त पुल्लिङ्ग प्रकरणम्	11–14
7.	अथाजन्त स्त्रीलिङ्ग प्रकरणम्	15–16
8.	अथाजन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरणम्	17
9.	अथ हलन्त पुल्लिङ्ग प्रकरणम्	18–20
10.	अथ हलन्त स्त्रीलिङ्ग प्रकरणम्	21
11.	अथ हलन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरणम्	22
12.	अथ अव्यय प्रकरणम्	23–27
13.	अथ स्त्री प्रत्यय प्रकरणम्	28–36
14.	अथ कारक प्रकरणम्	37–47

द्वितीय भाग

	समास प्रकरणम्	
15.	अव्ययी भावप्रकरणम्	49–50
16.	तत्पुरूष समास प्रकरणम्	51–62
17.	बहुब्रीहि समास प्रकरणम्	63–69
18.	द्वनद्व समास प्रकरणम्	70–72
19.	अथैकशेष समास प्रकरणम्	73
20.	सर्व समास प्रकरणम्	74–76
21.	अलुक समास प्रकरणम्	77–78
22.	समाश्रय विधि प्रकरणम्	79–86
23.	अथ तद्धिताधिकार	87
24.	अथ अपत्याधिकार	88–94
25.	अथ तिद्धतेरक्ताद्यर्थक प्रकरणम्	95–100
26.	अथ चातुरर्थिक प्रकरणम्	101–102
27.	अथ तद्धिते शैषिक प्रकरणम्	103–115
28.	अथ तद्धिते प्राग्दीव्यतीय प्रकरणम्	116–117
29.	अथ तद्धिते प्राग्वहतीय प्रकरणम्	118–121
30.	अथ तद्धिते प्राग्घितीय प्रकरणम्	122–123
31.	अथ तद्धिते छयद्विधि प्रकरणम्	124–125
32.	अथ तद्धितार्हीय प्रकरणम्	126–129
33.	अथ ठञधिकारे कालाधिकार प्रकरणम्	130–131

34.	अथत्रविधि प्रकरणम्	132
35.	अथ तद्धितेषु भावकर्म	133–134
36.	अथ तद्धिते पाञ्चमिक प्रकरणम्	135–137
37.	अथ तद्धिते मत्वर्थीय प्रकरणम्	138–145
38.	अथ तद्धिते प्राग्दिशीय प्रकरणम्	146–147
39.	अथ तद्धिते प्रागिवीय प्रकरणम्	148–151
40.	स्वार्थिक प्रकरणम्	152–158
41.	अथ द्विरुक्त प्रकरणम्	159–161

तृतीय भाग

42.	भ्वादिप्रकरणस्थधात्वर्थ–1	162–167
43.	अदादिप्रकरणस्थधात्वर्थ–2	168–169
44.	जुहोत्यादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–3	170
45.	दिवादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–4	171–172
46.	स्वादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–5	173
47.	तुदादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–6	174
48.	रूधादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–7	175
49.	तनादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–8	176
50.	क्रयादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–9	177
51.	चुरादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–10	178–180
52.	अथ णिजन्त	181–183
53.	अथ सनन्त	184–187
54.	अथ यङ्न्त	188–189
55.	अथ यङ्लुगन्त	190–196
56.	अथ नाम धातु	197–202
57.	अथ कण्डवादि	203
58.	अथ प्रत्यय माला	204
59.	अथ आत्मनेपद	205–210
60.	अथ परस्मैपद	211–212
61.	अथ भावकर्म	213–215
62.	अथ कर्मकर्ता	216–217
63.	अथ लकारार्थ	218–221

चतुर्थ भाग

64.	अथ कृदन्ते कृत्य प्रकरणम्	223–227
65.	अथ पूर्वकृदन्त प्रकरणम्	228–252
66.	अद्य उत्तर कृदन्त प्रकरणम्	253–269

●

प्रथम भाग

अच् सन्धि प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	सुद्ध्युपास्य:	योगियों के द्वारा उपासनीय या आराधना के योग्य
2.	मध्वरि:	मधुनामक राक्षक का हन्ता
3.	लाकृति:	लृवर्ण की तरह आकार
4.	धात्त्रंश:	ब्रह्मा का अंश या भाग
5.	पुत्रादिनी	पुत्र को भक्षण करने वाली
6.	पुत्रहती	पुत्र को मार डालने वाली
7.	पुत्रजग्धी	पुत्र को भक्षण करने वाली
8.	अर्क:	सूर्य या मदार का वृक्ष
9.	दात्रम्	फसल काटने का औंजार या दंतिया हंसुआ
10.	हरये	हरि के लिए
11.	विष्णवे	विष्णु के लिए
12.	नायक:	ले जाने वाला या नेता
13.	पावक:	पवित्र करने वाला या अग्नि
14.	गव्यम्:	गो मूत्र, गो दही, गोबर, गोघृत, गो दुग्ध से मिश्रित पेय पदार्थ
15.	नाव्यम्	नौका से पार करने योग्य तालाब, नदी
16.	गव्यूति:	दो कोस की भूमि या रास्ता
17.	लव्यम्	काटने योग्य फसल
18.	क्षय्यम्	काटने या शमन के योग्य पाप
19.	जय्यम्	जीतने योग्य मन
20.	हर एहि	हे हरि यहां
21.	विष्णु इह	हे विष्णु यहां
22.	श्रिया: उद्यत:	लक्ष्मी के लिए प्रयास
23.	गुरा उत्क:	गुरू में उत्कण्ठित
24.	उपेन्द्र:	विष्णु या कृष्ण
25.	रमेश:	लक्ष्मी पति
26.	गड़गोवेदकम्	गंङ्गा जल
27.	कृष्णर्द्धि	कृष्ण की वृद्धि
28.	गङ्गौघ:	गंगा जल समूह
29.	कृष्णैकत्वम्	कृष्ण की एकरूपता
30.	देवैश्वर्यम्	देव की ईश्वरता
31.	कृष्णौत्कण्ठयम्	कृष्ण विषयक उत्कंठा
32.	उपैति	समीप में जाता है
33.	उपैधते	समीप से बढ़ रहा है
34.	प्रष्ठौह:	विशेष रूप से तर्क को उपस्थित करना

35.	अक्षौहिणी	चतुरंगिणी सेना (जिस सेना में 109350 पैदल, 65610 घुड़सवार 21870 रथ सवार, 21870 हाथी पर सवार हो)
36.	स्वैरी	स्वच्छन्द विचरण करने वाला या इतस्तत घूमने वाला
37.	स्वैरिणी	स्वतंत्र रूप से इतस्तत घूमने वाली
38.	प्रौहः	हाथी का पैर, तर्क, बुद्धिमान
39.	प्रौढ़ः	प्रबृद्ध या 30 या 40 वर्ष की उम्र वाला व्यक्ति प्रबुद्ध 30 या 40 वर्ष की महिला
40.	प्रैषः	क्लेश, कष्ट, प्रेरणा
41.	प्रैष्यः	अधिक, बार–बार
42.	सुखार्तः	सुख से कर्मफल.
43.	प्रार्णम्	प्रधान, ऋण
44.	वत्सतरार्णम्	एक वर्ष के लिए लिया गया ऋण
45.	कम्बलार्णम्	कम्बल खरीदने के लिए लिया गया ऋण
46.	वसनार्णम्	वस्त्र मकान या आभूषण के लिये लिया गया ऋण
47.	ऋणार्णम्	कर्ज चुकाने के लिए लिया गया ऋण
48.	दशार्णः	एक प्राचीन देश जो मध्य प्रदेश में था या उस देश का उस राजा या निवासी
49.	उपार्च्छति	प्रलय के समीप, गमन के समीप
50.	प्रार्च्छति	तेजी से जाना
51.	प्रार्षभीयति	अपने को बैल बनने की इच्छा करना
52.	उपर्कारयति	लृकार की आकृति बनने की इच्छा करना
53.	प्रेजते	अधिक कम्पन्न होना या प्रकाशित होना
54.	उपोषति	दाह के पास जाना
55.	उपेडकीयति	भेंड़ के रूप को धारण करने की इच्छा रखने वाला
56.	प्रोधीयति	विख्यात होने की इच्छा करता है।
57.	शकन्धुः	शक देश का विशेष कूप
58.	कर्कन्धुः	कर्क राजाओं का कूप, वेर का फल
59.	कुलटा	घर–घर घूमने वाली स्त्री
60.	सीमन्तः	बालों का गुच्छा
61.	सीमान्तः	प्रदेश, नगर का समीप का भाग या गांव या शहर का समीप भाग
62.	प्रौढ़िः	स्त्री, पूर्ण बुद्धि, परिपक्वता
63.	मनीषा	मननशील व्यक्ति या बुद्धि
64.	हलीषा	हरिस
65.	लाङ्गलीषा	हल या फल तोड़ने का डण्डा
66.	पतञ्जलिः	महाभाष्यकार का नाम
67.	सारङ्गः	पशु तथा पक्षी
68.	मार्तडः	सूर्य
69.	स्थूलौतुः	मोटी या स्थूल बिलाव

70.	विम्बोष्ठः	विम्ब फल के समान ओठ
71.	तवौष्ठः	तुम्हारा ओठ
72.	शिवेहि	हे शिव यहां
73.	पटिति	अव्यक्त अनुकरण शब्द
74.	श्रादिति	धातु के पूर्व प्रयोग होने वाला एक उपसर्ग
75.	पटत् पटेति	द्विरुक्त अव्यक्त अनुकरण शब्द
76.	दैत्यारिः	विष्णु (दैत्य शत्रु)
77.	श्रीशः	लक्ष्मी के स्वाम (विष्णु)
78.	विष्णूदयः	विष्णु का उदय या आगमन होना
79.	हरेऽव	हे, हरि रक्षा करो
80.	विष्णोऽव	हे विष्णु रक्षा करो
81.	गोअग्रम्	गो का अग्र भाग
82.	गवाग्रम	गो का अग्र भाग
83.	गवाक्षः	झरोखा
84.	गवेन्द्रः	सांड़

●

प्रकृतिभाव सन्धि प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	एहिकृष्ण अत्र	हे कृष्ण यहाँ
2.	गौश्चरति	गाय चरती है
3.	हरी एतौ	ये दोनो हरि हैं
4.	चक्रि अत्र	चक्रधारी विष्णु यहां हैं
5.	वाप्यश्वः	तालाब में घोड़ा
6.	पार्श्वम्	कांख के नीचे के शरीर भाग जहां पर पसलियां हैं या फरसा शास्त्र
7.	बह्म ऋषि	मन्त्र द्रष्टा ऋषि ब्राह्मण
8.	अभिवादये देवदत्तोऽहम्	भो गुरु मैं देवदत्त अभिवादन करता हूं
9.	अभिवादये गार्ग्यहंम्	मैं गार्गी अभिवादन करती हूं
10.	भो आयुष्मतीभवगार्गि	हे गार्गी आयुष्मती होवो
11.	सक्तून्पिवदेवदत्त	हे देवदत्त सतुवा पीवो
12.	सुश्लोक इति	सुन्दर श्लोक
13.	विष्णू इमौ	यह दोनो विष्णू हैं।
14.	गङ्गे अमू	यह दोनो गंगा है
15.	पचेते इमौ	यह दोनो पकाते हैं
16.	अमी ईशा	यह सब स्वामी
17.	अमू आसाते	यह दोनो बैठे हैं
18.	अस्मे इन्द्रा वृहस्पति	इन्द्र और गुरु के लिए
19.	आ एवं नुमन्यसे	क्यों इस प्रकार मानते हो
20.	आ एवं किल तत्	इस प्रकार यह निश्चय हो
21.	ओष्णम्	कुछ गरम
22.	अहो ईशा	हे स्वामियों
23.	विष्णो इति	हे विष्णु
24.	किमु उकतम्	तर्क युक्त क्या कहा
25.	गौरी अधिश्रितः– मामकीतनू	गौरी के अधीन
26.	इति	मेरे सम्बन्धी की शरीर

●

हल् सन्धि प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	हरिश्शेते	हरि सोता है
2.	रामश्चिनोति	राम एकत्र करता है
3.	सच्चित्	सत्य और चेतना
4.	शार्ङ्गिञ्जय	विष्णु की जय
5.	विश्नः	जाना
6.	प्रश्नः	पूछना
7.	रामष्षष्ठः	छठवें राम
8.	रामष्टीकते	राम जाता है
9.	पेष्टा	पीसने वाला
10.	तट्टीका	उसकी टीका
11.	चक्रिण्ढौकसे	चक्रधारी जाता है
12.	षट्सन्तः	छव सज्जन
13.	षट्ते	वे छव
14.	सर्पिष्टमम्	अत्यधिक घृत
15.	षण्णाम्	छव नाम
16.	षण्णवति	छानवे
17.	षण्णगर्यः	छवनगरी
18.	सन्षष्ठः	छठें की स्थिति
19.	वागीशः	वृहस्पति वाक्पटु
20.	चिद्रुपम्	चेतन रूप
21.	एतन्मुरारिः	यह कृष्ण
22.	चतुर्मुखः	ब्रह्मा
23.	तन्मात्रम्	उतना ही
24.	चिन्मयम्	शुद्ध ज्ञानमय, ज्ञान स्वरूप
25.	तल्लयः	उसका विनाश, उसका मिलाप या उसके गीत का स्वर
26.	विद्वाँल्लिखति	विद्वान् लिखता है।
27.	उत्थानम्	स्थान या पद की वृद्धि
28.	उत्तम्भनम्	रोकना
29.	तच्छिवः	उसका शिव या वह शिव
30.	तच्छलोकेन	उस श्लोक से या उसके श्लोक से
31.	वाकश्च्योतति	वाणी स्खलन होता है।
32.	हरिंवन्दे	हरि को प्रणाम करता है।
33.	गम्यते	जाया जा रहा है।
34.	यशांसि	कीर्तियां कीर्तियों को
35.	आक्रंस्यते	पैर को आगे रखेगा।
36.	अङ्किकतः	चिन्हित होना, गिना हुआ लिखित या चित्रित होना।
37.	अञ्चितः	झुका हुआ
38.	कुण्डितः	कुण्ठा ग्रस्त, कुंदित,मूर्ख
39.	शान्तः	शमन किया गया या प्रसन्न किया गया।

40.	गुम्फितः	गूंथा गया या बांधा गया।
41.	त्वङ्करोषि	तुम करते हो
42.	संय्यन्ता	रोकना, नियन्त्रण करना, शासक, नेता
43.	संव्वत्सरः	वर्ष, विक्रमादित्याब्द
44.	यंल्लोकम्	जिस लोक को
45.	सम्राट्	राजा, चक्रवर्ती राजा
46.	किं ह्मलयति	क्या चलता
47.	किं ह्यः	क्या बीता हुआ कल।
48.	किं ह्वलयति	क्या चलता है।
49.	किं ह्लादयति	क्या सुख देता है।
50.	किं ह्नुते	क्या दूर करता है।
51.	प्राङ्ष्षष्ठः	प्रथम छव संख्या वाला
52.	सुगण्ष्षष्ठः	ठीक या सही गिनने वाला छठवां व्यक्ति
53.	षट् सन्तः	छव सज्जन
54.	सन्त्सः	रह रहा वह
55.	सञ्छम्भुः	रह रहा शिव
56.	प्रत्यङ्ङात्मा	अन्दर की आत्मा
57.	सुगण्णीशः	अच्छा गिनने में श्रेष्ठ
58.	सन्नच्युतः	पूजित विष्णु
59.	संस्स्कर्ता	अच्छी तरह से कार्य्र करने वाला
60.	पुंस्कोकिलः	नर कोयल
61.	पुंस्पुत्र	पुंलिंङ्ग, नरपुत्र
62.	पुंक्षीरम्	पुरुष का दुग्ध
63.	पुंदासः	पुरूषदास या नरदास
64.	पुंख्यानम्	पुरुषकथन
65.	शार्ङ्गिश्छिन्धि	विष्णु नें काटा
66.	चक्रिंस्त्रायस्व	विष्णु रक्षा करो
67.	सन्त्सरूः	तलवार की मुठिया, सरीसृप रेंगने वाला सुन्दर कीट
68.	प्रशान्तनोति	शान्ति को फैलाता है
69.	नॄन्पाहि	मनुष्यों की रक्षा करो
70.	काँस्कान्	किसको, किसको या किन किन लोगों को
71.	कस्कः	कौन, कौन
72.	कौतस्कुतः	कहां से कहां से
73.	सर्पिष्कुण्डिका	घृत की कुण्डी या घृत पात्र
74.	धनुष्कपालम्	धनुष का ऊँचा शिरा
75.	स्वच्छाया	अपनी छाया
76.	शिवच्छाया	शिव की छाया
77.	आच्छादयति	भली भांति आच्छादन करता है।
78.	माच्छित	दो भाग मत करो
79.	चेच्छिद्यते	दो भाग किया जाता है।
80.	लक्ष्मीच्छाया	लक्ष्मी की छाया

विसर्ग सन्धि प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	विष्णुस्त्राता	विष्णु रक्षक
2.	कःत्सरूः	कौन तलवार की मुठिया
3.	धनाधनः	इन्द्र, चिड़चिड़ा पानीय बादल
4.	क्षोभणः	क्षुब्ध करना या व्याकुल करना
5.	हरिःशेते	हरि सोता है
6.	रामः स्थाता	राम स्थिर रामदृढ़
7.	हरिः स्फुरति	हरि स्फुरित होता है या संचालित होता है।
8.	कः करोति	कौन करता है
9.	कः खनति	कौन खनता है
10.	कः पचति	कौन पकाता है या क्या पकता है
11.	कः फलति	क्या फलता है
12.	पयस्पाशम	खराब या दूषित दुग्ध या जल
13.	यशस्कल्पम्	कीर्ति में कुछ कमी
14.	यशस्कम्	अज्ञात यश या निंदित यश
15.	यशस्काम्यति	यश की कामना करता है।
16.	प्रातः कल्पम्	सबेरा होने में अभी कुछ देर
17.	गीः काम्यति	वाणी की कामना करता है।
18.	सर्पिष्पाशम्	दूषित घृत या खराब घृत
19.	सर्पिष्काम्यति	घृत की कामना करता है
20.	नमस्करोति	नमस्कार करता है
21.	पुरस्करोति	आगे करता है
22.	निष्प्रत्यूहम्	विघ्न का अभाव या विघ्न रहित
23.	आविष्कृतम्	प्रकाश किया प्रादुर्भाव किया
24.	दुष्कृतम्	कठिनाई से किया
25.	अग्निः करोति	आग करता अर्थात जलाता है
26.	वायुः करोति	पवन बहता है
27.	मातुः कृपा	माता की दया
28.	मुहुः कामा	बार बार इच्छा करना
29.	तिरस्कर्ता	तिरस्कार करने वाला
30.	द्विष्करोति	दो बार करता है
31.	चतुष्कपालः	चार कपालों में संस्कारित पुरोडास
32.	सर्पिष्करोति	घी कर्ता है या घीव को बनाता है
33.	धनुष्करोति	धनुष कर्ता या धनुष को बनाता है
34.	तिष्ठतु सर्पिः पिवत्वभुदकम्	आप बैठे सर्पि पिवो तुम जल पिवो

35.	अयस्कारः	लोहार, जांघ का उपरि भाग
36.	अयस्कामः	लोहे का काम करने वाला
37.	अयस्कंसः	लोहे का घड़ा या प्याला
38.	अयस्कुम्भः	लोहे का घड़ा या कलश
39.	अयस्पात्रम्	लोहे का पात्र या हथौडा
40.	अयस्कुशा	लोहे के मेल से बना हुआ रस्सा
41.	अयस्कर्णी	लौह निर्मित विशेष प्रकार का वाण
42.	गीः कारः	शब्द रचनाकार या भाषण देने वाला
43.	स्वः कामः	स्वर्ग की इच्छा रखने वाला
44.	यशः करोति	यश को करता है
45.	परमयशः कारः	अधिक यश को करने वाला
46.	अधस्पदम्	नीचा पद या छोटा स्थान
47.	परमशिरस्पदम्	सर्वोच्च पद या स्थान
48.	भास्करः	सूर्य

●

स्वादि सन्धि प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	शिवोऽर्च्यः	पूज्यं शिव
2.	देवा अत्र	देव लोक यहां
3.	श्व आगन्ता	बीते कल के आये हैं।
4.	एहिसुस्रोत३ अत्रस्नाहि	हे सुस्रोत यहां स्नान करो
5.	शिवोवन्द्यः	शिव वन्दनीय
6.	प्रातरत्र	सुवेरा यहा
7.	भ्रातर्गच्छ	हे भाई यहाँ पर
8.	देवाइह	देव लोक यहाँ पर
9.	भो अच्युतः	हे विष्णू
10.	तोयम्	जल
11.	स उ एकाग्निः	वही एक अग्नि
12.	भो देवाः	हे देवताओं
13.	भो लक्ष्मीः	हे लक्ष्मी
14.	भो विद्वद्वृन्द	हे विद्वद्गण
15.	भगो नमस्ते	भो तुमको नमस्कार है
16.	अघो याहि	हे तुम जावो
17.	देवा नम्याः	देवता प्रणाम के योग्य हैं।
18.	देवा यान्ति	देव लोग जाते हो
19.	देवा इह	देव लोग यहाँ है
20.	अहरहः	प्रतिदिन
21.	अहर्गणः	दिनों का समूह
22.	अहोरात्रः	दिन रात
23.	अर्हः पतिः	सूर्य
24.	गीर्पतिः	वृहस्पति
25.	धूर्पतिः	मुख्य धुरा
26.	पुना रमते	बार–बार या फिर से घूमता है
27.	हरिः रम्यः	भगवान रमणीय है या मनोहर है
28.	शम्भू राजते	शिव या शंकर सुशोभित होता है
29.	तृढः	हिंसा किया गया
30.	वृढः	उद्यम किया गया
31.	अजर्घा	अभिकांक्षा की गयी
32.	लीढः	स्वाद लिया गया
33.	मनोरथः	मनोवांछित
34.	एष विष्णुः	यह विष्णु
35.	स शम्भुः	वह शिव
36.	एषको रूद्रः	यह रूद्र
37.	असश्शिवः	वह शिव नही है
38.	सैषदाशरथीरामः	यह वह दशरथ के पुत्र राम हैं

अजन्त पुल्लिङ्ग प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	राम	सुहावना, आनन्दप्रद, हर्षदायक, सुन्दर, प्रिय, मनोहर, मलिन, धूमिल, काला श्वेत, परशुराम, बलराम, रामचन्द्र दशरथ के पुत्र, योगियों के हृदय में निवास करने वाले राम।
2.	कृष्ण	काला, श्याम, गहरा नीला, दुष्ट, काला रंग, काला मृग, कौवा, कोयल, मनुष्य के शरीर से पापों को खीचने वाला वासुदेव का पुत्र, आठवों अवतार को धारण करने वाला विष्णु, चान्द्रमास का कृष्ण पक्ष।
3.	मुकुन्द	विष्णु या कृष्ण का नाम, पारा, मूल्यवान, पत्थर या रत्न, कुबेर की नौ निधियों में से एक निधि, एक प्रकार का ढोल।
4.	सर्व	सब, प्रत्येक।
5.	विश्व	एक देव वर्ग, समग्र, ब्रह्माण्ड, संसार, विष्णु, शिव, आत्मा, जीव, देह, नागर, सकाम, प्रत्येक, सर्वव्यापक।
6.	उभ	दोनों
7.	उभय	दो अवयव वाला, अर्थ की दृष्टि से द्विवचन में प्रयोग होता है किन्तु एक और बहुबचन में भी प्रयोग किया जा सकता है।
8.	अन्य	दूसरा, भिन्न।
9.	अन्यतर	दोनों में से कोई एक।
10.	इतर	अन्य, दूसरा, दो में से अवशिष्ट या अवशेष अथवा बचा हुआ।
11.	पूर्व	सामने होने वाला, प्रथम प्रमुख पूर्वदिशा, पूर्वकाल, पुराना, प्राचीनकाल और दिशा की दृष्टि से सापेक्ष स्थिति प्रकट की जाती है। यह सर्वनाम शब्द की भांति होता हैं।
12.	पर	दूसरा, भिन्न, दूर स्थित, हटाया हुआ, दूर का, बाद का, पीछे का, आगे, उच्चतर, श्रेष्ठ, उच्चतम, महात्तम, पूज्यतम, प्रमुख, मुख्य, सर्वोत्तम।
13.	अवर	आयु में छोटा, पद में छोटा, अनुवर्त्ती, उत्तरवती, नीचे, अपेक्षाकृत, छोटा, घटिया
14.	त्वत्	कम, नीच
15.	त्व	अन्य
16.	सम	अन्य
17.	सिम	सर्व, सभी, प्रत्येक, तुल्य (सर्वदिगण पठित से भिन्न)
18.	अन्तर	प्रत्येक, सब, सम्पूर्ण, समस्त।
		अन्दर होने वाला, भीतर, निकट, समीप, समद्ध, घनिष्ठ।
19.	दक्षिण	योग्य, कुशल, निपुण, सक्षम, चतुर, दायिना, दक्षिण दिशा, निष्कपट, खारा,
20.	उत्तर	इमानदार, निष्पक्ष, सुहावना, सुखकर, रूचिकर, शिष्ट, नागर।
21.	अपर	उत्तर दिशा, बाया।
22.	अधर	अप्रतिद्वन्दी, बेजोड, दूसरा, भिन्न।
23.	स्व	नीचा, नीचे का, पहले का, नीच, बुरा, घटिया।
24.	प्रथम	कुटुम्ब, आत्मीय, जन,सम्बन्धी, आत्मा विष्णु, धन, सम्पत्ति, धनराशि
25.	द्वितीय	पहला सबसे आगे, प्रमुख, मुख्यप्रधान श्रेष्ठतम, बेजोड़ अनुपम्
26.	चरम	दो अवयवों से युक्त् दो में विभक्त दुगुना, दोहरा अन्तिम, अन्त्य, आ़खिरी
27.	अल्प	तुच्छ, थोड़ा, कम, छोटा, मरणशील, विरल।
28.	अर्ध	आधा

29.	कतिपय	कुछ, कई, एक
30.	नेम	आधा, समय, काल, ऋतु, हद, सीमा, घेरा, बाड़ा, दीवार की नींव, जालसाज, धोखा,
31.		विवर, खाई।
32.	द्वितीय	दूसरा
33.	जरा	बुढ़ापा, वृद्धावस्था
34.	निर्जरा	देवता, अमृत
35.	पाद	पैर चरण, श्लोक या पद्य का चौथा भाग किसी वस्तु का चौथा भाग, किरण
36.	दन्त	दांत
37.	नासिका	नाक, हाथी का सूँड़,
38.	मास	महीना, वर्ष का वार, हवा भाग
39.	हृदय	दिल, छाती, सीना मन, अन्तकरण, आत्मा
40.	निशा	रात्रि, रात
41.	असृज	मङ्गलग्रह, केशर
42.	यूष	रस, झोल, शोरवां
43.	दोष	त्रृटि, निन्दा, कमी, लाञछन
44.	यकृत	जिगर कलेजा
45.	शकृत	मल, विष्ठा, लीद (हाथी घेड़ा गदहा के लीद को)
46.	उदक	पानी जल
47.	आस्य	मुख
48.	विश्वपा	संसार की रक्षा करने वाला
49.	हाहा	एक गन्धर्व का नाम, पीडा शोक और आश्‍र्चय प्रकट करने वाला उद्‌गार
50.	हरि	हरी विष्णु का नाम, इन्द्र, शिव, ब्रह्मा, यम, सूर्य, चन्द्रमा, मनुष्य प्रकाश की किरण
51.		अग्रि पवन, सिंह घोड़ा, बन्दर, कायल, मेढ़क, सांप, मोर
52.	सखि	साथी, मित्र, सहचर
53.	सुसखि	सुन्दर साथी, सुन्दर मित्र, अच्छा सहचर
54.	पति	स्वामी, प्रभु, पत्नी का स्वामी
55.	कति	कितना
56.	त्रि	तीन
57.	द्वि	दो
58.	औडुलोमि	नक्षत्र या तारे के समान रोम वाला मनुष्य
59.	वातप्रमी	वायु, गति वाला हिरण, घेड़ा, नेवला
60.	ययी	मार्ग, शिव घेड़ा
61.	पपी	सूर्य, चन्द्रमा
62.	बहुश्रेयसी	अधिक कल्याणकारी स्त्री वाला पुरुष
63.	कुमारी	कुमारी की इच्छा करने वाला पुरुष या कुमारी की तरह आचरणशील पुरुष
64.	प्रधी	बड़ी समक्ष वाला, बहुत चतुर, बुद्धिमान
65.	उन्नी	उन्नति को प्राप्त होने वाला
66.	ग्रामीण	गॉव का मुखिया
67.	नी	ले जाने वाला, नायक नेता
68.	सुश्री	सुन्दर सेवक, कर्त्तव्यनिष्ठ सेवक
69.	यवकी	यव को खरीदने वाला
70.	शुद्ध धी	विमल बुद्धि वाला, विशुद्ध बुद्धिवाला पवित्र व पुनीत बुद्धिवाला, ब्रह्मविषयक चिन्तन करने वाला

71.	दुर्धी	मूर्ख, बेवकूफ
72.	सुधी	अच्छी प्रकार से ध्यान या चिन्तन करने वाला, या विमल बुद्धि वाला
73.	सखी	एक सम्प्रदाय का नाम, सहेली, सहचरी
74.	सुखी	सुख की इच्छा करने वाला
75.	सुती	सुत या पुत्र की इच्छा करने वाला
76.	लूनी	काटने छेदने तोड़ने तथा नष्ट करने की इच्छा करने वाला
77.	क्षामी	दग्ध होने की इच्छा करने वाला या दुबला पतला होने की इच्छा करने वाला
78.	प्रस्तीमी	कोलाहल की इच्छा करने वाला
79.	शुष्की	सुखा करने वाला, सुखाने वाला
80.	शम्भु	शिव, आनन्द देने वाला समृद्धि करने वाला
81.	विष्णु	हरि अग्नि पुण्यात्मा, विष्णु स्मृति के प्रणेता
82.	वायु	पवन, हवा
83.	भानु	सूर्य, प्रकाश, चमक कान्ति दिन राजा शिव का विशेषण
84.	क्रोष्टु	गीदड़, सियार
85.	हुहु	गन्धर्व विशेष
86.	अतिचमू	सेना पर विजय प्राप्त करने वाला
87.	खलपू	खलिहान पवित्र करने वाला, खुरपा, दुष्ट, खोटा, बेहया नीच, चूगलखोर धरती, स्थान, तलछट, धूलिराशि मूर्ख, युद्ध धतूरा आदि को पवित्र करने वाला
88.	सुलू	भलीभॉति या अच्छी तरह से काटने वाले को, या हंसिया या हँसुआ
89.	केदार लू	क्यारी थाला, धानी की खेती को काटने वाला, खुरपी या हथियार जो घास को निकालता हो
90.	लू	काटना, कतरना, तोड़ना, चुनना
91.	उल्लू	तेज काटना
92.	कटप्रू	चटाई को ले जाने वाला
93.	परमलू	मुख्य या प्रधान को काटने वाला
94.	स्वभू	जो अपने से या स्वतः पैदा होता है (विष्णु)
95.	वर्षाभू	मेढक, दर्दुर
96.	दृम्भू	सन्दर्भ कर्ता
97.	दम्भू	वज्र सूर्य राजा यम
98.	करभू	हाथ से पैदा होना या हाथ में पैदा होना
99.	काराभू	कारागार बन्धनालय
100.	पुनर्भू	बार बार होना विष्णु
101.	धातृ	निर्माता, प्रणेता, उत्पादयिता,
102.	उद्गातृ	उदगाता
103.	पितृ	पिता, जनक
104.	जामातृ	दामाद
105.	भ्रातृ	भाई
106.	नृ	मनुष्य
107.	किर की	विक्षेपक क्षेपण करने वाला
108.	तिरती	पार करने वाला या उत्पलवन
109.	कृ	वरवेरना, तितरवितर करना, फेंकना।
110.	तृ	पार जाना, पार करना

111.	गम्लृ	गमन करना
112.	शक्लृ	समर्थ होना
113.	से	प्रद्युम्न
114.	स्मृते	प्रद्युम्न जिससे स्मृत होते
115.	गो	गाय, बैल
116.	सुधौ	सुन्दर, देवलोक
117.	स्मृतौ	जिससे शम्भु स्मृत होते हैं
118.	रै	धन
119.	ग्लौ	चन्द्रमा
120.	नौ	नौका

●

अथाजन्त स्त्रीलिङ्ग प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	रमा	लक्ष्मी
2.	सर्वा	सभी, प्रत्येक
3.	उत्तर पूर्वा	उत्तर दिशा और पूर्व के बीच का
4.	अन्तरा	भीतर, अन्दर
5.	द्वितीया	दूसरी
6.	तृतीया	तीसरी
7.	अम्बा	माता
8.	अक्का	माता
9.	अल्ला	माता
10.	अम्बाडा	माता
11.	अम्बाला	माता
12.	अम्बिका	माता
13.	जरा	वृद्धावस्था, क्षीणता, दुर्बलता, बुढ़ापा
14.	नासिका	नाक
15.	निशा	रात्रि, रात
16.	मांस–मांस्	गोश्त
17.	पृतना	सेना या सेना का एक प्रभाग जिसमें 243 हाथी, 243 रथ, 729 घोड़े, 1215 पैदल युद्ध संग्राम मुठभेड़
18.	सानू	चोटी, शिखा
19.	मति	बुद्धि, समझदारी, ज्ञान
20.	तिसृ	तीन
21.	प्रियतिसृ	प्रिय तीन हो जिसके
22.	द्वा	दो
23.	गौरी	पार्वती, आठ वर्ष की आयु वाली कन्या
24.	पृथ्वी	पृथ्वी, हल्दी, वरूण की पत्नी
25.	सखी	सहेली
26.	तरी, तरिः	नाव
27.	तन्त्री	डोरी, रस्सी
28.	स्त्री	भार्या, महिला, पत्नी
29.	अतिस्त्रि	महिला के गुणशीलता का अतिक्रमण करने वाला पुरूष
30.	श्री	लक्ष्मी, शोभा, कान्ती, ऐश्वर्य, तेजस्विता
31.	प्रधी	कुशाग्र बुद्धि, प्रज्ञा, बड़ी बुद्धि
32.	सुधी	विमल मति, गम्भीर, चिन्तन
33.	ग्रामणी	मुखियाइन, नेत्री, नायिका
34.	क्रोष्टी	गीदड़ी, सियारिन
35.	वधू	दुलहिन, पुत्रवधू, तरूणी स्त्री
36.	भ्रू	भौंह
37.	सुभ्रू	सुन्दर भौं वाली
38.	पूनर्भू	दो बार प्रसूता स्त्री

39.	वर्षाभू	मेढ़की बेंगूची भेकी मण्डूकी
40.	स्वयम्भू	ब्रह्मा या ब्रह्मा के जितने पर्यायवाची शब्द है सभी स्वयम्भू से ग्रहण होता है।
41.	स्वसृ	बहन, भगिनी
42.	ननान्दृ	ननद, पतिभगिनी या बहन
43.	दुहितृ	लड़की, पुत्री, सुता
44.	यातृ	गोतिमी, पति के भाइयों की पत्नी का नाम
45.	मातृ	माता, जन्म जननी, जन्मदायी
46.	स्वसृ	सासु
47.	द्यौ	दिव लोक
48.	रै	धन
49.	नौ	नाव
50.	ग्लौ	चन्द्रमा

●

अथाजन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	ज्ञान	जानना, समझना, परिचित होना
2.	कतर	कौन, दो मे से कौन
3.	एकतर	दो मे से एक, कोई, दूसरा भिन्न
4.	अजरम्	जिसके कुल में बुढ़ापा न हो।
5.	हृद	हृदय, मन, अन्तःकरण, चित्त
6.	उदन	जल, पानी
7.	आसन	मुख
8.	मांस	गोश्त
9.	श्रीप	धन, लक्ष्मी की रक्षक
10.	वारि	जल, पानी
11.	अनादि	जिसका काल आदि न हो, जिसके जन्म का काल ज्ञात न हो वह अनादि का देव कहलाता है।
12.	पीलु	पीलु नाम का वृक्ष अथवा उसका फल
13.	दधि	दही
14.	सुधी, सुधि	जानकारी, भलीभांति की चिन्तन करना, न भूलना
15.	प्रधी–प्रधि	प्रकृष्ट या प्रकर्ष ज्ञान
16.	मधु	मधुमक्खी. से निकाला गया मीठा रस
17.	स्नु	शिखर चोटी
18.	प्रिय क्रोष्टु	प्रिय, गीदड़ या सियार को जिस कुल में
19.	सुलु	भलीभांति काटना या कतरना या तोड़ना
20.	धातृ	नपुंसक लिंग ब्रह्मन् शब्द के अर्थ में।
21.	प्रद्यु	प्रकृष्ट देवस्थान
22.	प्ररि	प्रकर्ष धन लक्ष्मी, सम्पत्ति
23.	सुनु	सुन्दर चोटी।

●

अथ हलन्त पुल्लिङ्ग प्रकरणम्

क्र0सं0	शब्द	अर्थ
1.	लिह्	आस्वादन या चखने वाला
2.	दामलिट्	गो के दोहन काल में पैर को बांधने वाली रस्सी को स्वयं आस्वादन की इच्छा करता है
3.	गर्दप्	गदहा की इच्छा करने वाला
4.	दुह्	दोहन करने वाला
5.	द्रुह्	द्रोह करने वाला
6.	विश्ववाह्	संसार को बहन करने वाला, विष्णु
7.	अनडुह्	काठ गाड़ी को ढोने वाला, बैल, सांढ, भैंसा
8.	तुरासाह्	इन्द्र
9.	सुदिव्	निर्मल आकाश, निर्मल अन्तरिक्ष, विमल गगन, विमल अम्बर, निर्मल पुष्कर
10.	चतुर्	चार
11.	प्रिय चतुर्	प्रिय चार हों जिसके
12.	परम चतुर्	मुख्य चार
13.	कमल्	पद्यम या लक्ष्मी को चाहने वाला
14.	प्रशाम्	शान्ति धैर्य, मन की स्थिरता, निःशब्दता, विश्राम, विराम, ठहराव
15.	किम्	क्या
16.	इदम्	यह
17.	सुगण्	भलीभांति से गिनने वाला
18.	राजन्	शासक, नृप चन्द्रमा, क्षत्रिय, स्वामी, यक्ष, इन्द्र
19.	प्रतिदिवन्	दिन, सूर्य
20.	यज्वन्	यज्ञ करने वाला, पूजा करने वाला, अर्चना करने वाला।
21.	ब्रह्मन्	परमात्मा, निर्गुण या निराकार ब्राह्मण, वेद
22.	बृत्रहन्	इन्द्र, मधवा
23	शार्ङ्गिन्	तीरंदाज, धर्नुधारी, विष्णु
24.	यशस्विन्	प्रसिद्ध, विख्यात, विष्णु, यज्ञ वाला, कीर्तिवाला
25.	अर्यमन्	सूर्य
26.	पूषन्	सूर्य
27.	मधवन्	इन्द्र
28.	श्वन्	कुत्ता
29.	युवन्	युवावस्था, तरूणावस्था
30.	अर्वन्	घोड़ा, इन्द्र
31.	पथिन्	मार्ग रास्ता
32.	मथिन्	मथानी का दण्ड
33.	ऋभुक्षिन्	इन्द्र
34.	सुपथिन्	सही मार्ग
35.	पञ्चन्	पांच संख्या
36.	परमपञ्चन्	मुख्य पांच
37.	प्रिय पञ्चन्	प्रिय पांच हो जिसके
38.	सप्तन्	सात संख्या

39.	नवम्	नव संख्या
40.	दशन्	दश संख्या
41.	अष्टन्	आठ संख्या
42.	परमाष्टन्	मुख्य आठ
43.	प्रियाष्टन्	प्रिय आठ हों जिसके
44.	युज्	जुड़ा हुआ, मिला हुआ
45.	सुयुज्	अच्छी प्रकार से मिला हुआ, ठीक ढंग से जुडा हुआ
46.	राज्	चमकना, राजा, सरदार, युवराज
47.	विभ्राष्ज्	चमकीला, प्रकाशमान, दीप्तिमान
48.	देवेज्	देव सम्बन्धी यज्ञ करने वाला
49.	परिव्राज्	सन्यासी
50.	विश्वाराज्	पूरे विश्व में दीप्तिमान, चमकने वाला, विश्व का राजा
51.	भृज्ज्	पाक कर्ता
52.	ऋत्विज्	वैदिक यज्ञ पुरोहित के रूप में कार्य करने वाला, चार मुख्य ऋत्विज होता, उदगाता अध्वर्यु और ब्रह्मा
53.	ऊर्ज	सामर्थ्य वल, सत्व
54.	त्यद्	वह
55.	तद्	वह
56.	परमतद्	मुख्य वह
57.	यद्	यह
58.	एतद्	यह
59.	युष्मद्	तुम
60.	अस्मद्	मैं
61.	सुपाद्	सुन्दर दोनों पैर हों जिसके
62.	अग्निपथ्	अरणी
63.	प्राच्	पूर्व दिशा पहले
64.	प्रत्यच्	पीछे प्रतिकूल दिशा में पश्चिम की ओर
65.	अदद्रयच्	यह पूजक, पह जाने वाला
66.	उदच्	उत्तराभिमुख
67.	सम्यच्	साथ में जाने वाला या साथ में रहने वाला
68.	सध्रयचसध्यङ्	साथ में चलने वाला, सहचर साथी
69.	तिर्यच्–तिर्यङ्	टेढ़ा–मेढ़ा चलने वाला
70.	प्राच्–प्राङ्	सामने की ओर, पूर्व दिशा, पूर्व का प्राथमिक,पहला, पूर्व काल पूर्व देश के लोग
71.	कुच्च् कुङ्	जल कुकुक्कुटी वगुला
72.	पयोमुच् पेयोमुक	बादल मेघ
73.	सुवृच्	भली प्रकार से छेदन करने वाला
74.	महत्	बड़ा पूजनीय श्रेष्ठ
75.	धीमत्	बुद्विमान मतिमान बुद्वि वाला
76.	गोमत्	गाय या बैल वाला
77.	भवत्	आप
78.	ददत्	दान करता हुआ
79.	भवत्	होता हुआ

80.	जक्षत्	भोजन करता हुआ
81.	जाग्रत्	जागता हुआ
82.	दरिद्रत्	गरीब होता हुआ
83.	शासत्	शासन करने वाला
84.	चकासत्	चमकता हुआ
85.	दीव्यत्	जूआ खेलता हुआ, चमकता हुआ
86.	वेव्यत्	गमन ज्ञान, प्राप्ति मोक्ष प्रदान करता हुआ
87.	गुप्	रक्षा करता हुआ
88.	तादृक् तादृश्	उस जैसा
89.	विश्	प्रविष्ट होना, दाखिल होना, वैश्य
90.	नश्	नाश होना ध्वस्त होना, मरना वर्बाद होना
91.	घृतस्पृश्	घृत का सपर्श करने वाला
92.	स्पृश्	स्पर्श करने वाला
93.	दघृष्	प्रतिभावान, प्रत्युत्पन्नमति, साहसी वाचाल और कुशल उद्दंड
94.	रत्नमुष्	रत्न चोरी करने वाला
95.	षष्	छव
96.	पिपठीष्	पढ़ने की इच्छा करने वाला
97.	निस्स्व्	चम्बुन करना
98.	चिकीर्ष्	करने की इच्छा करने वाला
99.	दोष्	दो (दोस) अग्रभुजा, बाहुभुज
100.	विविक्ष्	प्रवेश करने की इच्छा करने वाला
101.	तक्ष्	चीरता है, काटता है
102.	गोरक्ष्	गो वंश की रक्षा करता है
103.	विपक्ष्	पाक क्रिया की इच्छा करने वाला
104.	सुपिस्, सुपीः	सुन्दर गमन करने वाला
105.	सुतुस्, सुतूः	अच्छी तरह खण्डन करना
106.	विद्वस्	विशेष ज्ञान वाला पण्डित
107.	सेदिवस्	बैठा हुआ
108.	सुहिस्, सुहिन्	खून, हिंसा करना, मारना
109.	घ्वंस्	नीचे गिरना, सिर का टुकडा होना, चूर–चूर होना
110.	स्रस्	नीचे गिरना, गिरना
111.	पुंस्	पुरूष
112.	उसनस्	मृगपुत्र, शुक्राचार्य, राक्षसो के गुरू
113.	अनेहस्	काल, समथ
114.	बेधस्	स्रष्टा, ब्रम्हा, विधाता
115.	सुवस्	भलीभांति आच्छादन या छाने वाला
116.	पिण्डग्रस्	पिण्ड को निगलने वाला या खोटने वाला, खाने वाला
117.	पिण्डग्लस्	पिण्ड को निगलने वाला या खोटने वाला, खाने वाला, भक्षण करने वाला
118.	अदस्	यह

●

अथ हलन्त स्त्रीलिङ्ग प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	उपानह्	जूता, पनही
2.	उष्णिह्	पगड़ी
3.	दिव्	स्वर्ग
4.	गिर् (गीः)	भाषण, शब्द
5.	पुर् (पूः)	नगर, वह शहर जिसके सुरक्षा के चारो तरफ से दीवार हो
6.	चतुर् (चतुसृ)	चार
7.	किम् (का)	कौन
8.	इदम्	यह
9.	स्रज्	माला
10.	त्यद्	यह
11.	तद्	वह
12.	यद्	जो
13.	एतद्	यह
14.	वाच्	वाणी
15.	अप्	जल
16.	दिश्	दिशा, संकेत करना, दिखलाना
17.	दृश्	देखने वाला, सर्वेक्षण करने वाला, समीक्षा करने वाला, अधीक्षण करने वाला, विवेचन करने वाला
18.	त्विष्	चमकना
19.	सजुष्	साथ में लगा हुआ, साथ में जुड़ा हुआ
20.	आशीष्	आशीर्वाद, शुभकामना
21.	अदस्	यह

अथ हलन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	स्वनडुह्	जिस कुल में अच्छे बैल या सांड हो।
2.	विमलदिव्	निर्मल आकाश या बादल तथा धूल रहित आकाश
3.	वार्	जल
4.	किम्	क्या
5.	इदम्	यह
6.	ब्रह्मन्	परम ईश्वर परमात्मा निराकार स्वरूप वाला
7.	अहन्	दिन, दिवस
8.	दीर्घाहन्	लम्बा दिन, ग्रीष्म ऋतु के दिन को
9.	दण्डिन्	दण्ड वाला, छडी वाला
10.	स्रज्विन्	माला वाला या माली
11.	वाग्मिन्	वाक्पटु, वाक्चतुर वातूनी
12.	बहुवृहन्	जिस सम्वत्सर में बहुतेरे वृत्रासुर के हननकर्ता हो
13.	बहुपूषन्	जिस सम्वत्सर में बहुतेरे सूर्य हों
14.	बह्वर्यमन्	जिस सम्वत्सर में बहुतेरे सूर्य हों
15.	असृज्	रूधिर, मंगल ग्रह, केसर
16.	ऊर्ज्	तेज बल,. प्रकाश, दीप्ति
17.	बहूर्ज्	अधिक तेज, अधिक बल, अतिशय प्रकाश
18.	त्यद्	यह
19.	तद्	वह
20.	यद्	जो
21.	एतद्	यह
22.	वेमिद्	वार, भेदन करने वाला
23.	तिर्यच्	टेढ़ा मेढ़ा चलने वाला
24.	यकृत्	जिगर, कलेजा
25.	शकृत्	मल, विष्ठा, विशेषकर जानवरों का लीद
26.	ददत्	दान करता हुआ
27.	तुदत्	व्यथित होने वाला
28.	भात्	प्रकाशित होता हुआ
29.	पचत्	पाक क्रिया करता हुआ
30.	दीव्यत्	चमकने वाला, जुआ खेलना वाला
31.	स्वप्	सुन्दर जल वाला तालाब
32.	धनुष्	धनु–जिसपर तीर को रखकर चलाया जाता है
33.	चक्षुष्	नेत्र
34.	हविष्	हवनीय द्रव्य
35.	सर्पिष्	घृत
36.	पिप ठिष्	पढ़ने की इच्छा रखने वाला
37.	पयस्	दुग्ध, जल
38.	सुपंस्	सुन्दर पुरुष हो जिसके या सुन्दर पुरूष वाला
39.	अदस्	यह

अथ अव्यय प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	स्वर्	स्वर्ग, परलोक–मृत्युलोक से भिन्न लोक
2.	अन्तर्	मध्य, बीच
3.	प्रातर्	सुबह, सबेरा
4.	पुनर्	वार–वार
5.	सुनुतर्	छिपा हुआ
6.	उच्चैस्	ऊँचा, महान
7.	नीचैस्	नीचा, छोटा, हीन
8	शनैः	धीरे धीरे
9.	ऋधक्	सत्य
10.	ऋते	वर्जन के अर्थ में, बिना के अर्थ में
11.	युगपद्	एक समय, एक साथ
12.	आरात्	दूर और समीप के अर्थ में
13.	पृथक्	भिन्न
14.	हयस्	बीता हुआ दिन, पूर्व दिन
15.	श्वस्	आने वाला दिन
16.	दिवा	दिन
17.	रात्रौं	रात्रि, रात
18.	सायम्	सायंकाल, सूर्य के अस्त का समय
19.	चिरम्	अधिक समय
20.	मनाक्	थोड़ा, कम
21.	ईषत्	कुछ थोड़ा, कुछ कम
22.	जोषम्	सुख, मौज
23.	तुष्णीम्	मौन या चुप चाप
24.	वहिस्	बाहर
25.	अवस्	बाहर
26.	समया	पास में, समीप में, बीच में
27.	निकषा	अन्तिम
28.	स्वयम्	अपने अर्थ में
29.	वृथा	व्यर्थ, बिना मतलब
30.	नक्तम्	रात्रि
31.	नञ्	निषेध के अर्थ में
32.	हेतौ	निमित्त, कारण
33.	इद्धा	प्राकाश्य
34.	अद्धा	विकसित, अवधारण
35.	सामि	अर्ध, निन्दा, नापसन्दगी, घृणा, वीभत्सा
36.	वत्	तुल्य या समान के अर्थ में प्रयोग होता है
37.	व्राह्मणवत्	व्राह्मण की तरह या सदृश
38.	क्षत्रियवत्	क्षत्रिय के सदृश
39.	समा	नित्य

40.	सनात्	नित्य
41.	उपधा	भिन्न, भेद
42.	तिरस्	अन्तर्धि टेढ़े के अर्थ में, पराभव के अर्थ में
43.	अन्तरा	मध्य के अर्थ में; बिना के अर्थ में
44.	अन्तरेण	वर्जन और निषेध के अर्थ में
45.	ज्योक	काल, भूयस्व के अर्थ में प्रश्न और शीघ्र के अर्थ में तथा सम्प्रति के अर्थ में
46.	कम्	वारि, मूर्ध, निन्दा और सुख के तथा मूर्ध के अर्थ में
47.	शम्	सुख, कल्याण, मंगल
48.	सहसा	आकस्मिक, अविमर्श
49.	विना	वर्जन और निषेध के अर्थ में
50.	नाना	अनेक और बिना के अर्थ में
51.	स्वस्ति	मंगल, कल्याण
52.	स्वधा	पितरों के हर्विदान के अर्थ में
53.	अलम्	भूषण, पर्याप्त, शक्ति वरण, और निषेध के अर्थ में
54.	वषट् श्रौषट् वौषट्	देवता के हर्विदान के अर्थ में
55.	अन्यत्	अन्य के अर्थ में
56.	अस्ति	सत्ता के अर्थ में (उपसर्ग) विभक्ति प्रति रूपक अव्यय
57.	क्षमा	छान्ति के अर्थ में
58.	विहायसा	आकाश
59.	दोषा	रात्रि के अर्थ में
60.	मृषा–मिथ्या	असत्य के अर्थ में
61.	मुषा	व्यर्थ के अर्थ में
62.	पुरा	अविरत चिरकाल ओर अतित के अर्थ में
63.	मिथो मिषस्	एकान्त, रहस, सहार्थ के अर्थ में
64.	प्रायस	बाहुल्य, अधिक्य के अर्थ में
65.	मुहुस	पुनः के अर्थ में
66.	प्रवाहुकम्	समान काल या ऊर्ध्व के अर्थ में
67.	आर्यहलम्	बलात्कार या जबरदस्ती के अर्थ में
68.	अभीक्ष्णम्	बार–बार या पुनः पुनः के अर्थ में
69.	साकम् सार्धम्	सह या साथ के अर्थ में
70.	नमस्	झुकने या नमस्कार के अर्थ में
71.	हिरुक्	वर्जन के अर्थ में
72.	धिक्	निन्दा और भर्त्सना के अर्थ में
73.	अथ	प्रारम्भ वाचक के अर्थ में पूर्व प्रसंग के बाद में प्रयोग होता है।
74.	अम्	शैर्ध्य और अल्प के अर्थ में
75.	आम्	अङ्गिकार और स्वीकार के अर्थ में
76.	प्रताम्	ग्लानि के अर्थ में
77.	प्रशाम	समान के अर्थ में
78.	प्रतान्	विस्तार के अर्थ में
79.	मा माङ	निषेध के अर्थ में
80.	कामम्	यथेच्छ स्वाच्छन्द्य के अर्थ में
81.	प्रकामम्	अतिशय के अर्थ में

82.	भूयस्	पुनः के अर्थ में
83.	साम्प्रतभ्	वर्तमान के समय के अर्थ में या न्याय्य के अर्थ में
84.	परम्	किन्तु, वाद, पश्चात के अर्थ में
85.	साक्षात्	प्रत्यक्ष, सामने के अर्थ में
86.	साचि	तिर्यक् या टेढा के अर्थ में
87.	सत्यम्	अर्धाङ्गिकार के अर्थ में
88.	मङ्क्षु आशु	शीघ्रता के अर्थ में
89.	अनिशम् नित्यम् सदा, अजस्तम् सन्नतम्	सातत्य के अर्थ में
90.	उषा	रात्रि के अर्थ में या भोर के अर्थ में
91.	सम्वत्	वर्ष के अर्थ में
92.	अश्वयम्	निश्चय के अर्थ में
93.	सपदि	शीघ्रता के अर्थ में
94.	वलवत्	अतिशय के अर्थ में
95.	प्रादुवस् आविस्	प्रकाश के अर्थ में
96.	रोदसी	द्यावा पृथ्वी के अर्थ में
97.	ओम्	अङ्गिकार स्वीकार और ब्रह्म के अर्थ में
98.	भूः	पृथ्वी के अर्थ में
99.	भुवः	अन्तरिक्ष के अर्थ में
100.	झटति प्राक्तरसा	शीघ्रता के अर्थ में
101.	सुष्ठु	प्रशंसा के अर्थ में
102.	दुष्ठु	निकृष्ट के अर्थ में
103.	सु	पूजा के अर्थ में
104.	आ	आश्चर्य के अर्थ में
105.	कु	कुत्सित निन्दा, ईषत् के अर्थ में
106.	आञ्जसा	तत्व और शीघ्र के अर्थ में
107.	मिथु	दो के अर्थ में
108.	अस्तम्	दूबने और बिनाश के अर्थ में
109.	स्थाने	युक्त के अर्थ में
110.	ताजक	शीघ्रता के अर्थ में
111.	चिराय, चिररात्राय, चिरस्य, चिरम्, चिरेण,चिरात्	चिरकाल या चिर समय के अर्थ में
112.	वरम्	ईषत्, उत्कर्ष और श्रेष्ठ के अर्थ में
113.	आनुषक	आनुवर्ती के अर्थ में
114.	अनुषक	अनुमान के अर्थ में
115.	अमेन	शीघ्र,साम्प्रतिक के अर्थ में
116.	सुदि	शुक्ल पक्ष
117.	वदि	कृष्ण पक्ष
118.	च	समुच्चय, अन्वाचय, इतरेतर, समाहार और सम्बन्ध के अर्थ में
119.	वा	विकल्प के अर्थ में
120.	ह	प्रसिद्धि के अर्थ में
121.	अह	अद्भुत खेद या दुःखद प्रकट के अर्थ में

122.	एव	अवधारणा अनवक्लृप्ति के अर्थ में
123.	एवम्	उक्त परामर्श के अर्थ में
124.	नूनम्	निश्चय या तर्क के अर्थ में
125.	शश्वत्	निरन्तर पौनः पुन्य, नित्य सह के अर्थ में
126.	युगपद्	एक साथ या एक समय के अर्थ में
127.	भूयस्	पुनः और आधिक्य के अर्थ में
128.	कूपत्	प्रश्न या प्रशंसा के अर्थ में
129.	सुपत्	अच्छी प्रतिष्ठा के अर्थ में या प्रतिष्ठित के अर्थ में
130.	कुवित्	भूरि के अर्थ में प्रशंसा के अर्थ में
131.	नेत	शंङ्का के अर्थ में प्रतिषेध, विचार समुच्चय के अर्थ में
132.	चेत्	यदि के अर्थ में
133.	चण्	चेत के अर्थ में
134.	क्वचित्	इष्ट प्रश्न के अर्थ में
135.	यत्र	अनवक्लृप्ति, अमर्षग्रहा के अर्थ में
136.	नह	प्रत्यारम्भ के अर्थ में
137.	हन्त	हर्ष और विषाद के अर्थ में, अनुकम्पा और वाक्यादि के अर्थ में
138.	माकिः माकिम मकि	वर्जन के अर्थ में
139.	यावत्: तावत्:	साकल्प, अवधिमान और अवधारण के अर्थ में
140.	त्वै	विशेष और विर्तक के अर्थ में
141.	द्वै	विर्तक के अर्थ में
142.	न्वै	वितर्क के अर्थ में, पाद पूर्ति के अर्थ में या निश्चय के अर्थ में।
143.	रै	दान के अर्थ में, अनादर के अर्थ में
144.	श्रौषट् वौषट् स्वाहा	देव हवि के दान में
145.	स्वधा	पितृदान के अर्थ में
146.	तुम	तुङकार के अर्थ में
147.	तथाहि	निदर्शन के अर्थ में
148.	खलु	निषेध या वाक्यालंकार और निश्चय के अर्थ में
149.	किल	इव के अर्थ में, वार्ता और अलीक के अर्थ में
150.	अथ	मङ्गल अनन्तर आरम्भ, प्रश्न कात्स्न्र्य, अधिकार, प्रतिज्ञा समुच्चय के अर्थ में
151.	स्म	अतीत ओर पादपूरण के अर्थ में
152.	आदह	उपक्रम, हिंसा और कुत्सन के अर्थ में
153.	अवदत्रम	आदि कर्म के अर्थ में
154.	अहंयु	अहङ्कार, घमण्ड के अर्थ में
155.	अस्तिक्षीरा	विद्यमान के अर्थ में
156.	अ	सम्बोधन वासुदेव के अर्थ में
157.	आ	वाक्य और स्मरण के अर्थ में
158.	इ,	सम्बोधन जुगुप्सा, विस्मय के अर्थ में,
159.	ई,उ,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ	ये सभी स्वर अब्यय सम्बोधन के अर्थ में
160.	पशु	सम्यक के अर्थ में
161.	शुक्रम्	शीघ्रता के अर्थ में
162.	इयथा कथाच	संघात और अनादर के अर्थ में
163.	पाट् प्याट् अङग है हे, भो, अये,	सम्बोधन के अर्थ में

164.	द्य चट्, चाटु	हिंसा, प्रतिलोम ओर पादपूरण के अर्थ में
165.	सुकम्	अतिशय के अर्थ में
166.	अनु	वितर्क के अर्थ में
167.	शम्वत्	अन्तःकरण के अर्थ में और अभिमुख्य के अर्थ में
168.	व	पादपूरण ओर इव के अर्थ में
169.	चट्, चाटु	प्रिय वाक्य के अर्थ में
170.	विषु	नाना के अर्थ में
171.	एक पदे	अकस्मात के अर्थ में
172.	युत	कुत्सा के अर्थ में
173.	आतः	इतः (यहां से) के अर्थ में
174.	हूम्	भर्त्सन या निन्दा के अर्थ में
175.	इव	सादृश्य या तुल्य के अर्थ में
176.	अद्यत्वे	इदानीम के अर्थ में

अथ स्त्री प्रत्यय प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	अजा	बकरी, बकरा का मादा जाति
2.	एडका	भेड़ की मादा जाति (भेंड़ी)
3.	अश्वा	घोड़ी
4.	चटका	पक्षी विशेष गौरया की मादा जाति गौरिया
5.	मूषिका	चुहिया
6.	वाला	लड़की, वालिका, कन्या
7.	वत्सा	वक्षीया
8.	होडा	छोटी नाव, डेंगी, वेड़ी
9.	मन्दा	मृदुला, मुर्खा
10.	विलाता	एक प्रकार की पक्षी की मादा जाति (चिड़िया)
11.	सम्फला	जिस वाटिका के फल खूब फले हो।
12.	भस्त्रफला	जिस वाटिका में चर्म प्रवेशिक (भाटी) के समान फल हों।
13.	सत्पुष्पा, प्राकपुष्पा, प्रत्येक पुष्पा, काण्ड पुष्पा, शत पुष्पा, एकपुष्पा	जिस वाटिका के फूल विद्यमान हो।
14.	शुद्रा	शुद्र जाति की बालिका
15.	शुद्री	शुद्र जाति की स्त्री
16.	महाशुद्री	आभीरी–ग्वाला की पत्नी
17.	क्रुञ्चा	क्रौच्च पक्षी जाति की मादा
18.	उष्णिहा	साफा या पगड़ी
19.	देवविशा	मरूत
20.	ज्येष्ठा	जेठ भाई की स्त्री (भाभी)
21.	कनिष्ठा	छोटे भाई की स्त्री (भयऊ)
22.	मध्यमा	मध्यम भाई की स्त्री
23.	कोकिला	कोकिल पक्षी जाति की मादा
24.	अमूला	मूल रहित लता
25.	कर्त्री	कार्य करने वाली स्त्री
26.	दण्डिनी	छड़ी को धारण करने वाली स्त्री
27.	भवती	होने वाली या पूज्या स्त्री
28.	पचन्ती	पकाने वाली स्त्री
29.	उरवास्रत्	कुण्डी, पतीली, डगची से गिरा हुआ
30.	पर्णध्वत्	पत्ता से गिरा हुआ
31.	प्राची	पूर्व की दिशा
32.	प्रतीची	पश्चिम की दिशा
33.	अतिसुत्वरी	सोमरस के उपहार या सोमरस के पाक करने वाले पुरूष से अधिक पान करने वाली स्त्री।
34.	अतिधीवरी	मल्लाह या मछुआ के कार्य को बढ़चढ़कर करने वाली स्त्री
35.	शर्वरी	रात्रि, हल्दी, स्त्री
36.	अवावा	चोरी करने वाली स्त्री

37.	राजयुध्वा	राजाओं को लड़ाने वाली या युद्ध कराने वाली स्त्री
38.	बहुधीवरी, बहुधीवा	अधिक मछुहारा वाली स्त्री
39.	द्विपदी, द्विपाद्	दो पैर वाली स्त्री
40.	द्विपदा	दो पाद वाली ऋचां
41.	एकपदा	एक पाद वाली ऋचा
42.	सीमा	मर्यादा, हद, किनारा, छोर, सरहद
43.	बहुयज्वा	बहुत यज्ञ, पूजा अर्चना करने वाली स्त्री
44.	बहुराज्ञी, बहुराजा	बहुत राजा वाली रानी
45.	सर्विका	सभी
46.	कारिका	नर्तकी, व्यवसाय, व्याकरण, दर्शन तथा विज्ञान से सम्बद्ध काव्य पद संग्रह।
47.	नौका	नाव, नदी पार करने वाली नाव
48.	शका	एक रानी
49.	बहुपरिव्राजका	अधिक सन्यासिनी या बौद्ध भिक्षुणी वाली नगरी
50.	नन्दना	प्रसन्न करने वाली बालिका
51.	कटुका	कटु रस से युक्त तीखा
52.	राका	पूर्णिमा की रात्री
53.	कारक	कर्ता
54.	मामिका	मेरी
55.	नरिका	मनुष्यों को शब्द करने वाली
56.	यका	जो
57.	सका	सो
58.	उपत्यका	उपरिभूमि
59.	अधित्यका	नीचे की भूमि
60.	जीवका	जीवधारी सेविका बौद्ध भिक्षु के सहारे जीविका चलाने वाली
61.	भवका	होवे
62.	देवदत्तिका, देवका	देवदत्तिका या देवका नाम की कन्या
63.	क्षिपका	भेजना, फेंकना, डालना, रात्रि
64.	ध्रुवका	स्थिरता
65.	कन्यका	लड़की, बालिका
66.	चटका	भूमि भेदन करने वाली स्त्री
67.	तारका	आंख की पुतली, तारा, उल्फा, धूमकेतु
68.	तारिका	ताड़ी, सिनेमा, अभिनेत्री
69.	वर्णिका	अभिनेता की वेषभूषा, मसी, लेखनी, पेंसिल
70.	वर्णका	मुखावरण, नकाब, चित्रकारी
71.	वर्तका	वटेर पक्षी, टिट्टिम
72.	वर्तिका	चितेरे कूंची
73.	अष्टका	सप्तमी, अष्टमी, नवमी की तिथि में पितृ एवं देवता के उद्‌देश्य की जाने वाला श्राद्ध या अनुष्ठान और अगहन, पूष, माघ और फाल्गुन की कृष्णाष्टमी तथा इन्ही तिथियों में किया जाने वाला श्राद्ध या यज्ञ।
74.	अष्टिका	पठनीय अष्टाध्यायी सद्यप्रसूता स्त्री बेडी, गुडिया, पुतली अधिक बड़ा प्रमुख, उत्तम श्रेष्ठ, सुहावना, आकर्षक, आदरणीय, देव, देवता आदरणीय महिला
75.	चटकका, चटकिका	चिड़िया, गौरैया

76.	सूतिका सूतका	सद्यः प्रसूता स्त्रा
77.	पुत्रिका–पुत्रका	बेटी, गुडिया, पुतली
78.	वृन्दारिका–वृन्दारका	अधिक बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, सुहावना, आर्कषक, देव, देवता
79.	आर्पिका, आर्यका	आरणीया, महिला
80.	अश्विका	घोड़ी, बक्षेड़ा
81.	शुभंयां:	मंगल को प्राप्त
82.	शुमंयिका	अविज्ञान मंगल को प्राप्त
83.	सुनयिका	सुन्दर निर्देशनी, ठीक मार्गदर्शिका, सुन्दर नीति वाली ठीक तरह से प्रबन्ध करने वाली, सुन्दर आचरण वाली।
84.	सुपाकिका	सुन्दर पकाने वाली महिला या स्त्री
85.	अनेषका	यह नही
86.	परमेषका	मुख्या या प्रधानिका यह
87.	अद्वके	दो नहीं
88.	परमद्वके	मुख्य दो
89.	स्विका	अपनी
90.	परमस्विका	मुख्य अपनी
91.	निर्भस्त्रका–निर्भस्त्रिका	भाठी से निकली हुई
92.	एषका, एषिका	यह
93.	अजका अजिका	बकरी या बकरी की मादा बच्चा
94.	ज्ञका, ज्ञिका	अवबोध करने वाली स्त्री, विषय वस्तु की जानकारी रखने वाली महिला
95.	गंङ्गिका, गंङ्गका	गङ्गा नाम की पवित्रमनदी
96.	अवखट्विका	अज्ञात चारपाई
97.	गङ्गिाका	गङ्गा नदी का नाम
98.	शुभ्रिका	चमकीली, उज्जवंला, देदीप्यवती
99.	कुरूचरी	कुरूदेश को जाने वाली
100.	नदी	जल प्रवाहिका
101.	सौपर्णेयी	सुपर्णा की पुत्री
102.	ऐन्द्री	इन्द्र देवता के लिए आभिक्षा
103.	औत्सी	उत्सनाम, ऋषि की कन्या
104.	उरूदयसी, उरूदध्नी	उरूमात्री जंघा प्रमाण वाली स्त्री
105.	पञ्चतयी	पांच अवयव वाली
106.	आक्षिकी	पाशा से खेलने वाली
107.	लावणिकी	नमक मूल्य वाली स्त्री
108.	यादृशी	जैसी
109.	इत्वरी	गमन करने वाली
110.	चौरी	चोर स्वभाव वाली
111.	स्त्रैणी	स्त्री स्वभाव वाला, मादा स्त्री वाचक स्त्री प्रकृति वाला।
112.	पौस्नी	पुरुष प्रकृतिक वाली
113.	शात्तीकी	आयुध विशेष है प्रहार जिस स्त्री का
114.	आढयङ्करणी	धनी करने वाली स्त्री
115.	तरूणी	युवती स्त्री
116.	तलुनी	युवती स्त्री

117.	गार्गी	गर्ग ऋषि की कन्या
118.	द्वैप्या	द्विप में होने वाली
119.	दैव्या	देव की कन्या
120.	गार्ग्यापणी	गर्ग ऋषि के लड़के की पत्नी
121.	लौहित्यायनी	लोहित के अपत्य की स्त्री
122.	कात्यायनी	देवी का नाम,अथवा कात ऋषि के लड़के की पत्नी
123.	कौरव्यायणी	कौरव की स्त्री
124.	माण्डुकायनी	मण्डुक की पत्नी
125.	आसुरायणी	आसुर की स्त्री
126.	कुमारी	बिना शादी वाली कन्या
127.	वघूटीचिरण्टी	यौवन अवस्था वाली कन्या
128.	त्रिलोकी	जिसमें तीनो लोक समाहित हो
129.	त्रिफला	जिसमें तीन फलों को समाहित किया गया हो
130.	त्र्यनीका	जिसमें तीन सेनायें समाहित हो उनको त्र्यनीका सेना कहते हैं
131.	पञ्चाश्वा	पॉच घोड़ो से खरीदी गई
132.	द्विबिस्ता	दो सोने की मोहर को गलाने वाली
133.	द्वयाचिता	दशभार =अर्थात, 25मन–25,25=50 मन को ढोने वाली
133.	द्विकम्बल्या	दो कम्बल (200 पल) से खरीदी गई
134.	द्वयाढकी	आठ प्रस्थ को पकाने वाली
135.	द्विकाण्डा	32आरत्नी प्रमाण हो जिस क्षेत्र का
136.	द्विकाण्डी	32आरत्नी लम्बी रस्सी
137.	द्विपुरुषा, द्विपुरुषी	दो पुरुष की लम्बाई वाली खाई अर्थात् सात फुट गहरी खाई।
138.	कुण्डोध्नी	पानी भरे जाने वाना घड़ा,या मटका के समान स्तन हो जिस स्त्री का या पानी भरे जाने वाले घड़े के समान हो थान जिस गौ का
139.	कुण्डोध:	जल भरे जाने वाले घड़े के समान स्तन हो जिस धेनु समूह का
140.	द्वयूध्नी	दो स्तन वाली या दो थान वाली या दो बाली वाली
141.	अत्यूध्नी	अतिशय स्तन वाली
142.	द्विदाम्नी	दो डोरी हो जिसकी, दो धागा हो, दो फीता दो, रस्सी फूलों का गजरा हार जिसकी
142.	द्विहायनी वाला	दो वर्ष की बालिका
143.	त्रिहायणी	तीन वर्ष की बालिका, बक्षिया इत्यादि
144.	चतुह्रयिणी	चार वर्श की बालिका
145.	द्विहायना	दो शिखा वाली
146.	त्रिहायना	तीन शिखा वाली
147.	चतुर्हायना	चार शिखा वाली
148.	(हायन)	वर्ष, शिखा, किरण, ज्वाला
149.	सुराज्ञी	सुन्दर राज्ञी नाम की नगरी
150.	मामकी–तनु	मेरा शरीर
151.	भागधेयी	हिस्सावाली, खण्डवाली, अंश वाली
152.	पापी	पापिनी, पापवाली
153.	समानी	बराबर या तुल्य वाली
154.	आर्यकृती	श्रेष्ठ के द्वारा की गई कीर्ति
155.	सुमंङगली	भली भांति कल्याणकारिणी

156.	भेषजी	शिवा
157.	पतिवत्नी	पति वाली स्त्री
158.	अन्तर्वत्नी	मध्य वाली, बीच वाली
159.	पतिमति	स्वामिनी, मातृका, रक्षिका
160.	अपरी	मुख्या
161.	वशिष्ठ पत्नी	वशिष्ठकृत यज्ञफल भोक्त्री
162.	गृहपति	गृहस्वामी, घर का मालिक, घररक्षक
163.	गृहपत्नी	मकान मालिकिन या मकान की स्वामिनी या रक्षिका
164.	दृढ़ पति,दृढ पत्नी	जिस स्त्री की पति दृढ हो।
165.	वृषलपत्नी, वृषलपति	शुद्र की स्त्री या शुद्र स्त्री के तरह स्त्री
166.	सपत्नी	सौत
166.	एकपत्नी	एक स्त्री
167.	वीरपत्नी	वीर की स्त्री
168.	पूतक्रतायी	पवित्र यज्ञ की पत्नी अर्थात् पवित्र यज्ञीय दक्षिणा
169.	अग्नायी	अग्नि की पत्नी, स्वाहा
170.	कुसितायी, कुसिदायी	देवता विशेष की पत्नी
171.	मनायी, मनावी	मनु की स्त्री
172.	एनी, एता	रंग विरंगा, चमकीला
173.	रोहिता, रोहिणी	लाल रंग, लाल रंग की लोमड़ी, लाल रंग का हरिण विशेष तथा लाल रंग की गाय
174.	पिशङ्गी, पिशङ्गा	लाल रंग युक्त भूरा रंग लालपन लिये हुए भूरा रंग।
175.	असिता	नील का पौधा, यमुना, अश्वेता, काला, कुटिला
176.	पलिता	वृद्धा, पका हुआ या सफेद बाल
177.	असिक्नी	नीला पौधा, यमुना नदी, अश्वेता, काला, कुटिला (इस का प्रयोग वेद में होता है)
178.	पलिक्नी	वृद्धा, पका हुआ या सफेद बाल असिक्नी और पलिक्नी यह दोनो शब्द बैदिक भाषा में प्रयोग किये जाते हैं।
179.	कल्माषी	चित्कवरी, चित्र विचित्र वर्ण की।
180.	सारङ्गी	एक प्रकार का वाद्य यंत्र, सितार चितकबरे रंग।
181.	कृष्णा	काली गाय इत्यादि
182.	कपिला	भूरे रंग की गाय इत्यादि
183.	नर्तकी	नाच करने वाली
184.	गौरी	कत्यायनी, उमा अथवा गौर वर्ण वाली या आठ वर्षीया कन्या
185.	अनडुही, अनड्वाही	काष्ठ निर्मित गाडी को ले जाने वाला वृषभ।
186.	मत्सी	मछली की मादा जाति
187.	सूरी	सूर्य की पत्नी, कुन्ती का नाम
188.	द्रंष्ट्रा	बड़ा दांत, हाथी का दांत, विषैला दांत
189.	जानपदी	वृत्ति जीविका, एक अप्सरा
190.	कुण्डी	कमण्डलु
191.	कुण्डा	कूड़ा
192.	गोणी	गोनी, दो सूप का माप, चीथडा वो आई का यन्त्र, जिसमें दो सूप बराबर अनाज रखा हो।
193.	गोणा	किसी का नाम
194.	स्थली	शुष्क भूमि, प्राकृतिक भूमि जैसे वन की उपत्यका।

195.	स्थला	सूखी जमीन या ऊंची की हुई सूखी जमीन
196.	भाजी	चावल का मांड, साग।
197.	भाजा	न पकाने योग्य पदार्थ
198.	नागी	हस्तिनी
199.	नागा	शैव सम्प्रदाय विशेष में साधु लोग नंगे रहते हैं या जंगली विशेष जाति।
200.	काली	दुर्गा की उपाधि
201.	काला	काला वर्ण
202.	नीली	नील का पौधा, एक प्रकार की मक्खी
203.	नीला	काली की एक शक्ति
204.	कुशी	हल का फाल
205.	कुशा	रस्सी, लगाम
206.	कामुकी	मैथूनवती (मैथून की इच्छा वाली)
207.	कामुका	धन की इच्छा वाली
208.	कबरी	केश विशेष रचना
209.	कबरा	चितकबरा
210.	शोणी, शोणा	लोहित लाल
211.	मृद्वी–मृदु	मधुरा, मधुर
212.	शुचिः	पवित्र
213.	आखुः	चूहा
214.	खरूः	श्वेत, मुर्ख, मूढ, क्रूर
215.	पतिंवरा	पति को वरण करने वाली
216.	पाण्डुः	श्वेत (पीलापन युक्त श्वेत)
217.	बह्वी, बहु	अधिक
218.	रात्रिः रात्री	रात
219.	शकटिः, शकटी	छोटी गाड़ी, खिलौना गाड़ी
220.	पद्धतिः, पद्धती	पथमार्ग, रास्ता प्रथा, रीति, परिपाटी, प्रणाली, पंक्ति पात।
221.	गीपी	ग्वाला की स्त्री
222.	गोपालिका	ग्वाला की स्त्री
223.	अश्वपलिका	घोड़ा पालक की स्त्री
224.	सूर्या	सूर्यदेवता की स्त्री
225.	इन्द्राणी	इन्द्र की स्त्री
226.	हिमानी	बर्फ का समूह अथवा वह स्थान या क्षेत्र जहां अधिक बर्फ
227.	अरण्यानी	अधिक जंगल वाला क्षेत्र, अधिक घनघोर वनप्रान्त।
228.	यवनानी	दूषित वेग युक्त युवावस्था।
229.	यवनामी	यूनान की भाषा या यूनान की लिपि
230.	मातुली, मातुल्ली	मामा की पत्नी, मामी
231.	उपाध्यायी, उपाध्याया	जो स्वयं अध्यापन कार्य करती हो।
232.	उपाध्यायानी,	उपाध्याय की स्त्री
233.	उपाध्यायी	आचार्य की स्त्री
234.	आचार्या यनी	जो स्वयं व्याख्यान कर्ती है।
235.	आचार्या	स्वामिनी,
236.	अर्चा	वैश्या

237.	क्षत्रियाणी, क्षत्रिया	क्षत्रिय कन्या
238.	अर्या	स्वामी की स्त्री या वैश्य की स्त्री
239.	क्षत्रियी	क्षत्रिय की स्त्री
240.	वस्त्रक्रीती	वस्त्र (कपड़ा) से खरीदी गयी
241.	धनक्रीता	धन से खरीदी गयी
242.	अभ्रलिप्ती	थोड़े बादलों से आच्छन्न
243.	चन्दनलिप्ता	चन्दन से लेपन की गयी
244.	अरूमिन्नी	जिसकी दोनो जंघा आपस में मिला न हो।
245.	बहुक्रीता	जिसके द्वारा बहुत सी बस्तु खरीदी गयी हो।
246.	दन्तजाता	दांत की उत्पत्ति हो गयी हो जिसकी
247	पाणिगृहीती	आर्ष विधि के द्वारा पाणि ग्रहण संस्कार किया गया हो जिस भार्या से।
248.	पाणिगृहीता	आर्ष विधि के बिना पाणिग्रहण किया गया हो जिस भार्या से।
249.	सुरापीती, सुरापीता	जो महिला सुरा का पान करती हो।
250.	वस्त्रछन्ना	वस्त्र से ढकी हुई
251.	अतिकेशी अतिकेशा	वालो को अतिक्रमण करने वाली।
252.	चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा	चन्द्रमा के समान मुख वाली कन्या।
253.	सुगुल्फा	घुट्‌डी या एड़ी के ऊपर का भाग सुन्दर हो जिस स्त्री का या कन्या का
254.	शिखा	चोटी
255.	सुस्वेदा	दुर्गन्ध रहित पसीना वाली
256.	सुज्ञाना	सुविज्ञा, शास्त्रीय विषयों की जानकारी रखने वाली
257.	सुमुखा	सुन्दर प्रथम भाग वाली शाला
258.	सुशोफा	अधिक सूजन वाली स्त्री (जिस सूजन में दर्द नही)
259.	सुकेशी सुकेशावरय्या	केवल गाड़ी या रथ के आने जाने वाले भाग या राजमार्ग पर स्थित सुन्दर या अधिक बाल
260.	सुस्तनी, सुस्तना	सुन्दर स्तन वाली मूर्ति
261.	तुङ्गनासिकी–तुङ्गनासिका	उन्नत या लम्बी नाक वाली
262.	सहनासिका	विद्यमान नासिका वाली
263.	अनासिका	नाक रहित वाली
264.	स्वङ्गी, स्वङ्गा	सुन्दर शरीरावयव वाली
265.	सुगात्री, सुगात्रा	सुन्दर या अच्छी शरीर वाली
266.	सुकण्ठी, सुकण्ठा	सुन्दर या शंख के समान कण्ठ वाली
267.	सुपुच्छी, सुपुच्छा	सुन्दर अच्छी या लम्बी घनी बालों से युक्त वाली।
268.	कबर पुच्छी	चित्र विचित्र पूंछ वाली मयूरी
269.	उलूकपक्षी	उल्लू पक्षिक विशेष के पांख के समान भुजा जिस सेना की या उल्लू पक्षी विशेष के पार्श्व की तरह भुजा या बाजू जिस सेना की।
270.	कल्याण क्रोडा	कल्याणकारिणी सूअर की मादा, कल्याण वाली, छाती, सीना या घोड़ों का हृदय तथा कल्याण करने वाला वृक्ष, खोखला।
271.	सुजघना	अच्छा, पुटठा कुल्हा चूतड़ हो जिसकी।
272.	सुकेशा	वर्तमान स्थिति में केश वाली।
273.	अकेशा	केश बाल रहित वाली।
274.	शूर्पणखा	सूपा के समान नख वाली।
275.	गौरमुखा	गौर वर्ण की तथा श्वेत लालिमा लिए हुए मुख वाली।

276.	ताम्र मुखी	तांबा वर्ण के समान मुख वाली कन्या नाम ताम्रमुखी कन्या।
277.	प्राङ्मुखी	पूर्व दिशा की ओर मुख वाली
278.	दित्यौही	असुर को ले जाने वाली
279.	सखी	सहेली
280.	अशिश्वी	युवा बच्चे वाली
281.	तटी	नदी का किनारा
282.	वृषली	बारह वर्ष की अविवाहिता कन्या, रजस्वला होकर बिना व्याही ही पिता के घर रहने वाली कन्या
283.	शुक्ला	शुक्ल वर्ण की कन्या
284.	औपगण्वी	उपगुनाम ऋषि की कन्या
285.	कठी	कंठ नाम वेद की शाखा का अध्ययन पढ़ने वाली।
286.	कलापी	कलाप प्रोक्त वेद की शाखा का अध्ययन करने वाली।
287.	बह्वृची	बहुत सी ऋचाओं का अध्ययन करने वाली
288.	मुण्डा	सिर पर बिना बाल वाली
289.	वलाका	बगुला या बगला पक्षी
290.	हयी	घोड़ी
291.	गवयी	नील गाय
292.	मुकयी	चार पैर वाली पशु विशेष वर्ग की मादा जाति
293.	मनुषी	मनु की कन्या
294.	मत्सी	मछली जाति की मादा
295.	ओदनपाकी	भात पकाने वाली या औषध विशेष का नाम
296.	शङ्कुकर्णी	वर्क्षी का पंखदार भाग कील, नुकीला या पंखुदार अग्रभाग या औषध विशेष का नाम
297.	शालपर्णी	औषधि विशेष का नाम
298.	शङ्खपुष्पी	औषधि विशेष
299.	दासीफली, दर्भमूली	औषधि विशेष
300.	दाक्षी	दक्ष के अपत्य की फड़की
301.	तित्तरिः	पक्षि जाति विशेष की मादा जाति की पक्षी
302.	कुरू	कुरूराजं की पत्नी
303.	अध्वयुँः	वेद की अध्वर्यु शाखा की अध्ययन कर्त्ती
304.	अलावूः	लौकी से बनाया गया पात्र तुमडी या कमण्डल।
305.	अलाव्वा	तुमड़ी से, कमण्डल से
306.	कर्कन्धूः	वैर का फल
307.	कर्कन्ध्वा	वैर के फल से
308.	कृक्वाकुः	मुर्गा, मोर, छिपकली
309.	रज्जुः	रस्सी
310.	हनुः	दाड़ी
311.	भद्रवाहूः	जिनकी भुजाओं से मंगल कार्य होते रहते हैं। इसके आधार पर उस पुरुष का नाम भद्रबाहू है।
312.	वृत्तवाहूः	जिस स्त्री के दोनो भुजायें गोलाकार हों।
313.	पङ्गूः	लंगड़ा, एक पैर से रहित।
314.	श्वश्रूः	सास, पत्नी की माता।
315.	करभोरूः	जिसकी जांघ हाथी के सूंढ के समान हो।

316.	संहितोरूः	जिसकी दोनों जांघे मिलित हो, संयुक्त हो।
317.	शफोरूः	जिसकी दोनों जंघायें खुर के समान हों।
318.	लक्षणोरूः	विशेषता की सूचक देने वाली दोनो जंघायें हो जिसकी या शरीरस्थ रोग सूचक।
319.	वामोरूः	चिन्ह से युक्त दोनो जंघायें हो जिसकी शुभाशुभ की सूचना देने वाले चिन्हे से युक्त हो जिनकी दोनो जंघाये।
320.	सहोरूः	जिसकी दोनों जंघाये हितकारी हो।
321.	कद्रूः	नागों के माता का नाम
322.	कमण्डलूः	भृगविशेष की संज्ञा
323.	कद्रुः	भूरा रंग या कश्यप की पत्नी
324.	कमण्डलुः	साधू सन्यासियों का जलपात्र या भिक्षा पात्र।
325.	शार्ङ्गखी	ऋग ऋिषि की लड़की।
326.	वैदी	विद ऋषि की लड़की
327.	नारी	नारी–महिला
328.	आमष्ठया	अम्बष्ठ ऋषि की कन्या
329.	कारीषगन्ध्या	गोबर के गन्ध के समान गन्ध वाले ऋषि की कन्या
330.	शार्करक्ष्या	शर्कराक्ष ऋषि की कन्या
331.	पौतिभाष्या	पूतिभाष ऋषि की कन्या
332.	आवट्या	अवट ऋषि की कन्या
333.	युवती	जवान स्त्री
334.	बहुयुवा	जिस स्त्री के बहुत से युवा पुरूष हो।

●

अथ कारक प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	उच्चैः	ऊँचा या ऊपर
2.	नीचैः	नीचा, खाल जमीन
3.	कृष्णः	देवकी और वासुदेव का लड़का या काला वर्ण
4.	श्रीः	लक्ष्मी, शोभा
5.	ज्ञानम्	बोध, जानकारी
6.	तटः तटी, तटम्	किनारा, सीमा, अवधि
7.	द्रोणोव्रीहि	चार आढक परिमाण मापक से तौली गयी धान की राशि या एक दोन धान का ढेर
		अथ सम्बोधन कारक
8.	हे राम	योगियों के हृदय में अन्तःकरण में रमण करने वाले हे राम या अयोध्या निवासी राजा श्री दशरथ के राम
		अथ कर्म कारक
9.	माषेष्वश्वध्नाति	ऊर्द के खेत में से अन्यत्र स्थल पर घोड़े को बाधता है।
10.	पयासाओदनं भुङ्क्ते	दूध में भात को मिलाकर खाता है
11.	हरिं भजति	हरि को भजता है या हरि का भजन करता है
12.	हरिः सेव्यते	हरि की सेवा की जाती है
13.	लक्ष्म्या सेवितः	लक्ष्मी से सेवित है
14.	शत्यः	सौ रूपये से खरीदा गया
15.	प्राप्तानन्दः	जिसको आनन्द मिल गया है
16.	वृषवृक्षोऽपिसंवर्घ्य छेन्तुमसाम्प्रतम्	वृष वृक्ष क़ो बढ़ाकर काटने की इच्छा करता है किन्तु काटने के लिए स्वयं समर्थ नहीं हो पाता है।
17.	ग्रामं गच्छंस्तृणं स्पृशति	गांव की ओर जाता हुआ खास को स्पर्श करता है।
18.	ओदनं भुञ्जानोविषंभुङ्क्ते	भात को खाता हुआ विष को खाता है।
19.	गां दोग्धिपयः	गाय के दुग्ध को दुहता है या गाय से दुग्ध को दूहता है।
20.	वलिं याचते वसुधाम्	वलि से बसुधा या पृथ्वी मांगता है।
21.	अविनीतं विनयं याचते	विनय रहित से विनय हो मांगता है या याचना करता है।
22.	तण्डुलानोदनं पचति	चावलों से भात को पकाता है।
23.	गर्गाञ्छतंदण्डयति	गार्गो से सौ रूपया डाड़ लेता है।
24.	व्रजमवरूण्द्धिग्राम	व्रज में गायों को रोकता है।
25.	माणवकंपन्थानंपृच्छति	माणवक या बालक से रास्ता को पूछता है।
26.	वृक्षमवचिनेतिफलानि	वृक्ष से फलों को एकत्रित करता है।
27.	माणवकंधर्मंवूतेशास्तिवा	बालक के लिए धर्म सम्बन्धी विषय को कहता है या अनुशासित करता है।
28.	शतंजयति देवदत्तम्	देवदत्त से सौ रूपया जीतता है।
29.	सुधांक्षीरनिधिंमथ्नाति	दुग्ध सागर से अमृत का मन्थन करता है या निकालता है।
30.	देवदत्तंशतंमुष्णाति	देवदत्त से सौ रूपया चुराता है।
31.	सुधांक्षीरनिधिंमथ्नाति	दुग्ध सागर से अमृत का मन्थन करता है या निकालता है।
32.	देवदत्तंशतंमुष्णाति	देवदत्त से सौ रूपया चुराता है।
33.	ग्राममजांनयति	गांव में बकरी को प्राप्त करता है।
34.	ग्राममजां हरति	गांव से बकरी का हरण करता है।

35.	ग्राम मजां कर्षति	गांव से बकरी को खींचता है।
36.	ग्राम मजां बहति	गांव से बकरी को ढोता है।
37.	वलिं भिक्षते वसुधाम्	वलि से पृथ्वी को मांगता या याचन करता है।
38.	माणवकं धर्मभासते	बालक के धर्म को बताता है
39.	अभिधत्तेवक्तिवा	या अभिधान करता है।
40.	माणवकस्य पितरं पन्थानं पृच्छति	बालक के पिता से रास्ता पूछता है।
41.	कुरून् स्वपिति	कुरूदेश में सोता है।
42.	मासमास्ते	एक माह तक बैठता है।
43.	गोदोहमास्ते	गो दोहन या गाय के दूहने के लिए बैठा है।
44.	क्रोशमास्ते	एक कोस पर बैठा है।
45.	शत्रून् स्वर्गगमयत्	शत्रुओं को स्वर्ग लोक भेजा गया है।
46.	वेदार्थं स्वानवेदयत्	आत्मीय जनों को वेद का अर्थ बताया गया है।
47.	आशयच्चामृतं देवान्	देवों को अमृत का पान कराया गया।
48.	वेदमध्यापयद् विधिम्	ब्रह्मा को वेद का पाठ कराया गया।
49.	आसयत् सलिले पृथ्वीम्	पृथ्वी को जल में रखा गया या चुराया गया या छिपाया गया।
50.	पाचयत्योदनं देवदत्तेन	देवदत्त के द्वारा भोजन पकाया गया।
51.	गमयति देवदत्तापज्ञदत्त् यक्षदत्तमपर प्रयुङ्क्ते	देवदत्त ने यज्ञदत्त को लिवा जाता है उस देवदत्त के ले जाने के लिए दूस प्रेरिता है।
52.	गमयति देवदत्तेन यज्ञदत्तं विष्णुमित्रः	विष्णुमित्र ने देवदत्त के द्वारा यज्ञदत्त को लिवा जाता है।
53.	नाययति वाहयति वा भारं भृत्येन	नौकर के द्वारा बोझ को प्राप्त कराता या ढोता है।
54.	वाहयति रथं वाहान्सूतः	सारथी रथ को घोड़ों से ले जाता है या ढोवाता है।
55.	आदयति खादयति वा अन्नं वटुना	वटुक के द्वारा पका हुआ अनाज को खाया जाता है या भक्षण किया जाता है
56.	भक्षयत्यन्नं वटुना	वटुक या बालक के द्वारा अन्न खाया जाता है।
57	भक्षयति वलिवर्दान् सस्यम्	फसल या अनाज को बैलों से खवाया जाता या चरवाया जाता है।
58.	जल्पयति भाषयति वा धर्मपुत्रं देवदत्तः	देवदत्त ने पुत्र से धर्म के विषय में कहलावाता है या भाषण दिलवाता है।
59.	दर्शयति हरिं भक्तान्	भक्तों के द्वारा हरि का दर्शन कराया जाता है।
60.	स्मारयति घ्रापयतिवा देवदत्तेन	देवदत्त के द्वारा किसी को स्मरण कराया जाता है या सुगन्धित वस्तु को सुंघाय जाता है।
61.	शब्दायति देवदत्तेन	देवदत्त से शब्दोच्चारण कराया जाता है।
62.	मासभासयति देवदत्तम्	देवदत्त को एक माह तक बैठाया जाता है।
63.	देवदत्तेन पाचयति	देवदत्त से पकवाया जाता है या बनवाया जाता है।
64.	हारयति, कारयतिवा भृत्यंभृत्येन कटम्	नौकर से चटाई को हरण करवाया या बनवाया जाता है।
65.	अभिवादयते, दर्शयते देवंभक्तं भक्तेन वा	भक्त से देव को अभिवादन या नमस्कार करवाया जाता है या दर्शन करवाय जाता है।
66.	धिशेतेवैकुण्डं हरिः	विष्णु वैकुण्ठ में सोते हैं
67.	अधितिष्ठतिवैकुण्डं हरिः	विष्णु वैकुण्ठ में रहते है या सोते हैं।

68.	अभिनिविशतेसन्मागर्म्	सत्मार्ग से आग्रह पूर्वक बैठता या निवास करता है।
69.	पापेऽभिनिवेशः	पापकर्म में बैठा है या लगा है।
70.	उपविशति वैकुण्ठं हरिः	हरि बैकुण्ठ में निवास करते हैं।
71.	अनुवसांति, अधिवसति, आवसति बैकुण्ठं हरिः	विष्णु बैकुण्ठ में निवास करते हैं।
72.	वने उपवसति	वन में निवास करता है या रहता है।
73.	उभयतः कृष्णं गोपाः	ग्वाल के लड़के कृष्ण के दोनों तरफ हैं।
74.	सर्वतः कृष्णम्धिकृणाभक्तम्	कृष्ण के चारो ओर है। कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है।
75.	उपर्युपरिलोकं हरिः	विष्णु लोक के समीप में है या ऊपर है।
76.	अधोऽधः लोकं हरिः	विष्णु लोक में या संसार में है या नीचे है।
77.	अभितः कृष्णम्	कृष्ण के चारो तरफ या समीप
78.	परितः कृष्णम्	कृष्ण के चारो तरफ
79.	ग्रामं समया	गांव के निकट या समीप
80.	निकषा लङ्काम्	लङ्का के निकट या समीप
81.	हा कृष्णाभक्तम्	अहोकृष्ण के अभक्त को अर्थात जो कृष्ण का भक्त नही है उसको धिक्कार है या उसके विषय में सोचता है।
82.	अन्तरात्वांमां हरिः	तुम्हारे हमारे बीच में हरि
83.	अन्तरेण हरिं न सुखम्	हरि के बिना या छोड़ कर सुख नही
84.	पर्जन्यजपमनुप्रावर्षत्	जपने के बाद वर्षा हुई।
85.	नदीमन्ववसिता सेना	सेना के साथ सम्बद्ध है या बंधी हुई है।
86.	अनुहरिं सुराः	देवता लोग हरि से छोटें हैं। हरि के अपेक्षाकृत कम शक्तिमान हैं।
87.	उपहरिं सुराः	हरि से देवलोग हीन हैं, अर्थात् तुच्छ है कम शक्तिमान है।
88.	वृक्षं प्रतिपरि अनुवा विद्योते विद्युत	वृक्ष को लक्षित करके चमक रही है जिससे उसका प्रकाश पड़ रहा है इससे लक्षित होता है कि बिजली वृक्ष पर गिर सकती है।
89.	भक्तः विष्णुं प्रतिपरि अनुवा	विष्णु के प्रतिभक्त इस प्रकार है।
90.	लक्ष्मीः हरिं प्रतिपरि अनुवा	विष्णु के प्रति लक्ष्मी इस प्रकार है अर्थात विष्णु के लक्ष्मी भाग हैं अर्धाङ्गिनी हैं।
91.	वृक्षं प्रतिपरि अनुवासिञ्चति	प्रत्येक वृक्ष को लक्ष्य करके बार बार सींचती हैं।
92.	हरिभभिवर्तते भक्तोहरिममि	विष्णु के तरफ या सम्मुख हरि के तरफ भक्त है या हरि सम्मुख या सामने भक्त हैं।
93.	देवंदेवमभिसिञ्चति	प्रत्येक देवों को बार बार सींचता है जल जड़ता है।
94.	यदत्रमभिष्यात्तदीयताम्	जो इसमें मेरा हिस्सा या भाग हो उसको मुझे दें।
95.	कुतोऽध्यागच्छति	किस प्रदेश या स्थान से आ रहे हो।
96.	सुसिक्तम्	भली भांति पूजित किया गया।
97.	सस्तुतम्	सुन्दर ढंग से स्तुति की गयी।
98.	सुषिक्तम् किं तवाऽम	क्या तुम्हारे द्वारा पूजा की गयी या हुई।
99.	अतिदेवान् कृष्णः	देवताओं से कृष्ण अग्रणीय हैं।
100.	सर्पिषोऽपितिस्यात्	घृत भी हो सकता है अर्थात घृत की दुर्लभता को देखकर घृत के न होने की सम्भावना प्रकट की गयी है।
101.	अपिस्तुयाद् विष्णुम्	विष्णु भगवान की स्तुति होवे अर्थात विष्णु के स्तवन के लिए समर्थ हैं क्योंकि विष्णु वाणी का विषय न होते हुए तथा मन से अगोचर होते हुए स्तुति करना सम्भव नही है तथापि विष्णु की स्तुति करें।
102.	अपिस्तुहि	तुम स्तुति या स्तवन प्रार्थना करो। यहां पर स्तुति में स्वेच्छाचार द्योतित हो रहा है।
103.	धिग्देवत्तम्	देवदत्त को धिक्कार है।

104.	अपिस्तुपाद् वृषलम्	शुद्र घोडा पापी, दुष्ट, अधर्मी और जाति से वहिष्कृत की स्तुति करते हो।
105.	अपिसिञ्च अपिस्तुहि	सिंचों या सिंचन करो भी स्तुति करो भी
106.	मासं कल्याणी	माह या महीने तक कल्याण या मंगल वाली
107.	मासमधीते	अनध्याय काल या दिन को छोड़कर महीने तक पढ़ता है या महीने भर पढ़ता है।
108.	मासं गुडधानाः	महीने भर या महीने के प्रतिदिन मीठा धान का लावा
109.	क्रोशं कुटिला नदी	एक कोश या दो मील अथवा तीन किलोमिटर तक नदी टेढीमेढी है।
110.	क्रोशमधीते	एक कोश अथवा दो मील अथवा तीन किलोमीटर तक पडता है।
111.	क्रोशं गिरिः	एक कोश अथवा दो मील अथवा तीन किलोमीटर पहाड़।
112.	मासस्यद्विरधीते	महीने के तीस दिनों में दो दिन पढ़ता है।
113.	क्रोशस्यैकदेशे पर्वतः	कोश के भाग या हिस्सा में पर्वत है।
		अथ करण कारक
114.	गङ्गायां घोषः	गंगा में गोठा अर्थात गंगा नदी के तट पर गोठा है।
115.	रामेण वाणेन हतो वाली	राम के द्वारा वाण से वालि मारा गया। अर्थात राम ने वाण से वालि को मारा।
116.	प्रकृत्याचारूः	स्वभाव से सुन्दर है।
117.	प्रायेण यज्ञिकः	प्रायः याज्ञिक है अर्थात हमेशा यज्ञ ही कराते हैं।
118.	गोत्रेण गार्ग्यः	गोत्र से गर्ग वंशीय हैं अर्थात गर्ग गोत्र वाले हैं।
119.	समेन (पथा एति)	समतल रास्ते से जाता है।
120.	विषमेण (पथा एति)	विषम (ऊंचनीच) रास्ते से जाता है।
121.	द्विद्रोणेन धान्यंक्रीणाति	दो दोन से अर्थात आठ आढक से अनाज को खरीदता है
122.	सुखेन दुःखेन वायाति	सुख से या दुःख से प्राप्त करता या जीवन को व्यतीत करता है।
123.	अक्षैरक्षान्वादीव्यति	अक्षो या पाशाओं से जूआ खेलता है।
124.	अह्नाक्रोशेनवाऽनुवाकोऽधीतः	एक दिन में अथवा एक कोश में अनुवादक को पढा
125.	मासमधीतोनायातः	महीना भर अध्ययन न प्राप्त किया अर्थात पढ़ने के लिए नही आया जिससे फल की प्राप्ति का अभाव रहा।
126.	पुत्रेण सहागतःपिता	पुत्र के साथ पिता आया हुआ है।
127.	अक्ष्णाकाणः	आंख से काना है।
128.	अक्षिकाणमस्य	इसकी आंख कानी है।
129.	जटाभिस्तापसः	जटा से तपस्वी। जटा से तपस्वी ज्ञापित या सूचित होता है। जटा तपस्वी के भेष में लक्षण प्रतीत होता है।
130.	पित्रापितरंवा संजानीते	पिता से या पिता के द्वारा भली भांति जानता है या पिता को सम्यकरूप से पहचानता या जानता है।
131.	दण्डेन घटः	दण्ड से घड़ा या घट बनाने में दण्ड (लकड़ा) हेतु है।
132.	पुण्येन दृष्टो हरिः	पुण्य से विष्णु दिखाई पड़े। हरि दर्शन में पुण्य यहां पर हेतु है। पुण्य तपयोगादि क्रिया से उत्पन्न होता है अतः तपयोगादि क्रिया का फल भी है।
133.	अध्ययनेनवसति	अध्ययन के नाते रहता है यद्यपि निवास करने का फल अध्ययन है फिर भी अध्ययन निवास का हेतु है।
134.	अलं श्रमेण	श्रम से नहीं अर्थात् श्रम से साध्य नही अतः व्यर्थ है। जैसे ऊषर खेत परिशोधन में श्रम व्यर्थ होता है उसको उपजाऊ नही बनाया जा सकता। ऐसी स्थिति में श्रम से ऊषर खेत उपजाऊ साध्य नही हो सकता। यहां पर परिशोधन क्रिया के प्रति श्रम हेतु है।
135.	शतनशतेनवत्सान्पाययति	एक शत संख्या से बछडों को दूध पिलाती है। यहां पर बछड़ों का दूध पिलाने में एक सौ संख्या परिच्छेद करने हेतु है। इससे अधिक संख्या वाले बछड़ों को दूध पिलाने में समर्थ नही है। बछड़ों को पयकराने में शत संख्या हेतु है।

136.	दस्यासंच्छतेकामुकः	कामी पुरूष दासी या नौकरानी को स्वीकृत मासिक नियमित वेतनादि से अलग या पृथक देता है।
137.	भार्यायैसंयच्छति	अपनी स्त्री को भलीभांति देता है।

अथ सम्प्रदान कारक

138.	विप्रायगांददाति	ब्राह्मण के लिए गाय देता है अर्थात् ब्राह्मण को गाय का दान करता है।
139.	दानीयोविप्रः	ब्राह्मण को दान दिया जा सकता है अर्थात् ब्राह्मण देने योग्य है।
140.	पत्येशेते	पति के लिए सोती है।
141.	पशुनारूद्रंयजते	पशु से रूद्र प्रयाग करता है। पशु को रूद्र के लिए देता है।
142.	हरयेरोचतेभक्तिः	विष्णू के लिए भक्ति अच्छी लगती है अर्थात विष्णु को भक्ति प्रिय है।
143.	देवदत्ताय रोचते मोदकं पथि	देवदत्त को लड्डू रास्ते में अच्छा लगता है।
144.	गोपी स्मरात् कृष्णायश्लाधते	गोपी कामदेव के पीडा से व्याकुल होकर कृष्ण के वियोग वेदना को बोध कराती है।
145.	ह्नुते, तिष्ठते शपतेवा	सौत के अपनाने से अपने आशय का बोध कराती हैं या अपने आशय को बताने के लिए बैठी है या उलाहना देती हैं।
146.	देवदत्ताय श्लाधतेपथि	देवदत्त के लिए या देवदत्त को रास्ता में सराहना या प्रशंसा करती है।
147.	भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः	भक्त को मोक्ष या मुक्ति धारण करवाते हैं अर्थात भक्त मोक्ष को धारण करता है।
148.	देवदत्तायशतं धारयति ग्रामे	देवदत्त के लिए सौ रूपये गांव में रखवाता है।
149.	पुष्पेभ्यः स्पृहयति	फूलों से स्पृहा अर्थात प्रेम करता है।
150.	पुष्पाणि स्पृहयति	फूलों से अधिक प्रेम करता है अर्थात अधिक चाहता है।
151.	हरये कुध्याति द्रुहयति ईर्ष्यति असूयति	हरि के लिए क्रोध करता अर्थात हरि के ऊपर क्रोध करता है हरि से द्रोह करता है अर्थात् डाह या अपकार करता है। हरि में दोष को आरोपित करता है।
152.	भार्याभीर्ष्यति	भार्या से ईर्ष्या करता है अर्थात मेरी भार्या को मेरे से अन्य लोग न देखें अतः भार्या में दोष का आरोप करके ईर्ष्या करता है।
153.	क्रोधोऽमर्षः	क्रोध का अर्थ अमर्ष होता है।
154.	द्रोहोऽपकारः	द्रोह का अर्थ अपकार होता है।
155.	ईर्ष्याअक्ष्मा	ईर्ष्या का अर्थ अशान्ति होता है।
156.	असूयागुणेषु दोषाऽऽविष्करमणम्	असूया का अर्थ गुणों मे दोष दिखलाई पड़ना।
157.	द्रोहादयोऽपि कोपप्रभवां एव गृह्यन्ते	द्रोह ईर्ष्या और असूया क्रोध से उत्पन्न होता है।
158.	क्रूरमभि क्रूध्यति अभि दुह्यति	क्रूर अर्थात् दुष्ट के प्रति अति कोप या अतिद्रोह करता है।
159.	कृष्णाय राध्यति ईक्षतेवा	कृष्ण के लिए शुभ या अशुभ की समालोचना करता है या देखना चाहते हैं।
160.	विप्राय गां प्रतिश्रृणोति अश्रृणोतिवा	गाय को ब्राह्मण के लिए प्रेरित कर रहा है अर्थात् उत्प्रेरक ब्राह्मण के प्रति गाय को देने के लिए प्रेरित करता है।
161.	विप्रेण मह्यं देहि	ब्राह्मण के द्वारा मुझको दे अर्थात ब्राह्मण से मुझको दिलवाओ।
162.	हेत्रेऽनुगृहणाति प्रति गृणातिवा	हवनकर्ता के लिए प्रोत्साहित करता है। अर्थात होता को पहले प्रशंसा करता है तथा अध्वर्यु उसको प्रोत्साहित करता है।
163.	शतेन शताय वा परिक्रीतः	सौ रूपये से या सौ रूपये के लिए नोकर स्वीकार किया जाता है अर्थात् नौकर ने स्वामी के द्वारा नियत काल तक सौ रूपये से सेवा को स्वीकार करता है।
164.	मुक्तये हरिम्भजति	मुक्ति के लिए हरि को भजता है।
165.	भक्ति र्ज्ञानाय कल्पते	भक्ति ज्ञान के लिए सम्पादित होती है या ज्ञान से भक्ति उत्पन्न होती है।
166.	वाताय कपिला विद्युत	कपिल वर्ण की विद्युत उत्पातित वायु को सूचित करती है या ज्ञापित करती है।

167.	ब्राह्मणाय हितम्	ब्राह्मण के लिए हितकर या कल्याणकर।
168.	फलेभ्यो याति	फलों के लिए जाता है।
169.	नमस्कुर्मो नृसिंहाय	नृसिंह भगवान को नमस्कार हमलोग करते हैं,स्वानुकूल के लिए
170.	यागाय याति	यज्ञ के लिए जाता है।
171.	हरये नमः	हरि को नमस्कार
172.	नमस्कारोति देवान्	देवों को नमस्कार करता है।
173.	प्रजाभ्यः स्वस्ति	प्रजा या जनों का कल्याण या मंगल
174.	अग्नये स्वाहा	अग्नि देव उद्देश्यक स्वाहा। अग्नि में अग्नि को उद्देश्य करके हवनीय द्रव्य का हवन दान।
175.	पितृभ्यः स्वधा	पितरों के लिए स्वधा पितृ उद्देश्यक पिण्ड का दान।
176.	देत्येभ्योहरिरलम्	दैत्यों के लिए हरि समर्थ हैं, पर्याप्त हैं।
	वषडिन्द्राय	इन्द्र के लिए वषट् अर्थात इन्द्रोद्देश्यक हविद्रव्य का दान।
177.	स्वस्तिगोभ्योभूयात्	गो पशुजाति का कल्याण होवे।
178.	न त्वां तृणं वा मन्ये तृणाय	तुमको रवर के बराबर नही मानता हूँ।
179.	न त्वां नावंमन्नंवा मन्ये	मैं तुमको नाव या अन्न के बराबर नही मानता हूँ।
180.	न त्वां शुनेमन्ये	तुमको कुत्ते के लिए नही मानता हूँ अर्थात् तुमको कुत्ते के बराबर नही मानता हूँ।
181.	ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति	गांव को या गांव के लिए जाता है।
182.	पन्थानं गच्छति	रास्ता को जाता है।
183.	मनसां हरिं भजति	मन से हरि को भजता है।
		अथ अपादान कारक
184.	ग्रामादायाति	गाँव से आता है।
185.	धावतोऽस्वात्पतति	दौड़ लगाते हुए घोड़े से गिरता है।
186.	वृक्षस्यपर्णपतति	वृक्ष का पत्ता गिरता है।
187.	पापाज्जुगुप्सते	पाप विषयक कर्म में प्रवृत्त नही होता है।
188.	पापात् विरमति	पाप कर्म से विराम होता है। अर्थात पाप कर्म करने में प्रवृत्त नही होता है।
189.	धर्मात्प्रमाद्यति	धर्म कार्य से प्रमाद करता है। धर्म कार्य में मोहित होता है।
190.	चौराद्विभेति	चोर से डरता है।
191.	चौरात्त्रायते	चोर से रक्षा करता है।
192.	अरण्ये विभेति भायते	जंगल में डरता है अर्थात जंगल में रहने वाले हिंसक प्राणियों से डरता है जंगल में रक्षा करता है अर्थात जंगल में रहने वाले हिंसक जीवों से रक्षा करता है।
193.	अध्ययनात्पराजयते	अध्ययन से पराजित होता है या पढाई से ग्लानि करता है।
194.	शत्रून्पराजयते	शत्रुओं को पराजित करता है या तिरस्कार करता है।
195.	यवे भ्योगां वारयति	यव के चरने में प्रवृत्त गौ को यवों में हटाता है या हांकता है।
196.	यवे भ्योगां वारयति क्षेत्रे	यव के खेत में यव को गौ चरने या खाने न पाये अतः यव से गौ को हटाता है।
197.	मातुर्निलीयते कृष्णः	माता यशोदा जी से श्री कृष्ण भगवान छिपते है या लुकाते हैं।
198.	चौरान् न दिदृक्षते	चोरों को देखने की इच्छा नहीं करता है।
199.	देवदत्तात् यज्ञदत्तोनिलीयते	देवदत्त से यज्ञदत्त छिपता है या लुकाता है।
200.	उपाध्यायादधीते	उपाध्याय से नियमपूर्वक पढ़ता है।
201.	नटस्य श्रृणोति	नट का सुनता है अर्थात् नट सम्बन्धी गाथा या उसके द्वारा कही गयी बातों को सुनता है।
202.	ब्राह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते	ब्रह्मा या विधाता से प्रजा जन या संसार उत्पन्न या जायमान है।
203.	हिमवतः गंगा प्रभवति	हिमालय से गंगा प्रकाशित होती है अर्थात् गंगा हिमालय से सर्वप्रथम निकली हुई लोगों को दिखाई दी।

204.	प्रासादात् प्रेक्षते	महल से देखता है अर्थात् महल के छत पर चढकर महल के छत से देखता है।
205.	आसनात्प्रेक्षते	आसन से देखता है अर्थात आसन पर चढ़ कर तब आसन से देखता है।
206.	श्वसुराजिहेति	श्वसुर (पति के पिता) से लज्जा करती है लजाती है अर्थात स्वसुर को देखकर लजाती है।
207.	कस्मात् त्वंनद्याः	तुम कहां से, नदी से
208.	वनाद्ग्रामोंयोजनंयोजने वा	वन से गांव एक योजन है या एक एक योजन पर है।
209.	कार्तिक्याआग्रहापणीमासे	कार्तिक माह से अगहन मास एक महीने पर पड़ता है कार्तिक माह से अगहन मास एक महीने के बाद आता है।
210.	अन्योभिन्न इतरो वा कृष्णात्	कृष्ण से अन्य भिन्न है या कृष्ण से अलग
211.	आरात् वनात्	वन के समीप
212.	ऋते कृष्णात्	कृष्ण के बिना या अलावा
213.	पूर्वोग्रामात्	गांव से पूरब
214.	चैत्रात्पूर्वः पूर्वफाल्गुनः	चैत्र माह से पहले फाल्गुन माह
215.	पूर्वं कायस्य	शरीर का पूर्व भाग
216.	प्राक् प्रत्यग् वा ग्रामात्	गांव सें पहले या गांव से पूरब तरफ
217.	दक्षिणा ग्रामात्	गांव से दक्षिण दिशा की ओर
218.	ग्रामाद् वहिः	गांव से बाहर
219.	अपरि हरेःसंसारः	विष्णु को छोडकर संसार है। विष्णु की सत्ता को छोडकर संसार की सत्ता स्वीकार की गयी है।
220.	परि हरैः संसारः	विष्णु को छोड़ अर्थात विष्णु की सत्ता को छोड या उनके बाद संसार है या उसकी सत्ता है।
221.	आ मुक्तेः संसारः	मोक्ष के पहले या मुक्ति तक संसार है।
222.	आसकलात् ब्रह्म	ब्रह्म सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके।
223.	प्रद्युम्नः कृष्णात्प्रति	प्रद्युम्मन कृष्ण के प्रतिनिधि
224.	तिलेभ्यः प्रतियच्छतिभाषान्	तिलों से उर्द को बदलता है या विनिमयक करता है।
225.	शतात्बद्धः	सौ रूपये से बांधा गया अर्थात निश्चित काल तक लिया गया ऋण वापस न करने पर बांध लिया गया।
226.	शतेन वन्धितः	सौ रूपये अधमर्ण (सौ रूपये ऋण लेने वाला) सौ रूपये देने वाले उत्मर्ण से बांधा गया।
227.	जाड्यात् जाड्येन वा वद्धः	मूर्खता से बांधा गया या मूर्खता द्वारा बांधा गया।
228.	धनेनकुलम्	धन के कुलीन या खानदानी
229.	बुद्धया मुक्तः	बुद्धि से मुक्त या छूट गया अर्थात बन्धन मुक्त हो गया।
230.	धूमादग्निमान्	धूम से अग्नि वाला
231.	नास्तिघटोऽनुपलब्धेः	घट नही है, प्राप्ति न होने से।
232.	पृथग् रामेण रामम् वा	राम से अलग या राम से अलग।
233.	विना नाना रामेण रामम् वा	राम के अलावा या राम के अभाव में।
234.	स्तोकेन स्तोकाद् वा मुक्तः	थोडे से या कुछ से छूट गया।
235.	स्तोकेन विषेण हतः	थोडे से या कुछ अल्प विष से मारा गया।
236.	ग्रामस्य दूरं दूरात् दूरेण वा	गांव के दूर गांव के दूर से।
237.	ग्रामस्य अन्तिकम् अन्तिकात् अन्तिकेन	गांव के समीप या गांव के समीप से या गांव के समीप द्वारा।
238.	दूरः पन्थाः	रास्ता दूर

239.	राज्ञः पुरुषः	राजा का पुरुष या आदमी सिपाही
240.	सतां गतम्	सज्जनों जाना हुआ या सज्जन सम्बन्धी गमन
241.	सर्पिषो जानीते	घृत सम्बन्धी जानकारी अर्थात घृत के द्वारा प्रवृत्त हो रहा है।
242.	मातुः स्मरति	माता का स्मरण करता है या मातृ सम्बन्धी विषय को स्मरण करता है।
243.	एधोकस्योपस्कुरुते	ईंधन अर्थात् जलौनी लकड़ी और जल सम्बन्धी दोष को परिष्कृत करता है अर्थात् शोषण गन्ध प्रव्याधान आदि द्वारा दोनों को परिष्कृत करता है।
244.	भजेशम्भोश्चरणयोः	शिव के दोनो चरणों को भजता हूँ।
245.	फलानां तृप्तः	फल सम्बन्धी संतुष्टि अर्थात् फलों से तृप्ति
246.	अनस्यहेतोर्वसति	अन्न के कारण निवास करता है।
247.	केन हेतुना वसति	किस हेतु से वास करता है।
248.	कस्य हेतोः	किस हेतु से सम्बन्ध अर्थात् हेतु से किसका सम्बन्ध
249.	किं निमित्तं वसति	किस कारण निवास करता है।
250.	केन निमित्तेनवसति	किस कारण से निवास करता है।
251.	कस्मै निमित्ताय वसति	किस निमित्त के लिए निवास करता है।
252.	किंकारणम् कोहेतुः	क्या कारण कौन हेतु,
253.	किम्प्रयोजनम्	क्या प्रयोजन
254.	ज्ञानेन निमित्तेन हरिः सेव्य	ज्ञान निमित्त से हरि सेवनीय है अर्थात हरि सेवा में ज्ञान कारण है।
255.	ज्ञानाय निमित्ताय	ज्ञान निमित्त के लिए
256.	ग्रामस्य दक्षिणतः	गांव के दक्षिण दिशा से
257.	ग्रामस्यपुरः पुरस्तात्	गांव के आगे या गांव से आगे, गांव के आगे से
258.	ग्रामस्य उपरि उपरिष्टात्	गांव के ऊपर या गांव के ऊपर से या गांव के उत्तर या उत्तर से
259.	दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य	दक्षिण दिशा से गांव को, दक्षिण दिशा से गांव का।
260.	दूरं निकटं ग्रामस्य ग्रामाद् वा	गांव के निकट अर्थात् समीप गांव से दूर।
261.	सर्पिषो ज्ञानम्	घृत (घी) सम्बन्धी ज्ञान अर्थात साधन भूतघी, तत्सम्बन्धी ज्ञान की प्रवृत्ति।
262.	मातुः स्मरणम्	मातृ सम्बन्धी स्मरण या माता का स्मरण।
263.	सर्पिषोदयनम् ईशनं वा	घृत का उठना या उठाव या उन्नयन अथवा घृत की रक्षा, दान अथवा घृ सम्बन्धी तेजबल।
264.	एकोदकस्योपस्करणम्	इंधन अर्थात जलौनी लकड़ी और जल का संचय करना या शुद्धि करण करना
265.	चौरस्यरोगस्यरूजा	चोर के रोग सम्बन्धी पीड़ा अर्थात् रोग चोर को व्याधिजन्य सन्तापादि से पीड़ि कर रहा है।
266.	रोगस्य चौरज्वरः रोगस्य चौरः सन्तापो वा सर्पिषो नाथनम्	रोग सम्बन्धी चोर को ज्वर या पीड़ा अर्थात् रोग कर्तृक चोर को ज्वर तत्सम्बन्धी पीड़ा। रोग सम्बन्धी चोर को सन्ताप अर्थात् रोग कर्तृक चोर को ज्वर घृत सम्बन्धी आर्शीवाद अर्थात मुझको घृत होवे एतत् सम्बन्धी आर्शीवाद इच्छा।
267.	माणवकनाव्यनम्	बालक सम्बन्धी आर्शीवाद या याञ्चा अर्थात् बालक होवे एतत् सम्बन्धी आर्शीव की याञ्चा।
268.	चोरस्योज्जासनम्	चोर की हत्या या पिटाई अर्थात चोर को मार डालना या पिटना।
269.	चोरस्यनिप्रहणनम् प्रणिहननम्	चोर को मारना, पीटना, ताड़ना हनन करना।
270.	निहननम् प्रहणनम्	चोर सम्बन्धी हिंसा या चोर की हिंसा या चोर को मारना।
271.	चोरस्योन्नाटनम्	चोर सम्बन्धी हिसा करना चा चोर को मार डालना।

272.	चोरस्य क्राधनम्	पापी को मारना, पीटना, हिंसा करना।
273.	वृषलस्य पेषणम् धाना पेषणम्	भुजा हुआ जौ को पीसना चूर्ण करना।
274.	शतस्य व्यवहरणं	सौ रूपये का लेन देन करना या जूआ के खेल में सौ रूपये का वाजी या दांव
275.	पणनं वा	पर रखना या हार जीत में लेना देना या क्रय विक्रय व्यवहार में सौ रूपये देकर खरीदना।
276.	शलाका व्यवहारः	पेन्सिल से गिनना।
277.	ब्राह्मण प्रणनम्	ब्राह्मण सम्बन्धी स्तुति करना या ब्राह्मण को प्रणाम करना।
278.	शतस्य दीव्यति	सौ रूपये का पासा या सौ रूपये से जूआ खेलता है या सौ रूपये से क्रय विक्रय रूप व्यवहार करता है।
279.	ब्राह्मणं दीव्यति	ब्राह्मण की स्तुति करता है।
280.	शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति	सौ रूपये की जूआ में बाजी या शर्त रखता है या सौ रूपये को जूआ के खेल में रखता है।
281.	अग्नये छागस्य हविषोवपायामेदसः प्रेष्य अनुब्रूहि वा	मैत्रावरूण के प्रति अध्वर्युकर्ता का यह निर्देश है कि अग्नि देव के लिए या अग्नि देव के उद्‌देश्य दिया जाने वाला बकरी या बकरा तथा उसके बच्चे का मांस (जो हवनीय पदार्थ के रूप में है) चर्बी बसा, या भोजन योग्य हवनीय पदार्थ को प्रकाशित करो।
282.	पञ्चकृत्वोऽह्नो भोजनम्	पांचवा बार दिन का भोजन अर्थात दिन में पांच बार भोजन
283.	द्विरह्नो भोजनम्	दिन का दो बार भोजन अर्थात दिन में दो बार भोजन।
284.	द्विरहन्यध्ययनम्	दिन में दो बार पढ़ना।
285.	कृष्ण कृतिः	कृष्ण सम्बन्धी यश या सृष्टि या कीर्ति कृष्ण का यश अथवा कीर्ति सृष्टि कर्तृक यश कीर्ति, सृष्टि, रचना।
286.	जगतःकर्ता कृष्णः कृतिः	जगत या संसार के सृष्टि कर्ता (करने वाले) कृष्ण।
287.	नेता अश्वस्य स्रुध्नस्य स्रुध्नंवा	स्रुध्नदेश के घोडे का संचालक या स्रुध्न देश के घोड़े को ले जाने वाला।
288.	कृतपूर्वी कटम्	जिसके द्वारा चटाई को पहले बुन दिया गया।
289.	आश्चर्यगवांदोहोऽगोपेन	आश्चर्य है कि जो ग्वाला नही है उससे गौ का दोहन या गाय दुह ली गयी।
290.	भेदिका विभित्सावा रूद्रस्य जगतः	रूद्रकर्तृक संसार का भेदक या भेदन की इच्छा अर्थात रूद्र जगत की सृष्टि का भेदक या भेदन की इच्छा वाला।
291.	विचित्रा जगतः हरे हरिवां	हरि का या हरि द्वारा की गयी संसार की सृष्टि संरचना अदभुत है।
292.	राज्ञांमतोवुद्धः पूजितो वा	राजाओं की वर्तमान कालीन इच्छा या वर्तमान कालीन ज्ञान विषय या वर्तमान कालीन पूजा।
293.	इदमेषामासितं शयितं गतं भुक्तं वा	इसका यह बैठका अर्थात बैठने का स्थान है। इसका यह शयन है अर्थात यह सोने का स्थान है। यह इसका गया हुआ स्थान है यह इसका भोग किया हुआ है।
294.	कुर्वन् कुवाणो सृष्टिं हरिः	विष्णु भगवान सृष्टि की या रचना को करते हुए।
295.	हरिं दिदृक्षुः अलङ्करिष्णुर्वा	विष्णु भगवान को देखने की इच्छा करने वाला या अलंकृत करने वाला।
296.	दैत्यान् घातुको हरिः	राक्षसों को मारने वाला विष्णु भगवान।
297.	लक्ष्म्याः कामुको हरिः	लक्ष्मी के इच्छुक विष्णु भगवान अर्थात लक्ष्मी को चाहने वाले विष्णु
298.	जगत्सृष्टवा	संसार की रचना करके
299.	सुखं कर्तुम्	सुख करने के लिए
300.	विष्णुनाहताः दैत्याः	विष्णु भगवान के द्वारा राक्षस मारे गये। अर्थात विष्णु ने राक्षसों को मारा।
301.	दैत्यान् हुतवान् विष्णुः	विष्णु ने दैत्यों या राक्षसों को मारा।

302.	ईषत्करः प्रपञ्चोहरिणा	हरि द्वारा संसार का प्रपञ्च (विस्तार) करने वाले।
303.	सोमं सवमानः	सोमरस को पान करने वाले।
304.	आत्मनं मण्ड्यमानः	अपने को अलङ्कृत करते हुए
305.	वेदमधीयन्	वेद को पढ़ते हुए।
306.	कर्तालोकान्	लोक को बनाने वाले या संसार को करने वाले।
307.	मुरस्यमुरं वा द्विषन्	मुर नामक राक्षस की शत्रुता करते हुए अर्थात् मुरनामक से द्वेष करते हुए।
308.	ब्राह्मणस्य कुर्वन्	ब्राह्मण से सम्बन्धित कार्य करते हुए।
309.	नरकस्यजिष्णुः	नरक को जितने वाले या नरक के विजेता।
310.	सतः पालकोऽवतरतिः	सज्जनों से पालनकर्ता अवतरित हैं अर्थात् सज्जन सम्बन्धी पालक का अवतर
311.	बज्रं गामी	बज्र को जाने वाला।
312.	शतं दायी	सौ रूपये को देने वाला।
313.	मया ममवा सेव्यो हरिः	मुझसे या मेरे से हरि सेवनीय है।
314.	गेयोमाणवकः साम्नाम्	सामवेदों के गान में बालक गाने योग्य है।
315.	नेतव्याव्रजं गावः कृष्णेन	कृष्ण के द्वारा गाये व्रज को ले जानी चाहिए अर्थात् कृष्ण गायों को व्रज को ले
316.	तुल्यः सदृशः समोवा कृष्णस्य कृष्णेनवा	कृष्ण के या कृष्ण से तुल्य सदृश या बराबर।
317.	आयुष्यं चिरञ्जीवितं कृष्णाय कृष्णस्य भूयात्	कृष्ण के लिए आयु होवे या कृष्ण का जीवन बहुत काल तक रहे अर्थात् कृ आयु वाले और बहुत काल तक जीवें।
318.	भद्रं भद्रं कुशलं निरामयम्	भला, शुभ, कुशल निरोग
319.	सुखं शम् अर्थः प्रयोजनम् पथ्यं वा भूयात्	सुख, कल्याण, अर्थ प्रयोजन का हितकर होवे।

अथ अधिकरण कारक

320.	कटे आस्ते	चटाई पर बैठा या बैठता है।
321.	स्थल्यां पचति	बटलोई में पकाता है।
322.	मोक्षेइच्छाऽस्ति	मोक्ष में अर्थात मोक्ष विषय में इच्छा करता है।
323.	सर्वस्मिन्नात्माऽस्ति	सभी में आत्मा है।
324.	वनस्यदूरे, अन्तिकेवा	वन के दूर में या समीप में अर्थात् वन से दूर या समीप में।
325.	अधीती व्याकरणे	व्याकरण में अध्ययन हुआ, व्याकरण विषयक अध्ययन हुआ।
326.	साधुः कृष्णोभातरि	माता में या माता के लिए कृष्ण सज्जन है।
327.	असाधुः मातुलेकृष्णः	मामा में या मामा के प्रति कृष्ण असज्जन है।
328.	चर्मणि द्विपिनंहन्ति	चमड़ा (बाघाम्बर) के निमित्त व्याघ्र को मारता है।
329.	दन्तयोर्हन्तिकुञ्जरम्	दो दांत के निमित्त या दांत के लिए हाथी को मारता है।
330.	केशेषुचमरीं हन्ति	वालों के निमित्त या बालों के लिए चंवरी गाय को मारता है।
331.	सीम्निपुष्कलकोहतः	अण्डकोश के निमित्त गन्धमृग को मारता है।
332.	वेतनेन धान्यं लुनाति	वेतन (भृति मूल्य) से अनाज को काटता है।
333.	गोषु मानासुगतः	गायों को दुह लेने पर चला गया।
334.	सत्सुतरत्सुअसन्तः आसते	तैरने पर भी अर्थात् संसार रूपी सागर पार करने पर बैठे रहते हैं अर्थात् पार न हो पाते।
335.	असत्सुतिष्ठत्सु सन्तः तरन्ति	सन्त लोग बैठे न रहने पर पार हो जाते हैं अर्थात् संसार रूपी सागर पार हो जाते हैं।
336.	सत्सु तिष्ठत्सु असन्त स्तरक्ति असत्सु तरत्सु	दुष्ट लोग बैठे रहने पर भी संसार रूपी सागर को पार कर जाते हैं सज्जन तो संसार रूपी सागर को पार न होते बैठा रहता है।

337.	सन्तस्तिष्ठन्तिः स्तरन्ति	रोदन करने पर अर्थात् रोते हुए बालक का अनादर करके चला गया।
338.	रूदति रूदतोवा प्राव्राजीत्	गायों का स्वामी या गायों में स्वामी।
339.	गवां गोषु वा स्वामी	गायों का या गोवों में प्रसव हुआ
340.	गवां गोषुवा प्रसूतः	भगवान का पूजन क्रिया में प्रवृत्त या प्रवीण, विष्णु के पूजन सम्बन्धी क्रिया में
	हरि पूजने हरि पूजनस्य	प्रवृत्त या कुशल
341.		बैलगाडी में बैल जुता हुआ।
342.	आयुक्तो गौः शकटेः	मनुष्यों के बीच में द्विज ब्राम्हण या मनुष्यों में द्विज ब्राम्हण श्रेष्ठ है।
343.	नृणां नृषु वा द्विजः श्रेष्ठः	गायों के बीच में गायों में काली गाय अधिक दूध वाली
344.	गवां गोषुवा कृष्णा बहुक्षीरा	जाने वालों के बीच में या जाने वालों में धावन दौडना क्रिया तेज
345.	गच्छतां गच्छत्सुधावञ्छीघ्रः	छात्रों के बीच में या छात्रों में मैत्री चतुर चालाक है।
346.	छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः	मथुरा देशवासीय पटना देशवासीय से अतिधनाढ्य है।
	मथुरा पाटलिपुत्रकेभ्योः	
347.	आढ्यतरा	माता में हितकारी या कुशल
348.	मातरिसाधुर्निपुणोवा	राजा का नोकर दक्ष या चतुर है।
349.	निपुणोराज्ञो भृत्यः	माता के प्रति या माता में हितकारी अथवा सज्जन
	साधुर्निपुणोवामातरं	
350.	प्रति परि अनुवा	हरि में आवद्ध हरि से आसक्त, हरि से संलग्न अथवा हरि में आवद्ध हरि से
	प्रसति उत्सुको वा हरिणा	आसक्त, हरि से संलग्न
351.	हरौवा	मूल में देवी का अहवान करें, श्रवण में विर्सजन करें अर्थात् मूल नामक नक्षत्र
352.	मूलेना वाहयेद् देवीं श्रवणेन	में दुर्गा जी का आहवान करें और श्रवण नक्षत्र आने पर विर्सजन करें।
353.	विसर्जयेत्	यह आज खाकर दो दिन में खाने वाला या दो दिन से खाने वाला
	अद्य भुक्त्वांऽयं द्वयहे	
354.	द्वयहाद् वा भोक्ता	एक कोश पर या एक कोश से निशाना का भेदन करें।
	क्रोशे क्रोशाद्वय वालक्ष्यं	
355.	विध्येत्	लोक में या लोक से (संसार से) विष्णु असाधारण है।
	लोके लोकाद् वा	
356.	अधिकोविष्णुः	हरि के गुण परार्ध संख्या से अधिक है अर्थात् अनन्त गुण है।
357.	उपपरार्धे हरेर्गुणाः	राम भूमि में स्वामी हैं अर्थात् रामभूमि के मालिक हैं राजा है।
358.	अधिभूविरामः	पृथ्वी राम में स्थित अर्थात पृथ्वी के राम स्वामी।
359.	अधि रामे भूः	राम के अधीन
360.	रामाधीना	इसमें मुझको करना होगा, इसमें मुझको नियोजित अर्थात् ईश्वरत्व प्रदान करें।
	यदत्रमामधिकरिष्यति	

●

द्वितीय भाग

अथ समास प्रकरणम्

अव्ययी भाव समास

सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	पर्यभूषयत्	सजाया गया, सवांरा गया
2.	अनुव्यचलत्	पीछे गया या पीछे चला
3.	भूतपूर्वः	पहले था या पूर्व में था
4.	जीभूतस्येव	जीभूत की तरह
5.	अपदिशम्	दो दिशाओं के मध्य का भाग
6.	अपदिशम्, अपदिशेन	दो दिशाओं के मध्य भाग से
7.	अपदिशम्, अपदिशे	दो दिशाओं के मध्य भाग में
8.	अधिहरि	हरि में (हरिनिष्ठ)
9.	अधिगोपम्	रक्षा करने वाले या गाय की रक्षा करने वाले में
10.	उपकृष्णम्	कृष्ण के समीप
11.	समयाग्रामम्	गांव के समीप
12.	निकषालंकाम्	लंका के समीप
13.	आरात् वनात्	वन के समीप या निकट
14.	समद्रम्	मद्रदेश की समृद्धि या ऐश्वर्य
15.	दुर्यवनम्	यवनदेश वासियों के वृद्धि का अभाव या विकास का अभाव
16.	निर्मक्षिकम्	मक्षिका रहित स्थान या सूनसान स्थान
17.	अतिहिमम्	वर्फ का ध्वंस होना, गिरना या सर्वथा अभाव
18.	अतिनिद्रम्	वर्तमान समय में निद्रा का न आना
19.	इतिहरि	हरि शब्द का पादुर्भाव
20.	अनुविष्णु	विष्णु के बाद या पश्चात
21.	अनुरूपम्	रूप के मुताबिक या रूप के योग्य
22.	प्रत्यर्थम्	प्रत्येक शब्द का अर्थ
23.	सहरि	हरि के सदृश्य या तुल्य
24.	अनुज्येष्ठम्	श्रेष्ठता या अनुवर्ती क्रम
25.	सचक्रम	चक्र या चक्का के साथ
26.	ससखि	सखि के तुल्य या समान
27.	सक्षत्रम्	क्षत्रियों की सम्पत्ति या उनके अनुरूप
28.	सतृणमत्ति	तृण या खास या खर तक खा जाना, अर्थात सम्पूर्ण खा जाना
29.	साग्नि	अग्नि शब्द प्रतिपादक ग्रन्थ का पढ़ना
30.	यावच्छलोकम्	जितने श्लोक हैं उतनी बार विष्णु को प्रणाम
31.	शाकप्रति	शाक की मात्रा
32.	अक्षपरि	पाशा की विपरीत या उल्टा
33.	शलाकापरि	शलाका के विपरीत या उल्टा
34.	एक परि	एक के विपरीत या उलटा
35.	अपविष्णु संसारः	विष्णु भगवान को छोड़कर संसार
36.	परिविष्णु	विष्णु को छोड़कर
37.	वहिर्वनम् वहिर्वनात्	जंगल के बाहर

38.	प्राग्बनम्, प्राग्वनात्	जंगल के पहले
39.	आमुक्ति संसारः	मुक्ति के पूर्व या पहले संसार
40.	अवालं हरिभक्तिः	वाल्यकाल में हरि की भक्ति
41.	अग्निमभि	अग्नि के अभिमुख होकर छोटे कीडे गिरते हैं।
42.	प्रत्यग्नि	आग के सम्मुख या सामने छोटे कीड़े गिरते हैं।
43.	अनुवनम्	वन के समीप या सन्निकट
44.	अनुगङ्गम् वाराणसी	गंगा के दीर्घता के तुल्य दीर्घता
45.	तिष्ठद्गु	गायें जिस समय बैठती हैं। अर्थात गायें जब चरकर लौटती हैं उस समय गायें दुही जाती हैं, वह समय गायों के दोहन का काल है।
46.	आयतीगवम्	गायों के आगमन का काल
47.	पारेगंगादानय्– –गंगापारात्	गंगा के पार से आनय
48.	गङ्गा मध्यात्	गंगा के मध्य से
49.	द्विमुनी	विद्या और वंश के सम्बन्धित दो मुनी
50.	व्याकरणस्य त्रिमुनी	व्याकरण से सम्बन्धित तीन मुनि
51.	एक विशंति– –भारद्वार्जम्	इक्कीस भारद्वाज
52.	सप्तगङ्गम्	सात गंगा का मिलन या एकत्रीकरण, सप्तगंगा का स्थल
53.	द्वियमुनम्	दो यमुना का एकत्रीकरण
54.	उनमत्तगंङ्गनामदेशः	उनमत्त नाम की गंगा जिस देश में।
55.	शरदः समीपम्	शरद ऋतु के समीप या निकट
56.	प्रतिविपाशम्	विपाशा नदी के प्रति या विपाशा नदी की ओर
57.	उपजरसम्	वृद्धावस्था के निकट
58.	प्रत्यक्षम्	आंख के सामने
59.	परोक्षम्	आंख के सामने न या ऑख से ओझल
60.	समक्षम्	आंख के सामने
61.	अन्वक्षम्	आंख के पीछे, या सामने न
62.	उपराजम्	राजा के समीप या निकट
63.	अध्यात्मम्	आत्मा में या आत्मा के समीप
64.	उपचर्मम् उपचर्म	चर्म के समीप या निकट
65.	उपनदम, उपनदि	नदी के समीप
66.	उपपौर्णमासम्, उपपौर्णमासि	पौर्णमासी के समीप, अगहन या माघ
67.	उपग्रहायणम्, उपग्रहायणि	अगहन के निकट कार्तिक या पौष
68.	उपसमिधम्, उपसमित्	यज्ञीय लकड़ी समीप या सन्निकट
69.	उपगिरम्, उपगिरि	पर्वत के समीप या निकट
70.	लोहितगङ्गम	लाल वर्ण की गंगा जिस देश में
28.	समृद्धिः	वृद्धि की अधिकता

अथ तत्पुरुष समास

सं0	शब्द	अर्थ
1.	पञ्चराजम्	पांच राजाओं का एकत्रीकरण
2.	कृष्णश्रितः	कृष्ण से सेवित तथा रक्षित
3.	दुःखातीतः	बीता हुआ दुःख या काटा गया दुःख
4.	ग्रामगमी	गांव की ओर जाने वाला
5.	अन्नंबुभुक्षु	अनाज को खाने वाला
6.	स्वायङ्कृतिः	स्वयङ्कृत नामक ऋषि का सन्तान
7.	खटवारूढः	चारपाई पर बैठने वाला मनुष्य समीक्षा करने में असमर्थ होता है।
8.	सामिकृतम्	निन्दा किया
9.	मासप्रमितः	महीने के प्रतिपद तिथि का चन्द्रमा
10.	मुहुर्तसुखम्	एक क्षण सुख
11.	शङ्कुलाखण्डः	सुपारी काटने का औजार से टुकडा करने वाला या सरौता से टुकडा करने वाला
12.	धान्यार्थः	अनाज से धन
13.	अक्ष्णाकाणः	ऑख से काना
14.	मासेनपूर्वः	महीने के पहले
15.	मातृसदृशः	माता के समान
16.	पितृसमः	पिता के तुल्य
17.	माषोनम्	माषा नाम परिमाण विशेष से कम
18.	माषविकलम्	एक माषा परिमाण कम
19.	वाक्कलहः	वाणी से झगड़ा
20.	आचार निपुणः	व्यवहार से कुशल
21.	गुडमिश्रः	मीठा से मिला हुआ
22.	आचारश्लक्षण	व्यवहारं हेतु से कुशल
23.	गुडसम्मिश्राधाना	मीठा से भलीभांति मिला हुआ धान का लावा
24.	मासावरः	महीने से पूर्व या पहले
25.	हरित्रातः	विष्णु से पालित
26.	नखभिन्नः	नखों से भेदन किया गया
27.	नखर्निभिन्नः	नखों से पूर्णरूपेण भेदन किया गया या छिला गया
28.	दात्रेणलूनवान्	दॉत वाले हंसिया से काटा गया
29.	काठेठेःपचतितराम्	जलौनी लकड़ी से अच्छी तरह से पकाया गया
30.	वातच्छेद्यंतृणम्	वायु के बहने से टूटने योग्य या छेदन करने योग्य खर अर्थात अत्यन्त कमजोर
31.	काकपेया नदी	कोओं के द्वारा पान करने योग्य नदी अर्थात् अल्पजल
32.	दध्योदनः	दही से संस्कारित भात
33.	गुडधानाः	मीठा से मिला हुआ धान का लावा या भुजा
34.	यूपदारू	खूंटा के लिएं लकड़ी
35.	रन्धनायस्थाली	रंधना या नक्काशी के बटलोई

36.	द्विजार्थः सूपः	ब्राह्मण के लिए पकी हुई दाल (पहीती)
37.	द्विजार्थ यवागू	ब्राह्मण के लिए हलुआ
38.	द्विजार्थ पयः	ब्राह्मण के लिए दुग्ध
39.	भूतवलिः	भूतों के लिए बलि या उनके लिए आहुति या भेंट
40.	गोहितम्	गायों के लिए कल्याणकारी
41.	गोसुखम्	गायों के लिए सुखकर
42.	गोरक्षितम्	गायों के लिए रक्षित
43.	चोरभयम्	चोर या चोरों से भय या डर
44.	वृकभीतः	भेड़िया से डरा हुआ
45.	सुखापेस्तः	सुख से गया हुआ या सुख से बोझिल
46.	कल्पना पोढः	कल्पना से हटाया गया
47.	चक्रमुक्तः	चक्र या चक्का से मुक्त
48.	स्वर्गपतितः	स्वर्ग से गिरा हुआ
49.	तरङ्गापत्रस्तः	पानी की लहर से डरा हुआ
50.	प्रसादात्पतितः	महल से गिरा हुआ
51.	स्तोकान्मुक्तः	थोडे या लघु से या कुछ से छोडा गया
52.	अल्पान्मुक्तः	थोडे से छोडा गया
53.	अन्तिकादगतः	नजदीकी से या समीप से या यहां से आया
54.	अभ्याशादागतः	नजदीकी से आया
55.	दूरादागतः	दूर से आया
56.	विप्रकृष्टादागतः	दूरवर्ती से आया
57.	कृच्छादागतः	कठिनाई से आया
58.	राजपुरुषः	राजा का पुरूष या सिपाही
59.	ब्राह्मण याजकः	ब्राह्मण का यज्ञ कराने वाला
60.	देवपूजकः	देवों की पूजा करने वाला या पुजारी
61.	सर्वश्वेतः	सभी में सफेद
62.	इध्मप्रवश्चनः	ईधन या जलौनी लकड़ी को काटने वाला औजार आरी या कुल्हाडी
63.	नृणांद्विजः श्रेष्ठः	मनुष्यों ब्राह्मण श्रेष्ठ
64.	सर्पिषोज्ञानम्	घृत की जानकारी
65.	सतांषष्ठः	सज्जनों की छठी संख्या
66.	काकस्य कार्ष्यम्	कोवे का कालापन
67.	ब्राह्मणस्य शुक्लाः	ब्राह्मण का शुक्ल अर्थात ब्राह्मण के दांत श्वेत
68.	फलानां सुहितः	फल सम्बन्धी सन्तुष्टि अर्थात फलों से सन्तुष्टि
69.	द्विजस्य कुर्वन् कुर्वाणोवा	ब्राह्मण का करता हुआ अर्थात ब्राह्मण का नोकर करता हुआ
70.	ब्राह्मणस्य कृत्वा	ब्राह्मण का करके अर्थात ब्राह्मण का कार्य करके
71.	ब्राह्मणस्य कर्त्तव्यम्	ब्राह्मण सम्बन्धी करणीय कार्य/कर्म
72.	स्वकर्त्तव्यम्	स्वकीय करणीय कार्य या कर्म
73.	तक्षकस्य सर्पस्य	तक्षक सर्वका
74.	राज्ञांमतः बुद्धः पूजितो वा	राजा के इष्यमाण ज्ञायमान और पूज्यमान
75.	राजपूजितः	राजा से पूजित या सत्कारित

76.	इदमेषामासितं गतं शयितं भुक्तंवा	इसका यह बैठका है, इसका यह गया हुआ है, इसका यह शयन स्थान है इसका यह खाया हुआ है।
77.	आशचर्योगवां दोहोऽगोपेन	आश्चर्य है कि ग्वाला नही है गायें दुह ली गयी हैं।
78.	अपांस्रष्टा	जल के निर्माणकर्ता
79.	ब्रजस्य भर्ता	ब्रज का भरण–पोषण करने वाला
80.	ओदनस्य पाचकः	भात को पकाने वाला
81.	इक्षुभक्षिका	ईख को चूसने वाला
82.	भूभर्ता	भूपति
83.	उद्दालपुष्पभञ्जिका	श्लेष्मातक पुष्पों का खेल
84.	भवतः शायिका	आपके शयन की चारपाई या शयनशीट
85.	दन्तलेखकः	दन्त के लेखन अर्थात दन्त निर्माण से जीवन चलाने वाला
86.	पूर्वकायः	शरीर का पूर्व भाग
87.	अपरकायः	शरीर का प्रथम भाग
88.	पूर्वनाभेः कायस्य	शरीर के नाभि का पूर्व भाग
89.	पूर्वश्छात्राणाम्	छात्र समुदाय के पूर्व
90.	मध्यान्हः	दिन का मध्यभाग अर्थात दोपहर
91.	सायान्हः	दिन का अन्तिम भाग अर्थात सायंकाल
92.	मध्यरात्रः	रात्रि का मध्यभाग या महानिशा
93.	पञ्चखटवी	पांच खटियों का एकत्रीकरण
94.	अर्धपिप्पली	पिपरी का आधा भाग
95.	ग्रामार्धः	गांव का अंश
96.	द्वितीयभिक्षा	भिक्षा का दूसरा भाग
97.	द्वितीय भिक्षायाः भिक्षुकस्य	भिक्षुक के भिक्षा का द्वितीय
98.	भिक्षा द्वितीयम्	भिक्षा दूसरी
99.	प्राप्तजीविकः	जिसको जीविका अर्थात नौकरी मिल गयी
100.	जीविकापन्नः	प्राप्त जीविका वाला अर्थात नौकरी वाला
101.	प्राप्त जीविका, आपन्नजीविका	प्राप्त जीविका वाली या नौकरी प्राप्त करने वाली महिला
102.	मासजातः	आये हुए का या उत्पन्न का माह
103.	द्वयह जातः, द्वयहजातः	दो दिन में उत्पन्न होने वाले का
104.	अक्ष शौण्डः	पाशा के खेल में प्रवीण
105.	ईश्वराधीनः	ईश्वर के आश्रित या मातहत
106.	साङ्काश्यसिद्धः	साङ्काश्य में उत्पन्न या ज्ञात
107.	आतप शुष्कः	धूप में सुखाया गया।
108.	स्थालीपक्वः	बटलोई में पका हुआ
109.	चक्रबन्धः	चक्र या चक्का में बंधा हुआ
110.	तीर्थध्वाङ्क्षः	तीर्थ स्थान में कौवा की तरह
111.	मासेदेयम् ऋणम्	महीने में देने योग्य कर्जा या महीने में दिया जाने वाला कर्ज
112.	पूर्वाह्णेगेयंसाम	दिन में बारह बजे के पूर्व गाये जाने वाला सामवेद

113.	अरण्येतिलका:, वनेकसेरूका:	यह दोनो संज्ञा शब्द है।
114.	पूर्वाह्णकृतम्,	दिन मे बारह बजे से किया गया
	अपंरात्रकृतम्	रात्रि के द्वितीय भाग में किया
115.	अहिनदृष्टम	दिन में देख गया
116.	तत्रभुक्तम्	वहां खाया
117.	अवतप्तेनकुलस्थितमेतत्	तपाये हुए पर नेवला खड़ा या नेवला का यह खड़ा होना अर्थात आखेटी नेवला का गर्म जमीन पर खड़ा होना। तपे हुए प्रदेश में नेवला अधिक समय तक खड़े नही रह सकते।
118.	गेहेशूर:	घर में प्रदर्शित वीरता
119.	गेहनर्दी	घर में गर्जना
120.	एकनाथ:	एक स्वामी, केवल स्वामी, या अकेले स्वामी
121.	सर्वयज्ञिका:	सभी यज्ञ सम्बन्धी विषय को पढ़ाते हैं या जानते हैं या कराते है अर्थात सभी यज्ञिक हैं।
122.	जरन्नैयायिका:	वृद्ध नैयायिक न्याय को पढ़ने अथवा जानते हैं
123.	पुराणमीमांसका:	प्राचीन मीमांसक मीमांसा विषय को पढते हैं या जानते हैं।
124.	नवपाठका:	नवीन पढने वाले
125.	केवल वैयाकरण:	मात्र व्याकरण विषय को पढने वाले या जानने वाले
126.	सर्वेषुकाम शमी	देश विशेष की संज्ञा
127.	सप्तर्षय:	मरीचीत्यादि सात ऋषि
128.	उत्तरा वृक्षा:	उत्तर पेड़
129.	पञ्चब्राह्मणा:	पांच ब्राह्मण
130.	पौर्व शाल:	पूर्वशाला में जो हुआ
131.	आपरशाल:	पहली शाला में जो हुआ
132.	पूर्वशाला प्रिय:	पहले की शाला में जो प्रिय हो जिसको
133.	षाण्मातुर:	कार्तिकेय
134.	पञ्चगवधन:	पांच गो रूप धन हो जिसको
135.	पञ्चगवम्	पांच गायों का एकत्रीकरण
136.	वैयाकरण खसूचि:	प्रक्रिया ग्रन्थ में प्रष्टव्य प्रश्न में विशेष रूप से स्मरण के लिए आकाश की ओर देखता है या दिखलाता है
137.	मीमांसकदुर्दुरूट:	जो मीमांसा के पढकर अथवा अन्य प्रकार से आक्षेप कराता है या दुराक्षेप करता है।
138.	पापनापित:	पापी नाई
139.	अणककुलाल:	छोटा कुम्भकार या अधम कुम्भकार
140.	घनश्याम:	बादलवर्ण के समान सांवला या राम या कृष्ण
141.	पुरूष व्याघ्र:	पुरूष व्याघ्र की तरह
142.	नृसोम:	मनुष्य या नर चन्द्रमा की तरह
143.	पुरूषो व्याघ्र इवशूर:	वीरता में बाघ की तरह वीर पुरूष
144.	नीलोत्पलम्	नील वर्ण का कमल
145.	कृष्णसर्प:	काला रंग का सांप
146.	रामोजामदग्न्य:	जमदाग्नि ऋषि के पुत्र परशुराम

147.	पूर्व वैयाकरणः	पहले के वैयाकरण
148.	अपराध्यापकः	प्रथम अध्यापक
149.	पश्चार्धः	प्रथम भाग का आधा
150.	श्रेणीकृताः	पूर्वशिल्प या कला के मूल्य से जीने में असमर्थ किन्तु वर्तमान में उसी कला के मूल्य से जीने में समर्थ
151.	कृताकृतम्	किया गया नही किया
152.	शाक पार्थिवः	शाक प्रिय राजा
153.	देव ब्राह्मणः	देव प्रिय ब्राह्मण या देव पूज्य ब्राह्मण
154.	सद्वैद्यः	अच्छे या कुशल वैद्य
155.	महावैयाकरणः	महान या उच्च कोटि के वैयाकरण
156.	उत्कृष्टोगौः	कीचड़ से निकाला गया गौ पशु बैल या गाय
157.	गोवृन्दारकः	गौ देवता
158.	कतरकठः	इन दोनों में कौन कठ शाखा को पढा है
159.	कतमकलापः	इन सभी में कौन कलापी ऋषि प्रोक्त ग्रन्थ को पढा है
160.	किंराजा	जो राजा प्रजा की रक्षा नही करता है क्या वह राजा है अर्थात निन्दित राजा
161.	महानवमी	श्रेष्ठ नवमी
162.	कृष्ण चतुर्दशी	कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी
163.	महाप्रिया	श्रेष्ठ प्रेयसी या अधिक प्रिय वाली
164.	पाचकस्त्री	भोजन पकाने वाली महिला या स्त्री
165.	दत्तभार्या	दी गयी पत्नी या स्त्री
166.	पञ्चमभार्या	पांचवी पत्नी या स्त्री
167.	स्रौघ्नभार्या	स्रुघ्न देश की स्त्री या पत्नी
168.	सुकेश भार्या	सुन्दर बा़ल वाली स्त्री या पत्नी
169.	ब्राह्मण भार्या	ब्राह्मण जाति की स्त्री
170.	पाचक जातीया	भोजन पकाने की विधि वाली
171.	पाचक देशीया	थोडा भोजन पकाने वाली
172.	इभ पोटा	स्त्री पुंस लक्षणों से युक्त हाथी या हथिनी
173.	इभ युवतिः	युवा अवस्था वाली हथिनी या हाथी
174.	अग्निस्तोकः	अल्प अग्नि
175.	उदश्वित् कतिपयम्	थोडा या अल्प कुछ मटठा
176.	गोगृष्टिः	पहली बार या एक बार बछडा या बछिया देने वाली गाय
177.	गो वशा	बांझ गाय
178.	गो वहेतः	गर्भ को नष्ट करने वाली गाय
179.	गोवष्कयणी	देर में व्याने (प्रसूत) वाली गाय या तरूणावस्था वाली गाय
180.	कठप्रवक्ता	कठ शाखा विषय पर प्रवचन करने वाला, या पढाने वाला
181.	कठश्रोत्रियः	वेद की कठ शाखा का अध्ययन करने वाला ब्राह्मण
182.	कठाध्यापकः	वेद की कठ शाखा को पढाने वाला
183.	कठधूर्तः	यर्जुवेद की कठशाखा में निष्णात ब्राम्हण
184.	गोमतल्लिकाः	प्रशंसित गो,
185.	गोमर्चिका, गोप्रकाण्डम, गवोद्धः गोतल्पजः	प्रशस्त गो

186.	कुमारी मतल्लिका	प्रशंशित या अवस्था विशेष कन्या या कुमारी
187.	यवखलती	सिर पर बाल रहित युवा स्त्री
188.	युवजरती	युवा अवस्था युक्त वृद्धावस्था वाली स्त्री अर्थात् युवावस्था वाली महिला में जरावस्था के धर्म का समागम होना
189.	भोज्योष्णम्	गरम भोज्य पदार्थ
190.	तुल्यश्वेतः	बराबर सफेद
191.	सदृशः श्वेतः	एक समान सफेद या स्वच्छ
192.	भोज्य ओदनः	खाने लायक भात
193.	कृष्ण सारंगः	काला मृग या कालापन मृग में विचित्र वर्ण वाला मृग
194.	कडार जैमिनिः जैमिनि कडारः	अभिमानी जैमिनी ऋषि
195.	कुमार श्रमणाः	कुमारी बौद्ध भिक्षुणी
196.	गो गर्भिणी	गर्भवती गौ
197.	स्वस्तिमति गर्भिणी	कल्याण वाली गर्भिणी स्त्री या मादा पशु जाति
198.	मयूरव्यंसकः	धूर्त मयूर या कपटी मयूर
199.	उच्चावचम्	ऊँचा नीचा या ऊँच नीच
200.	निश्चप्रचम्	निश्चित संयत किया गया या तोड़ा गया
201.	अकिञ्चिनः	जिसके पास कुछ भी न हो अर्थात अति गरीब या निर्धन
202.	अकुतोभयम्	जिसको किसी से भय न हो अर्थात अजातशत्रु
203.	राजान्तरम्	दूसरा राजा या अन्य राजा
204.	चिन्मात्रम्	केवल चेतन
205.	अश्नीत पिवता	खाता है पीता है
206.	पचतभृज्जता	पकाता है भूजता है
207.	खातत् भोदता	खाता है प्रफुल्लित होता है
208.	एहीडम	एहि यह सम्बोधनान्त पद है इस सम्बोधनान्त पद से स्तुति होती है जिस कर्म में।
209.	एहियवम्	मिश्रण क्रिया होती है
210.	उद्धरोत्सृजा	कोठी में से दो, यह क्रिया जिसमें होती है
211.	उद्धमविषमा	झरवेरी बजाना
212.	जहि जोडः	बार–बार जोड़ को जोड़ने के लिए कहता है
213.	जहि स्तम्बः	स्तम्ब को छोडो इस बात को बार बार कहता है
214	ईषत् पिङ्गलः	कुछ भूरा रंग
215.	ईषत् रक्तम्	कुछ लाल रंग
216.	अब्राह्मणः	ब्राह्मण नही अर्थात ब्राह्मण भिन्न ब्राह्मण सदृश
217.	अनश्वः	घोडा नही अर्थात घोड़ा भिन्न घोड़ा सदृश
218.	अनुपलब्धिः	प्राप्ति का अभाव
219..	अविवादः	विवादाभाव
220.	अविघ्नम्	विघ्न का अभाव
221.	अपचसित्वं जाल्म	हे धूर्त क्या तुमने अच्छा नही पकाया
222.	नेकधा	एक प्रकार से नही
223.	असत्याः नासत्याः	सत्य का अभाव या सत्या नहीं

224.	नमुचिः	जो छोड़ता नही है
225.	नकुलम्	जिनका कुलवंश (खानदान) नही है या नेवला
226.	नखम्	जिनका आकाश नही है
227.	नपुंसकम्	जो स्त्री न हो और जो पुरूष न हो अर्थात हिजड़ा हो
228.	नक्षत्रम्	जो नष्ट या पतित न होता हो या तारा
229.	नक्रः	नाक या घड़ियाल
230.	नाकः	स्वर्ग अन्तरिक्ष मगर के समान जलजीव
231.	नगाः	पर्वतों का समूह
232.	अगाः	पर्वतों का समुदाय
233.	अगोवृषलः शीतेन	शुद्र, नर्तक, अश्व, बैल, ब्राह्मण जाति से च्युत शीत स्थिर
234.	ऊरीकृत्य	स्वीकार करके
235.	शुक्ली कृत्य	पहले श्वेत या सफेद नही था उसको बाद में श्वेत या सफेद करके
236.	पटपटाकृत्य	पटपटा शब्द करके
237.	कुपुरूषः	निंदित व्यक्ति या पुरूष
238.	कारिका कृत्य	क्रिया को करके
239.	खाट कृत्य	खाट शब्द करके
240.	खाडितिकृत्वा	खाट यह शब्द को करके
241.	सत्कृत्वा	सत्कार या आदर करके
242.	असत्कृत्य	अपमान या अनादर करके
243.	अलंकृत्वौदनं गतः	पर्याप्त मात्रा में भात खाकर गया
244.	अन्तर्हत्य	बीच में या मध्य में मार करके।
245.	कणे हत्य पयः पिबति	चावल या यव के कण (दाना) को नष्ट या निकाल करके दूध या जल पीता है
246.	मनोहत्य	मन की इच्छा का हनन करके
247.	पुरस्कृत्य	आगे करके
248.	अस्तङ्गत्य	तिरोधान को प्राप्त होकर, या छिपकर
249.	अच्छगत्य	सामने जाकर
250.	अच्छोद्य	सामने कहकर
251.	जलमच्छं गच्छति	निर्मल या स्वच्छ जल बहता है या जाता है।
252.	अदः कृत्वा	इसको करके
253.	अदः कृतम्	यह किया
254.	अदः कृत्वा	इसको करके
255.	अदः कुरू	इसको करो
256.	तिरोभूय	तिरोहित या छिय करके
257.	तिरस्कृत्य	तिरस्कार करके या अपमान करके
258.	तिरः कृत्वा, तिरस्कृत्य, तिरःकृत्य	तिरस्कार करके या अपमान करके
259.	उपाजे कृत्य, उपाजे कृत्वा	सहारा देकर
260.	अन्वाजे कृत्य, अन्वाजे कृत्वा	दुर्बल को सहारा या सहायता करके
261.	साक्षात् कृत्य साक्षात्कृत्वा	सम्मुख या प्रत्यक्षीकरण या साक्षात्कार करके

262.	लवणं कृत्य लवणं कृत्वा	नमकीन या सुन्दर बना करके
263.	उरसिकृत्य उरसिकृत्वा	हृदय में स्वीकार करके
264.	मनसि कृत्य मनसि कृत्वा	मन में स्वीकार करके
265.	उरसि कृत्वा पाणि शेते	हृदय पर हाथ करके सोता है
266.	मध्येकृत्य मध्येकृत्वा	बीच में करके
267.	पदे कृत्य पदे कृत्वा	पद में करके
268.	हस्ते कृत्य पाणौ कृत्य	कन्या को स्वीकार करने के लिए कन्या के हाथ को अपने हाथ में ग्रहण करके
269.	निवचने कृत्य निवचने कृत्वा	वाणी को संयमित करके
270.	प्राध्वंकृत्य	दूरवर्ती को अनुकूल करके या वन्धन से अनुकूल करके।
271.	जीविका कृत्य	जीविका के तुल्य या सदृश करके
272.	उपनिषत्कृत्वा	वेदान्त की तरफ करके
273.	जीविकां कृत्वा	वृत्ति को करके या जीव का करके
274.	सुपुरूषः	अच्छा व्यक्ति, मनुष्य
275.	प्राचार्यः	प्रकर्ष गतिमान आचार्य या संस्थान का मुख्य अध्यक्ष
276.	अतिमाला	माला का अतिक्रमण या उल्लंघन करने वाला, माला की शोभा या बनावट को लांघने वाला
277.	अवकोकिलः	कोकिला के द्वारा बुलाया गया।
278.	पर्यध्ययनम्	अध्ययन के लिए ग्लानि
279.	निष्कौशाम्बिः	कौशाम्बी से अतिक्रान्त या निर्गत
280.	वृक्षंप्रति	प्रत्येक वृक्ष
281.	कुम्भकारः	घड़ा या मिटटी का बर्तन बनाने वाला कोहार या कुलाल
282.	व्याघ्री	बाघ की मादा जाति या बाघिनी
283.	अश्वक्रीति	घोड़े से खरीदी गयी
284.	कच्छपी	कच्छ से या कच्छ में पीता है या पीती है या कछुआ की मादा कछुई
285.	स्वादुङ्कारम्	स्वादिष्ट करके अर्थात स्वाद युक्त करके भोजन करता है।
286.	अग्रेभोजम्, अग्रेभुत्वा	पहले भोजन करके या आगे भोजन करके।
287.	मूलकोपदंशम्	दांत की कटी मूली से खाता है
288.	उच्चैःकृत्य उच्चैः कृत्वा	ऊँचा करके
289.	अलं कृत्वा	रोक करके
290.	खलु कृत्वा	निश्चय करके
291.	द्वयङ्गुलंदारू	दो अगुल की नाप की लकड़ी या दो अंगुल की लकड़ी
292.	निरङ्गुलम्	अंगुली बाहर या अंगुली रहित
293.	अहोरात्रः	दिन और रात
294.	सर्वरात्रः	पूरी रात
295.	पूर्वरात्रः	रात के पहले
296.	पुण्यरात्रः	धर्म की रात्रि या पुण्य की रात्रि
297.	द्विरात्रम्	दो रात्रियों का एकत्रीकरण
298.	अतिरात्रः	रात्रि का अतिक्रमण या रात्रि का अधिक व्यतीत होना
299.	कृष्णसखः	कृष्ण के मित्र

300.	उत्तमाहः	उत्तम या अच्छा दिन या वाढ़ि या दिन
301.	द्वयहीनः क्रतुः	दो दिन का यज्ञ या दो दिवसीय यज्ञ, दो दिन में होने वाला यज्ञ
302.	मद्र राज्ञी	मद्र देश की रानी
303.	सर्वाह्नः	पूरा दिन या दिन भर
304.	संख्याताह्नः	गिना गया दिन
305.	द्वयह्न	दो दिन में होने वाला
306.	द्वयह्ना	दो दिन में होने वाली
307.	द्वयह्नप्रियः	जिसकी दो दिन की प्रिया
308.	अत्यह्नः	दिन का अतिक्रमण या दिन का उल्लंघन होना।
309.	द्वयह्नः	दो दिन का एकत्रीकरण।
308.	दीर्घाह्नी प्रावृट्	बड़ा दिन हो जिस वर्षा ऋतु काल में
309.	द्वयहः	दो दिन का एकत्रीकरण
310.	पुण्याहम्	पुण्य का दिन या धर्म का दिन
311.	सुदिनाहम्	अच्छा दिन, शुभ दिन
312.	अश्वोरसम्	प्रधान घोड़ा
313.	उपानसम्	प्राप्त गाड़ी, प्राप्त भोजन, प्राप्त जन्म, प्राप्त रसोईघर
314.	अमृताश्मः	अमृत पत्थर या अमर पत्थर
315.	कालायसम्	काला लोहा
316.	मण्डूकसरसम्	मेढकों का तालाब
317.	महानसम्	रसोई घर की कोठरी या रसोइयाघर
318.	पिण्डाश्मः	पिण्ड के आकृति के समान पत्थर या गोलाकार पत्थर
319.	लोहितायसम्	लाल लोहा का नाम या लाल लोहा होने का कारण।
320.	जलसरसम्	किसी तालाब का नाम
321.	ग्रामतक्षः	गांव का बढ़ई
322.	कौटतक्षः	स्वतंत्र बढई
323.	अतिश्वो बराहः	कुत्ता के दौड को लांघने वाला शूकर
324.	अतिश्वीसेवा	कुत्ते की सेवा अर्थात नीचों की सेवा
325.	आकर्षश्वः	कुत्ते की पञ्चां के तुल्य पञ्चा, गुल लकडी या पांचा
326.	बानरश्वा	कुत्ता की तरह बन्दर
327.	उत्तरसक्थम	उत्तर भाग की हड्डी
328.	मृगसक्थम्	मृगा की हड्डी
329.	पूर्व सक्थम्	पूर्व भाग की हड्डी
330.	फलकसक्थम्	शिला की तरह हड्डी
331.	द्विनावरूप्यः	दो नाव से आया हुआ
332.	पञ्चनाव प्रियः	पांच नाव को चाहने वाला
333.	द्विनावम्	दो नाव का एकत्रीकरण
334.	त्रिनावम्	तीन नाव का एकत्रीकरण
335.	पञ्च नौः	पांच नाव से खरीदा गया
336.	अर्ध नावम्	नौका या नाव का आधा भाग
337.	अर्धखारि आर्धखारम्	आठ द्रोण सोलह द्रोण परिमाण का आधा भाग

338.	द्वयञ्जलम्	दो अञ्जलि
339.	द्वयञ्जलिः	दो अंजूली
340.	सुराष्ट्र ब्रह्म	सौराष्ट्र के ब्राम्हण
341.	कुब्रह्मः कुब्रह्मा	निन्दित ब्राह्मण या ब्रह्मदेव
342.	महाब्रह्मः महाब्रह्म	श्रेष्ठ ब्राम्हण या श्रेष्ठ ब्रम्हदेव
343.	महादेवः	महान देवता (शिव)
344.	एकदश	ग्यारह
345.	महाजातीया	समान प्रकार वाली
346.	महाघासः	बड़ा चारागाह
347.	महाकरः	लम्बा हाथ
348.	महाविशिष्टः	अधिक विशिष्ट
349.	अष्टकपालः	आठ कपालों में संस्कारित किया गया
	अष्टागवंशकटम्	आठ बैलों से संयुक्त गाड़ी
350.	अष्टा गवम्	आठ गायों का एकत्रीकरण।
350.	अष्ट गवम्	आठ गायों का एकत्रीकरण
351.	द्वादश	बारह
351.	द्वादश	बारह संख्या
352.	द्विविंशतिः	बाइस संख्या
353.	अष्टाविंशतिः	अट्ठाइस संख्या
354.	द्वित्राः	दो और तीन
355.	द्वयशीतिः	बयासी संख्या
356.	द्विशतम्	दो सौ
357.	द्विसहस्त्रम	दो हजार
358.	त्रयोदश	तेरह
359	त्रिर्दश, त्रिदशाः	तीस
360.	द्विचत्वारिंशत्, द्वाचत्वरिंशत्	बयालीस
361.	अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वरिंशत्	अढतालिस
362.	त्रिचत्वारिशत् त्रयश्चत्वरिंशत्	तैतालिस
363.	एकोनविंशति, एकादनविंशतिः	उन्नीस
364.	षोडन्	सोलह दांत
365.	षोडश्	सोलह
366.	षड्धाषोढा	छव भाग
367.	कुक्कुटमयूर्यौ	मुर्गा और मयूरी
368.	मयूरी कुक्कुटौ	मयूरी और मुर्गा
369.	अर्ध पिप्पली	पपरी आधा भाग
370.	प्राप्त जीविकः	वृत्ति या जीविका को प्राप्त

371.	आपन्न जीविकः	वृत्ति या जीविका को प्राप्त
372.	अलंकुमारिः	कुमारी अलंकृत
373.	निष्कौशाम्बिः	कौशाम्बी से निकला
374.	अश्ववडवौ	घोडा और बछेडा
375.	अश्ववडवान्	घोडे और बछेडों को
376.	अश्ववडवैः	घोडों और बछेडों से
377.	अहोरात्रः	दिन और रात्र
378.	पूर्वरात्रः	रात्रि का पूर्वभाग
379.	पूर्वाह्णः	दिन का पूर्वभाग
380.	द्वयहः	दो दिन
381.	द्विरात्रम्	दो रात
382.	त्रिरात्रम्	तीन रात
383.	गणरात्रम	रात्रि समूह
384.	अपन्था	रास्ता न होना, मार्ग का अभाव
385.	अर्धचः अर्धचम्	ऋचा का अर्द्धभाग
386.	ब्राह्मणः पूज्यः	सभी ब्राह्मण पूजनीय
387.	वयंब्रूमः	हम लोग बोलते हैं।
388.	अहं ब्रमीमि	मैं बोलता हूँ
389.	पटुरहं व्रवीमि	मैं चतुर हूँ बोलता हूँ
390.	पूर्वे फल्गुन्यौ, पूर्वाः फल्गुन्यः	पूर्वा फाल्गुनी
391.	पूर्वे प्रोष्ठपदे–पूर्वाः प्रोष्ठपदाः	पूर्वा प्रोष्ठपद
392.	फल्गुन्यौ माणवके	फल्गुनी नाम के दो ब्राह्मण बटुक
393.	तिष्यपुनर्वसू	तिष्य और पुर्नवसु नाम के दो नक्षत्र
394.	विशाखानुराधाः	विशाखा और अनुराधा नाम के नक्षत्र
395.	तिष्यपुनर्वसवः	तिष्य और पुनर्वसु नाम के ब्राह्मण लड़के
396.	पञ्चगवम्	पांच गायों का एकत्रीकरण या समाहार
397.	दन्तोष्ठम्	दांत और ओठ
398.	पञ्चमूली	पांच मूलों का एकत्रीकरण या समाहार
399.	पञ्चखट्वम्	पांच खटियों का एकत्रीकरण या समाहार
400.	पञ्चतक्षीपञ्चतक्षयम्	पांच बढइयों का एकत्रीकरण या समाहार
401.	पञ्चपात्रम्	पांच पात्रों का एकत्रीकरण या समाहार
402.	त्रिभुवनम्	तीन लोक का एकत्रीकरण या समाहार
403.	चतुर्युगम्	चार युगों का एकत्रीकरण या समाहार
404.	पुण्याहम्	पुण्य दिन या धर्म दिन
405.	सुदिनाहम्	शुभदिन या अच्छा दिन
406.	त्रियथम	तिराहा (तीन रास्ते) जहां पर आपस में मिलते हों।
407.	विपथम	खराब रास्ता या कुमार्ग
408.	सुपन्थाः	अच्छा रास्ता

409.	अतिपन्थाः	समान मार्ग के अपेक्षा मार्ग, सन्मार्ग
410.	मृदृपचति	मीठा या मधुर पकाता है
411.	प्रातः कमनीयम्	सुहावना सबेरा या प्रातःकाल
412.	सौशमिकन्थम्	सुशम के बालको की उशिना देश में बनने वाली गुदडी का नाम
413.	नन्दोपक्रमः	नन्द के द्वारा आरम्भ द्रोण परिमाण
414.	इक्षुच्छायम्	ईख की छाया
415.	इनसभम्	राजा की सभा
416.	ईश्वर सभम्	राजा की सभा
417.	चन्द्रगुप्त सभा	राजा चन्द्रगुप्त की सभा
418.	रक्षस्सभम्	राक्षस की सभा
419.	पिशाचसभम्	पिशाच की सभा
420.	स्त्री सभम्	स्त्रियों की सभा
421.	धर्म सभा	धर्म विषय पर की गयी सभा या धर्म की सभा या धर्मशाला
422.	ब्राह्मणसेना	ब्राह्मण सेना, ब्राह्मणों की सेना
423.	युवसुरम् युवसुरा	जव की मदिरा या जव से बनायी गयी शराब
424.	कुड्यच्छायम् कुड्यच्छाया	दीवार की छाया, पानी रखने की कुण्डा की छाया,बटलोई कमण्डलु की छाया, या जारज पुत्र की छाया
425.	गोशालम्, गोशाला	घारी, अर्थात जिस घर में रात को गायें बांधी जाती हैं।
426.	श्वनिशम्, श्वनिशा	कुत्ते की रात
427.	दृढसेनः	मजबूत सेना वाला राजा
428.	असेना	सेना का अभाव
429.	परमसेना	प्रधान सेना या मुख्य सेना
430.	वीरणकन्था	वीरण की गुदड़ी
431.	दाक्षिकन्या	दक्ष ऋषि के पुत्र की लकड़ी
432.	पाणिन्युपज्ञं ग्रन्थः	पाणिनि द्वारा प्रथम ज्ञात ग्रन्थ।

अथ बहुव्रीहि समास

सं0	शब्द	अर्थ
1	प्राप्तोदको ग्रामः	जिस गांव को जलप्राप्त् हो गया। अर्थात् जलीय गांव
2.	ऊढरथः	रथ जिससे ढोया गया (बैल)
3.	उद्धृतौदनास्थाली	जिससे भात निकाला गया अर्थात् बटलोई
4.	उपहृतपशुः	जिसके लिए पशु लिया गया अर्थात् रूद्र
5.	पिताम्बरः	जिसका पीला वस्त हो अर्थात विष्णु
6.	पञ्चभिर्भुक्तमस्य	जिसका पांच लोगों से भोग किया गया।
7.	वीर पुरूषकः	जिसमें वीर पुरूष हो
8.	प्रपर्णः	गिरा हुआ पत्ता
9.	अपुत्रः	वर्तमान में पुत्र का अभाव
10.	उच्चैर्मुखम्	ऊँचा मुख
11.	कण्ठेकालः	शिव
12.	उष्ट्रमुखः	ऊँट में मुख के समान मुख हो जिसका
13.	केशचूडः	बाल समूह की चुटिया–चोटी या केश
14.	सुवर्णालंकारः	जिसका अलंकार सोने का हो
15.	अस्तिक्षीरा गौः	दूध वाली गाय
16.	चित्रगुः	चित्र विचित्र वर्ण की गाय वाला
17.	रूपवद्भार्यः	सुन्दर रूप स्त्री वाला पुरूष
18.	चित्रांजरतीगुः जरती चित्रार्गुवा	चित्र विचित्र या चितकबरी बृद्धा या बूढी गाय हो जिसकी अर्थात् चितकबरी बूढी गाय वाला
19.	दीर्घातन्वीजङ्घः	लम्बी पतली जांघ वाला
20.	तन्वीदीर्घाजङ्घः	पतली और लम्बी जांघ वाला
21.	चित्राजरद्गुः	विचित्र वर्ण और बूढी गाय वाला
22.	जरच्चित्रगुः	बूढी और विचित्र वर्ण की गाय वाला
23.	ग्रामणिदृष्टिः	मुखिया का अवलोकन
24.	गंगाभार्यः	गंगा स्त्री हो जिसकी
25.	वामोरूभार्याः	सुन्दर जांघ वाली स्त्री हो जिसकी
26.	कल्याणी माता	मङ्गलप्रदा माता या कल्याणी माता
27.	कल्याणी प्रधानः	जिसका मुख कल्याणी
28.	कल्याणी पञ्चमारात्रयः	जिन रात्रियों की पांचवी कल्याणी
29.	स्त्री प्रमाणः	जिसकी स्त्री प्रमाण वाली है
30.	कल्याण पञ्चमीकः	कल्याण करने वाला पांचवा पक्ष
31.	दृढभक्तिः	अट्टू भक्ति वाला या दृढ भक्ति वाला
32.	बहुत्र, बहुतः	अधिकों में, अधिक से
33.	दर्शनीयतरा	इन दोनों में यह देखने के योग्या
34.	दर्शनीयतमा	इन सभी में यह देखने योग्या
35.	पट्वितरा	इन दोनो में चतुरा

36.	पद्वितमा	इन सभी में यह चतुरा
37.	पटुचरी	चतुर व्यवहार वाली
38.	पटुजातीया	पटु तुल्या
39.	दर्शनीयकल्पा	प्राय: देखने योग्या
40.	दर्शनीयदेशीया	प्राय दर्शनीया
41.	दर्शनीयरूपा	देखने के लिए योग्या
42.	दर्शनीयपाशा	प्रशस्त गुणों से देखने योग्या
43.	बहुधा	अनेक प्रकार
44.	विकृति:	प्रशस्त गुणों से युक्त भेडिया का मादा जाति
45.	अजथ्या	बकरियों के लिए हितकारी
46.	बहुशः	बहुतों के लिए दो
47.	अल्पशः	कुछ या थोडो वालों के लिए
48.	शुक्लत्वम्–शुक्लता	स्वच्छ गुण वाली
49.	कर्त्रीत्वम्	करने वाली का भाव
50.	हास्तिकम्	हथिनियों का समूह
51.	रौहिणेय:	रोहिणी की सन्तति
52.	आग्नेय:	आग देव वाले अग्निदेव हों जिसके
53.	सापत्न:	शत्रु या सौत का लड़का
54.	भावत्का:भवदीया:	आप की छात्रा
55.	सर्वभय:	सम्पूर्ण युक्त या सम्पूर्ण वाला
56.	सर्वकाभार्य	सर्विका स्त्री हो जिसकी
57.	सर्वप्रिय:	जिसके सभी प्रिय हो
58.	कुक्कुटाण्डम्	मुर्गी का अण्डा
59.	मृगपदम्	मृगी का पद
60.	मृगक्षीरम्	मृगी का दूध
61.	काकशाव:	कौवे के मादा का बच्चा या कौवी का बच्चा
62.	एतायते	चित्रवर्ण की तरह
63.	श्वेतायते	श्वेतवर्ण की तरह आचरण करने वाली
64.	दर्शनीयमनिनी	किसी स्त्री को दर्शनीय माना जाय
65.	दर्शनीयमानी	स्त्री को जो दर्शनीय मानता है
66.	पाचिकाभार्या	रसोई कार्य करने वाली स्त्री
67.	रसिकाभार्या	रसवाली भार्या हो जिसकी
68.	मद्रिकायते	मद्र देश के भार्या की तरह आचरण करने वाली
69.	मद्रिकामानिनी	मद्र देश की स्त्री को मानता है
70.	पाकभार्य:	पाक कर्म करने वाली भार्या हो जिसकी
71.	दत्ता भार्या	दान क्रिया करने वाली भार्या
72.	दत्तामनिनी	दान क्रिया को जो अपने का मानता है
73.	पञ्चमीभार्या:	पांचवी भार्या को जिसकी
74.	पञ्चमीपाशा:	पांचवी भार्या जिसकी निन्दित हो
75.	स्रौघ्नीभार्य:	स्रुघ्नदेश की लडकी जिसकी भार्या हो

76.	माथुरीयते	मथुरादेश में उत्पन्न होने वाली की तरह आचरण जो करता है।
77.	मध्यमभार्यः	मध्यम भार्या जिस पुरूष की हो
78.	काण्डलावभार्यः	अंश या शाखा काटने वाली भार्या जिस पुरूष की हो।
79.	तावद्भार्याः	एतत् परिमाण वाली भार्य्रा हो जिसकी
80.	कषायकन्थः	गेरूआ रंग की गुदड़ी वाला
81.	हैममुद्रिकः	सोने की अंगूठी वाला
82.	वैयाकरणभार्यः	व्याकरण को पढने वाली या जानने वाली स्त्री हो जिसकी
83.	सौवश्वभार्यः	स्वश्व ऋषि की कन्या जिस पुरूष की भार्या हो
84.	सुकेशीभार्यः	सुन्दर बाल वाली स्त्री हो जिस पुरूष की
85.	पटुभार्यः	चालाक भार्या वाला पुरूष
90.	सुकेशमानिनी	अपने बाल को सुन्दर बाल मानने वाली
91.	अकेशभार्यः	वर्तमान में बाल रहित भार्या जिस पुरूष की हो
92.	शुद्रा भार्यः	शुद्र की कन्या स्त्री हो जिस पुरूष की
93.	ब्रह्मणीभार्यः	ब्राह्मण की कन्या स्त्री हो जिस पुरूष की
94.	उपदशाः	नव संख्या या ग्यारह संख्या
95.	आसन्नविंशाः	उन्नीस संख्या या इक्कीस संख्या
96.	अधिकचत्वारिंशाः	चौवालिस
97.	द्वित्राः	दो और तीन
98.	द्विदशाः	बीस
99.	दक्षिण पूर्वा	अग्निकोण
100.	केशाकेशी	झोटा झोटवली
101.	दण्डा दण्डि	एक दूसरे. पर लाठी से मारना या लाठी लठौल
102.	मुष्टीमुष्टि	मुक्का मुक्की
103.	बाहूवाहवि	हाथा पायी या हाथा हथौल
104.	हलेन मुसलेन	हल से मूसल से
105.	सकर्मकः	कर्म के साथ
106.	सपुत्रः	पुत्र के साथ
107.	सलोमकः	लोम (रोवा) के साथ
108.	स्वस्तिराज्ञे सह पुत्राय	पुत्र के साथ राजा मंगल
109.	सहामात्याय	मन्त्री के साथ राजा का मंगल
110.	सगवे	गाय के साथ राजा का मंगल
111.	सवत्साय	बछडे के साथ राजा का मंगल
112.	सहलाय	हल के साथ राजा का मंगल
113.	उपदशाः	नव संख्या या ग्यारह संख्या
114.	उपगणाः	समूह के समीप में रहने वाले या जो रहते हैं।
115.	उपबहवः	बहुतों के समीप जो रहते हैं अर्थात द्विवचन
116.	निस्त्रिंशनिवर्षाणि चैत्रस्य	चैत्र के तीस साल बीत गये। अर्थात एकतीस साल
117.	निस्त्रिंशः	एकतीस
118.	दीर्घ सक्थः	दो लम्बी हड्डी वाला
119.	जलजाक्षी	कमल के समान आंख वाला

120.	दीर्घ सक्थि (शकटम)	दो जम्बे लटठे वाला बैलगाडी
121.	स्थूलाक्षावेणु याष्टिः	स्थूल पर्व ग्रन्थि वाला बांस की छडी.
122	पञ्चागुलंदारु	पांचा
123	द्वयङ्गुलायष्ठिः	दो अंगूल की मोटी छड़ी
124	पञ्चागुंलिर्हस्तः	पांच अंगुली वाला हाथ
125	द्विमूर्धः	दो सिर वाला
126	त्रिमूर्धः	तीन सिर वाला
127	मृगनेत्राारात्रयः	मृग शिरा नक्षत्र की चन्द्रमा वाली रात
128	पुष्यनेत्राः	पुष्य नक्षत्र की चन्द्रमा वाली रात
129	अन्तर्लोमः	अप्रकाशित रोम वाला
130	वर्हिलोमः	प्रकाशित रोम वाला
131	द्रुणसः	द्रु नामक वृक्ष के समान नाशिका वाला
132	खरणसः	गदहे के नासिका के समान नासिका वाला या खरगोश के नासिका के समान नासिका वालाया कुररी पक्षी के नासिका के समान नासिका वाला
133.	ऋगयनम्	ऋचाओं का संचलन या गति
134.	स्थूल नासिका	मोटी नाशिका वाला
135.	खुरणाः •	खुर के आकृति के समान नाशिका वाला
136.	खरणाः	खरगोश या गदहा के नासिका के समान नाशिका वाला
137.	खुरणस	खुर की आकृति के समान नाशिका वाला
138.	खरणसः	गदहा या खरहा के नाक के समान नाशिका वाला
139.	उन्नसः	ऊँची नाशिका वाला
140.	प्रणसः	लम्बी या बड़ी नाशिका वाला
141.	विग्रः	बिना नासिका वाला
142.	विख्यः	बिना नाक वाला
143.	सुश्वः	सुन्दर या अच्छा आने वाला दिन
144.	सुप्रातः	सुनहरा सबेरा या सुबह
145.	सुदिवः	सुन्दर या अच्छा दिन हो जिसका
146.	शारि कुछः	शारि नामक विशेष पक्षी के कुक्षी के समान को कुक्षी हो जिसका
147.	चतुरश्रः	चार कोण
148.	रणीपदः	मृगी के पैर के समान पैर हो जिसका
149.	अजपदः	छाग के पैर के समान पैर हो जिसका
150.	प्रोष्ठपदः	गाय के पैर के समान पैर हो जिसका
151.	अहलः अहलिः	जिसके पास विद्यमान समय में हल न हो
152.	असक्थः असक्थिः	वर्तमान समय में हडडी वाला न हो या बिना हडडी वाला
153.	अशक्तः अशक्तिः	वर्तमान समय में शक्ति हीन वाला
154.	अप्रजाः	वर्तमान में प्रजाहीन या सन्ततिहीन वाला
155.	दुष्प्रजाः	दुष्टजन या दुष्ट सन्तति वाला
156.	अमेधाः	वर्तमान समय में धारणवाली बुद्धि न हो जिसके पास
157.	दुर्मेधाः	जिसकी धारण वाली बुद्धि दूषित हो गयी हो
158.	सुमेधाः	अच्छी धारण वाली हो जिसके पास बुद्धि वाला

159.	कल्याण धर्मा	कल्याणकारी धर्म वाला
160.	निवृत्ति धर्मा	आवरण धर्म वाला
161.	सुजम्मा	सुन्दर जबड़ा वाला सुन्दर दांत वाला या सुन्दर भोजन वाला
162.	हरितजम्मा	हरा रंग का जबड़ा वाला तोता (सुग्गा)
163.	तृण जम्मा	तृण भोजन हो जिसका या तृण के समान दांत वाला
164.	सोमजम्मा	चन्द्रमा के समान श्वेत दांत वाला
165.	दक्षिणेर्मा	मृग, हरिण
166.	केशा केशी	झोटा झोटवली
	पतितजम्भः	गिर गया है दांत जिसका
167.	मुसला मुसलि	एक दूसरे पर मूसल से प्रहार करना
168.	द्विदण्डिप्रहरणम्	दो दण्ड युद्ध हो जिसमें
169.	द्विमुसलि	दो मूसल प्रहार किया गया हो जिसमें
170.	उभा हस्ति	दो हाथ प्रहार किया गया हो जिसमें
171.	उभया हस्ति	दो हाथ प्रहार किया गया हो जिसमें
172.	प्रज्ञुः	जिसकी टांग धनुष के झुकने की तरह झुकी हो
173.	संज्ञुः	जिसके घुटने चलते समय आपस में टकराते हों या लगते हों।
174.	उर्ध्वज्ञुः—उर्ध्वजानुः	जिसके घुटने ऊपर की ओर उठे हों।
175.	द्विधन्वा	दो धनुष वाला या दो धनुष जिसके पास हो।
176.	शार्ङ्गधन्वा	शार्ङ्ग धनुषवाला अर्थात विष्णु या शार्ङ्ग धनुष जिसके पास हो।
177.	शतधन्वा, शतधनुः	शतधन्वा नाम के राजा
178.	उद्गन्धिः	तीव्र गन्ध वाला
179.	युवजानिः	युवती स्त्री वाला, जिसकी स्त्री जवान हो।
180.	पूतिगन्धिः	दुर्गर्न्ध वाला
181.	सुरभिगन्धिः	सुगन्ध वाला वायु
182.	सुगन्धि पुष्पं सलिलञ्च	अच्छा गन्ध वाला फूल या जल
183.	सुगन्ध आपणः	सुगन्ध वाला बाजार
184.	सुगन्धिभोजनम्	सुगन्धित या सुन्दर भोजन
185.	सुपगन्धि भोजनम्	सुगन्ध युक्त पकी हुई दाल
186.	घृतगन्धिः	घृतगन्ध युक्त भोजन
187.	पद्मगन्धिः	कमल के फूल के समान गन्ध हो जिसका
188.	व्याघ्रपात्	वाघ के पैर के समान पैर हो जिसका अर्थात पीलपांव वाला
189.	हस्तिपादः	हाथी के पैर के समान पैर वाला
190.	कुसूलपादः	डेहरी या बोडसी के समान पैर वाला
191.	कुम्भपदी	घडा के समान पैर वाली
192.	कुम्भपादः	घडा के समान पैर वाला
193.	द्विपात्	दो पैर वाला मनुष्यादि
194.	सुपात्	सुन्दर पैर वाला
195.	द्विदन्	दो दांत वाला या हाथी
196.	चतुर्दन्	चार दांत वाला
197.	षोडन्	छव दांत वाला

198.	सुदन्सुदती	सुन्दर दांत वाला या सुन्दर दांत वाली
199.	• द्विदन्तः	करी या हाथी
200.	अयोदती	किसी लकड़ी का नाम
201.	फालदती	किसी लकड़ी का नाम
202.	समदन्ती	समान दांत वालीका
203.	श्यावदन्श्यावदन्तः	कपिश या धूम सा बराबर दांत वाली वर्ण के समान दांत वाला
204.	अरोकदन् अरोकदन्तः	श्वेत या दांत वाल या छिद्र रहित दांत वाला
205.	कुड्मलाग्रदन्– कुड्मलाग्रदन्तः	खिले हुए फूल के अग्रभाग के समान दांत वाला
206.	शुद्धदन्शुभ्र दन्तः	विमल दांत वाला या जिसका विमल दांत हो।
207.	शुभ्रदन् शुभ्रदन्त	श्वेत दांत वाला
208.	वृषदन् वृषदन्तः	बैल या सांड़ के दांत के समान दांत वाला
209.	वाराहदन् वाराहदन्तः	शूकर या मगरमच्छ के दांत के समान दांत वाला
210.	अजात्ककुत्	पक्षी या जरसी गाय का बछड़ा
211.	पर्णककुत्	युवा सांड़
212.	त्रिककुत्	त्रिकूट पर्वत
213.	त्रिककुदः	तीन ऋंग वाला
214.	उत्काकुत्	उन्नत तालु वाला अर्थात मुर्गा या मेढक
215.	पूर्णकाकुत् पूर्णकाकुदः	पूर्ण तालु वाला अर्थात मनुष्य
216.	सुहृन्मित्रम्	निर्मल हृदय वाला मित्र
217.	दुहृदमित्रम्	दूषित हृदय वाला मित्र
218.	सुहृदयः	स्वच्छ हृदय वाला
219.	व्यूढोरस्कः	विपुल छाती वाला
220.	प्रियसर्पिस्कः	घृत को पसन्द करने वाला
221.	द्विपुमान् द्विपुंस्कः	दो पुरूष वाला
222.	अनर्थकम्	वर्तमान में अर्थ रहित वाला
223.	अपार्थम् अपार्थकः	नष्ट अर्थ वाला
224.	बहुदण्डिका नगरी	बहतेरे दण्डी स्वामी वाली नगरी
225.	बहुवाग्मिका	बहुतेरे वाणी वालों से युक्त नगरी
226.	बहुदण्डी बहुदण्डिकोग्रामः	बहुतेरे दण्ड धारण करने वालों से युक्त गांव
227.	महायशस्कः महायशाः	महान यश वाले
228.	बहुमालाकः बहुमालकः	बहुत माला वाला
229.	बहुमालः	बहुतेरे माला वाले
230.	विश्वदेवः	जिसके विश्वदेव देवता हों।
231.	बहुश्रेयान्	बहुतेरे कल्याण हो जिसके
232.	बहुश्रेयसी	बहुत कल्याण करने वाली स्त्रियां हों जिसके पास
233.	अतिश्रेयसी	अतिशय कल्याण करने वाली स्त्री
234.	प्रशस्तभ्राता	प्रशंसित भाई वाला
235.	सुभ्राता	सुन्दर भाई वाला

236.	मुर्खभातृकः	मूढ भाई वाला
237.	बहुनाडिः	अनेक नाडी वाला शरीर
238.	बहुयन्त्रीग्रीवा	बहुनस वाली गर्दन
239.	बहुतन्त्रीधमनी	बहु नस वाली धमनी
240.	बहुनाडिकः	बहुत नाडी के आकार युक्त स्तम्भ
241.	बहुतन्त्रिका	बहुत तार वाली वीणा
242.	प्रवाणी	जुलाहा की खूंटी या किल
243.	निष्प्रवणिः	वस्त्र या कपड़ा
244.	समाप्तवानः	पूर्ण किया गया या बुनना
245.	कण्डेकालः	शिव
246.	चित्रगुः	चित्र विचित्र गाय वाला
247.	सर्वश्वेतः	सम्पूर्ण श्वेत वाला
248.	त्रिशुक्लः	तीन श्वेत वाला
249.	द्वयन्यः	दो अन्य वाले
250.	द्वित्राः	दो अथवा तीन
251.	द्वादशः	बारह
252.	गुडप्रियः–प्रियगुडः	प्रिय गुड वाला या जिसको गुड प्रिय लगता हो।
253.	गड्डुकण्डः	पीठ पर कूबड़ वाला
254.	वहेगड्डुः	स्कन्धर पर या कंधा पर कूबड़ वाला
255.	कृत कृत्यः	धन्य होना
256.	सारङ्ग जग्धी	जिसके द्वारा हरिण का भक्षण कर लिया गया हो अर्थात बाधिन
257.	मासजाता	जिसका महीना बीत गया हो
258.	सुखजाता	जिसका सुख चला गया हो
259.	कृतकटः	जिसके द्वारा चटाई बना ली गयी हो या बुन दी गयी हो
260.	पीतोदकः	जिसने जल पी लिया हो
261.	आहिताग्निः	जिसके द्वारा आधान से अग्नि संस्कारित किया गया हो
262.	अग्न्याहितः	जिसके द्वारा आधान से अग्नि संस्कारित किया गया हो
263.	अस्युद्यतः	जिसने तलवार उठा ली हो
264.	दण्डपाणिः	दण्ड या छड़ी को दोनो हाथ में धारण करने वाला
265.	विवृतासिः	जिसके द्वारा तलवार म्यान या कोश से निकाल लिया गया हो।

द्वन्द्व समास

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	ईश्वरगुरूञ्चभ्जस्व	ईश्वर और गुरू को भजो
2.	भिक्षामटगां चानय	भिक्षा को मांगकर लाओ और गाय को चराओ
3.	धवखदिरौ	धव और खैर का वृक्ष
4.	संज्ञापरिभाषम्	संज्ञा सूत्र और परिभाषा सूत्र
5.	होतृपोतृनेष्टोद्गातारः	होता (हवन कर्ता) पोता (नाती) नेता और उदगाता
6.	राजदन्ताः	दन्तों का राजा
7.	अर्थधर्मौन्धर्मार्थौ	अर्थ और धर्म– धर्म और अर्थ
8.	दम्पती, जम्पती जयापती	पति और पत्नी
9.	हरिहरौ	विष्णु और शिव (शंकर)
10.	हरिगुरूहराः, हरिहर गुरूवः	विष्णु गुरू और शिव–विष्णु–शिव और गुरू
11.	ईशकृष्णौ	ईश्वर और कृष्ण
12.	अश्वरथेन्द्रा, इन्द्राश्वरथाः	घोड़ा रथ और इन्द्र–इन्द्र घोड़ा और रथ
13.	ईश कृष्णौ	ईश्वर और कृष्ण
14.	शिवकेशवौ	शिव और केशव
15.	इन्द्राग्नी	इन्द्र और अग्नि
16.	हेमन्तशिविरवसन्ताः	हेमन्त शिविर और वसन्त
17.	कृत्तिका रोहिण्यौ	कृतिका और रोहिणी
18.	ग्रीष्मवसन्तौ	ग्रीष्म और बसन्त
19.	कुशकाशम्	कुशा और काश
20.	तापसपर्वतौ	तपस्वी और पर्वत
21.	ब्राम्हणक्षत्रियविट्छुद्राः	ब्राम्हण क्षत्रिय वैश्व और शुद्र
22.	युधिष्ठिरार्जुनौ	युद्धिष्ठिर और अर्जुन
23.	पाणिपादम्	हाथ और पैर
24.	मार्दङ्गिक पाणविकम्	मृदङ्ग ओर पणव नामक वाद्य को बजाने वाला
25.	रधिकाश्वरोहम्	रथ को ले जाने वाला और घोड़े पर सवार होने वाला
26.	उद्गात्कठकलापम्	कठ शाखा को पढ़ने वाले ओर कलाप ऋषि प्रोक्त शाखा को पढ़ने वाले का प्रादुर्भाव
27.	प्रत्यष्ठात्कठ कौथुमम्	कठ शाखा को पढ़ने वाले कौप्युमी शाखा को पढ़ने वाले का प्रादुर्भूत
28.	अर्काश्वमेधम्	महायज्ञ और अश्वमेघ यज्ञ
29.	इषुवज्रौ	वाण और वज्र (ब्रज विशेष प्रकार का शस्त्र)
30.	राजसूय पाजपेये	राजसूय यज्ञ और वाजपेय यज्ञ
31.	पदक्रमकम्	पद और क्रमक
32.	धनाशष्कुलि	चावल और पूड़ी या खीर और पूड़ी
33.	विटछुद्राः	वैश्य और शुद्र
34.	रूपरसौ	रूप और रस
35.	गमनाकुञ्चने	जाना और बटोरना
36.	वदरामलकानि	वैर का फल ओर आमला का फल
37.	उदध्येरावति	उदध्य नामक नद और इरावती. नाम की नदी

38.	गङ्गशोणम्	गंगा नामक नदी ओर शोण नामक नद
39.	कुरू कुरू क्षेत्रम्	कुरू नामक देश और कुरू नामक क्षेत्र
40.	गंगायमुने	गंगा और यमुना
41.	भद्र केकयाः	मद्र देश और केकय देश
42.	जाम्ववशालूकिन्यौ	जाम्वव और शालूकिनी
43.	यूकालिक्षम्	जूआं और लीख
44	आनकुलात्क्षुद्रजन्तवः	नेवला से लेकर सभी छोटे जीव वाले या शुद्र जन्तु वाले
45.	अहिनकुलम्	सांप और नेवला
46.	गोव्याध्रम्	गौ और बाघ
47.	काकोलूकम	कौवा और उल्लू
48.	तक्षायस्कारम्	बढ़ई और लोहार
49.	चाण्डालमृतपाः	चाण्डाल और मृतप
50.	गवाश्वम्	गौ और घोड़ा
51.	दासीदासम्	नौकरानी और नौकर
52.	प्लक्षन्यग्रोधम्, प्लक्षन्यग्रोधाः	प्लक्ष वृक्ष न्यग्रोध वृक्ष विशेष
53.	रुरूपृषसम् रुरूपृषताः	रुरू नाम का वृक्ष और पृषत नाम का वृक्ष विशेष
54.	कुशकाशम् कुशकाशाः	कुश और काश (खर विशेष)
55.	ब्रीहियवम् ब्रीहियवाः	धान और जव
56.	दधिघृतम् दधिघृते	दही और घृत
57.	गोमहिषम् गोमहिषाः	गौ और भैसा
58.	शुकवकम् शुकवकाः	सुग्गा (तोता) और बगुला
59.	अश्ववडकम् अश्ववडवौ	घोड़ा और बछेड़ा
60.	पूर्वापरम् पूर्वापरे	पूर्व और अपर
61.	अधरोत्तरम् अधरोत्तरे	नीचे और ऊपर
62.	बदरामलकम्	बैर फल और आमले का फल
63.	बदरामलके	बैर फल और आमलक फल
64.	रथिकाश्वारोहौ	रथ हांकने वाला सारथी और घोड़ सवार
65.	प्लक्षन्यग्रोधौ	प्लक्ष नामक वृक्ष न्यग्रोध नामक वृक्ष
66.	शीतोष्णम् शीतोष्णे	शीतल और गर्म
67.	नन्दक पाञ्चजन्यौ	नन्दक और पाञ्चजन्य
68.	इध्मावर्हिषी	हवनीय लकड़ी और कुश
69.	दधिपयसी	दही और दूध
70.	ऋकसामे	ऋग्वेद ओर सामवेद
71.	वाङ्मनसे	वाणी और मन
72.	उपदशादन्तोष्ठाः	नव या ग्यारह दांत और ओठ
73.	दश दन्तोष्ठाः	दश दांत और ओठ
74.	होता पोतारौ	हवन कर्ता और नाती
75.	मातापितरौ	माता और पिता
76.	पिता पुत्रौ	पिता और पुत्र
77.	मित्रावरूणौ	मित्र और वरूण
78.	अग्निवायू–वाय्वग्नी	आग और हवा या हवा और आग

79.	ब्रह्मप्रजापती	ब्रह्मा और प्रजापति
79.	अग्निष्टुत्	यज्ञ विशेष
80.	अग्निष्टोमः	स्त्रोत्र विशेष
81.	अग्निषोमौ	अग्नि या आग और चन्द्रमा
82.	अग्नीवरूणौ	अग्नि और वरूण
83.	अग्निमारूतं कर्म	अग्नि और मरूत सम्बन्धी कर्म
84.	आग्निवारूणम्	अग्नि और वरूण सम्बन्धी देवता
85.	आग्नेन्द्रः	अग्नि सम्बन्धी देवता और इन्द्र देवता
86.	आग्नावैष्णवम्	अग्नि और विष्णु देवता वाले
87.	द्यावाभूमि	द्यू लोक और भू लोक
88.	द्यावक्षामा	द्यू लोक और भूलोक
89.	दिवस्पृथिव्यौ	दिव लोक और पृथ्वी लोक
90.	द्यावापृथिव्यौ	दिव लोक और पृथ्वी लोक
91.	उषासासूर्यम्	उषा काल और सूर्य
92.	माता पितरौ	माता और पिता
93.	वाक्त्वचम्	वाणी और त्वचा
94.	त्वकस्त्रजम्	त्वचा और माला
95.	शमीदृषदम्	शमी और पत्थर
96.	वाक्त्विषम्	वाणी और तेज दीप्ति
97.	छत्रोपाहनम्	छाता और जूता
98.	प्रावृट्शरदौ	वर्षा ऋतु और शरद ऋतु

एकशेष समास

सं0	शब्द	अर्थ
1	वक्रदण्डौ	टेढ़ा मेढ़ा डण्डा
2.	कुटिलदण्डौ	टेढ़ा मेढ़ा दण्ड (डण्डा)
3.	गार्ग्यौ	गर्ग ऋषि का पुत्र और पौत्र
4.	गर्गगार्ग्यौ	गर्ग और उनके पुत्र
5.	गर्गाः	गर्ग की पुत्री और उनके नाती
6.	दाक्षी	दक्ष की पुत्री और उनका नाती
7.	हंसौ	हंसी और हंस
8.	भ्रातरौ	भाई और बहन
9.	पुत्रौ	पुत्र और पुत्री
10.	शुक्लम्–शुक्लानि	शुक्ल पट शुक्ला साड़ी और शुक्ल वस्त्र
11.	पितरौ–मातापितरौ	माता और पिता
12.	श्वशुरौ	सास और ससुर
13.	तौ	वह और देवदत्त
14.	यौ	वह और यह
15.	ये	वह और यह (स्त्री)
16.	तौ	वह और यह
17.	कुक्कुटमयूर्यौ	मुर्गा और मोरनी
18.	इमे	यह (पुल्लिंग यह स्त्रीलिंग)
19.	मयूरीकुक्कुटौ	मोरनी और मुर्गा
20.	इमौ	यह (स्त्रीलिंग) यह (पुल्लिंग)
21.	अर्धविप्पल्यौ	आधा पिपरी और आधा पिपर
22.	ते	वह (नपुंसक लिंग) वह (स्त्रीलिंग)
23.	गावः	यह गौ और यह गाय
24.	रूःखः	काले रंग मृर्गी और काले रंग का मृग
25.	ब्राह्मणाः	ब्राह्मणियों और ब्राह्मणों
26.	गावौ	गाय और गौ
27.	वत्साः	बाछियां और बछड़े
28.	अश्वाः	घोड़े और घोड़ियां
29.	गर्गवात्स्यायनौ	गर्ग ऋषि के पुंत्र वत्स ऋषि के पौत्र
30.	शुक्लपटे	श्वेत साड़ियां या वस्त्रों

●

सर्वसमासान्त

सं0	शब्द	अर्थ
1	अनृक्साम	ऋग्वेद और सामवेद नहीं
2.	बहवृक्सूक्तम्	अनेक ऋचा वाला सूक्त
3.	विष्णुपुरम्	विष्णु लोक
4.	विमलापसरः	स्वच्छ जल वाला तालाब
5.	द्विपम्	दो दिशाओं के जल से घिरे हुए स्थान को द्वीप कहते हैं। अर्थात पूर्व और पश्चिम तथा उत्तर और दक्षिण के जल से घिरा हुआ स्थान
6.	अन्तरीपम्	भूमि का वह भाग को समुद्र में समा गया हो
7.	प्रतीपम्	जिसमें प्रतिकूल जल हो अर्थात दूषित जलीय स्थान
8.	समीपम्	निकटस्थ जल वाला स्थान
9.	स्वप्	निर्मल या स्वच्छ जलीय तालाब, कूप, नदी, समुद्र
10.	स्वपी	स्वच्छ जलवाला दो स्थान
11.	प्रेपम्–प्रापम्	तेज धार वाला जल
12.	परेपम्–परापम्	जिसका जल दूसरे से आया हुआ हो
13.	अनूपोदेशः	अनुकूल जल वाला देश
14.	राजधुरा	शासनभार या राज्य भार
15.	अक्षधूः	आरागज (जो काठ की बैलगाडी के पहिये मे लगा रहता है)
16.	दृढधुरक्षः	मजबूत पहिये का आरागज
17.	सखिपथः	मित्र का रास्ता या मार्ग
18.	रम्यपथः	अच्छा मनोरम रास्ता
19.	प्रतिसामम्	प्रत्येक को प्राप्त सामवेद
20.	अनुसामम्	ज्ञात सामवेद
21.	अवसामम्	अवगत सामवेद
22.	प्रतिलोमम्	प्रत्येक रोम
23.	अवलोमम्	अवज्ञात रोम
24.	कृष्णभूमः	काली भूमि वाला
25.	उदग्भूमः	उत्तर जमीन वाला
26.	पाण्डुभूमः	पाण्डुवर्ण भूमि वाला
27.	द्विभूमः	दो मंजिला भवन
28.	पञ्चनदम्	पांच नदियों का एकत्रीकरण
29.	सप्तगोदावरम्	सात गोदावरी नदियों का एकत्रीकरण
30.	पदमृनाभः	विष्णु भगवान्
31.	गवाक्षः	झरोखा
32.	अचतुरः	चार संख्या से रहित वाला
33.	विचतुरः	जिसके चार चले गये हो

34.	सुचतुरः	जिसके सुन्दर चार हों।
35.	त्रिचतुरः	तीन या चार वाला
36.	उपचतुराः	तीन चा पांच वाला
37.	स्त्रीपुंसौ	स्त्री और पुरूष
38.	धेन्वनडुहौ	गौ और सांड़
39.	ऋक्सामे	ऋग्वेद और सामवेद
40.	वाङ्मनसे	वाणी और मन
41.	अक्षिभुवम्	आंख और भौंह
42.	दारगवम्	स्त्री और गौ या गाय
43.	ऊर्वष्ठीवम्	जंघा और घुटना
44.	पदष्ठीवम्	पैर और घुटना
45.	नक्तन्दिवम्	रात और दिन
46.	रात्रिन्दिवम्	दिन और रात
47.	अहर्दिवम्	प्रतिदिन (दिनरात)
48.	सरजसम्	धूलि के साथ या ऋतुमति
49.	सरजः	कमल
50.	निःश्रेयसम्	निश्चित कल्याण या श्रेय
51.	पुरूषायुषम्	मानव जीवन की अवधि
52.	द्वयायुषम्	दो आयु वालों का एकत्रीकरण
53.	त्रयायुषम्	तीन आयु वालों का एकत्रीकरण
54.	ऋग्यजुषम्	ऋग्वेद यजुर्वेद
55.	जातोक्षः	उत्पन्न डीलवाला या साड़
56.	महोक्षः	बड़ा साड़ या बड़ा बैल
57.	वृद्धोक्षः	बढा सांड़ या बड़ा डीलडौल वाला बैल
58.	उपशुनम्	कुत्ता जैसा
59.	गोष्ठश्वः	गोशाला का कुत्ता या घोठा का कुत्ता या गोशाल में कुत्ता
60.	ब्रह्मवर्चसम्	ब्रह्म तेज
61.	हस्तिवर्चसम्	हाथी बल
62.	पल्यवर्चसम्	मांस बल
63.	राजवर्चसम्	राजबल
64.	अवतभसम्	अल्पान्धाकार या थोड़ा अन्धकार
65.	सन्तमसम्	सर्वव्याधि अन्धकार या घोर अन्धकार
66.	अन्धतमसम्	गहन या घोर अंधकार या वह अन्धकार जिसमें कुछ दिखलाई न पड़े
67.	वसीयः	अतिशय प्रशस्त
68.	श्वोवसीत्सम्	अतिशय प्रशस्त कल्याण
69.	श्वः श्रेयसंतेभूयात्	तुम्हारा बहुत कल्याण होवें।
70.	अनुरहसम्	गुप्त, एकान्तप्रिय
71.	तप्त रहसम्	तपा हुआ एकान्त

72.	प्रत्युरसम्	प्रत्येक हृदय में
73.	अनुगवंयानम्	गोदीर्घ्रता सदृशीदीर्घ सवारी
74.	द्विस्तावती	जितनी वेदी उसका दोगुना रस्सी
75.	त्रिस्तावती	जितनी वेदी उसकी तीनगुना रस्सी
76.	प्राध्वोरथः	दूरवर्ती रथ या दूर का रथ
77.	सुराजा	सुन्दर या अच्छा राजा
78.	अतिराजा	राजा से भी बढ़कर
79.	परमराजः	मुख्य राजा
80.	अतिगवः	गौ से भी बढ़कर या अधिक
81.	सुसक्थः	सुन्दर हड्डी या मजबूत हड्डी
82.	स्वक्षः	सुन्दर आंख
83.	किं राजा	दुष्ट या निंदित राजा
84.	किं सखा	दुष्ट या. कपटी मित्र
85.	किं राजः किंसखः किंगवः	क्या राजा, क्या मित्र, क्या गौ
86.	अराजा	वर्तमान में राजा नही
87.	असखा	वर्तमान में मित्र नही
88.	अधुरं शकटम्	बिनाधुरा की गाड़ी
89.	अपथम् अपन्थाः	वर्तमान में रास्ता नही
90.	अपथोदेशः	बिना रास्ता वाला देश
91.	अपथं वर्तते	वर्तमान में रास्ता नहीं

●

अलुक समास प्रारम्भ

सं0	शब्द	अर्थ
1	स्तोकान्मुक्तः	अल्प से या थोड़े से छुटकारा
2.	निस्तोकः	थोड़े से निकल गया
3.	ब्राह्मणाच्छँसी	विशेष ऋत्विक्
4.	ओजसाकृतम्	तेज से किया गया
5.	सहसाकृतम्	एकाएक या अकस्मात् किया गया
6.	अम्भसाकृतम्	जल से किया गया
7.	अञ्जसाकृतम्	टेढ़ा किया गया या सरल किया गया
8.	पुंसानुजः	जिसका अग्र जन्म पुरुष हो
9.	जनुषान्धः	जन्म से अन्धा
10.	मनसागुप्ता	मन से छिपाई गयी
11.	मनसाज्ञापी	मन से जानकारी करने के स्वभाव वाला
12.	आत्मनापञ्चमः	अपने से पांचवा
13.	आत्मकृतम्	स्वीकार या अंगीकार किया
14.	आत्मनेपदम्	स्वकीय क्रिया के फलोद्देश्क क्रियाओं का प्रयोग आत्मने पद में होता है।
15.	परस्मैपद	परकीय क्रिया फलोद्देश्क क्रिया का प्रयोग परस्मैपद में किया जाता है।
16.	त्वचिसारः	त्वचा, में चर्म में तत्व
17.	गविष्ठिरः	गो या गाय में स्थिर रहने वाला
18.	युधिष्ठिरः	युद्ध में स्थिर रहने वाला या अर्जुन का बड़ा भाई
19.	अरण्येतिलका	वन में सुन्दर फूल का पेंड
20.	हृदिस्पृक्	हृदय की छूने वाला
21.	दिविस्पृक्	आकाश को छूने वाला
22.	मुकुटेकर्षापणम्	मुकुट में भिन्न प्रकार का सिक्का
23.	दृषदिमाषकः	पत्थर से उड़द
24.	यूथपशुः	समुदाय या समूह में पशु
25.	अविकटोरणः	भेड़ो का समुदाय या समूह
26.	नदीदोहः	नदी का दाहन किया, अर्थात् नदी का दोहन किया
27.	मध्येगुरूः	बीचं में गुरू
28.	अन्तेगुरूः	अन्त या समीप में गुरू
29.	कण्ठेकालः	शिव या शंकर
30.	उरसिलोमा	हृदय में रोमवाला या किसी व्यक्ति नाम
31.	मूर्धशिखः	मोर या मुर्गा
32.	मस्तक शिखः	मोर या मुर्गा
33.	मुख कामा	मुह में इच्छा
34.	हस्तेबन्धः–हस्तबन्धः	हाथ में बंधा हुआ
35.	स्तम्बेरमः–स्तम्वरमः	हाथी
36.	कर्णेजपः–कर्णजपः	जुगुलखोर
37.	कुरूचरः	कुरूदेश में या कुरूदेश का जाने वाला
38.	प्रावृषिजः	वर्षाकाल में उत्पन्न होने वाले मेढक या घास
39.	शरदिजः	शरद ऋतु में उत्पन्न होने वाला

40.	कालेजः	समय पर उत्पन्न होने वाला
41.	दिविजः	आकाश में उत्पन्न होने वाला
42.	वर्षेजः वर्षजः	वर्ष भर में उत्पन्न होने वाला
43.	क्षरेजः—वर्षजः	बादल या पानी में उत्पन्न होने वाला
44.	क्षरेजः—शरजः	वाण या तीर में उत्पन्न होने वाला
45.	वरेजः—वरजः	श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होने वाला
46.	पूर्वाह्णेतरे—पूर्वाह्णतरे	प्रातः काल में
47.	पूर्वाह्णेतमें—पूर्वाह्णतमें	उत्पन्न सुबह ऊषा काल भीनुसहरा या भोर काल
48.	पूर्वाह्णेकाले—पूर्वाह्णकाले	दोपहर के पूर्व का समय
49.	पूर्वाह्णेतने—पूर्वाह्णतने	प्रातः काल में होने वाला
50.	खेशयः—खशयः	आकाश में सोने वाला
51.	ग्रामेवासः—ग्रामवासः	ग्राम में निवास या आवास वाला
52.	ग्रामेवासी—ग्रामवासी	गांव में रहने वाला
53.	भूमिशयः	जमीन पर सोने वाला
54.	अप्सुयोनिः	कमल, सेवार, मछली, मेढक, जोंक, जलजन्तु
55.	अपसव्यः	तर्पणादि कर्मों में जनेऊ को बायें कन्धे पर रखना।
56.	स्थण्डिलशायी	बिना बिछौना का भूमि पर सोने वाला साधु या सन्यासी
57.	साङ्काश्यसिद्धः	कुशध्वज की राजधानी मे सिद्ध
58.	चक्रबन्धः	चक्र में बंधा हुआ
59.	समस्थः	समान भूमि पर या जगह पर बैठने वाला
60.	चौरस्य कुलम्	चौर वंश
61.	ब्राह्मणकुलम्	ब्राह्मण वंश
62.	वाचोयुक्तिः	वाणी की योजना
63.	दिशोदण्डः	दिशा सम्बन्धी छड़ी
64.	पश्यतोहरः	देखते हुए चुराने वाला सोनार
65.	आमुष्यायणः	अमुष्य के लड़के
66.	आमुष्यापुत्रिका	अमुष्य की पुत्री
67.	देवानाम् प्रियः	मुर्ख
68.	देवप्रियः	देवभक्त
69.	शुनः शेपः	वैदिक ऋषि अजीगर्त का पुत्र
70.	शुनः पुच्छः	कुत्ते की पूंछ की तरह पूंछ वाला या कुत्ते की पूंछ
71.	शुनोलाङ्गूलः	कुत्ते की पूंछ की तरह पूंछ वाला या कुत्ते की पूंछ
72.	दिवोदासः	किसी राजर्षि का नाम
73.	दासीपुत्रः	नौकरानी या सेविका का लड़का
74.	ब्राह्मणी पुत्र	ब्राह्मणी का लड़का
75.	होतुः पुत्रः	होता के पड़ोसी का लड़का या होता या पुत्र
76.	पितुः पुत्रः	पिता का पुत्र या पिता के पड़ोसी का पुत्र
77.	होतृधनम्	हवन कर्ता का धन
78.	पितुः ष्वसा— पितुः स्वासा	पिता की बहन, बूआ या फूआ
79.	मातृष्वसा	माता की बहन—मौसी
80.	पितृष्वसा	बूआ या फूआ
81.	मातुः स्वसा	मौसी

समासाश्रय प्रारम्भ

सं0	शब्द	अर्थ
1	ब्राह्मणितरा	विशुद्ध ब्राह्मणी
2.	ब्राह्मणितमा	अतिशयब्राह्मणी या विशुद्ध ब्राह्मणी
3.	ब्राह्मणीरूपा	प्रशंसनीया ब्राह्मणी
4.	ब्राह्मणीकल्पा	ब्राह्मणी में कुछ न्यूनता
5.	ब्राह्मणीचेली	निन्दित ब्राह्मणी
6.	ब्राह्मणी ब्रुवा	कुत्सित ब्राह्मणी प्रवक्ता
7.	ब्राह्मणी गोत्रा	कुत्सित ब्राह्मणी
8.	आमलकीतरा	विशुद्ध आमड़ा
9.	कुवलीतरा	अतिशय बदरीफल
10.	ब्रह्मवन्धूतरा–ब्रह्मवन्धुतरा	अतिरस्कृत ब्राह्मणी
11.	स्त्रितरा–स्त्रीतरा	अतिशय महिला
12.	लक्ष्मीतरा	अतिलक्ष्मी या प्रशस्त लक्ष्मी
13.	विदुषितरा–विदुषीतरा	अतिविदुषी या प्रशस्ता विदुषी
14.	हृल्लेखः	हृदय ज्ञान या दिल की पीडा या हृदय को रेखाङ्कित करने वाला
15.	हृद्यम	हृदय की प्रिय वस्तु
16.	हार्दम्	हृदय से सम्बन्धित
17.	हृल्लासः	हिचकी, अशान्ति या शोक
18.	हृच्छोकः, हृदयशोकः	हृदय की वेदना या पीड़ा
19.	सौहार्द्यम्, सौहृद्यम्	सहृदयता या हृदय से हित चिन्तन
20.	हृदरोग, हृदयरोगः	दिल का रोग या दिन की वेदना
21.	पदाजिः	पैदल चलने वाला
22.	पदातिः	पैदल चलने वाला सिपाही
23.	पदगः	पैदल चलने वाला
24.	पदोपहतः	दोनो पैरों से आहत किया अथवा रास्ता
25.	पद्याः शर्कराः	खाड़, चीनी
26.	पाद्यम्	पैर धोने के लिए जल
27.	पदिकः	पैदल चलने वाला
28.	पद्हिमम्	पैर का टेढापन या पैर की शीतलता
29.	पत्काषी	पैर को स्वाभाविक रूप से भगाने वाला
30.	पद्धतिः	रास्ता, मार्ग, प्रथा, रीति, परिपाटी, प्रणाली
31.	गायत्रीपच्छः शंसति	ऋचा के प्रत्येक पादों से गायत्री की स्तुति करता है।
32.	पादशः कार्षापणंददाति	प्रत्येक श्लोक के पाद पर स्वर्णमुद्रा इत्यादि देता है।
33.	पद्घोषः–पादघोषः	पद ध्वनि या पदचाप
34.	पन्मिश्रः–पादमिश्रः	पैर से मिला हुआ
35.	पच्छब्दः–पादशब्दः	पैर से होने वाला शब्द
36.	पन्निष्कः–पादनिष्कः	पैर का माप
37.	उपमेघः	जल से भरा हुआ बादल के समान वाले किसी व्यक्ति का नाम
38.	उदवासः	जल में निवास

39.	उदवाहनः	जल सवारी, नौका, स्टीमर
40.	उदधिर्घटः	जलपात्र घट इत्यादि या समुद्र
41.	उदकुम्भः उदककुम्भः	जलीय घडा या घट जलपात्र घट् इत्यादि समुद्र
42.	उदकस्थली	जल की बटुला या बटुली
43.	उदक पर्वतः	जलीय पहाड़
44.	उदमन्थः–उदकमन्थः	जल मिलाकर मथना
45.	उदौदनः–उदकौदनः	उदक मिश्रित भात या खिचड़ी
46.	उदवीवधः–उदकवीवधः	जल को ढोने वाला
47.	उदगाहः–उदकगाहः	या भारवहिंयॉं या जल में अवगाहन या लोडन करने वाला
48.	उदसक्वतः–उदकसक्तवः	जल मिश्रित सतुआ
49.	उदविन्दवः–उदकविन्दवः	जल की बूंदे
50.	उदबज्रः–उदकवज्रः	जल ब्रज
51.	उदभारः–उदकभारः	जल का भार या बोझा
52.	उदहारः–उदकहारः	जल का माला
53.	ग्रामणीपुत्रः–ग्रामणिपुत्रः	गांव के मुखिया या सभापति का लड़का
54.	रमाप्रतिः	विष्णु या राम
55.	गौरीपतिः	शिव
56.	श्रीमदः	ऐश्वर्यमद, लक्ष्मीमद, शोभामद, तेजमद, धनमद
57.	भ्रूभंगः	कुटिल या टेड़ा भौंह
58.	शुक्लीभावः	शुक्लपन या श्वेतपन्न को प्राप्त
59.	भ्रुकुंसः भ्रूकुंसः	स्त्री के भेष भूषा या पहनावा में पुरूष पात्र
60.	भ्रुकुटिः भ्रूकुटिः	भौंहों को टेढ़ापन
61.	भ्रकुंसः	स्त्री के पहनावा में नर्तक
62.	भ्रकुटिः	भौंहों का टेड़ापन
63.	एकरूप्यम्	एक का आगमन
64.	एक क्षीरम्	एक का दूध
65.	रेवतिपुत्रः	रेवती का पुत्र (बलराम जी के पत्नी का नाम रेवती था)
66.	अजक्षीरम्	बकरी का दूध
67.	अजत्वम् अजात्वम्	बकरी का धर्म या गुण या लक्षण
68.	रोहिणित्वंरोहिणीत्वम्	रोहिणी का धर्म या गुण
69.	कौमुदगन्धीपुत्रः	कुइयां के फूल के गन्ध के समान गन्ध वाले का लड़का
70.	कौमुदगन्धीपतिः	कुइयॉं के फूल के गन्ध के समान गन्ध वाली का पति या स्वामी
71.	परमकारीषगन्धी पुत्रः	मुख्य रूप से सुखेहुए गोबर के गन्ध के समान गन्ध वाले का पुत्र
72.	अतिकारीषगन्धी पुत्रः	अच्छी तरह से सुखे हुए गोबर के गन्ध के समान गन्ध वाले का पुत्र
73.	कारीषगन्धी बन्धुः	सुखे हुए गोबर के गन्ध के समान गन्ध वाले का पुत्र
74.	करीषगन्ध्यावन्धुः	सुखे हुए गोबर के गन्ध के समान, गन्धे वाले का भाई
75.	कारीषगन्धीमातः	सुखे हुए गोबर के गन्ध के समान गन्ध वाले का भाई
	कारीषगन्ध्यामातः	सुखे हुए गोबर के गन्ध के समान गन्ध वाली की माता
76.	कारीषगन्धीमातृकः	
	कारीगन्ध्यामातृकः	सुखे हुए गोबर के गन्ध के समान गन्धवान की माता
78.	कारीषगन्धीमाता–	
	कारीषगन्ध्यामाता	सुखे हुए गोबर के गन्ध के समान गन्धवान कीं माता

79.	इष्टकचितम्	ईंटों का संग्रह करना
80.	पक्वेष्टकचितम्	पके हुए ईंटो का संग्रह करना
81.	इषीकतूलम्	सरकण्डा या नरकुल की बनी हुई लेखनी या कूंची
82.	मुञ्जेषीकतूलम्	मूञ्ज के कण्डों की बनी हुई कूंची
83.	मालभारी	माला या हार या गजरा के बोझे को ढोने वाला
84.	उत्पलमालभारी	पत्थर की बनी हुई माला को ढोने वाला
85.	सत्यङ्कारः	शपथ ग्रहण करने वाला। या सत्यप्रज्ञिक सङ्कल्पकरण
86.	अगदङ्कारः	रोग रहित करने वाला
87.	अस्तुङ्कारः	इस प्रकार होवे
88.	धेनुम्भव्या	नवप्रसूता गाय होवे
89.	लोकम्पृणः	संसार का पालन कर्ता विष्णु
90.	अनभ्यार्समित्या	दूर से परित्याग करने योग्य
91.	भ्राष्ट्रमिन्धः	धानादि का भूजा आदि को भूजने वाले पात्र का इन्धन
92.	अग्निमिन्धः	अग्नि को प्रज्वजित करने वाला इन्धन
93.	तिमिङ्गिलः	तिमि नामक मछली को निगलने वाला असाधारण मछली
94.	गिलगिलः	विशेष प्रकार की मछली
95.	तिमिङ्गिलगिलः	तिमि नामक मछली और गिलगिल नामक मछली
96.	उष्णङ्करणम्	गर्म करना
97.	रात्रिञ्चरः रात्रिचरः	रात में घूमने वाला या विचरण करने वाला भूत प्रेत चौरादि
98.	भद्रङ्करणम्	कल्याण करना
99.	रात्रिमटः–रात्र्यटः	रात में जाने वाला
100.	रात्रिम्मन्यः	अपने. को रात्रि मानने वाला
101.	सपलासम्	किसी की संज्ञा या नाम
102.	सहयुध्वा	साथ में युद्ध करने वाला
103.	समुहूर्तम्	मुहुर्त के साथ या ज्योतिष
104.	सद्रोणा खारी	द्रोण परिमाण विशेष
105.	सराक्षसीका निशा	रात्रि के द्वारा अनुमान किया जाता है, साक्षात राक्षसी की उपलब्धी नही
106.	सगर्भः	छोटा भाई
107.	सयूथ्यः	टोली के समान रूप से रहने वाला मित्र
108.	सनुत्यः	समान रूप से स्तुत किया गया
109.	समानमूर्धा	बराबर शिखा वाला
110.	समानप्रभृतयः	बराबर आद्य अवयव वाला
111.	समानोदर्काः	समान रूप से अन्त या उपसंहार
112.	सपक्षः	पक्ष या पांख के साथ
113.	साधर्म्यम्	धर्मभाव के साथ
114.	सजातीयम्	जातीयता के साथ
115.	ससखि	मित्र के सदृश
116.	सज्योतिः	जिसकी ज्योति या प्रकाश समान रूप से हो।
117.	सजनपदः	समान जिला वाला
118.	सरात्रिः	समान रात वाला
119.	सनाभिः	समान नाभि वाला
120.	सनामा	समान नाम वाला

121.	सगोत्रः	समान गोत्र वाला
122.	सरूपः	समान रूप वाला
123.	संस्थानः	समान स्थान वाला
124.	सवर्णः	समान वर्ण वाला
125.	सवयाः	समान या बराबर अवस्था वाले
126.	सवचनः	समान वाणी या कथन वाला
127.	सबन्धुः	समान बान्धव वाला
128.	सब्रह्मचारी	समान रूप से वेदाध्ययन के लिए व्रत का आचरण करने वाला
129.	सतीर्थ्यः	एक गुरू के समीप में रहकर पढ़ने वाला छात्र को सतीर्थ कहते हैं
130.	सोदर्यः समानोदर्यः	सगा भाई या सहोदर भाई
131.	सदृक्ः	समान या बराबर रूप से देखना
132.	सदृक्षः	बराबर देखते रहना
133.	ईदृक्ईदृशः	इस प्रकार
134.	कीदृक्कीदृशः	किस प्रकार
135.	ईदृशः	इस प्रकार
136.	कीदृक्षः	किस प्रकार
137.	तादृक्–तादृशः	उस प्रकार
138.	तावान्	उतना परिमाण वाला
139.	अमूदृक–अमुदृशः	यह दोनो देखने वालो
140.	अमूदृक्षः	यह दोनो देखने वाले
141.	अङ्गुलिषङ्गः	अंगुलि के साथ
142.	भीरूष्ठानम्	भयावह या डरावना स्थान
143.	ज्योतिष्टोमः	गणित या फलित सम्बन्धी शास्त्र की प्रशस्त्रि या प्रस्तुतिं सूक्त
144.	आयुष्टोमः	आयुर्वेद शास्त्र की प्रशस्ति स्तुति सूक्ति या श्लोक
145.	सुषामा	सुन्दर या अच्छा सामवेद
146.	सुगन्धिः	सुन्दर गन्ध वाला या अच्छा महकने वाला
147.	हरिषेणः	किसी व्यक्ति का नाम
148.	हरिसक्थम्	किसी व्यक्ति का नाम
149.	पृथुसेनः	किसी राजा का नाम
150.	विष्वकसेनः	किसी राजा का नाम
151.	सर्वसेनः	किसी व्यक्ति का नाम
152.	रोहिणीसेनः रोहिणीषेणः	रोहिणी के स्वामी
153.	शतभिषक्सेनः	शतभिषा नक्षत्र का स्वामी
154.	अन्यदाशीः	दूसरा आशिर्वाद
155.	अन्यदाशा	अन्य धीवरी
156.	अन्यादास्थितः	दूसरे में सहारा किया हुआ
157.	अन्यदुत्सुकः	अन्य में उत्साह या हर्ष
158.	अन्यदूतिः	अन्य में सिलाई, अन्य में कृपा, अन्य में इच्छा, अन्य में बुनाई
159.	अन्यद्रागः	दूसरे में राग
160.	अन्यदीयः	दूसरे में रहने वाला
161.	अन्याशीः	दूसरे का आर्शिवाद या दूसरे से आर्शीवाद
162.	अन्यत्कारकः	दूसरा करने वाला

163.	अन्यदर्शः अन्यार्थः	दूसरा अर्थ दूसरा प्रयोजन
164.	कादश्वः	दुष्ट घोड़ा
165.	कदन्नम्	दूषित अनाज खराब अनाज
166.	कूष्ट्रोराजा	दुष्ट ऊँट वाला राजा
167.	कत्त्रयः	तीन निन्दित
168.	कद्रथः	खराब रथ
169.	कद्वदः	निंदित वाणी
170.	कत्तृणम्	खराब या सड़ा हुआ खर
171.	कापथम	खराब रास्ता
172.	काक्षः	खराब आंख या इन्द्रिया
173.	काजलम्	खराब जल या थोडा जल
174.	काम्लः	खराब खटटा या तीक्ष्ण
175.	कापुरूषाः कुपुरूषः	अच्छा पुरूष नही
176.	कापुरूषः	नाम मात्र का पुरूष
177.	कवोष्णम्, कोष्णम्	
	कदुष्णम्	थोडा थोडा गर्म
178.	पृषोदरम्	केवल पेट
179.	बलाहकः	मेघ या बादल
180.	दक्षिणतारम्–दक्षिणतीरम्	दक्षिण तट
181.	उत्तरतारम्–उत्तरतीरम्	उत्तर का किनारा
182.	दूडाशः	दुःखपूर्वक दान
183.	दूणाशः	दुःख से नाश
184.	दूडमः	दुःख से हिंसा
185.	दूढयः	दुःख पूर्वक ध्यान या दुःख से ध्यान
186.	वृक्षी	किसी ऋषि या सन्त या महात्मा का आसन
187.	द्विगुणाकर्णः	दो गुना कान
188.	शोभनकर्णः	सुन्दर कान
189.	विष्टकर्णः	घुसा हुआ या भरा हुआ कान
190.	अष्टकर्णः	आठ संख्या रेखा वाला कान
191.	पञ्चकर्णः	पांच संख्या रेखा वाला कान
192.	मणिकर्णः	मणि युक्त कान वाला
193.	भिन्न कर्णः	भेदक कान वाला
194.	छिद्र कर्णः	छेदन किया गया कान वाला
195.	स्रुवकर्णः	स्रुवा की तरह कान वाला
196.	स्वस्ति कर्णः	स्वस्ति के आकार वाला कान
197.	उपानत्	जूता या पनही
198.	नीवृत	आजाद देश या राजधानी
199.	प्रावृद्	वर्षा ऋतु
200.	मर्मवित्	रहस्य को जानने वाला
201.	नीरूक	भलीभांति या अच्छी तरह प्रकाश
202.	अमीरूक्	चारो तरफ प्रकाश
203.	ऋतीषट्	सत्य को सहने वाला

	छिन्नकर्णः	कटा हुआ कान वाला
204.	परीतत्	चारो ओर फैला हुआ
205.	पटुरूक्	चतुरानन अच्छा लगना
206.	तिग्मरूक्	तीखा अच्छा लगना
207.	पुरगावणम्	पूरगा जंगल
208.	मिश्र कवणम्	मिला जुला वन
209.	मिश्रकावणम्	दिव्य उद्यानों में से एक उद्यान
210.	सारिकावणम्	शुक सारिका का वन
211.	कोटरावणम्	कोटर या खोखला वृक्ष वाला वन
212.	असिपत्रवनम्	तलवार के धार वाले पत्तों से युक्त वृक्ष वन या उस नाम का नरक
213.	अग्रेवणम्	वन के अग्रभाग में वन
214.	किंशुलुका गिरिः	अञ्जनापर्वत
215.	कृषीबलः	किसान या खेतीहर
216.	अमरावती	इन्द्र की नगरी या पुरी
217.	अजिरावती	नदी विशेष की संज्ञा
218.	व्रीहिमती	धनवाली नगरी
219.	बलयवती	कङ्कण वाली नगरी
220.	शरावती	नदी विशेष की संज्ञा
221.	ऋषीवहम्	ऋषि को प्राप्त करने वाला
222.	कषीवहम्	हानी करने वाले को ढोने वाला
223.	पिण्डवहम्	पिण्ड को ले जाने वाला
224.	पिलुवहम्	पिलु नामक वृक्ष को प्राप्त करने वाला
225.	दारूवहम्	लकडी को ढोने वाला
226.	परीपाकः परिपाकः	अच्छी तरह से पकाया हुआ
227.	निषादः	पुलिन्द नामक जाति विशेष की संज्ञा या मल्लाह, केवट
228.	नीकाशः	दर्शन दृष्टि, क्षितिज, समीप
229.	प्रकाशः	उजाला या अंजोर
230.	अष्टापदम्	किसी का नाम
231.	अष्टपुत्रः	आठ पुत्र वाला
232.	एकचितीकः	एक मानसिक अवस्था वाला
233.	द्विचितीकः	द्विमानसिक अवस्था वाला
234.	विश्वानरः	किसी राजा का नाम
235.	विश्वामित्रः	एक ऋषि का नाम
236.	विश्वमित्रः	किसी ब्राह्मण के बालक का नाम
237.	श्वादन्तः	कुत्ता का दांत
238.	श्वादंष्ट्रः	कुत्ता का भयंकर दांत
239.	श्वाकर्णः	कुत्ता का कान
240.	श्वाकुन्दः	कुत्ता का मोतिया
241.	श्वावराहः	कुत्ता की तरह शूकर
242.	श्वापुच्छम्	कुत्ते की पूंछ
243.	श्वापदः	कुत्ते का पैर या भयंकर स्थान या डरावना स्थान निर्जन स्थान
244.	प्रवणम्	घनघोर जंगल

245.	कार्ष्यवणम्	कालापन जंगल या अन्धकारमय जंगल
246.	निर्वणम्	वन रहित मैदान भाग
247.	अन्तर्वणम	बीच का या मध्य का जंगल
248.	शरवणम्	नरकुलों का झुरमुट या जंगल सदृश
249.	इक्षुवणम्	ईख का जंगल या ईख की खेती की बहुतायत
250.	प्लक्षवणम्	प्लक्ष वृक्ष का जंगल
251.	आम्रवणम्	आम वृक्ष का जंगल (बागीचा)
252.	खदिरवणम्	खैरा वृक्ष का जंगल
253.	पीपुक्षावणम्	पाकड वृक्ष का जंगल
254.	दुर्वावणम् दुर्वावनम	दूब का वन या दूब की अधिकता वाला क्षेत्र
255.	शिरीषवणम् शिरीषवनम्	शिरीष वृक्ष का जंगल
256.	देवदारूवनम्	देवदारू वृक्ष (देववृक्ष) का जंगल
257.	इरिका वनम्	इरिका नामक वृक्ष या पौधा का जंगल
258.	मिरिका वनम्	मिरिका वृक्ष या पौधा का जंगल
259.	तिमिरावनम्	तिमिरा नामक वृक्ष या पौधा का जंगल
260.	इक्षुवाहणम्	ईख ढोने वाला साधन या सवारी
261.	इन्द्रवाहनम्	इन्द्रदेव की सवारी
262.	क्षीरपाणाः	जिस देश के लोग दुग्धपान करते हैं अर्थात उशीनर नामक देश
263.	सुरापाणाः	जिस देश के निवासी मदिरापान करते हैं या प्राच्य देश
264.	गिरिणदी या निरीनदी	पहाड़ी नदी
265.	चक्रनितम्बा, चक्रणितम्बा	चक्र की तरह गोलाकार नितम्ब या कमर के नीचे का गोलाकार मांसल भाग
266.	माषवपिणौ	ऊर्द को दो लोग बोने वाले
267.	ब्रीहिवापाणि	धानों की बुआई करने वाले लोग
268.	माषवापेण	ऊर्द बोने वाले से
269.	गर्गभगिनी	गर्ग या गर्गों की बहन
270.	प्रहिण्वनम्	जिससे प्रसन्न किया जाय या प्रसन्न या खुश करना
271.	प्रेन्वनम्	जिससे व्याप्त किया जाय या व्याप्त करना
272.	रम्यायूना	सुन्दर युवक से
273.	परिपक्वानि	अच्छी तरह से पका हुआ
274.	वृत्रहणौ	दो इन्द्र
275.	हरिमाणी	अपने को विष्णु मानने वाले
276.	क्षीरपाणि	दुग्ध को पान करने वाले
277.	क्षीरपेण	दुग्ध पीने वाले से
278.	रम्यविणा	सुन्दर पक्षी से
279.	हरिकामिणौ	हरि को अधिक या बार–बार चाहने वाले दो व्यक्ति
280.	हरिकामाणि	हरि को बहुतेरे लोग बार–बार चाहने वाले
281.	हरिकामेण	हरि के चाहने वाले से
282.	माषकुम्भवापेन	ऊर्द के घडे से बोने वाले से
283.	चतुरङ्गयोगेन	रथ, गज, घोड़ा, और पैदल ये चार अंग वालों के सम्बन्ध से
284.	आद्रगोमयेण	गीला गोबर से
285.	शुष्क गोमयेण	सूखा गोबर से
286.	कुतुम्बरूणि	निन्दित या खराब तिन्दुकी फल

287.	अपरस्परासार्थागच्छन्ति	सतत् व्यवधान रहित साथ जाते हैं।
288.	अपरपरा: गच्छन्ति	पहले वाले और बाद वाले जाते हैं।
289.	गोष्पदः	गाय का पैर या धरती पर बना हुआ गाय के खुर का चिन्ह
290.	गोपदम्	गौ का खुर या गौ के ठहरने का स्थान या वह स्थान जहां गायों का बराबर आना जाना होता है।
291.	आपदम्	संकट या खतरावाला स्थान
292.	आश्चर्यम्	चमत्कार पूर्ण, विलक्षण, असाधारण और अदभुद
293.	आचर्यम्	आचरणीय या आचरण करने योग्य
294.	वर्चस्कम्	उजाला, कान्ति या वीर्य या अन्नमल (विष्ठा)
295.	अवस्करः	विष्णु, मल, गुह्य देश (योनि, लिंग, गुदा)
296.	अकरः	अपशब्द या घर का बहारन
297.	अपस्करः,	रथ का अंग (पहिया अंग को छोडकर)
	अपकरः	रथ के अंग से भिन्न अर्थ में
298.	विष्किरः	इधर उधर बिखेरना या मुर्गा पक्षी
299.	विकिरः	बिखरा हुआ या फैला हुआ या गिरा हुआ
300.	प्रतिष्कशः	भेदिया, चाबुक, हंटर
301.	प्रतिकशः	घोड़ा
302.	प्रस्कण्वः	कण्व ऋषि के पुत्र का नाम
303.	हरिश्चन्द्रः	एक राजा का नाम
304.	मस्करः	बांस या पोलाबांस
305.	मस्करी	परिव्राजक या सन्यासी
306.	मकरी	समुद्र
307.	मकरः	ग्राह या घड़ियाल
308.	कास्तीरम	किसी नगर का नाम
309.	अजतुन्दम्	बकरा का पेट या उदर
310.	कारस्करः	किम्पाक वृक्ष
311.	किष्किन्धा	सुग्रीव का निवास स्थान या रामायण काल में एक नगरी का नाम
312.	तस्करः	चोर
313.	वृहस्पतिः	देवगुरू
314.	प्रायश्चित्तम्	पाप शोधन या पापनिष्किृति पाप से छुटकारा पाने के लिए धार्मिक अनुष्ठान करना या तपस्या करना
315.	प्रायश्चित्तिः	पाप का शोधन या पाप निष्किृति
316.	वनस्पतिः	फूल के बिना फल देने वाला जंगली वृक्ष
	पारस्करः	एक ऋषि का नाम

●

अथ तद्धिताधिकार
अपत्यादिविकारान्तार्थ

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	आश्वपतम्	अश्वपति का लड़का
2.	गाणपत्यः	गणपति देवता वाले या गणपति मन्त्र
3.	दैत्यः	दिति के पुत्र राक्षस कुल
4.	आदित्यः	आदिति के पुत्र या सूर्य
5.	प्राजापत्यः	ब्रह्मा के पुत्र
6.	याम्यः	यम के लड़के या यम का दक्षिण द्वार
7.	पार्थिवा पार्थिवी	पृथ्वी के पुत्र इत्यादि
8.	दैव्यम, दैवम	देव के लड़के
9.	वाह्यः	बाहर होने वाला
10.	वाहीकः	बाहर होने वाला
11.	अश्वत्थामः	अश्वत्थामा के लड़के या द्रोणाचार्य का नाती
12.	अश्वत्थामा	द्रोणाचार्य का पुत्र या जिस की स्थिति अश्व की तरह हो
13.	उडुलोमाः	उडुलोम के लड़के
14.	उडुलोमान्	उडुलोम के बहुतेरे पुत्र
15.	औडुलोमिः	उडुलोम का लड़का
16.	गब्यम्	गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमुत्र, गोबर ये सभी गब्यपद से कहे जाते हैं।
17.	गोमयम्	गोबर
18.	औत्सः	उत्स ऋषि के लड़के
19.	आग्नेयम्	अग्नि के लड़के
20.	कालेयम्	कलि के लड़के

अथ अपत्याधिकार

सं0	शब्द	अर्थ
1.	स्त्रेणः	स्त्री का लडका, स्त्री स्वभाव वाला या स्त्रियों का समूह
2.	पौस्नः	पुरूष का लड़का, पुरूष स्वभाव वाला या पुरूषों का समूह
3.	पञ्चकपालः	पांच घडों में संस्कारित पुरोडास अर्थात हवनीय पदार्थ
4.	पञ्चकपालकम्	पञ्चकपाल का टुकडा
5.	पञ्चगर्गरूप्यम्	पांच गर्गों से प्राप्त
6.	द्वैमित्रिः	दो मित्र के लड़के या दो मित्रों से प्राप्त
7.	गार्गीयाः	गर्ग ऋषि के लड़के के छात्र
8.	गार्गीयम्	गर्ग ऋषि के लडकों के हित के लिए
9.	गर्गरूप्यम्	गर्ग ऋषि के लडकों से प्राप्त
10.	ग्लुचुकायनिः	ग्लुचुक ऋषि के पुत्र
11.	ग्लौचुकायनः	ग्लुचुकायन के पुत्र तथा उनके छात्र
12.	पैलः	पिला के पुत्र तथा पुत्र के पुत्र पिता पुत्र
13.	आङ्गः	अङ्ग देश का राजा और उस राजा को पुत्र–पिता पुत्र
14.	पान्नागारिः	पन्नागार का लड़का तथा उस लड़का पुत्र –पिता पुत्र
15.	दाक्षिः	दक्ष का पुत्र
16.	दाक्षायणः	दाक्षिका पुत्र अर्थात दक्ष पिता दाक्षायण उसका पुत्र
17.	तौल्वलिः	तुल्वल का पुत्र
18.	तौल्वलायनः	तौल्वलि का पुत्र अर्थात् तौल्वलिः पिता तौल्वलायन पुत्र
19.	कात्यः	कत के लड़के
20.	कात्यायनः	कात्य के लड़के तथा कत के पौत्र
21.	कातीयाः कात्यायनीयाः	कात्यायन के छात्र
22.	यास्कः	यस्क के पुत्र
23.	यास्कायनिः	यास्क के पुत्र यास्क के पौत्र
24.	यास्कीयाः यास्कायनीयाः	यास्क के छात्र
25.	औपगवः	उपगु के लड़के
26.	भानवः	भानु के लड़के
27.	सौत्थितिः	सूत्थिति के पुत्र
28.	दाक्षिः	दक्ष के लड़के
29.	वाहविः	बाहु नाम के राजा के लड़के
30.	सौध्तकिः	सुधातृ के लड़के
31.	वैयासकिः	व्यास के पुत्र (शुकदेव)
32.	वारूडकिः	वरूड के लड़के
33.	कौञ्जायनः	कुञ्ज के लड़के
34.	ब्राध्नायन्यः	ब्रध्न के लड़के
35.	कौञ्जायनी	कुञ्ज की पुत्री
36.	नाडायनः	नड के लड़के

37.	चारायणः	चर के लड़के
38.	हारितायनः	हरित के पुत्र
39.	गार्ग्यायणः	गार्ग्य के लड़के गर्ग के पौत्र
40.	दाक्षायणः	दाक्षि के पुत्र दक्षि के नाती भार्गव
41.	शारद्वातायनः	शरद्वत ऋषि के लड़के
42.	शौनकायनः	वात्स्य (शुनक ऋषि के पुत्र)
43.	दार्भायणः	आग्रायण
44.	द्रौणायनः द्रौणिः	द्रोण के लड़के,अश्वत्थामा
45.	पर्वातायनः	पर्वत का लड़का
46.	पार्वतिः	पर्वत का लड़का
47.	जैवन्तायनः	जीवन्त का लड़का
48.	जैवन्तिः	जीवन का लड़का
49.	वैदः	विद का नाती
50.	वैदिः	विद का पुत्र
51.	द्वैप्याः	द्विप में पैदा होने वाले
52.	औत्साः	उत्स देश में पैदा होने वाले
53.	पौत्राः	पुत्र के लड़के नाती
54.	दौहित्राः	लड़की का लड़का, पिता का नाती
55.	माधव्यः	मधु के लड़के (ब्राम्हण बटुक)
56.	ब्राभ्रव्यः	कौशिक ऋषि
57.	काप्यः	अङ्गिरस गोत्र में उत्पन्न कपि के पुत्र
58.	बौध्यः	अङ्गिरस गोत्र में उत्पन्न बोध के पुत्र
59.	वातण्डयः	अङ्गिरस गोत्र में उत्पन्न वतण्ड के पुत्र
60.	आश्वायनः	अश्वनाम ऋषि के गोत्रापत्य
61.	जातायनः	जात के ऋषि के गोत्रापत्य
62.	भार्गायणः	त्रिगर्त का पौत्र
63.	शैवः	शिव के पुत्र या शिव मतावलम्बी
64.	गाङ्गः	गंगा के पुत्र भीष्म पितामह
65.	गाङ्गायनिः गाङ्गेयः	गंगा के पुत्र भीष्म पितामह
66.	यामुनः	यमुना नदी का लड़का
67.	नार्मदः	नर्मदा ऋषि का लड़का
68.	चैन्तितः	चिन्तिता का पुत्र
69.	वासवदत्तेयः	वासवदत्ता का पुत्र
70.	वैनतेयः	विनता का लड़का गरूण
71.	शोभनेयः	शोभना का पुत्र
72.	वाशिष्ठः	वशिष्ठ के लड़के
73.	वैश्वमित्रः	विश्वमित्र के लड़के
74.	श्वाफल्कः	अन्धक वंश में उत्पन्न होने वाला श्वफल्क का लड़का
75.	वासुदेवः	वृष्णिवंश में उत्पन्न होने वाला वसुदेव का लड़का, कृष्ण
76.	आनिरूद्धः	वृष्णिवंश मं उत्पन्न होने वाला अनिरूद्ध का पुत्र

77.	नाकुलः	करूवंश में उत्पन्न होने वाला माद्री का नाती और नकुल का पुत्र
78.	साहदेवः	कुरूवंश में उत्पन्न होने वाला सहदेव का पुत्र और माद्री का पौत्र
79.	आत्रेयः	अत्रि मुनि का लड़का
80.	द्वैमातुरः	गणेश, जरासंघ
81.	षाणमातुरः	कार्तिकेय
82.	सम्भातुरः	सम्भातृ का लड़का
83.	भाद्रमातुरः	भद्रभातृ का लड़का
84.	कानीनः	व्यास और कर्ण (बिना ब्याही कन्या का पुत्र)
85.	वैकर्णः	वत्सगोत्रीय वंश में उत्पन्न विकर्ण का पुत्र
86.	शौङ्गः	भारद्वाज गोत्रीय वंश में उत्पन्न शुंङ्ग का पुत्र
87.	छागलः	वत्सगोत्रीय वंश में उत्पन्न छगल का पुत्र
88.	पैलः पैलेयः	पीला नाम मानुषी का पुत्र
89.	माण्डूकेयः	
	माण्डूकः माण्डूकिः	मण्डूक ऋषि के पुत्र
90.	वैनतेयः	गरूण
91.	सौमित्रिः	सुमित्रा के लड़के लक्ष्मण, शत्रुघ्न
92.	सपत्नः	शत्रु के लड़के या सौत के लड़के
93.	दात्तेयः	दत्ता नाम मानुषी का पुत्र
94.	दौलेयः	दुलि का लड़का
95.	नैधेयः	निधि का लड़का
96.	शोभ्रेयः	शुभ्र का लड़का
97.	वैकर्णेय	काश्यप गोत्रीय कुल में उत्पन्न विकर्ण का लड़का
98.	कौषीतकेयः	काश्यप गोत्रीय वंश में उत्पन्न कीषीतक का पुत्र
99.	भ्रौवेयः	भ्रुव के पुत्र
100.	प्रावाहणेयः प्रवाहणेयः	प्रवाहण का पुत्र
101.	प्रावाहर्णेयिः प्रवाहर्णेयिः	प्रवाहण का पौत्र
102.	काल्याणिनेयः	कल्याणी का पुत्र
103.	बान्धकिनेयः	बन्धकी का लड़का
104.	कौलटिनेयः कोलटेयः	कुलटा का पुत्र (यहां पर भिक्षुकी को कुलटा कहा गया है)
105.	कौलटेरः	कुलटा का पुत्र (यहां व्यभिचारिणी स्त्री को कुलटा कहा गया है)
106.	सौहार्दः	मित्र या सुहृदय का लड़का
107.	सौभागिनेयः	सुभगा का लड़का
108.	चाटकैरः	गौरैया या गौरैया के मादा का बच्चा
109.	चटका	गौरैया या गौरैया के मादा की मादा सन्तान
110.	गौधेरः	गोह या घड़ियाल मादा का बच्चा
111.	जाडारः	जड़ का लड़का
112.	पाण्डारः	नपुंसक या हिजरा का लड़का
113.	काणेरः काणेयः	कानी स्त्री का पुत्र
114.	दासेरः दासेयः	दासी या सेविका का पुत्र
115.	पैतृप्वस्रीयः	पिता की बहन फूआ या बूआ का पुत्र

116.	पैतृष्वस्रेय:	फूआ का लड़का
117.	मातृष्वस्रीय: मातृष्वस्रेय:	मौसी का लड़का
118.	कामण्डलेय:	चार पैर वाला कमण्डलु पशु विशेष का लड़का
119.	गार्ष्टेय:	गृष्टि ऋषि के लड़के
120.	मैत्रेय: मैत्रेयी	मित्रयु नामक ऋषि का लड़का या हितैषी का लड़का
121.	मित्रयव:	मित्रयु ऋषि का लड़का या हितैषी का लड़का
122.	अत्रय:	अत्रि ऋषि के बहुतेरे लड़के
123.	भृगव:	भृगु ऋषि के बहुतेरे लड़के
124.	कुत्सा:	कुत्स ऋषि के बहुतेरे लड़के
125.	वसिष्ठा:	वशिष्ठ ऋषि के बहुतेरे लड़के
126.	गोतमा:	गोतम ऋषि के बहुत लड़के
127.	अडि.गरस:	अङ्गिरस के बहुत लड़के
128.	पन्नगारा:	पन्नागार के बहुत लड़के
129.	युधिष्ठिरा:	युधिष्ठिर के बहुत लड़के
130.	गौपवना:	गोपवन के बहुत लड़के
131.	शैग्रवा:	शिग्रु के बहुत लड़के
132.	तिककितवा:	तिककित के बहुत लड़के
133	उपकलमका:, औपकायनलामकायना:	उपक और लमक के बहुत लड़के
134	भ्राष्टकपिष्ठला:, भ्राष्टकिकपिष्ठलय:	भ्रष्टककपिष्ठकल के बहुत लड़के
135	ओपकायना:	उपक के लड़के
136	लामकायना:	लमक के लड़के
137	अगस्तय:	आगस्त्य ऋषि के बहुत पुत्र
138	कुण्डिना:	कौडिन्य ऋषि के बहुत लड़के
139	राजन्य:	राजाओं के लड़के
140	श्वशुर्य:	श्वशुर के लड़के
141	राज्यम्	राज धर्म या राज कर्म
142	चक्रिण:	चक्रिन् का लड़का
143	भाद्रसाम:	भद्रसमन् के लड़के
144	सौत्वन:	सुत्वन् के लड़के
145	चाकवर्मण:	चकवर्मन् का लड़का
146	हैतनाम: हैतनामन:	हितनाम्न् के लड़के
147	ब्राह्म:	ब्रह्मजाति या हंवि
148	ब्राह्मण:	ब्रह्मन् का लड़का
149	ब्राह्मी	औषधी विशेष
150	औक्षम्	बैलों का झुंण्ड
151	औक्ष्ण:	उक्षन् के लड़के
152	ताक्ष्ण:	तक्षन् का लड़का
153	भ्रौणघ्न:	भ्रूणहन का लड़का
154	धार्तराज्ञ:	धृतराज्ञ का लड़का

155	सामनः	सामन् का लड़का
156	ताक्षण्यः	तक्षन् का लड़का
157	क्षत्त्रियः	क्षत्त्र का लड़का या सवर्ण में द्वितीय जाति (क्षत्रिय) जाति का लड़का
158.	क्षात्त्रिः	क्षत्रिय से सम्बन्ध रखने वाला
159.	कुलीनः	कुल में उत्पन्न लड़का
160.	आढ्य कुलीनः	धनी कुल में उत्पन्न लड़का
161.	कुल्यः कौलेयकः कुलीनः	खानदानी लड़का
162.	बहुकुल्यः बाहुकौलेयकः	बहुकुलीन कम खानदानी लड़का
163.	माहाकुलः महाकुलीनः	महाकुलीनः अच्छे या बड़े खानदान में उत्पन्न लड़का
164.	दौष्कुलेयः दुष्कुलीनः	दूषित कुल में उत्पन्न पुत्र
165.	स्वस्रीयः	सासु (पत्नी की माता) का पुत्र
166.	भातृव्यः भ्रात्रीयः	भाई का लड़का (भतीजा)
167.	भ्रातृव्यः	शत्रु का लड़का
168.	रैवतिकः	रेवती का पुत्र
169.	गार्गः गार्गिकः	निंदित गार्गी का पुत्र
170.	सौवीराः	सुवीर देश में उत्पन्न होने वाला
171.	भागवित्तिकः	भागवित्ति का पुत्र
172.	भागवित्तायनः	भागवित्ति का पुत्र
173.	यामुन्दायनिः	यमुन्द का पुत्र
174.	यामुन्दायनीयः	यामुन्दायिनी का पुत्र
175.	तैकायनिः	तैकायनि का लड़का
176.	फाण्टाह्नतः	
	फाण्टाह्नतायनिः	फाण्टाह्नत के पुत्र
177.	मैमतः मैमतायनिः	मिमत के पुत्र
178.	कौरयाः	कुरू नाम ब्राह्मण के लड़के
179.	वावदूक्याः	वावदूक के लड़के
180.	सम्राजः	शूद्रादि कुल में उत्पन्न
181.	साम्राज्यः	क्षत्रिय कुल में उत्पन्न
182.	हारिषेण्यः	हरिषेण के लड़के
183.	तान्तुवायिः	तन्तुवाय (जुलाहा का पुत्र)
184.	कौम्भकारिः	कुम्भकार का लडका
185.	नापित्यः	नापित या नाऊ का लड़का
186.	नपितायनिः	नापित का लड़का
187.	ताक्ष्णः ताक्षण्यः	बढ़ई का लड़का
188.	तैकायनिः	तिक का लड़का
189.	कौसलस्यायनिः	कौसल्य के लड़के
190.	कार्मार्यायणिः	कामार्य के लड़के
191.	छाग्यायनिः	छाग के लड़के
192.	वार्ष्यायणिः	वृष के लड़के
193.	कात्रयिणिः	कार्त का लड़का कर्त का नाती

194.	दाक्षायणः	दाक्षि का लड़का दक्ष का नाती
195.	औपगविः	औपगव का लड़का उपगु का नाती
196.	आम्रगुप्तायनिः आम्रगुप्तिः	आम्रगुप्त का पुत्र
197.	वाकिनकायनिः	वाकिन का लड़का
198.	वाकिनिः	वाकिन का लड़का
199.	गार्गी पुत्रिकायणिः, गार्गीपुत्रयाणिः	गार्गी की पुत्री, गार्गी का पुत्र
200.	ग्लुचुकायनिः	ग्लुचुक का लड़का
201	मानुषः मनुष्यः	मनु की संताने मानव जाति
	लाक्षणिः	लक्षण का लड़का
	त्यादायनिः त्यादः	उसका लड़का
202.	ऐक्ष्वाकः	इक्ष्वाकु नामक देश में उत्पन्न या इक्ष्वाकु नाम राजा से उत्पन्न
203.	पाञ्चालः	पञ्चालों के राजा
204.	पौरवः	पुरू नामक राजा के लड़के
205.	पाण्ड्यः	पाण्डु देश में उत्पन्न या पाण्डु राजा के लड़के
206.	साल्वेयः	साल्वेय के लड़के
207.	गान्धारः	गान्धारी के लड़के या गान्धार देश में उत्पन्न
208.	आङ्गः	अंग देश में उत्पन्न या अंग देश के राजा के लड़के
209.	वाङ्गः	बंग देश में उत्पन्न या बंग देश के राजा के लड़के
210.	सौह्यः	सुह्य देश के राजा के लड़के या सुह्य देश में उत्पन्न
211.	मागधः	मगध देश में उत्पन्न
212.	कालिङ्गः	कलिङ्ग देश में उत्पन्न या कलिङ्ग देश के राजा का लड़का
213.	सौरमसः	सुरमस का लड़का या सुरमस राजा का लड़का
214.	आम्वठष्यः	आम्बष्ठ देश या आम्वष्ठ राजा से उत्पन्न
215.	सौवीर्यः	सौवीर देश में उत्पन्न या सौवीर राजा का पुत्र
216.	आवन्त्यः	अवन्ति देश में उत्पन्न या अवन्ति नामक राजा का पुत्र
217.	कौन्त्यः	कुन्ति देश में उत्पन्न या कुन्ति का पुत्र
218.	कौसल्यः	कोसल देश में उत्पन्न या कोसल राजा से उत्पन्न पुत्र
219.	कौरयः	कुरू देश मे उत्पन्न या कुरू नामक क्षत्रिय से उत्पन्न लड़का
220.	नैषधः	निषध देश में उत्पन्न या निषध क्षत्रिय राजा से उत्पन्न लड़का
221.	औदुम्वरिः	उदुम्बर क्षेत्र में उत्पन्न
222.	प्रात्यग्रथिः	प्रत्यग्रथ राजा का लड़का
223.	कालकूटिः	कालकूट से उत्पन्न राजा का लड़का
224.	आश्मकिः	अश्मक राजा का लड़का
225.	इक्ष्वाकवः	इक्ष्वाकु देश में या राजा से उत्पन्न सन्तान
226.	कम्बोजः	कम्बोज देश के राजा का लड़का
227.	चोलः	चोल देश में उत्पन्न
228.	शकः	शक देश में उत्पन्न
229.	केरलः	केरल देश में उत्पन्न
230.	यवनः	यवन देश में उत्पन्न

231.	अवन्ती	अवन्ति देश में उत्पन्न या अवन्ति देश की राज्ञी
232.	कुन्ती	कुन्ति देश में उत्पन्न या कुन्ति देश की राज्ञी
233.	कुरूः	कुरू देश में उत्पन्न कुरूराज के लड़के
234.	शूरसेनी	शूरसेन राजा की लड़की
235.	मद्री	मद्र देश के राजा की लड़की
236.	पाञ्चाली	पाञ्चाल देश में उत्पन्न या पाञ्चाल देश के राजा की पुत्री
237.	वैदर्मी	विदर्भ देश के राजा की कन्या
238.	आङ्गी	अङ्ग देश राजा की कन्या
239.	वाङ्गी	वाङ्ग देश राजा की कन्या
240.	मागधी	मगध देश के राजा की कन्या
241.	भार्गी	भर्ग देश की राजा की कन्या
242.	कारूशी	करूश देश की राजा की कन्या
243.	कैकयी	केकेय देश की राजा की कन्या
244.	यौधेयी	युधा की कन्या
245.	शौक्रेयी	शुक्रा की कन्या
246.	कौमुदगन्ध्याः	कुमुदगन्धि की कन्या
247.	वाराह्या	वाराहि की पुत्री
248.	वासिष्ठी	वशिष्ठ ऋषि के द्वारा देखी गयी ऋचा
249.	वैश्वामित्री	विश्वमित्र ऋषि के द्वारा देखी गयी ऋचा
250.	अहिच्छत्री	अहिच्छत्र गोत्र में उत्पन्न
251.	भौणिक्या	भुणिक कुल में उत्पन्न या भुणिक की कन्या
252.	पौणिक्या	पुणिक कुल में उत्पन्न या पुणिक की कन्या
253.	क्रौड्या	क्रौडि की लड़की, क्रौड की नाति
254.	व्याड्या	व्याडी की लड़की या व्याड की नाति
255.	गौकक्ष्या	गोकक्ष्य की कन्या
256.	सूत्या	सुत युवती की लडकी
257.	भौज्या	भोज क्षत्रिय की कन्या
258.	दैवयज्ञि	देवयज्ञि की कन्या
259.	शौचिवृक्षी	शुचिवृक्ष की कन्या
260.	सात्यमुग्रया, सात्यमुग्री	सत्यमुग्र की कन्या
261.	काण्डेविद्धया, काण्डेविद्धी	काण्डेविद्ध की लड़की
262.	दैवयज्ञा, दैवयज्ञी	देवयज्ञी की कन्या

अथ तद्धितेरक्ताद्यर्थक प्रकरणम्

सं0	शब्द	अर्थ
1.	काषायणम्	गेरुआ रंग से रंगा हुआ वस्त्र
2.	माञ्जिष्ठम	मजीठ के रंग से रंगा हुआ
3.	लाक्षिकः	लक्ष्य के रंग से रंगा हुआ
4.	रौचनिकः	रोचना या गोरोचन के रंग से रंगा हुआ वस्त्र
5.	शाकलिकः	रागद्रव्य से रंगा हुआ वस्त्र
6.	कार्दमिकः	कीचड़ से सना हुआ वस्त्र
7.	नीलम् नीलकम्	नीली से रंगा हुआ वस्त्र
8.	हारिद्रम	हरदी से रंगा हुआ वस्त्र
9.	माहारजनम्	महारजन विशेष रंग से रंगा हुआ
10.	पौषमहः	पुष्य नक्षत्र से युक्त दिन
11.	पौषीरात्रिः	पुष्य नक्षत्र युक्त रात्रि
12.	श्रावणी	श्रावण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा रात्रि
13.	श्रावणा रात्रिः	श्रावणा नाम की रात्रि
14.	अश्वत्थः	अश्वत्थ नाम के मुहुर्त शुभ बेला
15.	तिष्यपुनर्वसवीयमहः	तिष्य नक्षत्र और पुनर्वसु नक्षत्र से युक्त दिन
16.	राधानुराधीया रात्रिः	राधा और अनुराधा नक्षत्र से युक्त रात्रि
17.	वशिष्ठं साम	वशिष्ठ ऋषि से देखा गया साम वेद
18.	औशनम्–औशनसम्	उसनस् ऋषि से देखा गया साम वेद
19.	कालेयम साम	कलि से देखा गया साम वेद
20.	वामदेव्यम्	वामदेव से देखा गया सामवेद
21.	वास्त्रो रथः	वस्त्र से चारो ओर लपेटा हुआ वस्त्र वाला रथ
22.	वस्त्रेण परिवृत्तकायः	वस्त्र से लपेटा हुआ शरीर
23.	पाण्डुकम्बली	पाण्डु वर्ण के कम्बल से लपटा हुआ
24.	द्वैपम्	व्याघ्रधर्मादि
25.	द्वैपोरथः	व्याघ्र धर्म से चारो ओर लपटा हुआ रथ
26.	वैयाघ्रः	व्याघ्र धर्म से चारो ओर लपेटा गया रथ
27.	कौमारः	कुमारी के पति योग्य को कौमार
28.	शाराव ओदनः	थाली में भात
29.	स्थाण्डिलोभिक्षुः	यज्ञ के लिए चौरस या चौकोर या बराबर किया गया भूमि खण्ड पर या वेदी पर ढेलों युक्त बंजर भूमि पर बिना बिस्तर का सोता है।
30.	भ्राष्ट्रा यवाः	भाड़ में भूजा गया यव या जव का भूजा
31.	अष्टाकपालः पुरोडासः	आठ घड़ों में संस्कारित पुरोडास
32.	शूल्यंमासम्	नुकीला या पैना नोकदार या नुकीले काटे पर भुना गया मांस
33.	उख्यम्	पतली या डेकची में बनाया गया पदार्थ
34.	दाधिकम	दही में पकाया गया खाद्य पदार्थ
35.	औदश्रित्कः औदश्वितः	मटठा में पकाया गया खाद्य पदार्थ
36.	आशिषिकः	आशीर्वाद से चलने वाला
37.	औषिकः	उपभोग से चलना

38.	दौष्कः	भुजाओं से चलने वाला
39.	क्षैरेयी	दुग्ध में पकने वाला हलुआ या खीर
40.	पौषी	पुष्य नक्षत्र युक्ता पौर्णमासी वह जिस माह में हो पौषमाह
41.	आग्रहायणी	अगहन की पूर्णिमा
42.	आग्रहेयिणिकोमासः	अगहन की पूर्णिमा से युक्त मास, अगहन माह
43.	अश्वत्थः	अश्वनी नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा
44.	आश्वत्थिकः	अश्वनी नक्षत्र पूर्णिमा वाला माह। आश्विन (क्वार माह)
45.	फाल्गुनिकः फाल्गुनी	फाल्गुनी पूर्णिमा से युक्त माह फाल्गुन माह
46.	श्रावणिकः श्रावणः	श्रवण नक्षत्र पूर्णिमा वाला माह अर्थात् सावन माह
47.	कार्तिकिकः कार्तिकः	कृतिका नक्षत्र युक्त पूर्णिमा वाला माह, कार्तिक माह
48.	चैत्रिकः चैत्रः	चित्रा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा
49.	ऐन्द्रं हविः	इन्द्रदेव सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
50.	पाशुपतम्	पशुपति देवता सम्बन्धी हवि
51.	वार्हस्पत्यम्	बृहस्पति देवता सम्बन्धी हवि
52.	कायम्	ब्रह्मा देवता सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
53.	श्रायम्	श्री देवता सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
54.	शुक्रियम्	शुक्र देवता सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
55.	अपोनाप्त्रियम	अपोन देवता सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
56.	अपानाप्त्रियम	अपान देवता सम्बन्धी द्रव्य
57.	पैङ्गाक्षीपुत्रीयम्	पैंगाक्षी पुत्र सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
58.	तार्णविन्दवीयम्	तार्णविन्दु देवता सम्बन्धी द्रव्य
59.	शतरूद्रियम् शतरुद्रीयम्	शतरूद्र देवता सम्बन्धी द्रव्य
60.	महेन्द्रियम् माहेन्द्रयम महेन्द्रीयम	महेन्द्र देवता सम्बन्धी हवनीय पदार्थ
61.	सौम्यम्	सोम (चन्द्र) देवता सम्बन्धी द्रव्य
62.	सौमी	सोम (चन्द्र) सम्बन्धी ऋचा
63.	वायव्यम्	वायु सम्बन्धी हवनीय ऋचा
64.	ऋतव्यम्	ऋत सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
65.	पित्र्यम्	पितृ देवता सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
66.	उषस्यम्	उषा देवता सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
67.	द्यावापृथिवीयम् द्यावापृथिव्यम्	द्यावापृथ्वी सम्बन्धी हवनीय पदार्थ
68.	शुनासीरीयम् शुनासीर्यम्	शुनासीर देवता सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
69.	मरूत्वतीयम् मरूत्वत्यम्	मरूत देवता सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
70.	अग्नीषोमीयम्, अग्नीषोम्यम्	अग्नि सोम देवता सम्बन्धी हवनीय पदार्थ
71.	वास्तोष्पतीयम्, वास्तोष्पत्यम्	सुरपति या इन्द्र देवता सम्बन्धी हवनीय पदार्थ
72.	आग्नेयम्	अग्नि देवता सम्बन्धी हवनीय द्रव्य
73.	मासिकम्	माह सम्बन्धी देवता के लिए हवि
74.	प्रावृषेण्यम्	प्रावृट् देवता सम्बन्धी हवि
75.	माहाराजिकम्	वैश्रवण देवता सम्बन्धी हवि

76.	प्रौष्ठपदिकम्	पौष्ठपद देवता सम्बन्धी हवि
77.	अग्निमारूतम्	अग्नि और मरूत देवता सम्बन्धी हवि
78.	सौमेन्द्रः	सोम और इन्द्र देवता सम्बन्धी हवि
79.	ऐन्द्राग्नः	इन्द्र और अग्नि देव सम्बन्धी हवि
80.	ऐन्द्रावरूणम्	इन्द्र और वरूण देव सम्बन्धी हवि
81.	पाकयज्ञिकः कालः	पावर्णस्थ स्थाली पाक जिस काल में मिलता
82.	नावयज्ञिकः काल	नवान्न भक्षण मुहुर्त
83.	पौर्णमासी तिथिः	पूर्ण चन्द्रमा जिस तिथि में पाया जाता है।
84.	पितृव्यः	पिता का भाई चाचा
85.	मातुलः	माता का भाई मामा
86.	मातामहः	माता का पिता नाना
87.	पितुः पिता–पितामहः	पिता का पिता आजा
88.	मातामही	माता की माता नानी
89.	पितामही	पिता की माता आजी
90.	अविसोढम्	भेड़ी के ऊन का कपड़ा
91.	अविदूसम्	भेड़ का वस्त्र
92.	अविमरीसम्	भेड़ का खाल
93.	तिलपिञ्जः	फल रहित तिल का पेड़
94.	तिलपेजः	फल रहित तिल का पेड़ अर्थात जिस तिल के पेड़ में फल न लगता हो लगता है बंझा तिल का पेड़
95.	तिल्पिञ्च	बंझा तिल का पेंड़
96.	काकम्	कौओं का झुण्ड
97.	वाकम्	बगुलों का झुण्ड
98.	भैक्षम्	भिक्षा की राशि या ढेर
99.	गार्मिणम्	गर्भवती स्त्रियों का समूह
100.	यौवनम्	युवती स्त्रियों का समूह या झुण्ड
101.	यौवतम्	यवति स्त्रियों का एक समूह
102.	ग्लौचुकायनम्	ग्लुचुकायनीयों का एक समूह
103.	औक्षकम्	बैलों का झुण्ड या समूह
104.	औष्ट्रकम्	ऊँटों का समूह या झुण्ड
105.	औरभ्रकम्	बादलों का झुण्ड या समूह
106.	राजकम् राजन्यकम्	प्रभु सत्ता प्राप्त क्षत्रिय राजा या राजाओं का एक समूह या झुण्ड
107.	वात्सकम्	बछड़ो का झुण्ड या समूह
108.	मानुष्यकम्	मनुष्यों का समूह या झुण्ड
109.	आजकम्	बकरों का समूह या झुण्ड
110.	कैदार्यकम्, कैदारकम्	खेतों का समूह या चावल तथा अनाज का समूह
111.	ब्राह्मण्यम्	ब्राह्मणों का समूह या झुण्ड
112.	माणव्यम्	माणव के सन्तानों का समूह या छोटे बच्चों का समूह
113.	वाडव्यम्	घोड़ियों का समूह, ब्राह्मणों का समूह
114.	ग्रामता	गावों का समूह
115.	पृष्ठयः	टट्टू घोड़ा या लदुआ घोड़ा
116.	जनता	जन का समूह या लोगों का समूह
-----	गृहमेधीयम्, गृहमेध्यम्	गृहमेध सम्बन्धीहवि

117.	बन्धुता	भाई बन्धुओं का समूह रिश्तेदारों का समूह, स्वजनों का समूह
118.	गजता	हाथियों का समूह
119.	सहायता	सहायकों का समूह
120.	अहीनः	यज्ञार्ह दिनों का समूह
121.	आह्नः	दिनों का समूह
122.	पार्श्वम्	खांस के नीचे का भाग या पसलियों का समूह, निकट, समीप या पास की ओर
123.	वार्द्धकम्	वृद्धों का समूह, बूढ़ों का झुण्ड
124.	गाणिक्यम्	वेश्यों का समूह
125.	कावचिकम्	कवच धारण करने वालों का समूह
126.	कैदारिकम्	खेतों का समूह
127.	कापोतम्	कबूतरों का समूह
128.	मायूरम्	मयूरों का समूह
129.	खाण्डिकम्	भाग वालों का समूह या हलवाई
130.	काठकम्	कठ शाखा के पढ़ने वालों का समूह
131.	छान्दोग्यम्	सामवेद की शाखा के पढ़ने वालों का समूह
132.	साक्तुकम्	सतुओं का समूह
133.	हास्तिकम्	हाथियों का समूह
134.	धैनुकम	धेनुयों का समूह
135.	कैश्यम्, कैशिकम्	बालों का समूह
136.	अश्वीयम्, आश्वम्	अश्वों का समूह
137.	पाश्यम्	पासों का समूह
138.	तृण्या	तृणों का समूह
139.	धूम्या	धूमों का समूह
140.	वन्या	वनों का समूह
141.	वात्या	बातों का समूह
142.	खल्या	दुष्टों का समूह
143.	गव्या	गौओं का समूह या गौ का समूह
144.	रथ्या	रथों का समूह
145.	खलिनी	खलिहानों का समूह, दुष्टों का समूह
146.	गोत्रा	गौओं का समूह
147.	रथकट्या	रथों का समूह
148.	डाकिनी	भय प्रदान करने वाली पिचाशिनियों या भूतनियों का समूह
149.	कुटुम्बिनी	गृह स्वामिनियों का समूह, गृह पत्नियों का समूह या गृहिणियों का समूह
150.	शैवः	शिव सम्प्रदायिक देश या क्षेत्र
151.	राजन्यकः	राजाओं का देश
152.	भौरिकिविधम्	सुवर्णध्यक्ष या कोषाध्यक्ष
153.	भौलिकिविधम्	सरकारी खजाने में सुवर्णाधिपति या कोषाध्यक्ष
154.	ऐषुकारिभक्तम्	वाण निर्माण करने वालों का देश या क्षेत्र
155.	सारसायनभक्तम्	ऊँचाई वाला देश या क्षेत्र
156.	पाङ्क्तः	पङ्क्ति आदि में जिसके
157.	त्रैष्टुभम्	त्रिष्टुम नाम का छन्द
158.	सौभद्रः	सुभद्रा प्राप्ति हेतु संग्राम

159.	भारत:	भरण पोषण करने वाले संग्राम के योद्धा
160.	दाण्डा	दण्ड प्रहार वाला खेल
161.	मौष्टा	मुष्टि प्रहार करने वाला खेल
162.	श्यैनंपाता	मृगया या शिकार
163.	तैलम्याता	स्वधा
164.	वैयाकरण:	व्याकरण पढ़ने वाला या जानने वाला
165.	आग्निष्टोमिक:	अग्निष्टोम यज्ञ को जानने वाला या अग्निष्टोम को प्रतिपादित करने वाला ग्रन्थ को पढ़ता है।
166.	वाजपेयिक:	वाजपेय नामक यज्ञ को जो जानता है या उस यज्ञ को सम्पादन कराने वाला ग्रन्थ को जो पढ़ता है।
167.	औक्थिक:	सामवेद की उक्थ शाखा को जो जानता है या उसको पढ़ता है।
168.	नैयायिक:	न्याय शास्त्र को जो जानता है या पढ़ता है।
169.	वार्तिक:	वृत्ति को जो पढ़ता है या जानता है।
170.	लौकायतिक:	भौतिकवादिता, नास्तिक दर्शन को जानने वाला या पढ़ने वाला या चर्वाक दर्शन को जानने वाला
171.	साङ्ग्रहसूत्रिक:	संग्रह नामक सूत्र को जो जानता है या पड़ता है।
172.	काल्पसूत्र:	कल्पसूत्र को जो पढ़ता है या जानता है।
173.	वायसविधिक	आयु से सम्बन्धित विधा को पढ़ने वाला या जानकारी रखने वाला तथा काक विद्या को पढ़ता या जानता है।
174.	गौलक्षणिक:	गोलक्षण शास्त्र को जानने वाला, गो लक्षण शास्त्र को पढ़ने वाला
175.	आश्वलक्षणिक:	घोड़ा के लक्षण शास्त्र को जानने वाला या गौ के लक्षण शास्त्र को पढ़ने वाला
176.	पाराशर कल्पिक:	पाराशर कल्प शास्त्र को जानने वाला या पढ़ने वाला
177.	आङ्गविद्य:	अङ्गविद्या को जानने वाला या पढ़ने वाला
178.	क्षात्रविद्य:	छत्र सम्बन्धी विधा को जानने वाला या पढ़ने वाला
179.	धार्मविद्य:	धर्मशास्त्र को जानने वाला या पढ़ने वाला
180.	यावक्रीतिक:	यव खरीदने वाले शास्त्र को अधिकृत्य करके आख्यान या व्यवहारिक ग्रन्थ को जो जानता है या पढ़ता है।
181.	त्रैविध:	तीन प्रकार की विद्या को जानने वाला या पढ़ने वाला
182.	वासवदत्ता	वासवदत्ता नामक नायिका को अधिकृत करके की गयी आख्या।
183.	वासवदत्तिक:	वासवदत्ता को अधिकृत करके लिखा गया ग्रन्थ को जानने वाला या पढ़ने वाला
184.	ऐतिहासिक:	इतिहास को अधिकृत करके आख्यान या आख्याधि को लिखा गया ग्रन्थ को जो पढ़ता है या जानता है।
185.	पौराणिक:	पुराण को अधिकृत करके लिखा गया ग्रन्थ को पढ़ता या जानता है।
186.	सर्ववेद:	सभी वेदों को जो जानता है।
187.	सर्वतन्त्र	सभी तन्त्र को पढ़ने वाला या जानने वाला
188.	सवर्तिक:	वर्तिक के साथ जो पढ़ता है या जानता है।
189.	द्वितन्त्र:	दो तन्त्र विद्या को जो जानता है या पढ़ता है।
190.	पूर्वपदिक:	पूर्वपद को जो पढ़ता है या जानता है।
191.	उत्तरपदिक:	उत्तर पद को जो पढ़ता है या जानता है।
192.	शतपथिक:, शतपथिकी	शतपथ नाम वाजसनेयि ब्राह्मण शाखा को जानने वाला या जानने वाली तथा पढ़ने वाली या पढ़ने वाला
193.	षष्टिपथिक: षष्टिपथिकी	षष्टिपथिक ब्राह्मण शाखा को जानने वाला या जानने वाली या पढ़ने वाला या पढ़ने वाली

194.	क्रमकः	क्रम को जानने वाला या पढ़ने वाला
	अनुब्रंह्मणी	ब्राह्मण वेद ग्रन्थ के सदृश ब्राह्मण ग्रन्थ को जानने वाला या पढ़ने वाला
195.	बासन्तिकः	वसन्तपरक ग्रन्थ को पढ़ने वाला या जानने वाला।
196.	आथर्वणिकः	अथर्वणि या अर्थववेद को पढ़ने वाला या जानने वाला।
197.	पाणिनः	पणि गोत्र के बालक
198.	पाणिनिः	पाणिन के लड़के
199.	कौख्यः	कुरू गोत्र के बालक (पिता)
200.	कौख्यः	कौरव के लड़के (पुत्र)
201.	श्वाफल्कः	श्वफल्क गोत्र के बालक (पिता)
202.	श्वाफल्कः	श्वफल्क गोत्र के बालक (पुत्र)
203.	वाशिष्ठः	वशिष्ठ गोत्र के लड़के (पिता)
204.	वाशिष्ठः	वशिष्ठ गोत्र के लड़के (पुत्र)
205.	तैकायनिः	तिकायन गोत्र के बालक (पिता)
206.	तैकायनिः	तैकायन गोत्र के लड़के (पुत्र)
207.	कौहडः	कोहड गोत्र के लड़के
208.	कौहडिः	कोहड के लड़के
209.	वामरथाः	वामरथी के लड़के
210.	पाणिनीयम्	पाणिनी से प्रोक्त शास्त्र
211.	पाणिनीयः	पाणिनी के ग्रन्थ
212.	पाणिनीया	पाणिनी के ग्रन्थ को पढ़ने वाली या जानने वाली छात्रा
213.	अष्टकाः	आठ अध्याय वाला ग्रन्थ को पढ़ने वाला या जानने वाला
214.	माहावर्तिकः	महावर्तिक सूत्र को जो पढ़ता है या जानता है।
215.	कालापकः	कालापक ग्रन्थ को जानता है। या पढ़ता है।
216.	कठाः	कठ के द्वारा प्रोक्त को जो पढ़ता है या जानता है।
217.	पदकः	पद को जानने वाला या पढ़ने वाला
218.	शिक्षकः	शिक्षा को जानने वाला, शिक्षा को पढ़ने वाला, शिक्षा को देने वाला ।
219.	मीमांसकाः	मीमांसा को जानने वाला या पढ़ने वाला ।

●

अथ चातुरर्थिक प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	औदुम्बरः	गूलर वाला देश
2.	कौशाम्बी नगरी	कुशाम्ब राजा के द्वारा बसायी गयी नगरी
3.	शैवः	शिकारी जानवरों का देश अर्थात सिंहादि जानवरों का देश याथान या शिवि नाम के राजा का देश
4.	वैदिशम्	विदिशा के समीप में होने वाली नगरी
5.	काक्षतवम्	कक्षतु के समीप होने वाला नगर
6.	सैध्रकातवम्	वह्वृच अंग वाला देश
7.	दैर्धवरत्र	दीर्घवरत्र के द्वारा सम्पन्न कूप
8.	आहियतम्	अहियत वाला अंग देश
9.	दात्तः कूपः	दत्त के द्वारा निर्मित कूप
10.	साङ्कलम्	सङ्कल से निर्मित
11.	पौष्कलम्	पुष्कल से सम्पन्न
12.	दात्तमित्री	दत्तमित्र से सम्पन्न या बनाई गयी या बसायी गयी नगरी
13.	वैधूमाग्मी	विधूमाग्नि के द्वारा बसाई गयी नगरी
14.	सौवास्तवम्	सुवास्तु से समीप में होने वाला
15.	वार्णवम्	वर्णु नाम के समीप में होने वाला
16.	सौवास्तवी	सुवास्तु के समीप में होने वाली नगरी
17.	रौणः	रोणी से बनाया गया कूप
18.	आजकरौणः	अजकरोणी से निर्मित कूप
19.	कार्णच्छिद्रकः	कर्णच्छिद्र से निर्मित कूप
20.	कार्कवाकवम्	कर्कवाकु से निर्मित कूआ
21.	त्रैशङ्कवम्	त्रिशङ्कु से बनाया गया कूप
22.	आरीहणकम्	अरीहण से निर्मित
23.	कार्शाश्वीयम्	कृशाश्व के द्वारा बसाया गया
24.	ऋश्यकम्	ऋश्य के द्वारा बसाया
25.	कुमुदिकम्	कुमुद के द्वारा बसाया गया
26.	काशिलः	काश के द्वारा सम्पन्न
27.	तृणसम्	तृण के द्वारा किया गया
28.	प्रेक्षी	प्रेक्ष के द्वारा सम्पन्न
29.	अश्मरः	अश्मन् के द्वारा किया गया
30.	सारवेयम्	सखि के द्वारा किया गया
31.	साङ्कश्यम्	संकाश के द्वारा किया गया
32.	बल्यम्	बल के द्वारा किया गया
33.	पाक्षायणः	पक्ष के द्वारा किया गया
34.	पान्थायनः	पथ के द्वारा किया गया
35.	कार्णायिनिः	कर्ण के द्वारा किया गया
36	सौतङ्गमिः	सुतङ्गम के द्वारा किया गया

37.	प्रागद्यः	प्रगदिन के द्वारा किया गया
38.	वराहकः	वराह के द्वारा किया गया
39.	कौमुदिकः	कुमुद के द्वारा किया गया
40.	पञ्चलाः	पञ्चाल नामक राजाओं का निवास देश
41.	कुरुवः	कुरु राजाओं का निवास देश
42.	अङ्गाः	अंङ्ग राजाओं का निवास देश
43.	वङ्गाः	वङ्ग राजाओं का निवास देश
44.	कलिङ्गाः	कलिङ्ग राजाओं का निवास देश
45.	पञ्चाला रमणीया	पञ्चाल देश रमणीय
46.	गौदो रमणीयौ	दो गोद रमणीय
47.	हरीतक्यः	हरीतकी के फल समूह
48.	खलतिकं वनानि	खलतिक पर्वत के समीप वने
49.	चञ्चा अभिरूपः	खास खर पूआल से बनाई मनुष्य के रूप के समान प्रतिमा
50.	वरणाः	वरण के समीप नगर
51.	शर्करा—शार्करम्— शार्करिकम् शर्करीयम्—शाकिरम्	चीनी से बना पदार्थ
52.	इक्षुमती	जिसमें ईख पाये जाते हैं। ईख के समीप वाली नदी को
53.	मधुमान्	मधु राजाओं का निवास स्थान
54.	कुमुद्वान्	जहां कमलों की अधिकता पायी जाती है।
55.	नड्वान	नरकुलों का बहुतायत जहां पर पाया जाता है।
56.	वेतस्वान्	जहां पर बेंत की मात्रा अधिक रूप से पायी जाती है।
57.	महिष्मान्	भैस जहां पर अधिक रूप में पाये जाते हैं।
58.	नड्वल	सरकण्डों का झुण्ड या समुदाय जहां पाये जाते हैं।
59.	शाद्वलः	दन्तौषधी समूह, हरी और नयी घास वाला स्थान या चारागाह
60.	उत्करीयः	उत्कर के द्वारा सम्पन्न
61.	नडकीयम्	सरकण्डों से युक्त स्थान
62.	क्रुञ्चकीयम्	तृणादि से निर्मित मनुष्य के आकार का विकृत रूप या समान रूपों वाला स्थान
63.	तक्षकीयः	जहां पर बढ़ई पाये जाते हैं।
64.	विल्वकीया	जहां पर विल्व पाये जाते हैं।
65.	वैल्वकाः	जिसमें विल्प की पेंड़ होते हैं।
66.	वेत्रका	जहां पर वेंत मिलते हैं।
67.	वेत्रकीयाः	जहां पर बेंत के झुण्ड पाये जाते हैं।
68.	शिखवलम्	शिखा का समूह

अथ तद्धिते शैषिक प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	चाक्षुषम्	ऑख से ग्रहण करने योग्य रूप
2	श्रावण:	कान से सुनने योग्य–शब्द
3.	औपनिषद:	वेदान्तिक पुरूष
4.	दार्षदा:	पत्थर में (चाकी में) पीसा गया आटा, सत्तू।
5.	औलूखल:	अलूखल (ओखली) में कूटा गया जव गोंहू इत्यादि।
6.	आश्व:	घोड़ों से प्राप्त किया गया रथ या घोड़ों से जुता गया रथ।
7.	चातुरं शकटम्	चारों से ढोये जाने वाली गाड़ी
8.	चातुर्दशं रक्ष	चतुर्दशी तिथि की रात्रि में दिखाई पड़ने वाले राक्षस।
9.	राष्ट्रिय:	राष्ट्र में उत्पन्न
10.	अवारपारीण:	इस पार और उस पार में उत्पन्न।
11.	अवारीण:	इसपार में उत्पन्न।
12	पारीण:	उस पार में उत्पन्न
13	पारावारीण:	उस पार और इस पार में उत्पन्न।
14	ग्राम्य: ग्रामीण:	गांव में उत्पन्न या गांव में रहने वाला मनुष्य
15	कात्त्रेयक:	तीन कुत्सित में होने वाले।
16	नागरेयक	नगर मे उत्पन्न होने वाले।
17.	ग्रामेयक:	गांव में ह्वोने वाले।
18.	कौलेयक:	खानदानी शिकारी कुत्ता।
19.	कौल:	कुल में उत्पन्न
20.	कौक्षेयक:	तलवार
21.	कौक्ष:	कोख से उत्पन्न
22.	ग्रैवयक:	गले का आभूषण
23.	ग्रैव:	गर्दन पर होने वाला।
24.	नादेयम्	नदी में उत्पन्न या जलीय समुद्रीय
25.	माहेयम्	पृथ्वी में उत्पन्न होने वाला या मंगल ग्रह, मूंगा।
26.	वाराणसेयम्	वाराणसी में उत्पन्न होने वाला।
27.	दाक्षिणात्य:	दक्षिण देश में रहने वाला या उत्पन्न होने वाला।
28.	पाश्चात्य:	पश्चिम देश में उत्पन्न होने वाला रहने वाला या सम्बन्ध रखने वाला।
29.	पौरस्त्य:	पूर्व देश में उत्पन्न होने वाला या पूर्वी।
30.	कापिशायनं मधु	कपिश देश में उत्पन्न होने वाला मधु
31.	राङ्कवोगौ: राङ्कुयण:	रङ्कु नाम देश में उत्पन्न गौ।
32.	राङ्कवकोमनुष्य	रङ्कु देश में उत्पन्न मनुष्य
33.	दिव्यम्	आकाश में, स्वर्ग में, या प्रकाश में या जूआ खेलने में उत्पन्न होने वाला।
34.	प्राच्यम्	पूर्व दिशा में होने वाला।
35.	अपाच्यम्	दक्षिण दिशा में उत्पन्न होने वाला
36.	उदीच्यम्	उत्तर दिशा में उत्पन्न होने वाला।
37.	प्रतीच्यम्	पश्चिम दिशा में उत्पन्न होने वाला।
38.	कान्थिक:	गूदडी में उत्पन्न होने वाला चीलर जूआं, खटमल।

39.	कान्थकम्	सिन्धुनद के समीप में रहने वाला, वर्णु देश में प्राप्त होने वाला गूदड़ी।
40.	अमात्य:	मन्त्रि या अमावस्या
41.	इहत्य:	यहां पर उत्पन्न होने वाला।
42.	क्वत्य:	कहां पर उत्पन्न होने वाला।
43.	ततस्य:	वहां से उत्पन्न होने वाला।
44.	तत्रत्य:	यहां पर उत्पन्न होने वाला।
45.	औपरिष्ट:	ऊपर में होने वाला।
46.	आरातीय:	निकट में होने वाला, या समीप में होने वाला।
47.	शाश्वतीय:	सतत या निरन्तर होने वाला
48.	नित्य:	हमेशा होने वाला।
49.	निष्य:	चाण्डाल इत्यादि।
50.	आरण्या:	जंगली फूल
51.	दूरेत्य:	दूर में उत्पन्न होने वाला या दूर से आया हुआ या दूर में होने वाला।
52.	औत्तराह:	उत्तर से आने वाला या उत्तर में होने वाला।
53.	ऐषमस्त्यम्	वर्तमान सम्वत्सर में उत्पन्न होने वाला।
54.	ऐषमस्तनम्	वर्तमान सम्वत्सर में उत्पन्न होने वाला।
55.	ह्यस्त्यम् ह्यस्तनम्	अतीत कल में उत्पन्न हुआ था।
56.	श्वस्त्यम्, श्वस्तनम्	आगामी कल में उत्पन्न होने वाला।
57.	शौवस्तिकम्	आगांमी कल में उत्पन्न होने वाला।
58.	काकतीरम्	काक तट पर होने वाला या उत्पन्न होने वाला।
59.	पाल्वलतीरम्	पल्वल तटपर उत्पन्न होने वाला।
60.	शैवरूप्यम्	शिवरूप में उत्पन्न होने वाला।
61.	बाहुरूप्यम्	रूपाधिक्य में होने वाला।
62.	पौर्वशाल:	पहले वाले शाला में उत्पन्न।
63.	पूर्वैषु कामशम:	पूर्वेषुकामशमी में होने वाला।
64.	पौर्वभ्रद:	पूर्व भद्र में उत्पन्न होने वाला।
65.	शैवपुरम्	शिवपुर में उत्पन्न होने वाला।
66.	माहिकिप्रस्थ:	महिकिप्रस्थ में उत्पन्न होने वाला।
67.	पालद:	पलदिग्राम में उत्पन्न।
68.	नैलिनिक:	निलीनक ग्राम में उत्पन्न।
69.	काण्वा:	कण्व (गर्गादिगोत्र) में उत्पन्न वंशजों के छात्रा।
70.	दाक्षा:	दक्ष पुत्र दाक्षी की छात्रायें।
71.	सौतङ्गमीयम्	सौतङ्गमी के सम्बन्ध
72.	प्रौष्ठीया:	प्रोष्ठगोत्र के लड़के प्रौष्ठी और उनके छात्रायें।
73.	काशीया:	काश्य के लड़के काशि और उनके छात्रायें।
74.	शालीय:	शाला (गृह) में उत्पन्न।
75.	मालीय:	माला में उत्पन्न।
76.	तदीय:	उसमें उत्पन्न।
77.	एणीपचनीय:	एणीपचन देश में उत्पन्न।
78.	गोनर्दीय:	गोनर्द देश में उत्पन्न।
79.	एणीपचनीय: ऐणीपचन:	एणीपचन देश मे उत्पन्न।
80.	गौनर्द:	गौनर्द देश में उत्पन्न।

81.	भोजकटीयः भौजकटः	भोजकट देश में उत्पन्न।
82.	आहिच्छत्रः	अहिच्छत्र देश में उत्पन्न।
83.	कान्यकुब्ज	कन्नौज देश में उत्पन्न।
84.	दैवदत्तः देवदत्तीयः	देवदत्त में उत्पन्न।
85.	भावत्कः भवदीयः	आपका।
86.	भावतः	आपका
87.	काशिकी, कशिका	काशी में उत्पन्न।
88.	वैदिकी वैदिका	वेद देश में उत्पन्न होने वाली।
89.	आपत्कालिकी, आपत्कालिका	आपात काल में उत्पन्न समस्या।
90.	कास्तीरिकी, कास्तीरिका	कास्तीर नामक वाहीक ग्राम में उत्पन्न।
91.	सौदर्शनिकी सौदर्शनिका सौदर्शनीया	सौदर्शन नामक उशीनर देश में उत्पन्न।
92.	नैषादकर्षुकः	निषादकर्षू नामक देश में उत्पन्न।
93.	पाटवाः	पेटु के छात्र
94.	दाक्षिकार्षुकः	दाक्षिकर्षू के छात्र।
95.	आढक जम्बुकः	आढक जम्बू ग्राम में उत्पन्न।
96.	शाकजम्बुकः	शाक जम्बू ग्राम में उत्पन्न।
97.	माल्लबास्तवः	मल्लवास्तु ग्राम में उत्पन्न।
98.	ऐरावतकः	ऐरावत नामक धन्व देश वाचि देश में उत्पन्न होने वाला या ऐरावताख्य मरूस्थल में उत्पन्न होने वाला।
99.	साङ्काश्यकः	साङ्कश्य देश में होने वाला।
100.	काम्पिल्यकः	काम्पिल्य देश में उत्पन्न।
101.	मालाप्रस्थकः	मालाप्रस्थ देश में उत्पन्न।
102.	नान्दीपुरकः	नन्दीपुर ग्राम में उत्पन्न।
103.	पैलुवहकः	पिलुवह ग्राम में उत्पन्न।
104.	पाटलिपुत्रकः	पटना जनपद में उत्पन्न।
105.	काकन्दकः	काकन्द नामक देश में उत्पन्न।
106.	आदर्शकः	आदर्श जनपद में उत्पन्न।
107.	त्रैगर्तकः	त्रिगर्त जनपद की विशेष सीमा में उत्पन्न।
108.	आङ्गकः	अङ्गदेश में उत्पन्न।
109.	आजमीढकः	अजमीढ देश में उत्पन्न।
110.	दार्वकः	दार्वा नामक देश में उत्पन्न।
111.	कालञ्जरकः	कालञ्जर देश मे उत्पन्न।
112.	वार्तनः	वर्तनी देशों में उत्पन्न।
113.	दारूकच्छकः	दारूकच्छ नामक देश में उत्पन्न।
114.	काण्डाग्नकः	कण्डाग्नि नामक देश में उत्पन्न।
115.	सैन्धुवक्त्रकः	सिन्धुवक्त्र नामक देश में उत्पन्न।
116.	बाहुवर्तकः	बहुवर्त नामक देश में उत्पन्न।
117.	धौमकः	धूमनाम देश में उत्पन्न।
118.	तैर्थकः	तीर्थ नामक देश में उत्पन्न।
119.	नागरकश्चौरः	नगर में उत्पन्न चोर या नगर का चोर

120.	नागरक शिल्पी	नगर मे उत्पन्न कलाकार या नगर का कुशल कलाकार।
121.	नागर ब्राम्हण:	सभ्य ब्राम्हण।
122.	आरण्यक: पन्था:	जंगली रास्ता
123.	आरण्यका: आरण्या गोमया:	जंगल या वन में पाया जाने वाला गोबर।
124.	कौरवक: कौरव:	कुरूं नामक जनपद या देश में होने वाला।
125.	यौगन्धक: यौगन्धर:	युगन्धर जनपद या देश में होने जाने वाले।
126.	भद्रक:	भ्रद जनपद या देश में उत्पन्न होने वाला।
127.	वृजिक:	वृजि देश या जनपद में उत्पन्न होने वाला।
128.	माहिषिक:	महिषिक जनपद या देश में उत्पन्न होने वाला।
129.	काच्छ:	कच्छ नामक देश में उत्पन्न होने वाला।
130.	सैन्धव:	सिन्धु नामक देश में उत्पन्न होने वाला।
131.	काच्छको मनुष्य	कच्छ नामक देश में उत्पन्न होने वाला मनुष्य।
132.	काच्छकं हसितम्	कच्छ देश की हंसी
133.	काच्छो गौ:	कच्छ देश में पायी जाने वाली गाय।
134.	साल्वको बाम्हण:	साल्व देश का ब्राम्हण।
135.	साल्वको: गौ:	साल्वदेशीय गौ।
136.	साल्विका यवागू	साल्वदेशीय हलुवा।
137.	वृकगर्तीयम्	वृकगर्त देश में होने वाला।
138.	गहीय:	गह नामक देश में होने वाला।
139.	मुखतीयम्	मुख में होने वाला।
140.	पार्श्वतीयम्	पार्श्व में होने वाला।
141.	जनकीयम्	जन समुदाय में होने वाला।
142.	परकीयम्	अन्य समुदाय में होने वाला।
143.	देवकीयम्	देवों में होने वाला।
144.	स्वकीयम्	आत्मीय
145.	वैणुकीयम	बांस सम्बन्धी या वांसुरी
146.	वैत्रकीयम्	बेंत सम्बन्धी बेंत की छड़ी।
147.	औत्तरपदकीयम्	उत्तर पद सम्बन्धित।
148.	कटनगरीयम्	कट नगर नामक प्राचीन देश में होने वाला।
149.	कटघोषीयम्	कटघोष नामक प्राचीन देश में होने वाला।
150.	कटपल्वलीयम्	कटपल्वल नामक प्राचीन देश में होने वाला।
151.	राजकीयम्	राजा से सम्बन्धित।
152.	ब्राह्मणकीयम्	आयुधजीवी ब्राम्हण नामक देश में उत्पन्न होने वाला।
153.	शाल्मलिकीयम्	शाल्मलिक देश में होने वाला।
154.	आयोमुखीयम्	अयोमुख नामक देश में पाया जाने वाला।
155.	दाक्षिकन्थीयम्	दक्षिकन्था नामक ग्राम में पाये जाने वाला।
156.	दाक्षिपलदीयम्	दाक्षिपलद नामक ग्राम में पाया जाने वाला।
157.	दाक्षिनगरीयम्	दाक्षिनगर में होने वाला।
158.	दाक्षिग्रामीयम्	दाक्षिग्राम में होने वाला।
159.	दाक्षिह्रदीयम्	दाक्षिह्रद नामक ग्राम में होने वाला।
160.	पर्वतीय:	पर्वत में होने वाला।

161.	पर्वतीयानि पार्वतानिवा फलानि	पर्वत में पाये जाने वाला फल।
162.	पर्वतीयो मनुष्य	पर्वत में पाये जाने वाला मनुष्य।
163.	कृकणीयम्	कृकण नामक भारद्वाजीय देश में होने वाला।
164.	पर्णीयम्	पर्णनामक भारद्वाजीय देश में होने वाला।
165.	युष्मदीयः	यह तुम दोनो का या तुमसभी का।
166.	अस्मदीयः	यह हम दोनों का या हम सभी का।
167.	यौष्माकीणः	यह तुम दोनों का या तुम सब का।
168.	आस्माकीनः	यह हम दोनों का या हम सभी का।
169.	यौष्माकः	यह तुम दोनों का या तुम सभी का
170.	आस्माकः	यह हम दोनो का या हम सभी का
171.	तावकीनः तावकः	यह तुम्हारा
172.	मामकीनः मामकः	यह हमारा
173.	त्वदीयः	यह तुम्हारा
174.	मदीयः	यह हमारा
175.	त्वत्पुत्रः	यह तुम्हारा लड़का
176.	मत्पुत्रः	यह मेरा पुत्र
177.	अर्ध्यः	अर्ध में होने वाला
178.	परार्ध्यम्	दूसरा अर्ध में होने वाला
179.	अवरार्ध्यम्	अन्य अर्ध के दूसरे भाग में होने वाला।
180.	अधमार्ध्यम्	अधम अर्ध में होने वाला
181.	उत्तमार्ध्यम	उत्तम अर्ध में होने वाला
182.	पौर्वाधिकम्, पूर्वार्ध्यम्	पूर्वार्ध में होने वाला
183.	पौर्वाधाः, पौर्वाधिकाः	हमारे गांव के ये पूर्वार्ध में होने वाले।
184.	मध्यमः	मध्य भाग में होने वाले।
185.	मध्यो वैयाकरण	सामान्य व्याकरण को जानने वाला
186.	मध्यंदारू	न अति छोटी न अति बड़ी लकड़ी
187.	द्वैप्यम्, द्वैप्याः	समुद्र के निकटस्थ द्विप में होने वाला
188.	मासिकम्	एक महीना में होने वाला
189.	साम्वत्सरिकम्	एक सम्वत्सर में होने वाला
190.	सायम्प्रातिकः	सुबह और शाम में होने वाला
191.	पौनः पुनिकः	बार बार होने वाला
192.	शारदिकं श्राद्धम्	शरद ऋतु में होने वाला श्राद्ध।
193.	शारदिकः शारदोवा रोग आतपोवा–	शरद ऋतु में होने वाला रोग या धूप
194.	शारदं दधि	शरद् ऋतु की दही
195.	नैशिकम् नैशम्	निशा काल में होने वाला
196.	प्रादोषिकम्, प्रादोषम	प्रदोष काल में होने वाला
197.	शौवस्तिकम्	आने वाले कल के समय में होने वाला
198.	सान्धिवेलम्	सन्धि बेला में होने वाला
199.	ग्रैष्मम्	ग्रीष्म ऋतु में होने वाला
200.	तैषम्	तिष्य नक्षत्र मे होने वाला

201.	सांवत्सरं फलं पर्ववा	एक संवत्सर में होने वाला फल या त्यौहार
202.	प्रावृषेण्य:	वर्षा ऋतु में होने वाला
203.	वार्षिकं वास:	वर्षा ऋतु में हितकर निवास
204.	हैमनम् हैमन्तम्	हेमन्त ऋतु हितकर पाये जाने वाला
205.	सायन्तनम्	सायं काल में होने वाला
206.	चिरन्तनम्	दीर्घकाल तक होने वाला
207.	प्राहैतनम्	दिन के पूर्व भाग में होने वाला
208.	प्राठोतनम्	प्रातः काल में होने वाला
209.	दोषातनम्	रात्रि में होने वाला
210.	दिवातनम्	दिन में होने वाला
211.	चिरत्नम्	चिरकाल (बहुकाल) तक होने वाला
212.	परूत्नम्	गतवर्ष में हुआ।
213.	परारित्नम्	परसाल या (परियार साल) में हुआ
214.	अग्रिभम्	आगे होने वाला
215.	आदिभम्	आदि में होने वाला
216.	पश्चिमम्	बाद में होने वाला
217.	अन्तिमम्	अन्तिम में होने वाला
218.	पूर्वोह्णेतनम्	दिन के पूर्व भाग में होने वाला
219.	अपराह्णेतनम्	दिन के दोपहर 12 बजे के बाद होने वाला
220.	पूर्वाह्णेतनम्	दिन के पूर्वकाल में होने वाला
221.	अपराह्णेतनम्	दिन के दोपहर के बाद होने वाला
222.	पौर्वाह्णिकम्	दिन के पूर्वकाल में होने वाला
223.	अपराह्णिकम्	दिन के दूसरे भाग (12 बजे के बाद) में होने वाला
224.	स्रौघ्न:	स्रुघ्न देश में उत्पन्न होने वाला।
225.	औत्स:	उत्स देश में उत्पन्न होने वाला
226.	राष्ट्रिय:	राष्ट्र में उत्पन्न होने वाला।
228.	अवारपारीण:	इस पार और उस पार में होने वाला।
229.	प्रावृषिक:	वर्षा काल में उत्पन्न होने वाला।
230.	शारदका:	कुश और मुद्ग
231.	पूर्ववार्षिक:	वर्षा ऋतु के पूर्व उत्पन्न होने वाला।
232.	अपर हैमन:	दूसरे हेमन्त ऋतु में होने वाला।
233.	सुपाञ्चालक:	सुन्दर पाञ्चाल में होने वाला।
234.	सर्वपाञ्चालक:	सभी पाञ्चाल देश में उत्पन्न होने वाला।
235.	अर्द्धपाञ्चालक:	आधे पाञ्चाल देश में उत्पन्न होने वाला।
236.	पौर्वपाञ्चालक:	पूर्व पाञ्चालों का यह
237.	पूर्वेषुकामशम:	पूर्वेषु कामशमी में उत्पन्न होने वाला।
238.	पूर्वपाटलिपुत्रक:	पूर्व पटना में होने जाला।
239.	पूर्वाह्णक:	दिन के पूर्व भाग में होने वाला।
240.	अपराह्णक:	दिन में दूसरे भाग में होने वाला।
241.	आर्द्रक:	आर्द्रा नक्षत्र में होने वाला।
242.	मूलक:	मूल नक्षत्र में होने वाला।
243.	प्रदोषक:	प्रदोष काल में उत्पन्न होने वाला।
	पौर्ववार्षिक:	पूर्व वर्षा में होने वाला

244.	पन्थकः	रास्ते में उत्पन्न होने वाला।
245.	अमावास्यकः आमावास्यः, अमावस्यः–	अमावस्या तिथि में उत्पन्न होने वाला।
246.	सिन्धुकः	सिन्धु देश के उत्पन्न होने वाला।
247.	अपकरकः	अपकर देश में उत्पन्न होने वाला।
248.	सैन्धवः	सिन्धु देश में उत्पन्न होने वाला।
249.	आपकरः	अपकर देश में उत्पन्न होने वाला।
250.	श्रविष्ठः	श्रविष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
251.	फाल्गुनः	फाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
252.	अनुराधः	अनुराधा नक्षत्र में होने वाला।
253.	स्वातिः	स्वाति नक्षत्र में होने वाला।
254.	तिष्यः	तिष्य नक्षत्र में होने वाला।
255.	पुनर्वसुः	पुनर्वसु नक्षत्र में होने वाला।
256.	हस्तः	हस्त नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
257.	विशाखः	विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
258.	अषाढः	अषाढा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
259.	बहुलः	बहुला नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
260.	चित्रा	चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
261.	रेवती	रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
262.	रोहिणी	रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
263.	फल्गुनी	फाल्गुन नक्षत्र में उत्पन्न होने वाली।
264.	अषाढा	अषाढा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाली।
265.	श्रविष्ठीयः	श्रविष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाली।
266.	आषाढीयः	अषाढा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
267.	प्रौष्ठपादोमाणवकः	प्रोष्ठप्रदा नक्षत्र में उत्पन्न बालक।
268.	प्रौष्ठपदः	प्रौष्ठपदा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
269.	भाद्रपादः	भद्रपदा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला।
270.	गोस्थानः	गोस्थान में उत्पन्न होने वाला।
271.	गोशाला	गोशाला में उत्पन्न होने वाला
272.	खरशालः	गदहा के घर से उत्पन्न होने वाला।
273.	वत्सशालः वात्सशालः	बछड़े के घर में उत्पन्न
274.	आभिजितः अभिजितः	अभिजित् नामक नक्षत्र में उत्पन्न।
275.	आश्वयुजः अश्वयुक्	अश्वयुज् नामक नक्षत्र में उत्पन्न।
276.	शातभिषजः शातभिषः शतभिषक–	शतभिषज् नक्षत्र में उत्पन्न।
277.	रोहिणः, रौहिणः	रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न।
278.	स्रौघ्नः	स्रुघ्न देश में किया हुआ, स्रुघ्न देश में प्राप्त, स्रुघ्न देश में खरीदा हुआ और स्रुघ्न देश में कुशल।
279.	स्रौघ्नः	स्रुघ्न देश में प्रायः यह बहुलता से होने वाला।
280.	औपजानुकः	जंघा के समीप में होने वाला।
281.	औपकर्णिकः	कर्ण (कान) के समीप में होने वाला।
282.	औपनीविक	नीवि (निचला भाग) के समीप में होने वाला।

283.	स्रौघ्नः	स्रुघ्न देश में उत्पन्न हुआ।
284.	कौशेयं वस्त्रम्	रेशमी वस्त्र (कृमि विशेष कोश का विकार)
285.	हैमनः प्राकारः	हेमन्त ऋतु सुन्दर लगने
286.	वासन्त्यः कुन्दलता	वसन्त ऋतु में खिलने वाली कुन्दलता या कुंइयाँ।
287.	शारदाः शालयः	शरद ऋतु में पकने वाला साठी धान।
288.	हैमन्ता यवाः	हेमन्त ऋतु में बोया जाने वाला यव
289.	आश्वयुजकाः भाषाः	आश्वयुजी नक्षत्र में बोया जाने वाला भाष, (ऊर्द)
290.	ग्रैष्मकम्, ग्रैषमम्	ग्रीष्म ऋतु में बोया जाने वाला।
291.	वासन्तकम् वासन्तम्	वसन्त ऋतु में बोया जाने वाला।
292.	मासिकम्	महीने में दिया जाने वाला ऋण।
293.	कलापकम्	जिस ऋतु काल में मयूर अपने समूह में नृत्य करता है उस समय में दिया जाने वाला ऋण।
294.	अश्वत्थः	पीपल वृक्ष का फल या पीपल वृक्ष के फलने का काल।
295.	अश्त्थकम्	पीपल वृक्ष के फलने के समय दिया जाने वाला ऋण।
296.	यवबुसकम्	जौ भूसा के होने के समय दिया जाने वाला ऋण।
297.	ग्रैष्मकम्	ग्रीष्म ऋतु में दिया जाने वाला ऋण।
298.	आवरसकम्	आगामी सम्वत्सर में या वर्ष में दिया जाने वाला ऋण।
299.	साम्वत्सरिकम्, साम्बत्सरकम्–	सम्वत्सर या वर्ष में दिया जाने वाला ऋण।
300.	आग्रहायणिकम् आग्रहायणकम्–	अगहन मास या मार्गशीर्ष माह में दिया जाने वाला ऋण।
301.	नैशः मृगः नैशिकः	रात्रि में व्यवहार करने वाला मृग।
302.	नैशिकः नैशः	निशाकालिक होने वाले अध्ययन में भुगता गया।
303.	स्रौघ्नः	स्रुघ्न देश में होने वाला
304.	राष्ट्रियः	राष्ट्र में होने वाला
305.	दिश्यम्	दिशा में होने वाला
306.	वर्ग्यम्	वर्ग में होने वाला
307.	दन्त्यम्	दांत में होने वाला कोई रोग
308.	कण्ठयम्	कण्ठ में होने वाला रोग, कण्ठमाला इत्यादि।
309.	सौह्मनागरः	सुह्मनगर में होने वाला
310.	पौण्ड्रनागरः	पुण्ड्र नगर में होने वाला।
311.	माद्रनगर	मद्र नगर में होने वाला।
312.	कौरूजङ्गलम्, कौरूजाङ्गलम्–	कुरू जंगल में होने वाला।
313.	वैश्वधेनवम्, वैश्वधैनवम्	विश्व धेनु देश में होने वाला।
314.	सौवर्णवलजम्, सौवर्णवालजम्–	सुवर्ण वलज देश में होने वाला
315.	दार्तेयम्	धौकनी में होने वाला।
316.	कौक्षेयम्	तलवार
317.	कालशेयम्	कलश में होने वाला जलादि सामग्री या मंथन पात्र में होने वाला।
318.	वास्तेयः	नाभि में पैदा होने वाला, निवास करने वाला रहने वाला या पेडू
319.	आस्तेयः	सत्ता में रहने वाला या धन में रहने वाला।

320.	आहेयः	सापों में रहने वाला एक प्रकार का मणि।
321.	ग्रैवयम्, ग्रैवम्	गले का आभूषण कण्ठ माला आदि अथवा गले में होने वाले रोगादि।
322.	गाम्भीर्यम्	गहरापन या गहराई।
323.	पाञ्चजन्यम्	श्री कृष्ण भगवान के शंख का नाम।
324.	पारिमुख्यम्	मुख के सामने उपस्थिति या मुख के सामने होना।
325.	औपकुलम्	खानदान या नदी के किनारे के समीप में रहने वाला या उपस्थित होने वाला।
326.	आन्तर्वेश्मिकम्	महल के बीच में निवास करने वाला या रहने वाला।
327.	आन्तगर्णणिकम्	समुदाय या समूह के बीच में रहने वाला।
328.	अध्यात्मिकम्	आत्मा या परमात्मा के विषय में जानकारी रखने वाला पुरूष।
329.	आधिदैविकम्	अधिदेव या इन्द्रियों के अधिष्ठातृ देवता से सम्बन्ध रखने वाला।
330.	आधिभौतिकम्	प्राणियों या पशु पक्षियों में उत्पन्न होने वाला या मणियों से सम्बन्ध रखने वाला।
331.	ऐहलौकिकम्	सांसारिक लोक से सम्बन्ध रखने वाला।
332.	पारलौकिकम्	परलोक के विषय में सम्बन्ध रखने वाला।
333.	दाविकम्	देविका नाम नदी में होने वाला।
334.	दाविकाकूलाः, शालयः	देविका नदी के किनारे पैदा होने वाला साठी धान।
335.	शांशपः	शीशम की लकड़ी का बना हुआ चम्मच के आकार का यज्ञपात्र जिसमें सोमपान किया जाता है।
336.	दात्यौहम्	जल कौवा
337.	दार्घसत्रम्	लम्बे समय तक होने वाला।
338.	श्रायसम्	कल्याण में होने वाला।
339.	पारिग्रामिकः	गांव के चारो तरफ होने वाला।
340.	आनुग्रामिकः	ग्रामीण देहाती गंवार।
341.	जिह्वामूलीयम्	जीभ के मूल भाग में उच्चारित होने वाला अर्द्ध विसर्ग के समान
342.	अङ्गुलीयम्	अङ्गूठी
343.	कवर्गीयम्	क वर्ग में आने वाले वर्ण
344.	मद्वर्ग्यः,मद्वर्गीणः	
	मद्वर्गीयः–	हमारे पक्ष में होने वाले।
345.	कर्णिका	कर्णफूल (कान का आभूषण)
346.	ललाटिका	टीला (ललाट का आभूषण) या सोने की टिकुली या सामान्य टिकुली
347.	सौपोग्रन्थः	जिस ग्रन्थ में सुप् प्रत्ययों की व्याख्या की गयी है।
348.	तैङः	जिस ग्रन्थ में तिङ् प्रत्ययों की व्याख्या हुई है।
349.	कार्तः	जिस ग्रन्थ में कृत प्रत्यय सम्बन्धी व्याख्यान किया गया हो।
350.	षात्वणत्विकः	षत्व और णत्व करने वाले सूत्रों की व्याख्या या उन सूत्रों में होने वाला विषय।
351.	आग्निष्टोमिकः	अग्निष्टोम याग की व्याख्या अथवा उसमें होने वाला विषय।
352.	वाजपेयिकः	वाजपेय यज्ञ सम्बन्धी अथवा वाजपेय यज्ञ में होने वाला विषय।
353.	राजसूयिकः	राजसूय यज्ञ सम्बन्धी व्याख्या अथवा राजसूय यज्ञ में होने वाला विषय।
354.	पाकयज्ञिकः	पार्वणस्थाली (पार्वण श्राद्ध के लिए जिस बटलोई में पाक तैयार किया जाता है उसे पाकयज्ञ कहते हैं। उस पाक यज्ञ सम्बन्धी जिस ग्रन्थ में व्याख्या की गयी है अथवा उसमें होने वाला विषय)
355.	नावयज्ञिकः	नूतन द्रव्य जो अगहन माह में होता है उसको नवयज्ञ कहते हैं। (अर्थात अगहन मास में होने वाला नवान्न भक्षण) तत्सम्बन्धी व्याख्या जिस ग्रन्थ में की गयी हो अथवा उसमें होने वाला विषय।

356. वासिष्ठिकः वसिष्ठ ऋषि के द्वारा देखा गया मन्त्र की व्याख्या जिस ग्रन्थ के अध्याय में की गयी हो अथवा उस मन्त्र में होने वाला विषय।

357. वासिष्ठी वसिष्ठ के द्वारा देखी गयी ऋचा में होने वाला विषय।

358. पौरोडासिकः, पुरोडासिकः– पुरोडास के साथ प्रयोग किया जाने वाल मन्त्र को पौरोडास भी कहते हैं। उसकी व्याख्या जिस ग्रन्थ में की गयी हो या उसमे होने वाला विषय।

359. छन्दस्यः, छान्दसः छन्द की व्याख्या जिस ग्रन्थ में की गयी हो या छन्द में होने वाले विषय। छन्द का वेद अर्थ भी है।

360. ऐष्टिक, (शैषिकः) इष्ट या शेष की व्याख्या जिस ग्रन्थ में की गयी हो अथवा इष्ट और शेष में होने वाले विषय।

361. पाशुकः पशु भाग या प्रतिपादन करने वाले ग्रन्थ की व्याख्या जिसमें की गयी हो अथवा उसमें होने वाले विषय।

362. चातुर्होतृकः चित्ति स्रुक इत्यादि मन्त्र को चतुर्होतोर कहते हैं। उन मन्त्रों की व्याख्या जिस ग्रन्थ में की गयी हो या उन मन्त्रों से होने वाले विषय।

363. ब्राह्मणिकः वेद में मन्त्र से अतिरिक्त ब्राह्मण भाग है। उन ब्राह्मण भागों के ऋचों का व्याख्यान या उसमे होने वाला विषय।

364. आर्चिकः वेद में ऋचाओं का व्याख्यान अथवा उसमें होने वाला विषय।

365. आध्वारिकः अध्वर की व्याख्या अथवा उसमें होने वाला विषय।

366. पौरश्चरणिकः पुरूशचरण की व्याख्या या उसमें होने वाला विषय।

367. नामिकः नाम, प्रातिपदिक की व्याख्या या उसमें होने वाला विषय।

368. आख्यातिकः आख्यात–तिङ् की व्याख्या या उसमें होने वाला विषय।

369. आर्गयनः ऋगयन– ऋक् संहिता की व्याख्या या उसमें होने वाला विषय।

370. औपनिषदः उपनिषद् वेदान्त की व्याख्या या उसमें होने वाला विषय।

371. वैयाकरणः व्याकरण शास्त्र की व्याख्या या उसमें होने वाला विषय।

372. स्रौघ्नः स्रुघ्न देश से आया हुआ

373. शौल्कशालिकः चुंगी घर से आया हुआ।

374. शौण्डिकः आयस्थान विशेष से आने वाला, कलवार के यहां से आने वाला या शराब विक्रेता के यहां से आने वाला।

375. कार्कणः अशुभ बोली बोलने वाला एक प्रकार का विशेष पक्षी तितर के यहां से आने वाला

376. तैर्थः तीर्थ स्थान या नदी को पार उतरने के लिए बना हुआ घाट या नदी के तट पर जहां समूह स्नान करता हो ऐसे स्थानों से आने वाला।

377. औदयानः कूप के पास या इनार के पास से आने वाला।

378. औपाध्यायकः उपाध्याय के पास से आया है।

379. पैतामहकः पितामह के पास से आया है।

380. हौतृकम् हवनकर्ता के यहां से आया है।

381. भ्रातृकम् भाई (भ्राता) के पास से आया है।

382. पित्र्यम्, पैतृकम् पिता के पास से आया हुआ।

383. बैदम् विदों से आया हुआ धन।

384. गार्गम् गार्ग्य से आया हुआ धन।

385. दाक्षम् दाक्षि से प्राप्त या आया हुआ धन।

386. औपगवकम् अपगु से आया हुआ धन।

387. आशौचम्, अशौचम् , अशौच से आया हुआ या अशौच को प्राप्त।

388.	अनैश्वर्यम्, आनैश्वर्यम्	ईश्वरत्व को अप्राप्त।
389.	आक्षैत्रज्ञम्, अक्षैत्रज्ञम्	क्षेत्र के भाव से प्राप्त।
390.	आकौशलम्, अकौशलम्	अकुशलता से प्राप्त।
391.	आनैपुणम्, अनैपुणम्	अनिपुणता से प्राप्त।
392.	समरूप्यम्	सम से आया हुआ।
393.	विषमरूप्यम्	विषम स्थान से आया हुआ।
394.	समीयम्	सम स्थानो में होने वाला।
395.	विषमीयम्	विषम स्थानों में होने वाला।
396.	देवदत्तरूप्यम्	देवदत्त से आया हुआ धन।
397.	दैवदत्तम्	देवदत्त से आया हुआ धन।
398.	देवदत्तीयम्	देवदत्त में होने वाला।
399.	सममयम्	समस्थान से आया हुआ।
400.	विषममयम्	विषम स्थान से प्राप्त।
401.	देवदत्तमयम्	देवदत्त से प्राप्त।
402.	हैमवतीगङ्गा	हिमालय से प्रथम प्रकाशित दिखलाई पड़ने वाली गंगा।
403.	वैदुर्योमणिः	विदुर देश में पायी जाने वाली। मणि
404.	स्रौघ्नः पन्थाः, दूतोवा	स्रुघ्न देश को जाने वाला रास्ता या दूत।
405.	स्रौघ्नं कान्यकुब्जद्वारम्	स्रुघ्नदेश से निष्क्रमण कान्यकुब्ज द्वार।
406.	शारीरकीयः	शरीर सम्बन्धी रोगाधि विषय को अधिकृत करके लिखा गया ग्रन्थ।
407.	शिशुक्रन्दीय	बच्चों के रोदन सम्बन्धी विषय को अधिकृत करके लिखा गया ग्रन्थ।
408.	यमसभीयम्	यम की समा से सम्बन्धित विषय पर लिखा गया ग्रन्थ।
409.	किरातार्जुनीयम्	किरात और अर्जुन से सम्बन्धित विषय पर घटित लिखित ग्रन्थ।
410.	इन्द्रजननीयम्	इन्द्रजनन सम्बन्धी विषयक ग्रन्थ।
411.	विरुद्धभोजनीयम्	विरुद्ध भोजन, प्रतिकूल भोजन पर लिखा गया ग्रन्थ।
412.	स्रौघ्नः	स्रुघ्न देश निवास हो जिसका।
413.	हृद्‌गोलीयाः	जिन आयुध शस्त्रधारियों का हृद गोल नामक पर्वत निवास स्थान हो।
414.	आर्क्षोदाः	जिन ब्राम्हणों का ऋक्षोद पर्वत स्थान हो।
415.	शाण्डिक्यः	जिन लोगों का शण्डिक नामक स्थान पर निवास हो।
416.	सैन्धवः	सिन्धु देश हो जिन लोगो का निवास स्थानं। अर्थात सिन्धु देश में रहने वाले।
417.	ताक्षशिलः	जिन लोगों का तक्षशिला नगरी स्थान हो।
418.	तौदेयः	तूदी नामक स्थान पर रहने वाले।
419.	शालतुरीयः	शलतुर नामक देश में रहने वाले।
420.	वार्मतेयः	वर्मती नामक देश में रहने वाले।
421.	कौचवार्यः	कूचवार नामक देश में निवास करने वाला।
422.	स्रौघ्नः	स्रुघ्न देश की भक्ति वाला।
423.	आपूपिकः	मालपूआ सम्बन्धी भक्ति अर्थात मालपूआ को चाहने वाला।
424.	पायसिकः	दूध सम्बन्धी भक्ति अर्थात विशेष रूप से दुग्ध को चाहने वाला।
425.	माहाराजिकः	महाराज सम्बन्धी भक्ति या महाराज को चाहने वाला।
426.	वासुदेवकः	वासुदेव की भक्ति को चाहने वाला या वासुदेव (कृष्ण मात्र की भक्ति करने वाला)
427.	अर्जुनकः	अर्जुन की भक्ति करने वाला या अर्जुन मात्र का भक्त।
428.	ग्लौचुकायनकः	ग्लुचुकायनि भक्ति वाला।
429.	नाकुलकः	नकुल भक्ति वाला।

430.	पाणिनीयः	पाणिनि भक्ति वाला।
431.	आङ्गकः	अङ्ग जनपद की भक्ति वाला।
432.	पाञ्चालः	पाञ्चाल ब्राम्हण की भक्ति वाला।
433.	पौरवीयः	पौरव राजा की भक्ति वाला।
434.	पाणिनीयम्	पाणिनि से कहा जाने वाला सूत्र।
435.	तैत्तिरीयाः	तित्तिर से कहा गया वेदशाखा या तित्तिर से पढ़ा गया वेद की शाखा।
436.	वारतन्तवीयाः	वरतन्तु ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया वेद ग्रन्थ।
437.	खाण्डिकीयाः	खण्डिक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
438.	औखीयाः	उख नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
439.	काश्यपिनः	कश्यप नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
440.	कौशकिनः	कौशिक नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
441.	हारिद्रविणः	हरिद्रु नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
442.	तौम्बुरविणः	तुम्बुरू नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
443.	औलपिनः	उलप नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
444.	आलम्बिनः	आलम्बि नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
445.	कालिङ्गिनः	कलिंङ्ग नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
446.	कामलिनः	कमल नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
447.	आर्चामिनः	ऋचाम नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
448.	आरूणिनः	आरूणि नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
449.	ताण्डिनः	ताण्डय नामक ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
450	श्यामायनिनः	श्यामायन ऋषि से कहा गया या पढ़ा गया।
451.	भाल्लविनः	भल्लू नामक ऋषि से कहा गया।
452.	शाटयायनिनः	शाटयायन ऋषि से कहा गया।
453.	पैङ्गी	पिङ्ग नामक ऋषि से कहा गया।
454.	याज्ञवल्कानि	याज्ञवल्क नामक ऋषि से कहा गया।
455.	शौनकिनः	शौनक नामक ऋषि से गया।
456.	कंठाः	कठ नामक ऋषि से कहा गया।
457.	चरकाः	चरक नामक ऋषि से कहा गया।
458.	कालापाः	कालपिन ऋषि से कहा गया।
459.	छागलोयिनः	छगलिन नामक ऋषि से कहा गया।
460.	पाराशरिणः	पाराशर्य ऋषि से कहा गया भिक्षुसूत्र को पढ़ने वाले।
461.	कर्मन्दिनः	कर्मन्द के कहे हुए को पढ़ने वाले।
462.	कृशाश्विनः	कृशाश्व ऋषि से कहा गया या पढ़ने वाले।
463.	सौदामनी	सदामन् पर्वत एक खण्ड। विद्युत कश्यप और विनता की पत्नी।
464.	पीलुमूलतः	पीलु वृक्ष के मूल का एक भाग।
465.	उरस्त, उरस्य	हृदय का एक भाग।
466.	पाणिनीयम्	पाणिनी के अन्तकरण से उद्भासित या निकला हुआ।
467.	वाररूचो ग्रन्थः	वररूचि से किया गया ग्रन्थ या वररूचि के द्वारा लिखा गया ग्रन्थ।
468.	माक्षिकमधु	मधुमक्खी द्वारा संग्रहीत मधु।
469.	कौलालकम्	कुम्भकार के द्वारा किया।
470.	वारूडकम्	वरूड जाति विशेष के द्वारा किया गया।
471.	क्षौद्रम्	क्षुद्रा अर्थात मधुमक्षिका के द्वारा किया गया।

472.	भ्रामरम्	भ्रमर के द्वारा किया गया।
473.	वाटरम्	वटेर पक्षी के द्वारा किया गया।
474.	पादपम्	वनस्पति के द्वारा किया गया।
475.	औपगवम्	उपगु का यह।
476.	सांवहित्रम्	अच्छी प्रकार से वहन करने वाले का।
477.	आग्नीध्रम्	ऋत्विक विशेष का स्थान।
478.	सामिधेन्योमन्त्रः	सामधेनि मंत्र।
479.	रथ्यम् चक्रम्	रथ का पहिया।
480.	आश्वरथम्	अश्वरथ का यह भाग
481.	आश्वम्	घोड़े के वहन करने योग्य
482.	आध्वर्यवम्	अध्वर्यु का यह
483.	पारिषदम्	परिषद् (सभा) का यह।
484.	हालिकम्	हल का यह भाग
485.	सैरिकम	हलवाहा।
486.	काकोलूकिका	कौआ और उल्लू का बैर।
487.	कुत्सकुशिकिका	कुत्स और कुशिक का विवाह
488.	दैवासुरम्	देवताओं और असुरों का बैर।
489.	औपगवकम्	उपगु का यह गोत्र।
490.	काठकम्	कठ नामक ऋषि से गाया गया या पढ़ा गया धर्म या वेदाभ्यास।
491.	वैद	वैद–संघ, परस्पर सम्बन्ध।
492.	वैदम्	वैद लक्षण या साक्षात सम्बन्ध।
493.	गार्गः गार्गम्	गार्ग्य संघ अङ्क और गार्ग्य लक्षण।
494.	दाक्षः दाक्षम्	दाक्षि संघ, दक्षि सम्बन्ध और दक्षि लक्षण।
495.	शाकलः	शकल ऋषि के द्वारा कथित और पठित का संघ या परस्पर सम्बन्ध या घोष।
496.	शाककम्	शकल ऋषि के द्वारा कथित और पठित का साक्षात सम्बन्ध।
497.	छान्दोग्यम्	छन्दोगों का धर्म या आम्नाय।
498.	औक्थिक्यम्	औक्थिक का धर्म या आम्नाय।
499.	याज्ञिक्यम्	याज्ञिकों का धर्म या आम्नाय।
500	बाहृच्यम्	बह्वचों का धर्म या आम्नाय।
501.	नाट्यम्	नटों का धर्म या आम्नाय।
502.	दाक्षादण्डमाणवाः	दाक्ष जो दण्ड माणव या दण्डमाण का शिष्य।
503.	रैवतिकीयम्	रैवतिक का यह या रेवति के पुत्र का यह
504.	वैजवापीयम्	वीजपाप के लड़के का यह।
505.	कौपिञ्जलः	कुपिञ्जल के लड़के का यह।
506.	हास्तिपदः	हस्तिपाद के लडके का यह।
507.	आथर्वणः	आथर्वणिक का यह धर्म या आम्नाय।

●

अथ तद्धिते प्राग्दीव्यतीय प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	आश्मः	पत्थर का बना हुआ कोई वस्तु
2	भास्मनः	राख का बना हुआ कोई सामान
3	मार्तिकः	मिटटी का बना हुआ घड़ा या दीपक इत्यादि
4	मायुरः	मोर पंखी या मोर का अंग
5	मौर्वम्	मुर्वा औषधि विशेष की बनी औषधि या उसका अवयव या काण्ड तथा मूर्वा औषधि विशेष की राख।
6	पैप्लम्	पीपल के वृक्ष का फल या पीपल के वृक्ष का बना हुआ वस्तु
7	बैल्वम्	विल्व के वृक्ष का बना हुआ वस्तु या विल्पफल या पुष्प
8	तार्कवम्	तर्कु नामक वृक्ष विशेष का बना हुआ वस्तु या उसका अवयव
9	तैतिडीकम्	इमली के पेंड का बना हुआ वस्तु या उसका फल या पुष्प डाल इत्यादि
10	त्रापुषम	सीसा या रांगा से बना हुआ कोई वस्तु या उसका अंग
11	जातुषम्	लाख (लाह) से बना हुआ कोई पदार्थ या अवयव गोंद का बना हुआ वस्तु या अंग
12	दैवदारवम्	देवदारू वृक्ष का बना हुआ वस्तु या अवयव या फल
13	भद्रदारवम्	भद्रदारू वृक्ष का बना हुआ वस्तु या अवयव या फल
14	दाधित्थम्	कैंथ को वृक्ष से बना हुआ वस्तु या उसका अवयव फल डाल, या दहि में रहने वाला घृत आदि
15	कापिथ्यम्	कैंथ (कैंत) से बना हुआ वस्तु या उसका पुष्प फल डाल इत्यादि
16	पालाशम्	पालाश वृक्ष का बना हुआ वस्तु या उसका फल इत्यादि
17	खादिरम्	खादिर (खैरा) का बना हुआ खूंटा या कोई वस्तु अथवा डाल इत्यादि
18	कारीरम्	करील वृक्ष का बना हुआ कोई वस्तु या उसका फलादि अवयव
19	शैंशपम्	शिंशपा वृक्ष का बना हुआ कोई वस्तु या उसका फल डाल इत्यादि
20	शामीलं भस्म	शमी वृक्ष का बना हुआ भस्म या राख या शमी का स्रुआ
21	अश्मभयम् आश्वनम्	कल्माषांधि नामक राजा की पत्नी में वशिष्ठ से उत्पादित से विकृत रूप या उसका अवयव अर्थात अंग या पत्थर बना वस्तु
22	मौद्गः	मूंग की दाल
23	आम्रभयम्	अमावट या आम्र बना हुआ कोई वस्तु या उसकी लकड़ी इत्यादि
24	शरमयम्	सरपत या सरकण्डा से बना हुआ कोई वस्तु या उसका फूल
25	त्वङ्मयम्	त्वचा का शिकार फोड़ा फुंसी दाद खाज खुजली या उसका अवयव
26	वाङ्मयम्	वाणी का विकार शब्द समूह या साहित्य रचना
27	गोमयम्	गोबर
28	पिष्टमयम्	पीसा हुआ भस्म या पिसान या आटे से बना हुआ।
29	पिष्टकः	मालपूआ
30	व्रीहिमयः	व्रीहि चावल के आटे का बना हवनीय द्रव्य
31	तिलमभयम्	तिल का बना हुआ मिठाई
32	यवमयम	यव का बना हुआ पदार्थ
33	तालंम्	धनुष
34	तालमयम्	ताड वृक्ष का बना हुआ रस या फल या करतल ध्वनि
35	ऐन्द्रायुधम	इन्द्रायुध का विकृत रूप

36	सौवर्ण निष्कः	सुवर्ण का निष्क परिमाण या तौल
37	हाटकमयी यष्टि	स्वर्ण जडित छड़ी
38	शौकम	शुक्र का विकृत रूप या उसका अवयव
39	वाकम	वगुला का विकृत रूप या उसका विकार
40	राजतम्	रजत से बना हुआ वस्तु या उसका अवयव
41	शामीलम्	शमी वृक्ष की बनी वस्तु या उसका अवयव।
42	दाधित्थम्	कैंत वृक्ष के विकार का विकार या कैंथ के अवयव का अवयव
43	कापित्थम्	कैंत के वृक्ष का विकार या विकार या कैंत के अवयव का अवयव
44	नैष्किकम् नैष्किकः	निष्क नामक परिमाण से खरीदा गये का विकार
45	शत्यः शतिकः	शत से खरीदी गयी वस्तु का विकार
46	औष्ट्रकः	ऊँट का विकार (पुरीष)
47	औमकम् औमम्	तीसी का विकार (तैल या खरी)
48	और्णकम् और्णम्	भेंड़ी के बाल का बना हुआ कम्बल आसनी इत्यादि
49	ऐणेयम् ऐणम्	वारहसिंचा की त्वचा से बना हुआ वस्तु हरिण के चर्म सेवना हुआ वस्तु
50	गव्यम्	गाय का दूध, घृत, दही, मूत्र और गोबर
51	पयस्यम्	दूध का दही और घृत अथवा जल का विकार वर्फ बनौरी
52	द्रव्यम्	द्रुनामक वृक्ष का बना हुआ वस्तु या उसका अवयव फल डाल इत्यादि
53	द्रुवयम्	द्रु वृक्ष अवयव डाल इत्यादि
54	आमलकम्	आमला का फल
55	प्लाक्षम्	प्लक्ष
56	नैयग्रोधम्	न्यग्रोध नामक वृक्ष का अवयव शाखा आदि
57	जाम्बवम–जम्बु–जम्बू	जामुन का फल
58	फलपा कशुषः	औषधि विशेष
59	ब्रीहयः	ब्रीहि नामक औषधियों का फल
60	मुदगाः	मुदग नामक औषधि विशेष के फल
61	मल्लिका	मल्लिका लता का फूल
62	जाती	जाती लता का फूल
63	विदारी	विदारी लता का फूल
64	अशोकम्	अशोक वृक्ष का फूल
65	करवीरम्	करवीर वृक्ष का फूल
66	हरीतक्यः	हरीतकी के फल
67	कांस्यम्	धातु लौह विशेष के हितं के लिए बना गया का विकार
68.	पारशवः	परशु के हित के लिए बने हुए वृक्ष का विकार

●

अथ तद्धिते प्राग्वहतीय प्रकरणम्

सं०	प्रयोग	अर्थ
1	माशाब्दिकः	शब्द न करो, इसको जो कहता है।
2.	स्वागतिकः	स्वागत कहने वाला
3.	स्वाध्वरिकः	सुन्दर यज्ञ को कहने वाला।
4.	स्वाङ्गि	स्वाङ्ग का लड़का
5.	व्याडिः	व्यड का लड़का
6.	व्यावहारिकः	व्यवहार से चलने वाला।
7.	स्वापतेयम्	अपने स्वामी के प्रति अच्छा
8.	प्राभूतिकः	प्रभूत (ऐश्वर्य) को जो कहता है।
9.	प्रार्यािप्तकः	पर्याप्त को कहने वाला।
10.	सौस्नातिकः	भली भांति स्नान किये हुए को जो पूछता है।
11.	सौखशाययनिक	सुख पूर्वक शयन को जो पूछता है।
12.	पारदारिकः	दूसरे की स्त्री के पास जो जाता है।
13.	गौरूतल्पिकः	गुरू स्त्री के पास जो जाता है।
14.	आक्षिकः	पासों से खेलता है।
15.	आभ्रिकः	कुदाल या खनती से जो खनता है।
16.	आक्षिकः	अक्षों (पासों) से जीतता है।
17.	दाधिकम्	दधि से संस्कारित या दहि से मिला हुआ खाद्य पदार्थ
18.	मारीचिकम्	मरीचि ऋषि या सूर्य से संस्कारित
19.	कौलत्थम्	कुलथी वा कुलत्थ (एक प्रकार की दाल) से संस्कारित
20.	औडुपिकः	घर नइया (या छोटी नाव) यों डेंगी से पार करने वाला।
21.	गौपुच्छिकः	गो पुच्छ (गौ के पुच्छ) से पार होने वाला अर्थात गौ के पूंछ को पकड़कर नदी आदि को पार करता है।
22.	नाविकः	नाव के द्वारा जो पार होता है या नाव चलाने वाला।
23.	घटिकः	घड़ा से जो पार होता है।
24.	बाहुका	दोनो बाहुओं से तैरता है या पार होता है।
25.	हास्तिकः	हाथी से जाने वाला।
26.	शाकटिकः	बैलगाड़ी से जाने वाला।
27.	दाधिकः	दहि से खाने वाला।
28.	आकर्षिकः	खिंचाव से जो चलता है चुम्बकीय या सम्मोहक से चलने वाला।
29.	आकर्षिकी	सम्मोहक से चलने वाली।
30.	पर्पिकः	जिसके पीठ के सहारे से पङ्गु चलता है।
31.	पर्पिकी	जिस पीठ से पङ्गु चलती अर्थात् लङ्गरी जिससे पीठ के सहारे चलती है।
32.	अश्विकः	अश्व से चलने वाला।
33.	रथिकः	रथ से चलने वाला या जाने वाला।
34.	श्वाभस्त्रिः	श्वभस्त्र का लड़का।
35.	श्वादंष्ट्रिः	श्वादंष्ट्र का लड़का।
36.	श्वागणिकः–	श्वागणिकी– कुत्तों के समूह द्वारा जाने या चलने वाला या वाली।
37.	श्वापदम्, शौवापदम्	कुत्ता पैर सदृश पैर हो जिसका।

38.	वैतनिकः	वेतन (पारिश्रमिक) से जीविका चलाने वाला।
39.	धानुष्कः	धनु से जिसकी जीविका चलती है।
40.	वास्निकः	भाड़ा मजदूरी, निवास स्थान या आवास स्थान, वस्त्र, चमड़ा या मूल्य से जीविका चलाने वाला।
41.	क्रयविक्रयिकः	खरीदने और बेचने से जीविका को चलाने वाला।
42.	क्रयिकः	खरीदने से जीविका चलाने वाला।
43.	विक्रयिकः	बेंचकर जीविका को चलाने वाला।
44.	आयुधीयः–आयुधिकः	आयुधशस्त्र से जीविका चलाने वाला।
45.	औत्सङ्गिकः	सम्पर्क या संयोग से हरण करने वाला।
46.	भस्त्रिकः, भस्त्रिकी	धौकनी, मशक या चमेड़ा का थैला या झोली से जिसका हरण किया जाय।
48.	विवधिकः, वैवधिकः विवीधिकः विवधिकी	बंहिया से जिसको लाया जाय।
49.	कौटिलिकः	व्याधगति विशेष से जो मृगों को पकड़ता है या लोहार धौकनीं से लाल होने लोहा को जिससे पकड़ता है चिमचा या संड़सी।
50.	आक्षद्यूतिकं वैरम्	जूआ से जिसका वैर चला गया हो।
51.	कृत्रिमम्	कृति से निष्पन्न, बनावटी
52.	पक्त्रिमम्	पाचन क्रिया के द्वारा बना हुआ।
53.	पाकिमम्	पाक क्रिया द्वारा बना हुआ।
54.	त्यागिमम्	त्याग से निष्पन्न।
55.	आपमित्यकम्	पकर्षदान करके निर्वृत्त होने वाला।
56.	याचितकम्	याचित (या याचना) के द्वारा सम्पन्न।
57.	दाधिकम्	दही से सम्पृक्त।
58.	चूर्णिनः	चूर्ण से मिला हुआ।
59.	लवणः सूपः	नमक से मिली हुई भोजन योग्य दाल (पहीति)
60.	लवणं शाकम्	नमक मिला हुआ सब्जी
61.	मौदग् ओदनः	मूंग से मिला हुआ भात (खिचड़ी)
62.	दाधिकम्	दही से संयुक्त भोज्य पदार्थ
63.	औजसिकः शूरः	तेजस्वी वीर
64.	साहसिकश्चौरः	हिम्मती चोर
65.	आम्भसिकोमत्स्यः	जल से है मछली अर्थात जलीय मछली।
66.	प्रातीपिकः	जल का उल्टा होना या पीछे की ओर जल जाना।
67.	आन्वीपिकः	जल के समीप रहने वाला।
68.	प्रातिलोमिकः	विपरीत रहने वाला।
69.	आनुलोमिकः	यथा क्रम में रहने वाला।
70.	प्रातिकूलिकः	प्रतिकूल में रहने वाला।
71.	आनुकूलिकः	अनुकूल में रहने वाला।
72.	पारिमुखिकः	इर्द गिर्द में रहने वाला या मुख के सामने रहने वाला।
73.	पार्श्विकः	पार्श्व में या समीप में रहने वाला।
74.	द्वैगुणिकः	द्रव्य को दो गुना करने के लिए जो देता है।
75.	त्रैगुणिकः	द्रव्य को तीन गुना करने के लिए जो देता है।
76.	वार्धुषिकः	वृद्धि करने के लिए जो देता है।

77.	कुसीदिकी–कुसीदिकः	सूद पर दिये जाने वाले द्रव्य को देने वाला (सूदखोर) या देने वाली सूदखोरनी
78.	दशैकादशिकः . दशैकादशिकी–	ऋण के रूप में ग्यारह रूपये को देने वाला। या देने वाली
79.	बादरिकः	भूमि पर पक कर गिरने वाले वदरि के फल को बटोरता है।
80.	सामाजिकः	समाज की जो रक्षा करता है।
81.	शाब्दिकः	शब्द करने वाला (वैयाकरण, यारवर)
82.	दार्दुरिकः	टर, टर शब्द करने वाला मेढक
83.	पाक्षिकः	पक्षियों को मारने वाला पक्षीहन्ता या बहेलिया।
84.	शाकुनिकः	पक्षियों को मारने वाला पक्षिहन्ता या बहेलिया।
85.	मात्स्यिकः, मैनिकः, शाकुलिकः–	मछली को मारने वाला जाति विशेष (मल्लाह) निषाद
86.	मार्गिक, हारिणिकः	सारंङ्गिकः,– मृग विशेष पशु को मारने वाला बाघ।
87.	पारिपन्थिकश्चौरः	राहगीर या रास्ते में राहगीरों को लूटने वाला।
88.	पारिपन्थिकः	विरोधी या शत्रु को मारने वाला या विरोधीहन्ता या शत्रुहन्ता।
89.	दाण्डमथिकः	सीधे रास्ते पर दौड करने वाला।
90.	पादविकः	पैदल दौड़ने वाला।
91.	आनुपदिकः	पीछे से पैदल दौड़ने वाला।
92.	आक्रन्दिकः	रोने की आवाज के स्थान की ओर जो दौडता है।
93.	पौर्वपदिकः	पूर्व पद को ग्रहण करने वाला।
94.	औत्तरपदिकः	उत्तर पद को ग्रहण करने वाला।
95.	प्रातिकण्ठिकः	जो कण्ठों को ग्रहण करता है।
96.	आर्थिकः	अर्थ को ग्रहण करने वाला।
97.	लालामिकः	चिन्ह को ग्रहण करने वाला।
98.	धार्मिकः	धर्म पर चलने वाला, धर्म का पालन करने वाला।
99.	अधार्मिकः	धर्म पर न चलने वाला न पालन करने वाला।
100.	प्रतिपथिकः, प्रातिपथिकः	जो सभी को रास्ते पर लाता है।
101.	सामवायिकः	समूहों को मेल करने वाला या एकत्रित कराने वाला।
102.	सामूहिकः	समुदाय में रहने वाला।
103.	पारिषद्यः	सभा को एकत्र करने वाला संचालक
104.	सैन्याः, सैनिकाः	सेना को मिलाने वाला।
105.	लालटिकः	ललाट को देखने वाला नौकर
106.	कौक्कुटिकः	पादन्यास स्थान मात्र को देखने वाला भिक्षुक
107.	आपणिकम्	बाजार के धर्म से युक्त या बाजार के धर्म के आचरण करने योग्य
108.	नारी	मनुष्य (पति) के धर्म का आचरण करने वाली।
109.	वैशस्त्रम्	अधिकारी के धर्म से युक्त
110.	वैभाजित्रम्	विभाजन या वितरण।
111.	आपणिकः	बाजार का राजकर लेने वाला।
112.	आपूपिकः	जिस मालपूआ का मूल्य है, या मालपूआ मूल्य है जिसका।
113.	लावणिकः	नमक है मूल्य जिसका।
114.	किसरिकः, किसरिकी	किसर है मूल्य जिसकी या सुगन्ध मूल्य है जिसका या जिसकी।
115.	शलालुकः, शलालुकी, शालालुकः, शालालुकी	'गन्ध द्रव्य विशेष मूल्य है जिसका या जिसकी।

116.	मार्दङ्गिकः	मृदङ्ग वाजन है मूल्य जिसका।
117.	माड्डुकः, माड्डुकिकः	वाद्यविशेष (महान डमरू) मूल्य है जिसका।
118.	झार्झरः, झाझरिकः	झर्झर बाजा मूल्य हैं जिसका।
119.	आसिकः	तलवार है प्रहार जिसका।
120.	धानुष्कः	धनुष है प्रहार जिसका।
121.	पारश्वधिकः	परश्वध (शस्त्र विशेष) है प्रहार जिसका।
122.	शात्तीकः	शक्ति (शस्त्र विशेष) है प्रहार जिसका।
123.	याष्टिकः	यष्टि (छड़ी) है प्रहार जिसका।
124.	आस्तिकः	परलोक है इस प्रकार की वुद्धि वाला व्यक्ति।
125.	नास्तिकः	परलोक नही है इस प्रकार की वुद्धि वाला व्यक्ति।
126.	दैष्टिकः	दैव (भाग्य) है इस प्रकार की बुद्धि वाला व्यक्ति।
127.	आपूपिकः	अपूप (मालपूआ) खाने का स्वभाव है जिसका।
128.	छात्रः	गुरू के दोष को अप्रकाशित करने वाला।
129.	कार्मः	कर्म स्वभाव वाला।
130.	चौरी	चोर स्वभाव वाली स्त्री।
131.	तापसी	तप स्वभाव वाली।
132.	ऐकान्यिकः	एक से अन्य वृत्त वाला।
133.	द्वादशान्यिकः	बारह से भिन्न वृत्त वाले।
134.	आपूपिकः	मालपूआ भोजन करना है हितकर जिसके लिए।
135.	आग्रभोजनिकः	जिसको अग्रासन देने के लिए निश्चित किया गया हो।
136.	श्राणिकः, श्राणिकी	हलुआ को देने के लिए जिस पुरूष या स्त्री को निश्चित किया गया है।
137.	मांसौदनिकः	जिसको मांस और भात देने के लिए निश्चित किया गया है।
138.	मांसिकः	जिसको मांस देने के लिए निश्चित किया गया हो।
139.	औदनिकः	जिसको भात देने के लिए निश्चित किया गया हो।
140.	आकरिकः	रत्न इत्यादि की उत्पत्ति के स्थान पर रक्षार्थ जो अधिकृत किया गया हो।
141.	देवागरिकः	देवघर या मन्दिर रक्षार्थ जिसको नियुक्त किया गया है।
142.	श्माशानिकः	श्मशान स्थान पर पढ़ने वाला।
143.	चातुर्दशिकः	चतुर्दशी तिथि को पढ़ने वाला।
144.	वांशकठिनिकः	जिस देश में वास पाये जाते हों उनमें जो व्यवहार किया जाता है।
145.	प्रास्तरिकः	प्रस्तार अर्थात अवयव जिस देश में व्यवहार किया जाता है।
146.	सांस्थनिकः	संस्थान अर्थात सन्निवेश जिस देश में व्यवहार किया जाता है।
147.	नैकटिको भिक्षुः	जो भिक्षुक समीप में रहता हों।
148.	आवसथिकः,आवसथिकी	गृह (घर) में निवास करने वाला या निवास करने वाली।

●

अथ तद्धिते प्राग्धितीय प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	रथ्यः	पहिया या घोड़ा, सारथी।
2.	युग्यः	रथ इत्यादि में जुते घोड़े इत्यादि पशु के कन्धे पर रखा जाने वाला काठ या जोडी अर्थात् वह रथ में दो घोड़े या बैल जोतते हैं।
3.	प्रासङ्गयः	बछड़ों के हल जोतने के पूर्व उनके कन्धों पर रखे जाने वाले काष्ठ को जो वहन करता है अर्थात युवा बछड़ा।
4.	धुर्यः धौरेयः	जुआ को ढोने वाला बैल
5.	सर्वधुरिणः	सभी का अग्रगण्य, सभी या प्रमुख या श्रेष्ठ
6.	एकधुरीणः, एकधुरः	जुआ को ढोने वाला एक बैल
7.	शाकटः गौः	काठ की गाड़ी को ले जाने वाला बैल
8.	हालिकः	हल को ले जाने वाला बैल
9.	सैरिकः	हल में जुतने वाला बैल या हलवाहा।
10.	जन्या	वधू प्राप्त करने वाले दुलहे।
11.	पद्याः शर्करा	खांड़ एक प्रकार की चीनी।
12.	धन्यः	धन को प्राप्त करने वाला धनी
13.	गण्यः	गण को प्राप्त करने वाला गणी।
14.	आन्नः	अनाज को प्राप्त करने वाला किसान या अनाज व्यापारी
15.	वश्यः	दूसरे के अधीन में रहने वाला।
16.	पद्यः	कीचड़ (पानी मिटटी आपस में मिले हों)
17.	मूल्या, मुदगाः	मूल से उखाड़ने योग्य मूंग।
18.	धेनुष्या	ऋण के बदलें में बन्धक रखी गयी गाय।
19.	गार्हपत्योऽग्नि	अग्नि विशेष की संज्ञा।
20.	नाव्यम्	नौका से पार करने योग्य नदी या समुद्र
21.	वयस्यः	अवस्था के बराबर या समान अवस्था वाले।
22.	धर्म्यम्	धर्म से प्राप्त योग्य वस्तु या स्वर्गादि।
23.	विष्यः	विष से मारने योग्य।
24.	मूल्यम्	विक्रेता से प्राप्त द्रब्य या मूल के बराबर
25.	सीत्यम्	जोता हुआ बैल (खेत)
26.	तुल्यम्	तराजू से भलीभांति तौला गया।
27.	धर्म्यम्	धर्म से युक्त
28.	पथ्यम्	मार्ग से युक्त या सेवन करने योग्य खाद्य वस्तु।
29.	अर्ध्यम्	अर्ध से युक्त
30.	न्याप्यम्	न्याय से संगत
31.	छन्दस्यम्	इच्छा के अनुसार बना हुआ।
32.	औरसः, उरस्यः	आत्मज, अपना पुत्र
33.	हृद्यः	हृदय की प्रिय वस्तु।
34.	हृद्यः	हृदय को बांधने वाला वशीकरण मन्त्र।
35.	मत्यम्	ज्ञान का भाव या साधन अर्थात मोक्ष होने का साधन।
36.	जन्यः	लोक का कथन
37.	हल्यः	हलका खींचना।

38.	अग्र्यः	श्रेष्ठ आगे चलने में प्रवीण।
39.	साम्यः	साम वेदों में प्रवीण
40.	कर्मण्यः	कर्म करने में प्रवीण।
41.	शरण्यः	शरण देने में प्रवीण।
42.	प्रातिजनीनः	प्रतिजनों अर्थात सभी के प्रति अच्छा स्वभाव या व्यवहार वाला।
43.	सायंयुगीनः	रण में कुशल या बहुत भारी योद्धा या युद्ध सम्बन्धी।
44.	सार्वजनीनः	सभी जनों के प्रति अच्छा स्वभाव रखने वाला।
45.	वैश्वजनीनः	विश्व जनों के प्रति ठीक व्यवहार रखने वाला।
46.	भक्ताशालयः	भात में शालीधान का भात
47.	पारिषद्यः	परिषद में कुशल
48.	पारिषदः	सभा में कुशल प्रवीण।
49.	काथिकः	कथा में प्रवीण।
50.	गौडिकः	ईख या ऊँख।
51.	सान्तुकाः	यव
52.	पाथेयम्	रास्ते का अच्छा भोज्य पदार्थ।
53.	आतिथेयम्	अतिथि में अच्छे।
54.	वासतेयी	निवास करने में अच्छी रात्रि
55.	स्वापतेयम्	अपने मालिक के अच्छा व्यवहार
56.	सभ्यः	सभा में सज्जन
57.	सतीर्थ्यः	सहपाठी
58.	समानोदर्यभ्राता	सगा भाई
59.	सोदर्यः	सगा भाई

●

अथ तद्धिते छयद्विधि प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	नभ्यः	अक्ष धुरा (चक्का के बीच छेद)
2	नभ्यम्	अञ्जन
3	शून्यम्–शुन्यम्	कुत्ता के लिए हितकर
4	ऊधन्यः	दूध
5	कम्वल्यम्	कम्वज के हितकर (सौ पल ऊर्ण (ऊन का एक कम्बल)
6	आमिक्ष्यंदधि आमिक्षीयम्	अमिक्षा के लिए हितकर खौलते हुए दूध में दृष्टि के डालने से घनीभूत पदार्थ को आमीक्षा कहते।
7	पुरोडाशीयाः	पुरोडासीय पदार्थ के लिए हितकर
8	अपूप्यम्–अपूपीयम्	मालपूआ के लिए हितकर
9	वत्सीयो गोधुक्	बछड़े के लिए हितकर गाय को दोहन करने वाला।
10	शङ्कव्यं दारु	खूटा की अच्छी लकड़ी।
11	गव्यम्	गो के लिए लाभकारी खास
12	हविष्यम्	गो इत्यादि पशु के लिए लाभकारी खास
13	दन्त्यम्	दातों के लिए लाभकारी मञ्जन
14	कण्ठयम्	कण्ठ के लिए हितकर पेय पदार्थ या औषधि
15	नस्यम्	नासिका के लिए लाभकारी सुंघनी या सूघंने वाली कोई औषधि।
16	नाभ्यम्	नाभि के लिए हितकर कोई औषधि।
17	शीर्षण्भ्	सिरदर्द नाशक औषधि।
18	शिरस्यति	अपने को शिर चाहता है।
19	शीर्षण्याः शिरस्याः	शिर की रक्षा करने वाले शिर के बाल या केश।
20	स्थौलशीर्षम्	भारी भरकम शिर।
21	खल्यम्	दुष्ट, नीच, खोटा या खलिहान के लिए हितकर।
22	यव्यम्	जौ के हित के लिए दवा इत्यादि।
23	माष्यम्	ऊर्दो के हित के लिए औषधि इत्यादि।
24	तिल्यम्	तिलों के हित के लिए दवा इत्यादि।
25	वृष्यम्	बैल या साड़ के हित के लिए चारा औषधि इत्यादि।
26	ब्रह्मण्यम्	बाह्मण के लिए हितकारी।
27	रथ्या	रथ के लिए लाभकारी।
28	अजथ्या	बकरों या बकरियों के समुदाय या समूह के लिए लाभकारी।
29	अविथ्या	भेड़ों के लिए हितकारी।
30	आत्मनीनम्	अपने हित के लिए या आत्मा के हित के लिए।
31	विश्वजनीनम्– विश्वजनीयम्	लोक कल्याण के लिए
32	पञ्चजनीनम्	पञ्चलोगों के लिए कल्याणकारी।
33	सार्वजनिकः सर्वजनीनः	सभी जनों के कल्याण के लिए।
34	माहाजनिकः	श्रेष्ठ जनों के हित के लिए या बनियों के हित के लिए।
35	मातृभोगीणः	माता के सुखादि भोग के हित के लिए।
36	पितृभोगीणः	पिता के सुखादि भोग क्रे लिए हितकर।

37	राजभोगीनः	राजा के सुखादिभोग के लिए हितकर।
38	आचार्यभोगीनः	आचार्य (गुरु) के सुखादिभोग के लिए हितकर।
39	सार्वम,सर्वीयम्	सभी के हित के लिए।
40	पौरुषेयः	पुरुष की हत्या करना या पुरुष की वीरता या पुरुषकृत कार्य।
41	माणवीनम्	मनु के निंदित सन्तानों के लिए।
42	चारकीणम्	शरीर पर हुए सफेंद दाग (कोढ़) के हित के लिए या चरक संहिता लेखक आचार्य चरक के हित के लिए।
43	अङ्गारीयाणि–काष्ठानि	जलौनी लकड़ी।
44	प्राकरीया इष्टकाः	महल (मकान) के लिए ईट
45	शङ्कव्यंदारु	लकड़ी की बनी खूटी।
46	छादिषेयाणि	घर पर छप्पर(छान) रखने के लिए खर।
47	बालेयास्तुण्डुला	बिरोचन के पुत्र के लिए चावल या देवतोदेश्यक पूजनार्थ या नैवेद्य के लिए चावल।
48	औपधेयम्	रथ का अवयव या धुरा जिसमें लगा रहता है।
49	आर्षभ्योवत्सः	बैल के लिए बछड़ा।
50	औपानह्यो मुञ्जः	अपानह या जूता के मूंज
51	औपानह्यम्	जूता के लिए चमड़ा।
52	वार्ध्रचर्म	चर्म की रस्सी चर्मवरधी या सटाकी।
53	बारत्रचर्म	चर्म की बरही।
54	प्राकारीयाः	इन ईटों का महल।
55	प्रासादीयं दारु	लकड़ी की मकान या महल की लकड़ी।
56	प्रांकारीयो देश	महलों का देश।
57	पारिखेथी भूमि	दुर्ग (किला) दुर्गम बनाने के लिए उसके चारो तरफ खाई बनाने के लिए भूमि।

●

अथ तद्धितार्हीय प्रकरणम्

सं०	प्रयोग	अर्थ
1	नैष्किकम्	दीनार से या स्वर्णमुद्रा निष्क परिमाण से खरीदा गया।
2	परमनैष्किकः	परम निष्क परिमाण से खरीदा गया।
3	पाञ्चकलापिकम्	जिस वस्तु का पांच कलाप परिमाण हो।
4	पारायणिकः	पारायण करने वाले
5	द्वैपारायणिकः	दो बार पारायण करने वाले
6	द्विशौर्पिकम्	दो सुपा से खरीदी गयी वस्तु
7	अर्धद्रौणिकम्, आर्धद्रौणिकम्–	आधा दोन परिमाण से खरीदी गयी वस्तु
8	अर्धप्रस्थिकम्, आर्धप्रस्थिकम्–	आधे सेर (किलो) से खरीदी गयी वस्तु
9	आर्धकौडविकम्	अर्धकुडव (छःमुटठी) अनाज से खरीदा गया।
10	अर्धखारी	आधे खारी परिमाण में होने वाला।
11	शतिकम्, शत्यम्	सौ रूपये से खरीदा गया।
12	शतकः सङ्घः	जिस समुदाय में सौ की संख्या हो।
13	पञ्चकः	पांच से खरीदा गया।
14	बहुकः	बहुतों से खरीदा गया।
15	चात्वरिंशत्कः	चालीस से खरीदा गया।
16	तावतिकः, तावत्कः	उतने से खरीदा गया।
17	विशंकः	बीस से खरीदा गया।
18	त्रिशंकः	तीस से खरीदा गया।
19.	त्रिशंतिकः	तीस संख्या वाला
20	विशंतिकः	बीस संख्या वाला
21.	कंसिकः कंसिकी	कांसा से खरीदा गया या खरीदी गई।
22	अर्धिकः;अर्धिकी	आधा भाग से खरीदा गया या खरीदी गई।
23	कार्षापणिकः, कार्षापणिकी	कार्षापण नामक सिक्का से खरीदा गया या खरीदी गई।
24	प्रतिकः, प्रतिकी	कार्षापण नामक सिक्का से खरीदा गया या खरीदी गई।
25	शौर्पम्,शौर्पिकम्	शूर्प नामक परिणाम(सिक्का) से खरीदा गया या खरीदी गई।
26	शातमानम्	शतमान नामक परिमाण से खरीदा गया।
27	वैंशतिकम्	विंशतिक नामक परिमाण से खरीदा गया।
28	साहस्रम्	सहस्र से खरीदा गया।
29	वासनम्	वस्त्र खरीदा गया।
30	अध्यर्धकंसम्	अर्धभाग वाले कांसा से खरीदा गया।
31	द्विकंसम्	दो कांसा से खरीदा गया।
32	अध्यर्दकाषापणिकम् अध्यर्धकार्षापणिक्रम्	अर्धभाग वाले कार्षापण नामक परिमाण से खरीदा गया।
33	द्विकार्षापणम्, द्विकार्षापणिकम्	दो कार्षापण नामक परिमाण से खरीदा गया।

34	अध्यर्धप्रतिकम्	अर्धभागवाले कार्षापण नामक परिणाम से खरीदा गया।
35	द्विप्रतिकम्	दो कार्षापण नामक परिणाम से खरीदा गया।
36	अध्यर्धसहस्त्रम्, अध्यर्धसाहस्रम्	अर्धभाग सहस्त्र से खरीदा गया।
37	द्विसहस्त्रम, द्विसाहस्त्रम्	दो हजार से खरीदा गया।
38	द्विनिष्कम्, द्विनैष्किकम्	दो निष्क परिमाण से खरीदा से खरीदा गया।
39	त्रिनिष्कम्, त्रिनैष्किकम्	तीन निष्क परिमाण से खरीदा गया।
40	बहुनिष्कम बहुनैष्किकम्	अनेक निष्क परिणाम से खरीदा गया।
41	द्विविस्तम्, द्विवैस्तिकम्	दो विस्तनामक परिणाम से खरीदा गया।
42	त्रिविस्तम्, त्रिवैस्तिकम्	तीन विस्तनामक परिणाम से खरीदा गया।
43	बहुविस्तम्,बहुवैस्तिकम्	अनेक विस्तनामक परिणाम से खरीदा गया।
44	अध्यर्धविंशतिकीनम्	अर्धभाग में स्थितम विंशति से खरीदा गया।
45	द्विविशतिकीनम्	दो विंश से खरीदा गया।
46	अध्यर्धखारीकम्	अर्धभाग खारी नामक परिमाण से खरीदा गया।
47	द्विखारीकम्	दो खारी नामक परिमाण से खरीदा गया।
48	खारीकम्	एक खारी से खरीदा गया।
49	अध्यर्धपण्यम्	अर्धभागपण्य से खरीदा गया।
50	द्विपण्यम्	दो पण से (पैसा) खरीदा गया।
51	अध्यर्धपाद्यम्	अर्धभाग पाद से खरीदा गया।
52	द्विपाद्यम्	दो पाद से खरीदा गया।
53	अध्यर्धशाण्यम्, अध्यर्धशाणम्	अर्धशाण से खरीदा गया।
54	द्वैशाणम,द्विशाण्यम्, द्विशाणम्	दो शाण से खरीदा गया।
55	गौपुच्छिकम्	गोपुच्छ से खरीदा गया।
56	साप्ततिकम्	सत्तर से खरीदा गया।
57	प्रास्थिकम्	एकसेर से खरीदा गया।
58	नैष्किकम्	निष्क से खरीदा गया।
59	पञ्चगोणि:	पञ्चगोण से खरीदा गया।
60	शतिक: शत्य:	सौ रुपये संयोग वाला अर्थात् याजन शुश्रुषादि सम्बन्ध।
61	शत्यं शतिकम्:	सौ रुपये के निमित्तवाला दक्षिण आंखका फड़कना।
62	वातिकम्	वात रोग का शमन या कोप होना।
63	पैत्तिकम्	पित्तरोग का शमन होना या कोप होना।
64	सान्निपातिकम्	वात, पित्त और श्लेष्माओ के दोष से मिला सन्निपात का निमित्त अर्थात् जव ज्वर के प्रकोप इत्यादि न खाने योग्य भक्षण पदार्थ के संयोग सान्निपात के सूचक होते है।
65	गव्य:	गौ का संयोग या निमित्त या उत्पात
66	धन्य:	धन का संयोग या निमित्त या उत्पात
67	यशस्य:	यश का संयोग या निमित्त या उत्पात
68	स्वर्ग्य:	स्वर्ग का संयोग या निमित्त या उत्पात
69	वैजयिक:	विजय का निमित्त होना।
70	पञ्चकम्	पाँच का निमित्त होना।
71	सप्तकम्	सात का निमित्त होना।

72	प्रास्थिकम्	एक प्रस्थ का निमित्त होना।
73	खारीकम्	एक खारी परिमाण का निमित्त होना।
74	आश्विकम्	एक घोड़ा का निमित्त होना।
75	आश्मिकम्	पत्थर का निमित्त होना।
76	ब्रह्मवर्चस्यम्	ब्रह्मवर्चस् का निमित्त होना।
77	पुत्रीयः पुत्र्यः	पुत्र के निमित्त होना।
78	सार्वभौमः	सर्वभूमि का निमित्त या संयोग होना
	पार्थिवः	पृत्वी का निमित्त या संयोग होना।
79	सार्वभौमः	समीभूमि का स्वामी या जिसको सभी जानते हो, अर्थात् सम्राट।
80	पार्थिवः	पृथ्वी का स्वामी या जिसको इस पृथिवी पर सभी जानते हो।
81	लौकिकः	लोक संसार में जिसको सभी जानते हो।
82	सार्वलौकिक	जिसको सभी लोक में जानते है।
83	वापः	खेत।
84	प्रास्थिकम्	एक सेर बीज बोने वाला खेत।
85	द्रौणिकम्	एक दोन बीज बोने वाला खेत।
86	खारीकम्	एक खारी बीज बोने वाला खेत
87	पात्रिकम्	एक पात्र जिसमें बोया जाय।
88	पात्रिकी	एक पात्र बोई जाने वाली क्यारी
89	पञ्चकः	जिसमें पाँच की वृद्धि, आय लाभ, शुल्क या उत्कोच (घूस) हो।
90	शतिकःशत्यः	जिसमें सौ की वृद्धि आय लाभ शुल्क या उत्कोच (घूस) हो।
91	साहस्रः	जिसके हजार की वृद्धि,आय, लाभ शुल्क और उत्कोच (घूस) हो।
92	द्वितीयकः	जिसमें दूसरे की वृद्धि,आय, लाभ शुल्क और उत्कोच (घूस) हो।
93	तृतीयकः	जिसमें तीसरे की वृद्धि आय लाभ शुल्क और उत्कोच (घूस) हो।
94.	अर्धिकः	जिसमें रूपये का आधा भाग (आधा आना वृद्धि, आय, लाभ, शुल्क और उत्कोच घूस हो।
95	भाग्यं भागिकम	जिसमें रूपये का आधा भाग आठ आना वृद्धि, आय, लाभ, शुल्क, और उत्कोच घूस हो।
96	वांशभारिकः	जो बांस के बोझा को अन्य देश में ले जाता है या चुराता है तथा ढोता है या प्राप्त कराता है।
97	ऐक्षुभारिकः	इंख के बोझा को अन्य देश में ले जाने वाला या चुराने वाला या ढोने वाला।
98	वांशिकः	बांस को ले जाने वाला चुराने वाला या ढोने वाला।
99	ऐक्षुकः	ईख को ले जाने वाला, चुराने वाला या ढोने वाला।
100	वास्निकः	वस्त्र या मजदूरी ले जाने वाला या चुराने वाला या ढोने वाला।
101	द्रव्यकः	रूपया इत्यादि चुराने वाला या ले जाने वाला या ढोने वाला।
102	प्रास्थिकम्, कटाहः	एक किलो की कढाही।
103	प्रास्थिकी ब्राह्मणी	एक किलो अन्न पकाने वाली ब्राह्मण की स्त्री
104	द्रौणी, द्रौणिकी	एक दोन पकाने वाली ब्राह्मणी।
105	आढकीना, आढकिकी	एक आढक पकाने वाली
106	आचितीना, आचितिकी	एक आचत परिमाण तक पकाने वाली
107	पात्रीणा, पात्रिकी	एक पात्र परिमाण तक पकाने वाली
108	द्वयाढकिकी, द्वयाढकीना	दो आढक तक पकाने वाली
109	द्वयाढकी	दो आढक तक पकाने वाली
	श्लैष्मिकम्	श्लेष्मा रोग का शमन होना या कोप होना

110	द्वयाचितिकी, द्वयाचितीना	दो आचत परिमाण तक पकाने वाली
111	द्वयाचिता	दो आचत परिमाण तक पकाने वाली।
112	द्विपात्रिकी, द्विपात्रीणा, द्विपात्री	दो पात्र तक पकाने वाली
113	द्विकुलिजी, द्विकुलिजीना, द्विकुलिकी, द्वैकुलिजिकी	दो कुलिज परिमाण तक पकाने वाली।
114	पञ्चकः	जिसका पांच भाग मूल्य या वेतन हो।
115	प्रास्थिको राशिः	प्रस्थ परिमाण राशि है जिसकी
116	पञ्चकाः शकुनयः	पांच पक्षियां
117	पञ्चकः	पांच संख्या
118	अष्टकम् पाणिनीयम्	आठ अध्याय परिमाण जिस पाणिनी ग्रन्थ का
119	पञ्चदशः	पन्द्रह मन्त्र परिमाण है जिसका
120	सप्तदशः	सत्रह मन्त्र परिमाण वाला
121	एकविंशः	इक्कीश मन्त्र परिमाण वाला
122	पङक्तिः	पांच पाद वाला या पञ्चाक्षर
123	विंशतिः	विंश संख्या परिमाण वाला
124	त्रिशंत्	तीस संख्या परिमाण वाला
125	चत्वारिंशत्	चालीस संख्या परिमाण वाला
126	पञ्चाशत्	पचास संख्या परिमाण वाला
127	षष्ठिः	साठ संख्या परिमाण वाला
128	सप्तशतिः	सत्तर संख्या परिमाण वाला
129	अशीतिः	अस्सी संख्या परिमाण वाला
130	नवतिः	नब्बे संख्या परिमाण वाला
131	शतम्	एक सौ संख्या परिमाण वाला
132	त्रैशानि	तीस ब्राह्मण संज्ञक मन्त्र वाला वेद
133	चात्वारिशानि	चालीस ब्राह्मण संज्ञक मन्त्र वाला वेद
134	श्वैतच्छत्त्रिकः	श्वेत छत्र के योग्य
135	छैदिकः	छेद के योग्य वेंत
136	वैरागिकः, वैराङ्गिकः	विराग के योग्य
137	शीर्षच्छेद्यः, शैर्षच्छेदिक	शिर को नित्य छेदन के योग्य
138	दण्डयः	दण्ड के योग्य
139	अर्ध्यः	अर्ध के योग्य
140	वध्यः	वध के योग्य
141	पात्रियः पात्र्यः	पात्र (सज्जन) के योग्य
142	कडङ्करीयो गौः	तिनका या खास खाने वाली गाय।
143	दक्षणीयः दक्षिण्यः	दक्षिण के योग्य
144	स्थालीविल्याः	तण्डुल (चावल) पकाने योग्य बटलोई
145	यज्ञियः	यज्ञ के योग्य या यज्ञ करने योग्य देश या भूमि
146	आर्त्विजीनः	यजमान या ऋत्विक्।

●

अथ ठञधिकारे कालाधिकार प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	पारायणिकश्छात्रः	परायण करने वाला छात्र अर्थात् पाठ का आवृत्ति करने वाला छात्र
2	तौरायणिकः	यजमान
3	चान्द्रायणिकः	चन्द्रयण व्रत को करने वाला।
4	सांशयिकः	सन्देह को प्राप्त होने वाला।
5	यौजनिकः	एक योजना (चार कोस) तक जाने वाला।
6	क्रोशशतिकः	सौ कोस तक जाने वाला।
7	यौजनशतिकः	सौ योजन तक जाने वाला आचार्य
8	पथिकः पथिकी	पैदल चलने वाला राहगीर पुरूष या स्त्री
9	पान्थः पान्था	नित्यप्रति रास्ते पर चलने वाला राही पुरुष या स्त्री
10	औत्तरपथिकम्	उत्तर पथ से आहरण किया।
11	औत्तरपथिकः	उत्तर के रास्ते से आने वाला।
12	वारिपथिकम्, वारिपथिकः	जल के रास्ते से आहृत होने वाला या जलीय मार्ग से जाने वाला।
13	जङ्गलपथिकः जङ्गलपथिकम्	जंगल के रास्ते से आहृत होने वाला या जंगल के रास्ते से जानें वाला।
14	स्थल पथिकम्	स्थलीय रास्ते से आहृत करने वाला।
15	स्थलपथिकः	स्थलीय रास्ते से जाने वाला।
16	कान्तारपथिकम्	घने जंगल के रास्ते में आहूत किया गया।
17	कान्तारपथिकः	घने जंगल के रास्ते से जाने वाला।
18.	आह्निकम्	दिन में सम्पन्न होने वाला।
19	मासिकोऽध्यापकः	महीने से सत्कारित अध्यापक
20	मासिकः कर्मकरः	महीने का नोकर।
21	मासिको व्याधि	महीने तक रहने वाला रोग।
22	मासिक उत्सवः	महीने भर चलने वाला उत्सव
23	मास्यः मासीनः	महीने में वेतन से खरीदा गया भृत (नौकर)
24	द्विमास्यः	दो महीने तक रहने वाला नौकर
25	षण्मास्यःषाण्मास्यः षाण्मासिकः	छः महीने तक का वेतनभोगी नौकर
26	समीनः	सम वर्ष तक अध्यापन कार्य, नौकर,और रोग
27	द्विसमीनः द्वैसमिकः	दो वर्ष तक अध्यापन कार्य करने वाला अध्यापक नौकर और रोग।
28	द्विरात्रीणःद्वैरात्रिकः	दो रात्रि में सम्पन्न होने वाला
29	द्वैयहीनः,द्वैयह्निकः	दो दिन में निर्वृत होने वाला।
30	द्विसांवत्सरिकः	दो सम्बत्सर में निर्वृत होने वाला।
31	द्विवर्षीणःद्विवर्षः,द्विवार्षिकः	दो वर्षीय व्याधि
32	द्विकौडविकः	दो कुडव परिमाण प्रयोजन हो जिसका
33	द्विसौवर्णिकम्	दो तोला सोना से खरीदा गया।

34	द्विनैष्किकम्	दो निष्क परिमाण से खरीदा गया।
35	पाञ्चकपालिकम्	पाँच कपाल परिमाण हो जिसका।
36	द्विवर्षोदारकः	दो वर्ष का बालक।
37	षष्टिका	साठ रात्र में होने वाला धान्य विशेष (साठी धान)
	षष्मासिको वयाधिः षाण्मास्यः	छव मास तक रहने वाला रोग
38	मासिको व्याधिः	एक महीने से जीतने योग्य रोग
39	मासिकम्	एक महीने से प्राप्त करने योग्य कार्य
40	मासिको ब्रह्मचारी	महीने तक ब्रह्मचर्य व्रत वाला ब्रह्मचारी।
41	आर्धमासिकः	छः महीने तक ब्रह्मचर्य व्रत वाला ब्रह्मचारी।
42	मासिक ब्रह्मचर्यः	महीने तक ब्रह्मचर्यव्रत।
43	चातुर्मास्यानि–यज्ञकर्माणिं	चार माह से होने वाले यज्ञकर्म।
44	चातुर्मासी आषाढ़ी पौर्णमासी	चार माह पर आषाढ़ी पूर्णिमा।
45	द्वादशहिकी	बारवे दिन की दक्षिणां
46	आग्निष्टोमिकी	अग्रिस्तोक संबंधी दक्षिणा
47	वाजपेयिकी	वाजपेय यज्ञ संबंधी दक्षिणा।
48	प्रावुषेण्यम्	वर्षा काल में दिया जाने वाला या होने वाला कार्य।
49	शारदम्	शदरकाल में दिया जाने वाला या होने वाला कार्य

●

अथठञ्विधि प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	वैयुष्टम्	प्रभात के समय देय या प्रभात के समय कार्य।
2	आग्निपदम्	अग्निस्थान पर देय या कार्य।
3	पैलुमूलकम्	ताड़ के मूल में होने वाला या पिलु वृक्ष विशेष के मूल में होने वाला।
4	याथाकथाचम्	अनादरण से देय या कार्य।
5	हस्त्यम्	हस्त के द्वारा देय या कार्य।
6	कार्णवेष्टकिकम् मुखम्	कान के आभूषण से शोभायमान मुख।
7	कर्मण्यम्	कर्म से शोभायमान वीरता। शोभित
8	वेष्योनटः	बनावटी पोशाक से शोभ्कित नट
9	सान्तापिकः	शत्रुपीडा के लिए उत्पन्न होना।
10	साङ्ग्रामिकः	युद्ध के लिए होना।
11	योग्यः, यौगिकः	योग के लिए होना।
12	कार्मुकम्	कर्म करने के लिए उत्पन्न होना।
13	सामयिकम्	जिस कार्य का जिस वस्तु या पदार्थ का समयं प्राप्त हो गया है।
14	आर्तवम्	ऋतुकाल प्राप्त हो जिसका
15	औपवस्त्रम्	उपवस्त्र में या उत्तरीय में प्राप्त होने वाला।
16	प्राशित्रम्	शासक, राजा, या राज्यपाल को प्राप्त होने वाला
17	काल्यंशीतम्	शीतकाल प्राप्त वाला।
18	कालिकंवैरम्	दीर्घकाल वैर वाला।
19	ऐन्द्रमहिकम्	इन्दोत्सवा– प्रयोजन या फल
20	वैशाखो मन्थः	विशारवा प्रयोजन हो जिस स्थूण का
21	आषाढो दण्दः	आषाढ प्रयोजन हो जिस दण्उ का
22	चूडा,चौडम्	चूडाप्रयोजन वाला।
23	श्रद्धा श्राद्धम्	श्रद्धाप्रयोजन वाला।
24	अनुप्रवचनीयम्	यज्ञोपवीत का अङ्गभूतकार्य विशेष।
25	व्याकरण समापनीयम्	व्याकरण का समापन वाला अर्थात मंगलाचार।
26	ऐकागारिकश्चौरः	घर के अन्दर एकल चोराने की इच्छा करने वाला चोर
27	आकालिका विद्युत्	पूर्वदिन के मध्यदिन में उत्पन्न हो कर उसी दिन के कुछ क्षण बाद विनाश वाली बिजली।

●

अथ तद्धितेषु भावकर्म

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	ब्राह्मणवत्	ब्राह्मण की तरह अध्ययन करना।
2	मथुरावत्	मथुरा नगरी के तुल्य महल
3	चैत्रवत्	चैत्र की तरह।
4	विधिवत्	विधान के योग्य पूजा जाना।
5	गोत्वम् गोता	गो जाति गो धर्म जिस पशु में भिन्नता हो वह सभी गो जाति से संबंधित होती है।
6	स्त्रैणम् स्त्रीत्वम् स्त्रीता	स्त्रीधर्मवान स्त्री जाति
7	पौंस्नम् पुस्वम् पुंस्ता	पुंस धर्मनान पुंस जाति
8	अपतित्वम्	पतिधर्म से रहित।
9	अपटुत्वम	चतुराई से रहित।
10	वार्हस्पत्यम्	वृहस्पति का धर्म
11	अपटुः	जिसके चतुर लड़के न हों।
12	आपवटम्	लड़का चतुराई से रहित
13	आचतुर्यम्	चतुरत्व का अभाव
14	आसङ्गत्यम्	असंगति का अभाव हो जिसमें।
15	आलवण्यम्	सुन्दरता का अभाव
16	आवट्यम्	एकरूपता का अभाव
17	आयुध्यम्	न युद्ध करने की क्षमता।
18	आकत्यम्	कुलत्व या पूर्णता
19	आरस्यम्	रसहीनता या नीरसता
20	आलस्यम्	आलसीपन
21	प्रथिमा, पार्थवम्	स्थूलता, स्थूलत्व, पृथुत्व
22	मद्रिमा मार्दवम	मृदुलता, कोमलता, मृदुत्व, मुलायम, नरम, दयापन
23	शौकल्यम्, शुक्लिमा	शुकलत्व, श्वेतत्व, सफेदपन, शुद्धता, सात्विकता।
24	दार्ढ्यम्, द्रढिमा	कठोरता, कठोरपन, मजबूती, अडिगपन, एकरूपता।
25	भ्रशिमा	अतिशयता, पचण्डता
26	क्रशिमा	दुर्बलता, कमजोरीपन
27	औचिती	योग्यता, मुनासिबपन, न्यायपन
28	याथाकामी	यथेष्छ, आचरण करने वाला, मनमानापन
29	जाड्यम्	मूर्खता, मुर्खत्वम्, जड़तापन।
30	मौड्यम्	मूढता, मूढत्वम्, मुग्धता, जडबुद्धित्व।
31	ब्राह्मण्यम्	ब्राह्मणत्व, ब्राह्मणपन।
32	आर्हन्त्यम्, आर्हन्ती	प्रशसनीयता, प्रशंसा के पात्र।
33	अयथातथ्यम्	जिस किसी प्रकार का धर्म या कर्म
34	आयाथातथ्यम्	जिस किसी प्रकार का धर्म या कर्म ज्यों का त्यों के रूप में धर्म या कर्म
35	आयथापुर्यम्, आयाथापुर्यम्	जिस किसी प्रकार के पुर या गांव उसी रूप में।
36	चातुर्वर्ण्यम्	चार वर्ण (ब्राम्हण, क्षत्रीय, वैश्य, शुद्र)
37	चातुराश्रम्यम्	चार आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास)
38	त्रैस्वर्यम्	तीन स्वर उदात्त, अनुदात्त स्वरित

39	षाड्गुण्यम्	छ गुणों का समूह
40	सैन्यम्	सेना का धर्म या कर्म
41	सान्निध्यम्	समीपता निकटता
42	सामीप्यम्	व्यवधान रहित सन्निधि
43	औपम्यम्	समता सादृश्य, बराबरी
44	त्रैलोक्यम्	तीनों लोकों मे होने वाले धर्म और कर्म
45	सर्ववेदः, सार्ववेद्यः	सभी वेदों में प्रतिपादित धर्म और कर्म
46	चतुर्वेदः, चातुर्वेद्यः	चारों वेदों में प्रतिपादित धर्म ओर कर्म
47	स्तेयम्	चौर कर्म या चौर्यत्व
48	सख्यम्	मित्रत्व या मित्रता।
49	दूत्यम्	दूत का कर्म, या कर्त्तव्य
50	वणिज्यम्, वाणिज्यम्	व्यापारत्व
51	कापेयम्	वानरत्व
52	ज्ञातेयम्	बन्धुता
53	सेनापत्यम्	सेनापति का कर्म या धर्म
54	पौरोहित्यम्	पुरोहित का धर्म या कर्म अर्थात पुरोहिती।
55	राज्यम्	राजा का कर्म या धर्म
56	आश्वम्	घोड़ा का धर्म या स्वभाव
57	औष्ट्रम्	ऊँट का कर्म या धर्म
58	कौमारम्	कुमारत्व, बालकपन
59	कैशोरम्	बालकपन
60	औद्गात्रम्	यज्ञ में सामगान करने वाले का धर्म या कर्म।
61	द्वैहायनम्	दो वर्षीय
62	त्रैहायनम्	तीन वर्षीय
63	यौवनम्	युवावस्था
64	स्थाविरम्	वृद्धत्व या वृद्धावस्था
65	श्रौत्रम्	वैदिकत्व
66	कौशल्यम्, कौशलम्	कुशलता प्रवीणता
67	शौचम्	शुचिता पवित्रता, शुद्धता
68	मौनम्	मुनि कर्म या धर्म
69	रामणीयकम्	मनोहरता, रमणीयता।
70	अभिधानीयकम्	कोशकार के द्वारा करणीय कर्म
71	साहाय्यम, साहायकम्	सहयोगी।
72	शैष्योपाध्यापिका	शिष्य (छात्र) उपाध्याय
73	मानोज्ञकम्	मनोज्ञता या मनोहरता या मन को अच्छा लगने वाला।
74	अच्छवाकीयम्	सामयाग का ऋत्विक का धर्म या कर्म।
75	मित्रावरुणीयम्	मित्र और वरुण का धर्म या कर्म
76	ब्रह्मत्वम्–ब्रह्मता	होत्रीयत्व

●

अथ तद्धिते पाञ्चमिक प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	मौदगीनम्	मूंग का खेत
2	ब्रैहेयकम्	धान का खेत
3	शालैयकम्	शाली धान का खेत
4	यव्यम्	यव का खेत
5	यवक्यम	यव का खेत
6	षष्टिकम्	षष्टिक या साठी धान का खेत
7	तिल्यम्, तैलीनम्	तिल का खेत
8	माष्यम्, माषीणम्	ऊर्द का खेत
9	उम्यम्, औमीनम्	उमा नामक धान्य का खेत
10	भङ्गयम्, भाङ्गीनम्	भङ्ग नामक धान्य का खेत
11	अणव्यम्, आणवीनम्	अणु नामक धान्य का खेत
12	सर्वचर्मीण:, सार्वचर्मीण:	सभी चर्म से किया गया।
13	यथामुखीन:	मुख के सदृश प्रतिबिम्ब का अवलोकन करना या देखना।
14	सम्मुखीन:	सभी के मुख का अवलोकन करना या देखना।
15	सर्वपथीन:	सभी रास्तों को व्याप्त करता है या चारों तरफ से घेरता है डाकू राहगीर।
16	सर्वाङ्गीण:	सम्पूर्णता व्याप्त या परिपूर्ण
17	सर्वकर्मीण:	सभी कर्मों से घिरा हुआ।
19	सर्वपत्रीण:	सभी पत्र से घिरा हुआ या व्याप्त।
20.	सर्वपात्रीण:	सभी पत्र से घिरा हुआ या व्याप्त।
21.	आप्रपदीन:	पैर के अग्रभाग, पायजामा, फुलपैन्ट, शिरवानी।
22.	अनुपदीनम्	जूता
23	सर्वान्नीनो भिक्षु	सभी प्रकार के अनाज को खाने वाला, अर्थात भिक्षुक भीख मांगने वाला।
24	अयानयीन:	स्थल विशेष को ले जाने वाला शार
25.	परोवरीण:	पर का और आदि का अनुभव करने वाला।
26.	परम्परीण:	पर का और परत का अनुभव करने वाला।
27.	पुत्रपौत्रीण:	पुत्र और नाती का अनुभव करने वाला पितामह
28.	अवारपारीण:	इस पार और उसपार को जाने वाला।
29.	पारावारीण:	उस पार और इस पार को जाने वाला।
30.	अवारीण:	उस पार को जाने वाला।
31.	अत्यन्तीन:	बार बार जाने वाला या अधिक जाने वाला।
32.	समांसमीना गौ:	प्रतिवर्ष प्रसव (बिआने) वाली गाय।
33.	अद्यश्वीना वडवा	आज और कल में प्रसवा हाने वाली घोड़ी (आसन्न प्रसावा) यथा बिआने वाली घोड़ी।
34.	आगवीन:	प्रातःकाल गायों को चराने हेतु स्वामी के यहां से लेकर सायं तक गौ को चराकर पुनः स्वामी का अर्पित करता है।
35.	अनुवगीन:	गौ की पिछे पीछे चलने वाला गोपाल
36	अध्वन्य:, अध्वनीन:	रास्ते पर खूब चलता है। अधिक पैदल चलने वाला।

37.	अभ्यमित्रीयः, अभिमित्रयः अभ्यमित्रीणः	शत्रु के अभिमुख सम्मुख होकर चलता है।
38.	गौष्ठीनों देशः	गाय अथवा बैल के रहने वाला स्थान या देश
39.	आश्वीनोऽध्वा	घोड़े का एक दिन का रास्ता
40.	शालीनः	प्रगल्भता के अभाव से शाला में प्रवेश करने के योग्य है।
41.	कौपीनम्	कूप में गिरने का साधन न करने योग्य काम अर्थात पाप
42.	व्रातीनः	भार वाहन इत्यादि के द्वारा शारीरिक कष्ट पूर्वक करने वाले अनेक जाति या अप्राप्त जीवन धन वाले अनेक जातियों का समूह व्रात कहलाता है। व्रात शारीरिक श्रम से जीविका को चलता है। वह व्रातीन होता है।
43	साप्तपदीनम्	सप्तपद के द्वारा प्राप्त।
44	हेयङ्वीनम्	नवनीत, नैनु
45	पीलुकुणः	पीलु नामक वृक्ष का पका हुआ फल
46	कर्णजाहम्	कान की जड़ा या कान की लोरी
47	पक्षतिः	पंख की जड़ या माह के पक्ष की पहली तिथि
48	विद्याचुञ्चुः, विद्याचणः	विद्या से धनी, श्रेष्ठ, विद्वान्
49	विना	अलावा
50	नाना	अलग
51	विस्तृतम्, विशङ्कटम्	विशाल अधिक लम्बाई, अधिक चौड़ाई और अधिक मोटाई
52	सङ्कटम्	धनीभूत संकीर्ण जुड़ा हुआ।
53.	प्रकटम्	विशेषरूप से ज्ञात, प्रकाशित, दिखलाई पड़ना।
54.	उत्कटम्	उन्नत, तीखा, अधिक
55.	विकटम्	भददा विशाल भयंकर दुर्गम कठिन
56.	अलावूकटम्	लम्बी लौकी कसा हुआ चूरा।
57	तिलकटम्	तिल का पिसा हुआ चूर्ण
58.	उमाकटम	हल्दी का पिसा हुआ चूर्ण
59.	भङ्गाकटम्	भंग का चूर्ण
60.	गोगोष्ठम्	गोठा (गायों का स्थान)
61.	अविकटम्	भेड़ो का समूह
62.	अविपटम्	भेड़ों की अधिकता
63.	वृषगोयुगम्	दो बैलों की जोड़ी
64.	अश्वषड्गवम	छ घोड़े।
65.	तिलतैलम्	तिल की स्नेहता (तिल का तेल)
66.	सर्षपतैलम्	सरसों की स्नेहता (सरसों का तेल)
67.	इक्षुशाकटम्	गन्ना का खेत, ईख का खेत
68.	इक्षुशाकिनम्	ईख का खेत।
69.	अवकुटारः अबाचीनः	विरुपता, विकृतरूप
	अवकटम्	विरूपता, विकृत रूप
70	अवटीटम्, अवटनाटम्, अवभ्रटम	नीचे की ओर झुकी चिपटी नाक वाली स्त्री।
71.	अवटीटा	जिस स्त्री की नासिका नीचे की ओर झुकी हो।
72.	अवटीटः	जिस पुरुष की नासिका नीचे की ओर झुकी हो या चिपटी नाक वाला पुरुष।
73.	निविडम्, निविरीसम्	नीचे की ओर झुकी नासिका।

74.	चिकिनम्, चिपिटम्, चिक्कम्	चिपटी नाक या झुकी नाक
75.	चिल्लः पिल्लः, चुल्लः	रोग युक्त जल गिराने वाली आंख
76.	उपत्यका	पर्वत के समीप की भूमि, पर्वत की तलहटी
77.	अधित्यका	पर्वत की ऊँची भूमि, पहाड़ी भूमि
78.	कर्मठः पुरूषः	कर्म की चेष्टा करने वाला पुरूष।
79.	तारकितं नमः	ताराओं युक्त आकाश या आकाश में तारे निकले हुए हैं।
80.	उरूद्वयसम्, उरूदध्नम् उरूमात्रम्	जंघा है परिमाण जिसका।
81.	शममात्रम् शमः मात्रम्	अन्तःकरण है प्रमाण जिसका।
82.	प्रस्थमात्रम्	प्रस्थ (किलो) है परिमाण जिसका।
83.	पंचमात्रम्	पांच संख्या है प्रमाण जिसका।
84.	तावदद्वयसम्	उस अवधि तक प्रमाण।
85.	तावन्मात्रम्	उस परिमाण तक।
86.	पौरूषम पुरूद्वयसम्	पुरूष की लम्बाई गहराई प्रमाण है जिसका।
87.	हास्तिनम्, हस्तिद्वयसम्	हाथ है प्रमाण जिसका। हाथी की लम्बाई या ऊँचाई है प्रमाण जिसका
88.	यावान्	इतना परिमाण हो जिसका
89.	तावान्	उतना परिमाण हो जिसका
90.	एतावान्	इतना परिमाण हो जिसका।
91.	कियान्	कितना परिमाण हो जिसका।
92.	इयान्	इतना परिमाण हो जिसका।
93.	कति, कियन्तः	कितना परिमाण हो जिसका।
94.	पञ्चतयं दारू	पांच टुकड़ों वाली लकड़ी
95.	द्वयम्, द्वितयम्	दो अवयव वाला
96.	त्रयम्, त्रितयम्	तीन अवयव वाला।
97.	उभयम्	दो अवयव वाला।

●

अथ तद्धिते मत्वर्थीय प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	एकादशम्	ग्यारह संख्या वाला
2	त्रिशंशतम्	एक सौ तीस संख्यावाला
3	विशंशतम्	एक सौ बीस संख्या वाला
4	द्विमयमुदश्विद्यवानाम	यव के दुगुने भाग मद्वा
5	एकादशः	ग्यारह संख्या को पूरा करने वाला।
6	पञ्चमः	पांच संख्या को पूरा करने वाला।
7	षष्ठः	छः संख्या को पूरा करने वाला।
8	कतिथः	कितनी संख्या को पूरा करने वाला।
9	कतिपयथः	कतिपय (कुछ) संख्या को पूरा करने वाला।
10	चतुर्थः	चार संख्या को पूरा करने वाला।
11	तुरीयः तुर्यः	चार संख्या को पूरा करने वाला।
12	बहुतिथः	बहुत संख्या को पूरा करने वाला।
13	पूगतिथः	सोपारी को पूरा करने वाला।
14	गणतिथः	समूह या समुदाय को पूरा करने वाला।
15	सङ्घतिथः	समुदाय को पूरा करने वाला।
16	यावतिथः	जितने को पूरा करने वाला।
17	द्वितीयः	दो संख्या को पूरा करने वाला। (दूसरा)
18	तृतीयः	तीन संख्या को पूरा करने वाला (तीसरी)
19	विशंतितमः विंशः	बीस संख्या को पूरा करने वाला।
20	एकविशंतितमः एकविंशः	इक्कीस संख्या को पूरा करने वाला।
21	शततमः	सौ संख्या को पूरा करने वाला।
22	एकशततमः	एक सौ संख्या को पूरा करने वाला।
23	मासतमः	महीने को पूरा करने वाला।
24	अर्धमासतमः	आधा माह को पूरा करने वाला।
25	संवत्सरतमः	सम्वत् को पूरा करने वाला।
26	षष्टितमः	साठ संख्या को पूरा करने वाला।
27	एकषष्टः एकषष्टिमः	एकसठ संख्या को पूरा करने वाला।
28.	अच्छावाकीयम्	अच्छावाक शब्द वाला सूक्त
29.	वारवन्तीयम्	वारवन्त वाला सामवेद
30.	गर्दभाण्डः, गर्दभाण्डीयः	गर्दभाण्ड से संयुक्त अध्याय या अनुवादक
31.	वैमुक्तः	विमुक्त शब्द वाला अध्याय या अनुवादक
32.	गोषदकः	गोषद शब्द वाला अध्याय या अनुवादक
33.	इषेत्वकः	इषेत्वा शब्द युक्त अध्याय या अनुवादक
34.	पथकः	रास्ते में दक्ष या चतुर वाला
35.	आकर्षकः	खींचने वाला या दूसरे का मन या ध्यान अपनी ओर खींचने वाला।
36.	धनकः	धन में इच्छा वाला।

37.	हिरण्यकः	हिरण्य सोने में इच्छा वाला।
38.	केशकः	वाल में उत्साही
39.	औदरिकः	क्षुधा से पीड़ित उदर (पेट) में उत्सुकता
40.	उदरकः	पेट को सहलाने वाला।
41.	सस्यकः, साधुः	गुण से सम्बन्धित साधु अर्थात गुण से सज्जन।
42.	अशंको दायादः	हिस्सेदार या भाग को लेने वाला।
43.	तन्त्रकः पटः	बीनने वाली कपडे की मशीन से शीघ्र तैयार किया गया वस्त्र
44.	ब्राह्मणकः	जिस देश में शस्त्र से अपनी जीविका चलाने वाला ब्राह्मण।
45	उष्णिका	मांड (चावल या यव का बना हुआ मांड़)
46.	शीतकोऽलसः	मन्द कार्य करने वाला आलसी
47	उष्णकः	शीघ्र कार्य करने वाला।
48	अधिकम्	किसी स्थान पर बैठा हुआ।
49	अनुकः	पश्चात् में इच्छा करने वाला।
50	अभिकः अभीकः	हर प्रकार की इच्छा करने वाला।
51.	पार्श्वकः	तिर्थकारव्य माधूर्य से इच्छा करने वाला।
52.	आयः शूलिकः	साहसिक
53.	दाण्डाजिनिकः	दम्भ से जो इच्छा करता है।
54.	द्वितीयकं द्विकं ग्रहणं देवदत्तस्य	देवदत्त के द्वितीय का ग्रहण
55.	षट्को देवदत्तः	छठवें से ग्रहण करता है।
56.	पञ्चकः	पांचवे से ग्रहण करता है।
57.	देवदत्तकः	इन लोगों या इन लोगों में देवदत्त मुख्य है।
58.	त्वत्कः	इन लोगों का या इन लोगों में तुम मुख्य
59.	मत्कः	इन लोगों का या इन लोगों में मैं मुख्य
60.	श्रृङ्खलकः करभः	बेड़ी से बंधा हुआ ऊँट का बच्चा।
61.	उत्कः	प्रफुल्लित मन वाला।
62.	द्वितीयको ज्वरः	दूसरे दिन में होने वाला ज्वर
63.	प्रयोजनं कारणं रोगस्य फलंवा	रोग का कारण या फल
64.	विषपुष्पकः	विष फूलों से पैदा हुआ है।
65.	उष्णकः	उष्ण कार्य वाला
66.	द्वितीयोदिवसोऽस्य	द्वितीय दिन वाला।
67.	गुडापूपिका	गुड और मालपूआ वाली पूर्णिमा।
68	वटकिनी	वट वाली पूर्णिमा
69	कौल्भाषी	यव का बना हुआ कुलथी वाली पूर्णिमा
70	श्रोत्रियः	वैदिक (वेद पढ़ने वाला)
71	श्राद्धी श्राद्धिकः	श्राद्धान्त भोजन करने वाला
72	पूर्वी	जिन्होने पहले भोजन कर लिया या जल पी लिया।
73	इष्टी	जिसके द्वारा सिद्ध कर लिया गया है।
74	अधीती	जिसके द्वारा पढ लिया गया है।

75	गवामनुपदी	गायों के पद चिन्ह के बाद खोजने वाला।
76	साक्षी	साक्षात् द्रष्टा–अपने ही सामने अपने ही आंखों से देखने वाला।
77.	शरीरान्ते चिकित्स्यः	दूसरे के शरीर में चिकित्सा के योग्य या जिसकी चिकित्सा होनी है।
78	इन्द्रियम्	चक्षु इत्यादि के द्वारा कर्म का अनुमापक,चक्षु इत्यादि के द्वारा दृष्ट, चक्षु इत्यादि के द्वारा सेवित, चक्षु इत्यादि के द्वारा सृजित या चक्षु इत्यादि के द्वारा दिया गया।
79	गोमान्	जिसमें गायें हैं या गायों वाला।
80.	रसवान्	रस वाला
81	रूपवान्	रूपवाला
82	वर्णवान्	वर्णवाला
83	गन्धवान्	गन्ध वाला
84	स्पर्शवान्	स्पर्श वाला
85	शब्दवान्	शब्द वाला
86	स्नेहवान्	स्नेह वाला
87	भाववान्	पदार्थ वाला या क्रिया वाला
88	गुणवान्	गुणवान
89	स्ववान्	आत्मीय वाला, धन वाला, जातिवाला, बन्धुभाई वाला
90	विदुष्मान्	पण्डितवाला
91	शुक्लःपटः	शुक्ल वाला वस्त्र। शुक्ल वस्त्र
92	कृष्णः	कृष्ण वस्त्र या काला वस्त्र
93	किंवान्	क्यों वाला
94	ज्ञानवान्	ज्ञान वाला
95	विद्यावान्	विद्यावाला
96	लक्ष्मीवान्	लक्ष्मी (धन, ऐश्वर्य) वाला
97	यशस्वान्	यशवाला (कीर्तिवाला)
98	भास्वान्	तेज वाला
99	यवमान्	यव वाला
100	भूमिमान्	जमीन वाला
101	विद्युत्वान्	बिजली वाला
102	अहीवती	अहीवती नाम की नगरी या नदी
103	मुनीवती	मुनिवती नाम की नदी या नगरी
104	आसन्दीवान्	आसन्दी नाम का गांव
105	आसनवान्	आसन वाला
106	अष्ठीवान्	अष्ठीवान नामक गांव या व्यक्ति
107	अस्थिवान्	हड्डी वाला मनुष्य इत्यादि
108	चक्रीवान्	चक्रीवान नाम का राजा
109	चक्रवान्	चक्का वालों
110	कक्षीवान्	कक्षीवान नाम के ऋषि।
111	कक्ष्यावान्	कटि बंध वाला घोड़े इत्यादि की पेटी वाला हौडा वाला।
112	रूमण्वान्	रूमण्यवान नाम का पर्वत
113	लवणवान्	नमकीन समुद्र या खारा समुद्र

114	चर्मण्वती	चर्मण्वती नाम की नदी
115	चर्मवती	चर्म वाला कोई
116	उदन्वान्	उदन्वान् नाम का समुद्र या ऋषि
117	राजन्वान्	राजन्वान नाम का सौराज्य देश
118	राजन्वती भूः	राजन्वती नाम की पृथ्वी
119	राजवान्	राजा वाला देश
120	चूडालः चूडावान्	चोटी वाला
121	शिखवान्	शिखावाला दीपक
122	हस्तवान्	हाथ वाला
123	मेधावान्	बुद्धि वाला
124	सिध्मलः	सिध्यवान् = खुजली वाला या कोढ वाला
125	गडुलः	गडुमान् = कुबड़ा वाला या बेडौल वाला
126	मणिलः	मणिमान् = मणिरत्न जड़ित आभूषण वाला
127	विजयलः	विजयवान् = जीत वाला या विजय वाला
128	निष्पावलः	निष्पावान् = फटकने वाला
129	पांसुलः	पांसुमान् = धूल वाला गर्द वाला
130	हनुलः	हनुमान् = लम्बी ढुड्डी वाला या एक प्रकार का विशेष बन्दर
131	पाष्णिलः	पाष्णिवान् = ऐडी वाला या सेना या पिछड़ा वाला
132	बातूलः	गठिया रोग से पीड़ित वाला
133	दन्तूलः	बाहर की ओर निकला दन्त वाला
134	वालूलः	वजरी वाला चूर्ण वाला
135	ललाटूलः	उन्नत और सुन्दर ललाट वाला
136	वत्सलः	वत्स या पुत्र की कामना करने वाला।
137	अंसलः	कन्धा वाला या स्फलट वाला या कन्धे की हड्डी
138	फेनिलः फेनलः, फेनवान्	साबुन या सर्फ
139	लोभशः, लोभवान्	रोम वाला पुरूष
140	रोमशः, रोमवान्	रोम वाला
141	पामनः	एक प्रकार का चर्म रोग या खुजली वाला।
142	अङ्गना	कल्याण वाला अंग (शरीरावयव)
143	लक्ष्मणः	धन वाला ऐश्वर्य वाला
144	विषुणः	चारो तरफ जाने वाला या धूर्तस्वामी वाला।
145	पिच्छिलः, पिच्छवान्	चिपचिपा वाला या फिसलने वाला
146	उरसिलः, उरस्वान्	हृदय वाला अर्थात दयावान हृदय वाला।
147	प्राज्ञः	अधिक ज्ञानवान, अधिक जानकारी वाला पुरूष या व्याकरण
148	प्राज्ञा	तीव्र बुद्धिवाली
149	श्राद्धः	श्रद्धा वाला
150.	आर्चः	पूजा वाला
151	वार्तः	जीविका वाला या नौकरी वाला
152	तपस्वी	तप करने वाला

153	सहस्त्री	एक हजार वाला
154	तापसः	तप करने वाला
155	साहस्रः	एक हजार वाला
156	ज्योत्सना	प्रकाश वाला किरण वाला
157	तामिस्रः	अन्धकार वाला या अन्धकार युक्त
158	सैकतोघटः	बालू से भरा घड़ा।
159	शार्करः	चीनी से भरा घड़ा।
160	सिकता, सिकतिलः, सैकतः, सिकतावान्	बालू वाला प्रदेश
161	शर्कराः, शरकिलः, शार्करः शर्करावान	चीनी का क्षेत्र
162	दन्तुरः	उन्नत दांत वाला
163	ऊषरः	ऊषर खेत
164	सुषिरः	बिल वाला
165	मुष्करः	अण्डावाला
166	मधुरः	मधुर वाला
167	खरः	गदहा
168	मुखरः	बोलने वाला
169	कुञ्जरः	हाथी
170	नगरम्, नगरी	शहर (जाति विशेष वाची) या पुरी
171.	पांसुरः	धूल गर्दा चूरा
172	पाण्डुरः	शुक्ल वर्ण
173	कच्छुरः	खौराराग (कुत्तों को विशेष प्रकार का रोग)
174	द्युमः	दिवलोक
175	द्रुमः	वृक्ष, पेंड़
176.	केशवः केशी, केशिकः केशवान	बाल वाला
177.	मणिवः	मणि वाला नाग
178	हिरण्यवः	खजाना (विशेष कोष) जिस खजाने में केवल स्वर्ण ही रखे जाते हों।
179	अर्णवः	समुद्र
180.	गाण्डिवम्, गाण्डीवम्	अर्जुन के धनुष का नाम
181.	अजगवम्	शिव का धनुष, पिनाक
182.	काण्डीरः	धनुर्धधारी
183	आण्डीरः	बड़ा अण्डकोश वाला या सांड़
184.	रजस्वला	रजोधर्म वाली स्त्री
185.	कृषीबलः	किसान
186	आसुतीवलः	अर्क वाला या काढ़ा वाला।
187	परिषद्बल	सभावाला
188	पर्षद्बलः	सभा का बल
189	भातृबलः	भाई वाला

190	पुत्रवान्	पुत्र वाला
191	शत्रुवलः	शत्रु वाला
192	दन्तावलः	हस्ती
193	शिखाबलः	केकी मयूर
194	ज्योत्सना	चन्द्रिका (चांदनी रात)
195	तमिस्रा, तमिस्रम्	काली रात, अन्धकार वन
196	श्रृङ्गिणः	श्रृङ्ग वाला
197	ऊर्जस्वी, ऊर्जस्वलः	ऊर्जा वाला या शक्तिमान
198	गोमी	गौ वाला
199	मलिनः मलीमसः	गन्दी बस्ती
200	दण्डी दण्डिकः	दण्ड धारण करने वाला।
201	ब्रीही ब्रीहिकः	धान वाला।
202	तुन्दिलः, तुन्दी, तुन्दिकः, तुन्दवान्	तोंद वाला पुरूष
203	उदरिलः उदरी, उदरिकः, उदरवान्	पेट वाला
204	पिचण्डिलः, पिचण्डी, पिचण्डिक पिचण्डवान्–	पेटु
205	यविलः, यवी, यविकः, यवमान्–	यव अनाज वाला
206	ब्रीहिलः, ब्रीहिकः, ब्रीही, ब्रीहिवान्–	धान वाला
207	कर्णिलः, कर्णी, कर्णिकः, कर्णवान्–	विशेष बड़ा कान वाला
208	ऐकशतिकः	एक सौ वाला
209	ऐकसहस्त्रिकः	एक हजार वाला
210	गौशतिकः	सौ गौ वाला
211	गौसहस्त्रिकः	हजार गौ वाला
212	नैष्कशतिकः	सौ निष्क वाला
213	नैष्कसहस्त्रिकः	हजार निष्क वाला
214	रूप्यः कार्षापणः	पैसा
215	रूप्यौ गौः	प्रशस्त रूपवान गौ
216	हिम्याः पर्वताः	वर्फीली पर्वत
217	गुण्याः ब्राम्हणाः	गुणी ब्राम्हण
219	यशस्वी, यशस्वान्	यश या कीर्तिवाला
220	मायावी, मायी, मायिकः	ममता या माया वाला
221	स्रग्वी	माली
222	आमयावी	मन्दाग्नि से पीड़ित, बीमार
223	श्रृङ्गारकः	श्रृङ्ग वाला
224	वृन्दारकः	समूह या समुदाय या भीड़ वाला

225	फलिनः	फल वाला
226	हृदयालुः हृदयी, हृदयिकः, हृदयवान्–	दयावान ह्रदयवान्
227	शीतालुः	शीत प्रकृति वाला नहीं
228	उष्णालुः	गर्म प्रकृति वाला नहीं
229	तृप्रालुः	पुरोडास को न सहने वाला या दुःख को न सहने वाला।
230	हिमेलुः	वर्फ को न सहने वाला।
231	बलूलः	शक्ति या बल को न बर्दाश्त करने वाला।
232	वातूलः	वायु को न सहने वाला या वायु समूह
233	पर्वतः	पर्व, गांठ, त्योहार वाला या पहाड़
234	मरूत्तः	वायु वाला
235	ऊर्णायुः	कम्बल, ऊन की शाल या ऊन का स्वीटर
236	वाग्मी	वाणी वाला (सम्यक वाणी बोलने वाला)
237	वाचाटः, वाचालः	अधिक बोलने वाला, अपशब्द कहने वाला या अधिक बड़बोल वाला।
238	स्वामी	ऐश्वर्य वाला
239	अर्शसः	गुदा में होने वाला विशेष रोग
240	कटकवलयिनी	कंकण और वलय आभूषण वाला।
241	शंखनूपुरिणी	शंख और नूपुर आभूषण वाला।
242	कुष्ठी	कुष्ठ (कोढ़) रोग वाला।
243	किलासी	विशेष कोढ रोग
244	ककुदावर्ती	ग्रीवा के नीचे पीठ भाग पर बैल के डील के समान डील वाला।
245	पुष्पफलवान् घटः	फूल और फल से भरा हुआ घट
246	पाणिपादवती	हाथ और पैर वाली
247	काकतालुनकी	कौवा तालु के समान तालु वाला
248	चित्रकललाटिकावती	चित्रक और ललाटिका आभूषण वाली
249	वातकी	वात रोग वाला
250	अतिसारकी	अतिसार (पेचिस) रोग वाला
251	वातवती गुहा	वायु वाली गुहा
252	पिशाचकी	कुबेर (धन के स्वामी)
253	पञ्चम्उष्टः	पांच माह का संवत्सर वाला ऊंट
254	सुखी	सुख वाला
255	दुःखी	दुःख वाला
256	माली	माला वाला
257	ब्राह्मण धर्मी	ब्राह्मण धर्म वाला
258	ब्राह्मण शीली	ब्राह्मण स्वभाव वाला
259	ब्राह्मण वर्णी	ब्राह्मण वर्ण वाला
260	हस्ती	हाथ वाला पुरूष
261	वर्णी	वर्ण वाला (ब्रह्मचारी)
262	पुष्करिणी– पद्मिनी	हथिनी, कमल, तालाब, जलाशय, कमल पौधा
263	पटिलनी	कमल वाला देश

264	बाहुबली	भुजा या हाथ के बल वाला या हनुमान
265	ऊरीवली	जंघा का बली (दुर्योधन)
266	सर्वधनी	प्रत्येक वस्तु के धनी या सभी में धनी
267	अर्थी	अर्थ काम (अर्थ को चाहने वाला)
268	अर्थवान्	शब्द
269	धान्यार्थी	अनाज को चाहने वाला
270	हिरण्यार्थी	स्वर्ण को चाहने वाला
271	बलवान् बली	बल वाला (शक्ति वाला)
272	उत्साहवान् उत्साही	उत्सुकता वाला
273	प्रथिमिनीः	स्थूल वाला, चौड़ाई वाला
274	दामिनी	बिजली
275	होमिनी	हवन करने वाला
276	सोमिनी	सोम याग करने वाला
277	सोमवान	सोमयुक्त या चन्द्रयुक्त
278	कँव्वः, कम्भः, कँय्यु, कन्तिः, कन्तुः, कन्तः, कँय्यः–	उदक जल
279	शँव्वः, शम्भः, शँय्युः, शन्तिः, शन्तुः, शन्तः, शँय्यः–	सुखी
280	तुन्दिभः	बड़ी हुई नाभि वाला
281	वलिभः	पूजा के अवसर पर देवताओं को चढ़ाई जाने वाली वस्तु उददधि या पशु या सिकुड़नहार।
282	अहंयुः, अहङ्कारवान्	अहंकार वाला
283	शुभंयुः	कल्याण वाला
284	वटिभः	वेष्टन वाला।

अथ तद्धिते प्राग्दिशीय प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	कुतः	कहां से
2	यतः	जहां से
3	ततः	वहां से
4	अतः	यहां से
5	इतः	यहां से
6	अमुतः	यहां
7	बहुतः	बहुतों से
8	द्वाभ्याम्	दो से
9	परितः सर्वतः	चारो तरफ से
10	अभितः, उभयतः	दोनो तरफ से
11	कुत्र	कहां पर
12	यत्र	यहां पर
13	तत्र	वहां पर
14	बहुत्र	बहुतों में
15	इह	यहां पर
16	क्व, कुत्र	कहां पर
17	कुह	कहां पर
18	अतः	इसलिए यहां से
19	सभवान्, ततोभवान्	वह आप
20	तत्र भवान्	वह आप
21	तम् भवन्तम् ततोभवन्तम्	उस आप को
22	सदा सर्वदा	सभी काल में
23	एकदा	एक समय में
24	अन्यदा	अन्य समय में
25	कदा	किस समय में
26	यदा	जिस समय में
27	तदा	उस समय में
28	अधुना	इस समय में
29	इदानीम्	इस समय में या पर
30	तदा तदानीम्	उस समय में या पर
31	कर्हि कदा	कब
32	यर्हि यदा	जब
33	तर्हि तदा	तब या इसलिए
34	एतर्हि	इस समय पर

35	सद्यः	आज या तुरन्त
36	परुत्	पूर्व वर्ष में
37	परारि	पूर्व वर्ष में
38	ऐषमः	इस वर्ष में
39	परेद्यवि	आने वाले दिन में या बाद वाले या दूसरे दिन में
40	अद्य	आज
41	पूर्वेद्युः	पूर्व दिन में
42	अन्येद्युः	दूसरे दिन में
43	उभयेद्युः	दोनो दिनों में
44	उभयद्युः	उभय दिन में
45	तथा	उस तरह से
46	यथा	जिस प्रकार से
47	इत्थम्	इस प्रकार से
48.	कथम्	कैसे

अथ तद्धिते प्रागिवीय प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	पुरः पुरस्तात्	पूर्व दिशा में, पूर्व की दिशा, पूर्व दिशा
2	अधः अधस्तात्	नीचे की तरफ
3	अवः अवस्तात्	नीचे की तरफ
4	अवस्तात, अवरस्तात	नीचे से, नीचे की ओर
5	ऐन्द्रयां वसति	इन्द्र की दिशाओं में निवास करता है।
6	पूर्वग्रामं गतः	पूर्व गांव को गया।
7	दक्षिणतः	दक्षिण से
8	उत्तरतः	उत्तर से
9	परतः परस्तात्	आगे, अपेक्षाकृत अधिक या परे या बाद
10	अवरतः अवरस्तात	नीचे नीचे से नीचे की ओर
11	प्राक्	पूर्व दिशा, पूर्व की दिशा, पूर्व दिशा
12	उदक्	उत्तर की दिशा
13	उपरि–उपरिष्टात्	ऊपर या अधिक ऊपर
14	पश्चात्	बाद
15	उत्तरात्	उत्तर से
16	अवरात्	छोटा, अपेक्षा, नीच, घटिया या कम
17	दक्षिणात्	दक्षिण दिशा से
18	उत्तरेण	उत्तर दिशा से
19	दक्षिणेन	दक्षिण दिशा से
20	दक्षिणा बसति	दक्षिण दिशा में बसता है।
21	दक्षिणाहि दक्षिणा	दक्षिण दिशा से दूर
22	उत्तराहि उत्तरा	उत्तर दिशा से दूर
23	चतुर्धा	चार प्रकार से
24	पञ्चधा	पांच प्रकार से
25	एकं राशिं पञ्चधा करू	एक राशि की पांच संख्या करो
26	ऐकध्यम् एकधा	एक प्रकार
27	द्वैधम, द्विधा	दो प्रकार
28	त्रैधम, त्रिधा	तीन प्रकार
29	पथि द्वैधानि	रास्ते में दो प्रकार
30	द्वेधा	दो प्रकार
31	त्रिधा	तीन प्रकार
32	भिषक्पाशः	निंदित वैद्य।
33	द्वितीयः	दूसरा भाग
34	तृतीयः	तीसरा भाग
35	द्वैतीयकः	दूसरा भाग
36	तार्तीयकः	तीसरा भाग
37	द्वितीया	दूसरी विधा
38	तृतीया	तीसरी विधा
39	चतुर्थः	चौथा भाग
40	पञ्चमः	पांचवा भाग

41	षाष्ठः, षष्ठः	छठां भाग
42	आष्टमः अष्टमः	आठवां भाग
43	षष्टकोभागः	छठां भाग तौल
44	अष्टमोभागः	आठवां भाग पश्वङ्ग
45	एकाकी एककः एकः	अकेलापन
46	आढ्यचरः	पूर्वधनी
47	कृष्णरूप्यः, कृष्णचरः	कृष्ण की भूतपूर्व गाय
48	शुभ्रारूप्यः, शुभ्राचरः	शुभ्रा का भूतपूर्व गाय
49	आढ्यतमः	इन सभी में यह धनी
50	लघुतमः लघिष्ठः	इन सभी में यह छोटा
51	किन्तमाम्	इन लोगों में यह कौन
52	प्राह्णेतमाम्	अतिशय पूर्वान्हकाल
53	पचतितभाम्	अति सुन्दर पाचन क्रिया करने वाली
54	उच्चैस्तभाम्	सबसे अधिक ऊंचाई का इच्छा या आशा करना।
55	उच्चैस्तमस्तरूः	सबसे ऊंचा वृक्ष
56	लघुतरः, लघीयान्	इन दो बालकों में यह छोटा
57	पटुतराः पटीयांसः	उत्तर के पूर्वीवालें से यह चालाक
58	प्रथिष्ठः प्रथीयान्	सब से बड़ा या सबसे चौड़ा
59	करिष्ठः	इन दोनों में यह अधिक कार्य करने वाला।
60	दोहीयसी	इन दोनों में यह अधिक दुह देने वाली
61	श्रेष्ठः, श्रेयान्	हम लोगों मे या हम दोनो में आप महान या बड़े हैं।
62	ज्येष्ठः	हम लोगों में या हम दोनों में आप बड़े हैं।
63	ज्यायान्	हम लोगों में आप बड़े हैं।
64	ज्यायान्	हम लोगों में या हम दोनों में आप वृद्ध हैं।
65	नेदिष्ठः नेदीयान्	इन दोनों में यह अति समीप के हैं।
66	साधिष्ठः साधीयान्	इन दोनों में यह अत्यधिक हैं।
67	स्थविष्ठः	इन दोनों में यह अति स्थूल है।
68	दविष्ठः	इन दोनों में यह अधिक दूर है।
69	यविष्ठः	इन दोनों में यह अधिक जवान है।
70	ह्रासिमा, ह्रसिष्ठः	इन दोनों में यह अधिक छोटा है।
71	क्षेपिमा, क्षेपिष्ठः	इन दोनों में यह तेज है या अति शीघ्रगामी है।
72	क्षोदिमा छोदिष्ठः	इन दोनों में यह अति छोटा है या अति नीच है या अति तुच्छ है।
73	प्रेष्ठः	इन दोनों में अति प्रिय
74	स्थेष्ठः	इन दोनों में अति स्थिर
75	स्फेष्ठः	इन दोनों में यह अति विशाल है।
76	वरिष्ठः	इन दोनों में यह अति प्रचुर या अति विस्तृत हैं
77	वंहिष्ठः	इन दोनों में यह बहुत है।
78	गरिष्ठः	इन दोनों में यह अतिभारी या अति वजन वाला है।
79	वर्षिष्ठः	इन दोनों में यह अति वृद्ध है।
80	त्रपिष्ठः	अति तृप्त करने वाला या बहुत तर्पण करने वाला।
81	दार्घिष्ठः	अतिशय लम्बा वाला
82	वृन्दिष्ठः	अत्यधिक, अतिशय बड़ा, अतिशय उत्तम।
83.	प्रेयान्	अतिशय प्रिय वाला
84	स्थेमान्	स्थिर वाला
85	स्फेयान्	—

86	वरीयान्	अतिशय श्रेष्ठ वाला
87	वहीयान्	अधिक वाला
88	गरीयान्	अतिशय भारी वाला
89	वर्षीयान्	अतिशय वृद्ध वाला
90	त्रपीयान्	अतिशय तृप्त करने वाला
91	दाघीयान्	अति लम्बा वाला
92	वृन्दीयान्	अत्यधिक या अतिशय बड़ा वाला
93	भूमा, भूयान्	अत्यधिक
94	भूयिष्ठः	अत्यधिक
95	कनिष्ठः, कनीयान्	यह सबसे छोटा इन दोनों में
96	यविष्ठः	इन दोनों में सबसे छोटा।
97	अल्पिष्ठः अल्पीयान, यवीयान्–	इन दोनों में यह बहुत छोटा।
98	स्रजिष्ठः, स्रजीयान्	अत्यन्त छोटी माला वाला
99	त्वचिष्ठः, त्वचीयान्	अत्यधिक खाल वाला
100	पटुरूपः	अतिशय प्रशंसनीय बालक
101	पचतिरूपम्	अति प्रशंसनीय पकाने वाला
102	विद्वत्कल्पः	विद्ववता में कुछ न्यूनता
103	यशस्कल्पम्	कीर्तिमान में कुछ कमी
104	यजुष्कल्पम	यर्जुवेद में कुछ कमी
105	विद्वददेश्यः विद्वेददेशीयः	विद्ववता में कुछ कमी
106	पचति कल्पम्	पचन क्रिया में कुछ न्यूनता
107	बहुपटुः पटुकल्पः	चतुराई में कुछ कमी
108	पटुजातीयः	सादृश्यवान् चतुर
109	अश्वकः	किसका पट घोड़ा
110	उच्चकैः	ऊँचा
111	नीचकैः	नीचा
112	सर्वकैः	सभी ने
113	विश्वकै	संसार ने या सभी ने
114	युवकयोः	तुम दोनों का या तुम दोनों में या तुम दोनो पर
115	आवकयोः	हम दोनों का या हम दोनों में या हम दोनो पर
116	युष्मकासु	तुम लोगों में या तुम लोगों पर
117	अस्मकासु	हम लोगों में या हम लोगों पर
118	युष्मकाभिः	तुम लोगों से
119	अस्मकाभिः	हम सभी से
120	त्वयका	तुम से
121	मयका	मेरे से
122	तूष्णीकामास्ते	वे मौन वाले हैं।
123	पचत किं	पाचन क्रिया वाली
124	तुष्णीशीलं तूष्णीकः	मौन स्वभाव वाले
125	जल्पतकि	गप्प स्वभाव वालाः
126	धकित्	–
127	हिरकुत्	–
128	अश्वकः	निंदित या खराब घोड़ा
129	शुद्रकः	शुद्रक नाम राजा या कोई साधारण पुरूष
130	राजकः	राजक नाम का कोई पुरूष
131	पुत्रकः	पुत्र पुर दया किया जाने वाला या दया के योग्य पुत्र

132	देविकः देवियः	
	देविलः, देवदत्तकः–	दया के पात्र देवदत्त
133	वायुकः	दया का वायुदत्त
134	पितृकः	अनुकम्पित पितृदत्त
135	वृहस्पतिकः	दया के पात्र वृहस्पति दत्त
136	भानुलः	अनुकम्पित भानुदत्त
137	सवित्रियः सवितृलः	दया से युक्त सविता
138	उपडः उपकः, उपियः, उपिलः,	
	उपियः, उपेन्द्रदत्तः–	दया से युक्त उपेन्द्र दत्त
139	सिंहकः	अनुकम्पिक सिंह
140	शरभकः	हाथी का बच्चा
141	रासभकः	गदहा का बच्चा
142	कहिडः– कहोडः	अनुकम्पित कहोड ऋषि
143	वाचिकः	अनुकम्पित वागाशीर्दत्त
144	षडिकः	अनुकम्पित षडङ्गुलिदत्त?
145	शेवलिकः, शेवलियः,	
	शेवलिलः	अनुकम्पित शेवलदत्त
146	व्याघ्रकः	अनुकम्पित व्याघ्रजिन नाम का मनुष्य
147	तैलकं	थोड़ा तेल
148	वृक्षकः	छोटा वृक्ष छोटा पेंड़
149	वंशकः	छोटा नामक बांस
150	वेणुकः	वेणु नामक वांस
151	कुटीरः	छोटी कुटी
152	शमीरः	छोटा शमी
153	शुण्डारः	छोटा शुण्डा
154	कुतुपः	कूप्पी
155	कासूतरी	छोटा शस्त्र विशेष कासू
156	गोणीतरी	छोटा शस्त्र विशेष गोणी
157	वत्सरः	बछड़ा का प्रथम वर्ष के बाद द्वितीय वर्ष को प्राप्त
158	उक्षतरः	बछड़ा का तृतिवास्था प्राप्त बैल
159	अश्वतरः	खच्चर
160	ऋषभतरः	बोझा ढोने वाला या भार ढोने वाला या ले जाने वाला
161	कतरो वैष्णवः कः	इन दोनों में कौन विष्णु भक्त
162	यतरः यः	इन दोनो में जो
163	ततरः सः	इन दोनों में वह
164	कतमो भवतां कठः कः	आप लोगों में से कौन कठ
165	कतरः	शाखा वाला
166	यतमः यकः	आप लोगो में से जो
167	ततमः सकः	आप लोगों में से वह
168	एकतरो मैत्रः	इन दोनों में से एक मैत्र
169	एषामेकतमः	इन लोगों मे से एक चैत्र
170	व्याकरणकः	व्याकरण से अभिमानित
171	दत्तिकः, दत्तियः	
172	दत्तिलः, दत्तकः	
173	देवदत्तः देवः	दया के पात्र देवदत्त
174	सत्याभामा, भामा, सत्या	अनुकम्पा का पात्र सत्यभामा

●

स्वार्थिक प्रकरणम्

क्र0सं0	प्रयोग	अर्थ
1.	अश्वकः	अश्व के शरीर के तुल्य मिट्टी या किसी धातु की बनी हुई प्रतिमा या मूर्ति।
2.	गवयः	गौ के शरीर के तुल्य या उसके आकार प्रकार से मिलता जुलता कोई पशु या नीलगाय।
3.	अश्वकः	घोड़े की आकृति की तरह कोई पशु विशेष।
4.	उष्ट्रकः	ऊँट के शरीर की आकृति के तुल्य कोई पशु विशेष।
5.	चञ्चा	पुआल या खर पात से बना हुआ। पुतला के सदृश मनुष्य की आकृति या गुड्डा–गुड्डी की आकृति के तुल्य मनुष्य की आकृति।
6.	वर्ध्रिका	चर्म की बनी हुई मूर्ति के तुल्य मनुष्य का रूप।
7.	वासुदेवः	कृष्ण भगवान् के शरीर के तुल्य न विक्रय के योग्य किसी धातु या मिट्टी की बनी हुई प्रतिमा या मूर्ति।
8.	शिवः	भगवान् शिव के शरीर के तुल्य न विक्रय के योग्य किसी धातु या मिट्टी की बनी हुई प्रतिमा या मूर्ति।
9.	स्कन्दः	कार्तिकेय के शरीर के तुल्य न बिकने योग्य किसी धातु या मिट्टी की बनी हुई प्रतिमा या मूर्ति।
10.	हस्तिकान्विक्रीणीते	हाथी के शरीर के तुल्य किसी धातु या मिट्टी की बनी हुई विक्रय वाली प्रतिमा या मूर्ति।
11.	देव पथः	देवताओं की रास्ता के तरह मार्ग।
12.	हंस पथः	हंस पक्षी के मार्ग की तरह मार्ग
13.	वास्तेयम्–वास्तेयी	निवास–आवास की तरह मनुष्य की बस्ती या नाभि के नीचे का भाग पेडू की तरह।
14.	शिलेयम्–शैलेयम्	शिला या पत्थर की चट्टान की तरह था चक्की की तरह
15.	शाख्यः	वृक्ष की डाली के तुल्य।
16.	मुख्यः	मुह की तरह या प्रधान
17.	जधन्यः	पुट्ठा या कुल्हा की तरह
18.	अग्र्यः	आगे की तरह या अगुआई की तरह।
19.	शरण्यः	रक्षा करने वाले की तरह या शरण देने वाले की तरह।
20.	द्रव्यम् अयं ब्राह्मणः	फल और फूल वाले वृक्ष की तरह यह ब्राह्मण
21.	कुशाग्रीया वुद्धिः	कुशा के अग्रमाग की तरह तीक्ष्ण वुद्धि।
22.	काकतालीयो देवदत्तस्य वधः	कोई कौआ ताड़वृक्ष के मूल भाग में बैठा, तबतक अकस्मात् ताड़वृक्ष का फल उसके ऊपर गिरा और वह मर गया, उसी प्रकार देवदत्त का वध हुआ अर्थात् मारा गया।
23.	अजाकृपाणीयः	बकरी के गमन तुल्यतलवार तलवार के पतन के तुल्य की पतन वाला।
24.	शार्करम्	चीनी
25.	आड्गुलिकः	अड्गुली के सदृश
26.	भारुजिकः	गीदड़ की तरह

27.	एकशालिकः	एकशालिकः– एकशाला की तरह
28.	कार्कीकः	सफेद घोड़ा की तरह
29.	लौहितिकः स्फटिकः	जपा कुसुम के सम्पर्क होने से लोहित या लाल वर्ण वाला स्फटिकमणि।
30.	लौहितध्वज्यः	लोहितवर्ण का पताका का समूह वाला व्यक्ति।
31.	कपोतपाक्यः	कबूतर पक्षियों के चूगने के लिए चूगने योग्य पदार्थ को पकाने वाला।
32.	कौञ्चायन्यः	टेड़ापन या झुका हुआ।
33.	व्राध्नान्यः	मदार के पेड़ में पाये जाने वाला।
34.	क्षौद्राक्यः क्षौद्रकी	आयुध से जीविका चलाने वाले वाहीक देश वासी को क्षौद्रक्य, तथा महिलाओं को क्षौद्रकी कहते हैं।
35.	मालव्यः	वाहीक देशवासी शास्त्र जीविओं के समूह या संध कोमालव्य् कहते हैं।
36.	मल्लाः	वाहीक देशवासी को मल्लाह कहा जाता है।
37.	सम्राट्	छोटे–छोटे राजाओं के मुख्य राजा को सम्राट् कहते हैं।
38.	वार्केण्यः	विशेष आयुधजीवियों का संघ
39.	दामनीयः	दामनि नामक विशेष आयुध से जीविका चलाने वाले को औलपीय कहते हैं।
40.	कौण्डोपरथीयः	कौण्डयरथ नामक विशेष शास्त्र से जीविका चलाने या जीवन यापन करने वाले को कौण्डोयरधीय कहते हैं।
41.	दण्डकीयः	दाण्डकि नामक विशेष शस्त्र से जीविका यापन करने वाले को दाण्डकीय कहते हैं।
42.	पार्शवः	पशूनामक– कुक्षर, कुल्हाणी तथा फरसा से जीविका को चलाने वाला व्यक्ति पार्शव कहलाता है।
43.	यौधेयः	अभिजित के लड़ को अभिजित्य कहते हैं।
44.	वैदमृत्यः	विदमृत के लड़कों को वैदमृत्य कहते हैं।
45.	शालावन्यः	शलावत् के लड़के को शालावत्य कहते हैं।
46.	शैखावत्यः	शिखावत् के लड़के को शैखावत्य कहते हैं।
47.	शामीवृत्यः	शमीवत् का लड़का शामीवत्य हुआ
48.	और्णावत्यः	ऊर्णावतः का लड़का औणावत्यः हुआ
49.	श्रीमत्यः	श्रुमत् का बालक श्रीमत्य हुआ
50.	लोहितध्वजाः	लाल या लोहित पटाका वाला
51.	कपोतपाकाः	कबूतरों के चूगने या खाने के लिए खाद्य पदार्थ बनाने वाला
52.	कौञ्चायनाः	टेड़ापन या झुका हुआ
53.	व्राह् नायनाः	मदार के वृक्ष में पाये जाने वाला।
54.	द्विपदिकाम्	दो पैरों को देने वाला
55.	द्विशतिकाम्	दो सौ रुपये को देने वाला
56.	द्विपदिकाम्	दो पैर दण्ड देने वाले को द्विपदि का कहा जाता है।
57.	द्विशतिकाम्	दो सौ रुपया देने वाला द्विशतिका होता है।
58.	द्विमोदकिकाम्	दो लड्डू देने वाला द्विमोदिका कहलाता है।
59.	चञ्चत्कः	चलनक्रिया या गतिमानक्रिया न मान होने पर भी चञ्चलक्रिया की तरह दी खाई पड़ता है।
60.	औलवीयः	औलपीनामक आयुधसे जीविका चलाने वाला

60.	वृहत्कः	विशाल विस्तृत और स्थूल न होने पर भी विशाल विस्तृत और स्थूल दिखाई पड़ना।
61.	स्थूलकः	स्थूल किस्म का था, स्थूल की तरह था, मोटापन की तरह होना।
62.	अणुकः	अणु के ढंग का होना
63.	सुरकः	शराबी या सांप
64.	छिन्नकम्	कुछ छेदावणव से भेद वाला
65.	अभिन्नकम्	कुछ अभेदा अवायन से अभेद वाला
66.	सामिकृतम्	अर्धकृतम्, अपूर्ण किया गया।
67.	वृहतिका	दुपट्टा, चोगा, उत्तरीय वस्त्र, गमछा, तौलिया।
68.	बहुतरकम्	अपेक्षाकृत असंख्य
69.	वृहतीछन्दः	वृहती नामक छन्द
70.	आषड्क्षीणो मन्त्रः	अविद्यमान या आवर्तमान छवसंख्यावाला श्रोत्रेन्द्रिय मन्त्र जिसमें पाया जाता है।
71.	आशितङ्गवीनमरण्यम्	जिस वन में चारा या घास के चरने से तृप्त होती हैं गायें।
72.	अलङ्कर्मीणः	कार्य करने में सक्षम, दक्ष और कुशल को अलङ्कर्मी कहते हैं।
73.	अलम्पुरस्त्रीणः	जो पुरुष के लिए योग्य या पर्याप्त हो
74.	ईश्वराधीनः प्राचीनतम्	ईश्वर या प्रभु के अधीन् पुराना या पुरातन
75.	प्रतीचीनम्	पाश्चात्य, परवर्ती या अनुवर्ती
76.	अर्वाचीनम्	नीचे की ओर, शिर के बल पर उतरा हुआ
77.	प्राची दिक्	पूर्व दिशा
78.	प्राचीना ब्राह्मणी	बहुत पहले की ब्राह्मणी
79.	प्राचीनतम	अग्निपुराण
80.	पितृस्थानीयः–पितृस्थानः	पितृस्थान के तुल्य स्थान को या पिता के तुल्यस्थान को पितृस्थानीय या पितृस्थान कहते हैं।
81.	गोः स्थानम्	गायों का गावों का निवास
82.	अनुगादिकः	किसी के बोलने के बाद बोलने का स्वभाव वाला
83.	वैसारिणः	तैरती रहने वाली मछली
84.	वैसारी	चलते रहने वाला देवदत्त
85.	पंचकृत्वोभुङ्क्ते	पाँच बार खाता है
86.	भूरिवारान् भुङ्क्ते	बहुत बार या अनेक बार खाता है।
87.	द्विभुङ्क्ते	दो बार खाता है
88.	त्रिः	तीन बार
89.	चतुः	चार बार
90.	सकृदभुङ्क्ते	एक बार खाता है
91.	बहुधाबहुकृत्वोवादिवसस्य भुङ्क्ते	दिन के या दिन में अनेक बार खाता है
92.	बहुकृत्योमासस्य भुङ्क्ते	महीने के या महीने में अनेक बार खाता है
93.	अन्नमयम्	प्रचुर मात्रा में मालपूआ
94.	यवागूमयी	प्रचुर मात्रा में हलुआ

95.	अन्न भयो यज्ञः	पूय की अधिकतावाला त्यौहार
96.	अपूपमयं पर्व	अपूपया मालपूआ की अधिकता वाला त्यौहार
96.	मौदिकम–मोदमयम्	लड्डू का धिक या लड्डू की प्रचुरता
97.	शाष्कुलिकम्	शष्कुलिकयम्, शष्कुलिया पूड़ी की अधिकता या पूड़ी का प्राचुर्य
98.	मौदिकोकोयज्ञः	मोदकमयः, मोदकीय यज्ञ पर मोदक प्राचर्ण यज्ञ
99.	आनन्त्यम्	नाश का अभाव
100.	आवसथ्यम्	गृही या घरवाला
101.	ऐतिह्यम्	परम्परा प्राप्त शिक्षा, उपाख्यानात्मक वर्णन या परम्परा के अनुरूप
102.	भैषज्यम्	औषद, दवा
103.	अग्निदेवत्यम्	यह हवि अग्नि देवता के लिए
104.	पितृदेवत्यम्	यह हवि पितृदेवों के लिए है।
105.	पाद्यम्	पैर धोने के लिए जल
106.	अर्घ्यम्	मूल्यवान के लिए या पूज के लिए
107.	नूत्नम्–नूतनम्–नवीनम्	नया, ताजा, आधुनिक
108.	प्रणम् प्रत्नम्–प्रतनम् प्रीणम्	पुराना–प्राचीन
109.	भागधेयम्	हिस्सा, खण्ड–अंश
110.	रूपधेयम्	शक्ल, आकृति, आकार
111.	नामधेयम्	नाम–अभिधान
112.	आग्नीध्रम्	यज्ञ की अग्नि के जलाने का स्थान या हवन कुण्ड
113.	आग्नीघ्री	यज्ञाग्नि को जलाने वाला हविष
114.	आतिथ्यम्	अतिथि के लिए या आगन्तुक के लिए
115.	देवता	देव
116.	अविकः	भेड़
117.	यावकः	जौ का भात या जौ का बना हुआ खाद्य पदार्थ, लाख या लाल रंग का महावर
118.	मणिकः	जलकलश, रत्न या रत्नजड़ित आभूषण
119.	लोहितकः कोपेन	क्रोध करने से लालपन
120.	लोहितिका लोहिनिका	कुपित महिलाओं का मुख या चेहरा लालपन हो जाता है
121.	शाटी	लाश्नादि द्वारा लाल रंग में रंगी गई साड़ी या धोती।
122.	कालकं मुखम्	लज्जा, ईर्ष्या औ डाह से कालापन मुख
123.	कालकः पटः	काले रंग का वस्त्र या कपड़ा
124.	कालिका शाटी	काली रंग की साड़ी या धोती
125.	वैनयिकः	नम्रता
126.	सामयिकः	समयानुसार या समय की वस्तु
127.	औपयिकः	उपाय, तरकीब या युक्ति
128.	वाचिकम्	सन्देश वाणी
129.	कार्मणम्	दूतवाक्य को सुनकर उसी प्रकार की कर्मता
130.	औषधं पिबति	शुण्डी मरीचादि चूर्ण या बुकनी को मिलाकर पीता है या खाता है
131.	औषधय क्षेत्र रूढ़ा	खेत में औषधियाँ हैं उगी हुई या जमी हुई हैं।

132.	प्राज्ञः	बुद्धिमान्, मेधावी, विद्वान्
133.	प्राज्ञी	बुद्धिमती, मेधाविनी, विदुषमती
134.	दैवतः	देवता
135.	वान्धवः	भाई–बन्धू
136.	मृत्तिका	मिट्टी या मृदा
137.	मृत्सा–मृत्सना	प्रशस्त मिट्टी श्रेष्ठ मिट्टी या अच्छी मिट्टी
138.	बहुशः	अत्यन्त देता है, या बहुतायत से देता है
139.	अल्पशः	कम देता है या थोड़ा देता है
140.	बहूनि ददाति	भय इत्यादि के कारण अधिक देता है
141.	अल्पंददाति	श्रेय या कल्याण के प्रयोजन से कम या थोड़ा देता है। अभ्युदय को निमित्त करके अधिक देना मंगलकारक होता है। इसके विपरीत दान करना अमंगलकारक होता है एवं अनिष्ट इत्यादि की दृष्टि से कम दान करना मंगलकारक होता है और इसके विपरीत दान करना अमंगलकारक होता है।
142.	द्विशः	दो दो करके देता है
143.	भाषशः	एकक एकक भावाविशेष परिमाण से तौल कर कोई वस्तु देता है
144.	घटं घटं ददाति	एकक घड़ा को देता है
145.	द्वौ ददाति	दो देता है
146.	द्वयोर्द्वयोः स्वामी	दो के स्वामी, दो के स्वामी या दो दो के स्वामी
147.	प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति	प्रद्युम्न जी कृष्ण जी के प्रतिनिधि
148.	आदितः	आदि में, आदि से, आदि के, आदि को, आदि के लिए, मध्य से।
149.	मध्यतः	मध्य को, मध्य से, मध्य के लिए, मध्य से, मध्य के, मध्य में
150.	पृष्ठतः	पीछे को, पीछे से, पीछे के लिए, पीछे के, पीछे से, पीछे में
151.	अन्ततः	अन्त को, अन्त से, अन्त के लिए, अन्त से, अन्त के, अन्त में।
152.	पार्श्वतः	बगल को, बगल से, बगल के लिए, बगल से, बगल में।
153.	स्वरतः	स्वर से
154.	वर्णतः	अक्षर से
155.	ग्रामतः	गाँव से
156.	स्वर्गाद् हीयते	स्वर्ग से गिरता है या स्वर्ग से पतित होता है
157.	पर्वतादवरोहति	पर्वत से उतरता है
158.	चारित्रेणातिगृह्यते	चरित्र से या चरित्र से अन्यथा दूसरे को अतिक्रमण करके अर्थात् पीछे छोड़कर
160.	व्यथते न व्यथते, वृततो न	वर्णन, इतिहास कथा, कहानी और उपाख्यान से नहीं चलता है।
162.	वृत्तेन सिप्तः, वृत्ततः क्षिप्तः	वृत्त से निन्दित
164.	देवदत्तेन क्षिप्तः	देवदत्त से क्षिपा हुआ
165.	वृत्ते न हीयते, वृत्ततोनहीयते	पेशा से चलता है
166.	वृक्षस्यशाखा	पेड़ की डाली
167.	प्रवाहिकातः कुरु	दस्त की चिकित्सा करो अर्थात् दस्त की दवा करो
168.	प्रवाहिकायाः प्रकोपनं करोति	दस्त चिड़चिड़ापन को करता है या क्रोधी बना देता है
169.	कृष्णी करोति	जो दीखने में काला नहीं या उसको वेष भूषा या पहनावा से काला कर रहा है

		अथवा जो काला वस्त्र नहीं था, उसको काले रंग में रंग कर काला कर रहा है।
170.	ब्रह्मी भवती	जो ब्रह्म नहीं था, अर्थात् जो ब्रह्मज्ञ नहीं था, वह ब्रह्म का ज्ञाता हो रहा है या जो वेदज्ञ नहीं था या ब्राह्मण नहीं था, वह वेदज्ञ या ब्राह्मण हो रहा है।
171.	देवा अर्जुनतोऽभवन्	अर्जुन के देवता हुए अर्थात् अर्जुन के पक्ष में हुए ।
172.	आदित्यः कर्णतोऽभवन्	सूर्य कर्ण के पक्ष में हुए ।
171.	गंगा स्यात्	जो नदी गंगा नहीं थी अर्थात् जिस नदी में गंगात्व नहीं था, वह नदी गंगा हो रही है या उस नदी में गंगात्व आ रहा है या हो रहा है।
172.	दोषाभूतम् अहः	बादल से आकाश आच्छन्न होने से दिन में अन्धकार होने से दिन में रात्रि का भान हो जाता है
173.	दिवाभूता रात्रिः	चन्द्रमा के प्रकाश या किरण से अथवा चाँदनी से रात्रि में दिन का भान हो रहा है, अर्थात् रात्रि दिन की तरह लग रही है।
174.	गार्गीभवति	जो गार्ग्य नहीं था वह गार्ग्य हो रहा है।
175.	शुची भवति	जो पवित्र नहीं है, वह पवित्र हो रहा है।
176.	पटू स्यात्	जो चतुर नहीं है, वह चतुर हो रहा है।
177.	अरु करोति	जो लाल वर्ण का नहीं था, उसको लालवर्ण का कर रहा है।
178.	उन्मनी स्यात्	उत्तेजित, विक्षुब्ध या संक्षुब्ध नहीं था, वह उत्तेजित विक्षुब्ध या संक्षुब्ध हो रहा है।
179.	उच्चक्षू करोति	जो ऊपर आँख नहीं करता था, जो ऊपर की ओर आंख करके नहीं देखता था, अब वह आँख ऊपर कर रहा है, या ऊपर की ओर आँख करके देख रहा है।
180.	उच्चेती करोति	जिसकी चेतना या जिसका ज्ञान, मन, हृदय और चिन्तन नहीं जागृत था, अब उसकी चेतना या उसका ज्ञान, मन, हृदय और चिन्तन जागृत हो रहा है।
181.	विरही करोति	जिसका विछोह, वियोग और एकान्त स्थान या एकान्त प्रदेश नहीं हुआ करता था, अब वह विछोह, वियोग और एकान्त स्थान या एकान्त प्रदेश कर रहा है।
182.	विरजी करोति	जो व्यक्ति राग रहित या धूल रहित है अथवा जिस स्त्री का रजोधर्म रुक गया हो या बन्द हो गया हो, वह ऊब राग और धूल से युक्त है या अब स्त्री रजोधर्म का रजोधर्म आना शुरू कर दिया है।
183.	अग्नीसात् करोति	पूर्ण रूप से पूर्णतया अग्नि निष्ठ कर रहा है
184.	शुक्लीभवति पटः	मटमैला वस्त्र पूर्णतया स्वच्छ हो रहा है
185.	अग्निसाद् भवति	अग्नि या आग की दशा बाहुल्य या आधिक्य हो रहा है, अथवा अग्नि की स्थिति व्याप्त हो रही है।
186.	शस्त्रम् अग्निसाद् भवति	शस्त्र पूर्णतया अग्निरूप हो रहा है
187.	जलसात् सम्पद्यते	जल की दशा अधिकता या बाहुल्य को सम्पादित कर रहा है
188.	जली भवति लवणम्	नमक पिघल कर जल का रूप ले रहा है
189.	विप्रभा करोति विप्रभा सम्पद्यते विप्रसात् करोति	ब्राह्मण के अधीन देय वस्तु को कर रहा है
190.	राजसाद् भवति राष्ट्रम्	राजा के अधीन पूर्णतया राष्ट्र होता है
191..	देवत्रा वन्दे रमे वा	देव की वन्दना करता हूँ या देवों में वन्दना करता हूँ
192.	मनुष्यत्रा गच्छति	मनुष्य को जाता है या मनुष्य में जाता है
193.	पुरुषत्रा गच्छति	पुरुष को जाता है या पुरुष में जाता है
194.	पुरुत्रा गच्छति वसति वा	अधिक को जाता है या अधिक में जाता है अथवा अधिक में निवास करता है।

195.	पटपटाकरोति	पटत् पटत् यह अव्यक्त शब्द करता है
196.	पटत्करोति	पटत् शब्द करता है
197.	श्रत्करोति	श्रत् शब्द करता है
198.	खरटखरटा करोति	खरटत् खरटत् यह अव्यक्त शब्द करता है।
199.	पटिति करोति	पट यह शब्द करता है।
200.	द्वितीया करोति	दूसरी बार खेत की जुताई करता है।
201.	तृतीया करोति	तीसरी बार खेत की जुताई करता है
202.	शम्वा करोति	पहले या पूर्व में खेत की जुताई लम्बाई या चौड़ाई हो चुकी है। बाद में उसी खेत की जुताई पुनः चौड़ाई या लम्बाई में कर रहा है।
203.	बीजा करोति	बीज या बीया या अनाज के साथ खेत की जुताई कर रहा है
204.	द्विगुणा करोति	खेत की जुताई कार्य को दोबारा या दो बार करता है।
205.	समया करोति	प्रतिकूल समय को व्यतीत करता है।
206.	सपत्त्रा करोति मृगम्	पंख के साथ बाण का प्रवेश होने से बाण मृग को पीड़ित करता है।
207.	निष्पत्या करोति	पंख के साथ बाण पार्श्व भाग में प्रवेश करके निकल जाने से बाण मृगा को पीड़ित या व्यथित कर रहा है।
208.	सपत्त्रं निष्पत्त्रयं वा करोति भूतलम्	पृथ्वी को सपुङ्ख या बिना पुंरव को कर रहा है।
209.	निष्कुला करोति दाडिमम्	अन्तर्गत नपयन वाले अनार को बाहर कर रहा है
210.	सुखा करोति गुरुम्	आराधन योग्य गुरु के मन को प्रसन्नता या अनुकूल करके सुख को अपने अनुकूल कर रहा है।
211.	प्रिया करोति गुरुम्	आराधन के योग्य गुरु के मन का अनुवर्तन करके अपने अनुकूल गुरु को प्रिय कर रहा है।
212.	दुःखा करोति स्वामिनम्	आराध्य स्वामि के प्रतिकूल आचरण करके स्वामि दुःखित करता है।
213.	शूला करोति मांसम्	मांस को शूल पर गूँथ कर पका रहा है।
214.	सत्या करोति भाण्डं वणिक्	बनिया या व्यापारी मिट्टी या धातु के पात्र को रत्नादि से भर कर विक्रय के योग्य करता है।
215.	सत्यं करोति विप्रः	ब्राह्मण सत्य को या तथ्य को करता है।
216.	भद्रा करोति	मांगलिक मुण्डन से संस्कार कर रहा है।
217.	भद्रं करोति	सिर का बाल या केश को छुरा से बनवा रहा है।
218.	भद्रं करोति	शिर का बाल या केश को छुरे से बना रहा है।

●

अथ द्विरुक्त प्रकरणम्

सं0	प्रयोग	अर्थ
1	पचति पचति	बार बार पकता है।
2	वृक्षं वृक्षं सिंचति	प्रत्येक वृक्ष को सिंचता है।
3	ग्रामो ग्रामो रमणीयः	प्रत्येक गांव सुन्दर
4	परि परि वंगेभ्यो वृष्टो देवः–	बंङ्गाल को छोड़कर देव ने वर्षा किया।
5	उपर्युपरिग्रामम्	गांव के समीप देश में।
6	अध्यधिसुखम्	·सुख के समीप या उपरान्त दुःख
7	अधोऽधोलोकम्	लोक के समीप देश में।
8	सुन्दरम् सुन्दरम् वृथाते सौन्दर्यम्–	तुम्हारी सुन्दरता व्यर्थ है।
9	देव देव वन्द्योऽसि	हे देव तुम वन्दनीय है।
10	दुर्विनीत दुर्विनीत इदानीं ज्ञास्यति–	हे दुर्बुधि तुम इस समय जान रहे हो।
11	धानुष्कः धानुष्क वृथाते धनुः	हे धनुष को धारण करने तुम्हारी धनु व्यर्थ है।
12	चोर चोर धातिष्यामि त्वाम्	हे चोर तुमको मारूंगा।
13	एकैकमक्षरम्	एकक अक्षर
14	गत गतः	चला गया।
15	गतगता	चली गयी
16	पटु पट्वी	चतुर के सदृश
17	पटुपटुः	पटुता में कुछ कम
18	शुक्लं शुक्लं रूपम	सफेद की तरह रूप
19	मूले मूले स्थूलः	उत्तरोत्तर भाग की अपेक्षा मूल भाग स्थूल है।
20	शुक्लशुक्लः पटः	सफेद वस्त्र की तरह
21	सर्प सर्प	भय से सर्प को दो बार कथन
22	बुधस्व बुध्स्व	जानो, जानो
23	लुनीहि लुनीहि	काटो काटो
24	अन्योन्यं विप्रा नमन्ति	ब्राह्मण एक दूसरे को प्रणाम करते हैं।
25	अन्योऽन्येन कृतम्	एक अन्य से क्रिया
26	अन्योन्यस्मै	एक दूसरे के लिए क्रिया
27	अन्योन्याम् अन्योन्यम्	एक दूसरे को

28	परस्पराम् परस्परम्	आपस में।
29	इतरेतराम इतरेतरम	अन्य अन्य को
30	प्रिय प्रियेण ददाति	प्रेम से देता है।
31	सुख सुखेन ददाति	सुख पूर्वक या आराम से देता है।
32	यथास्वम्	जिस प्रकार धन
33	यथायथं ज्ञाता	आत्मीय या आत्मा के विषय में ज्ञातवान
34	द्वन्द्वं मन्त्रयते	दो मन्त्रणा करते है अर्थात रहस्य की बात करते हैं।
35	आचतुरं हीमेपशवः	ए पशु चार संख्या का करते हैं ।
	द्वन्द्व मिथुनीयन्ति–	पशुयें स्व इत्यादि से चतुर्थान्त दो दो मैथुन क्रिया करते हैं।
36	द्वन्द्वं यज्ञपात्राणि प्रयुनक्ति	दो दो यज्ञपात्रों को प्रयोग करते है।
37	द्वन्द्वं सङ्कर्षणवासुदेवौं	दो दो संकर्षण और वासुदेव है।
38	भुक्त्वा भुक्त्वा–	खा करके, खा करके

●

तृतीय भाग

भ्वादिप्रकरणस्थधात्वर्थ–1

सं0	धातु	अर्थ
1	भू	सत्ता, उत्पत्ति, व्यापार, अस्तित्व, विद्यमानता, वास्तविकता।
2	एधृ	वढ़ना या वर्धन
3	स्पर्ध–संघर्ष	अन्य के अभिभव की इच्छा
4	गाधृ	ठहरना,रुकना, स्थिति, इच्छा, ग्रन्थ रचना
5	नाथृ–नाधृ	मांगना, उपताप– ज्वर जनितपीठा, आशीर्वचन
6	वाधृ	लोडनम् प्रतिघात– पीडन
7	दधृ	धारण– ग्रहण करना
8	स्कुदि–आप्रवणम्	कूद कूद जाना या छलाँग मारना
9	वदि–अभिवादन	प्रणाम स्तुति– स्तवन करना
10	श्वदि	कल्याण– शुभ किया–सुख–सुखीभाव
11	मदि	स्तुति– स्तवन, मोद–सन्तोषमद–गर्व स्वपन कान्ति, गमन–जाना
12	स्पदि	किञ्चित्च् चलनम्– थोड़ा चलना या धीरे–धीरे चलना
13	मुद	हर्ष– तुष्टि प्रसन्नता
14	दद्	दान देना (मेरा नहीं है इस तरह का त्याग रुप दान)
15	ष्वद्	आस्वादन
16	उर्द्	मानम्– आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा,कीडा–खेल
17	षूद्	क्षरणम्– बहना, टपकना, बूंद–बूंद गिरना, रिसना
18	स्वाद्	आस्वादन चीखना
19	पर्द	कुत्सित शक– निन्दित शक
20	यती	प्रयत्न, प्रयास
21	श्रथि	शैथिल्य– शिथिलता–आलस्य
22	ग्रथि	कौटिल्य– कुलिलता–टेढ़ापन, खल
23	कत्थ	श्लाघा– अविद्यमान गुण का ज्ञापन करना प्रशंसा करना सराहना
24	अत	सातत्यगमन– गमन क्रिया में निरन्तरता
25	चिति	संज्ञानम्– जानकारी, समझ
26	च्युतिर	आसेचनम्– किञ्चित् आर्द्रीकरण
27	मन्थ	विलोडनम्– प्रतिघात, घात पर घात
28	षिध	गति– ज्ञान, मोक्ष, प्राप्ति, गमन
29	षिधू	शास्त्रम् शासनम, माङ्गल्यम् शुभ कर्म
30	खादृ	भक्षणम्– खना, चबाना
31	खद	स्थैर्य– स्थिरता ठहरना, [हिंसा, भक्षण
32	बद	स्थैर्य– स्थिर होना
33	गद	व्यक्तवाणी– स्पष्टवाक्–स्पष्टउच्चारण
34	रद	विलेखनम्– भेदनम्–भेद करना
35	णद	अव्यक्तशब्द– अस्पष्ट उच्चारण

36	अर्द	गति– ज्ञान, मोक्ष प्राप्ति, गमन याचना
37	खर्द	दन्दशूक– दंशनस्वभाव सर्प–सर्प काटना
38	अति	बन्धन– बाधना
39	टुनदि	समृद्धि– प्रजासन्तति, पशु इत्यादि सम्पत्ति
40	लोकृ	दर्शनम्– अवलोकन करना
41	श्लोकृ	संघात– ग्रन्थीकरण या संघीकरण
42	वर्च	दीप्ति– प्रकाश
43	षच्	सेचन– सिंचना–सेवनम्–सेवाकरना
44	ऋजि, भृजि	भर्जनम्– भूजना, भूनना, पकाना
45	शुच	शोक– स्मृति से होने वाला क्लेश
46	अञ्चु	गति– ज्ञान, मोक्ष प्राप्ति, गमन पूजनम्–पूजन किया
47	गुजि	अव्यक्त शब्द– अस्पष्ट उच्चारण
48	आछि	आयाम– दीर्घता लम्बाई
49	उछि	उञ्छनम् करना, खेत से एक–एक दाना बिनना, बटोरना या ग्रहण करना
50	उछी(वि+उछी)	विवास– समाप्ति
51	शकि	शङ्का–संशय–संदेह, आक्षेप
52	मधि	मण्डनम्– भूषणम् शोभित होना
53	ऋज–गति	ज्ञान– मोक्ष प्राप्ति, गमन अर्जनम्–सम्पादनम् उपार्जनम् सेवन
54	मूर्छा	मोह– संज्ञाहीनता बेहोशी
55	अर्च	पूजा– देवपूजन
56	अज	गति– ज्ञान, मोक्ष प्राप्ति गमन क्षेपण–फेंकना, डालना, भेंजना
57	एजृ	कम्पंन– हिलना, डुलना, कांपना
58	क्षि	क्षय नाश
59	वेष्ट	वेष्टनम्– लपेटना चारो तरफ से घेरना या घेरा बन्दी करना
60.	चेष्ट	चेष्टा– हिलना, डुलना, सक्रिय होना–चाल गति क्रियात्मक गमन।
61.	तडि	ताडन, मारना, पीटना, हन्टर लगाना, बेंत लगाना।
62.	अट् पट–गति–ज्ञान	मोक्ष प्राप्ति गमन–इधर उधर घूमना।
63.	रट	परिभाषण, वार्तालाप प्रवचन करना बातचीत करना, गपशप करना, बार–बार दोहराना।
64.	पठ	व्यक्त वाक– स्पष्ट वाणी का उच्चारण करना–पढ़ना।
65.	हठ	प्लुति उछलना शठत्व, शठता, कंजूस, वलात्कार, जबरजस्ती
66.	क्रीड़ृ	विहार– इधर उधर घूमना, भ्रमण करना।
67.	तुड	तोड़न– तोड़ना।
68.	गडि	वदनैकदेश– गाल
69.	देवेष्ट	कम्पन्न– कांपना, हिलना, डुलना।
70.	त्रपूष्	लज्जा– शर्म आना, संकोच करना।
71.	जभी, जृभि	गात्रविनाम– शरीर का टेढ़ापन।
72.	गूप	रक्षण– रक्षा करना, देखभाल करना।
73.	धूप	सन्ताप– गर्मी, जलन, दुख, सताना

75.	चुवि	वक्त्र संयोग– मुख चूमना।
76.	भाम	क्रोध रोष
77.	क्षमूष्	सहन, वर्दाश्त।
78.	कमु	कान्ति– इच्छा
79.	ओणृ	अपनयनम्– ले जाना, हटाना, दूर करना।
80.	चमु, जमु	अदन– खाना, निगलना
80.	चमु, जमु	अदन– खाना, निगलना
81.	क्रमु	पाद विक्षेप– पैर आगे की तरफ बढ़ाना।
82.	अय	गति– ज्ञान मोक्ष, प्राप्ति गमन, (प्लायते पलायते = भागना)
83.	दय	दान गति, रक्षण, हिंसा, आदान– ग्रहण करना।
84.	ऊयी	तन्तु सन्तान– सूत का विस्तार करना।
85.	पूयी	विशरण– टुकड़ा–टुकड़ा करना, बध, हत्या करना, विनाश, दुर्गन्ध,दूषित गन्ध।
86.	क्ष्मायी	विधूनन– धुनना।
87.	ओप्यायी	वृद्धि– वर्धन, बढ़ना।
88.	ईर्क्ष्य–ईर्ष्य	ईर्ष्या डाह– जलन
89.	हय–गति	ज्ञान मोक्ष प्राप्ति गमन (अश्व गमन)
90.	ञिफला	विशरण– शिथलीभाव (शिथिल होना)
91.	पील	प्रतिष्टम्भ– रोध करना, रोकना।
92.	शील	समाधि– ब्रह्मलीन होना।
93.	शूल	रूजा– रोग
94.	चर	गति– ज्ञान मोक्ष प्राप्ति गमन, भक्षण
95.	ष्ठिवु	निरसन– निकालने वाला, हटाने वाला, चूना (छप्पर चूना, घर चूना, कपड़े से छनकर निकालना)
96.	जि	जय– उत्कर्ष की प्राप्ति, जय होना।
97.	धिवि	प्रीणनार्था– प्रसन्न करना, संतुष्ट करना।
98.	कृवि	हिंसा – मारना, करण–साधन
99.	मव	बन्धन– बांधना
100.	अव	रक्षण, गति, कान्ति, प्रीति, तृप्ति, अवसाम, श्रवण इत्यादि।
101.	धावु	गति– धावन गमन
102.	शिक्ष	विद्योपादानम्– विद्या ग्रहण करना।
103.	भिक्ष	भिक्षा– याचना लाभ भीख मांगना
104.	क्लेश	अव्यक्तवाणी– बांधना।
105.	ईक्ष	दर्शन– देखना, अवलोकन करना
106.	भाष	व्यक्तवाणी– स्पष्ट कहना, बोलना
107.	प्रेषृ	गति– भेजना
108.	आङ्शसि	इच्छा– कामना, अभिलाषा, रूचि
109.	कास्ट	कुत्सा– दुर्वचन, घृणा, भत्सर्ना, निन्दा करना।
110.	भासृ	दीप्ति– प्रकाश, तेज, उजाला, प्रभा, चमक
111.	ईह	चेष्टा– चाल, गति, प्रयास, प्रयत्न।

112.	काश्रृ	दीप्ति– उजाला प्रभा, चमक, प्रभा, प्रकाश
113.	ऊह	वितर्क– युक्ति, दलाल, अनुमान, अन्दाज, अटकल, कल्पना
114.	गाहू	विलोडन, प्रतिधात– घात पर घात करना।
115.	गृहू	ग्रहण– लेना
116.	घुषिर	अविशब्दनम्, प्रतिज्ञापन, स्वीकार प्रकथन दृढोक्ति इत्यादि
117.	तक्ष	तनुकरणे– काठ के छिलने अर्थ में।
118.	मूष	स्तेय– चोरी करना।
119	भष	भर्त्सनम्– कुत्ते का शब्द
120.	पुष	पुष्टि– पोषण, बलवान, साबित करना।
	रक्ष	पालन करना रक्षण, संरक्षण और देखभाल करना।
121.	घस्लृ	अदन– खाना, निगलना।
122.	मह	पूजा– सम्मान
123.	दुहिर	अर्दन– दुःखाने वाला, सताने वाला।
124.	अर्ह	पूजा– सम्मान योग्य
125.	द्युत	दीप्ति– प्रकाश, उजाला, प्रभा, चमक, तेज
126.	ञिमिदा	स्नेहने– चिक्कन
127.	क्षुभ	सच्चलन– विक्षोभ, कंपकपी, हिलना, थरथर कांपना।
128.	स्रंसु, ध्वंसु, भ्रंसु–	अधसंस्रन– नीचे की ओर जाना।
129.	वृतु	वर्तनम्– विद्यमान रहने वाला, टिकाऊ, स्थिर
130.	वृधु	वृद्धि– वर्धन, बढ़ना।
131.	स्यन्दू	प्रंसवण– चूना, टपकना, निकलना।
132.	कृपू	सामर्थ्यम्– कार्य करने की क्षमता, शक्ति
133.	घट	चेष्टा– चाल, गति, प्रयास, प्रयत्न
133.	व्यथ	भय– डर लगना संचलन अच्छी तरह चलना।
134.	प्रथ	प्रख्यानम– भलीभांति कथन
135.	क्रप	कृपा– दया रहम
136.	ज्वर	रोग– रोग
137.	णट	नृति– नर्तन, नाचना .
138.	ह्वल, ह्नल	चलनम्– चलना, जाना।
139.	फण,	गति– ज्ञान मोक्ष प्राप्ति गमन
140.	राजृ	दीप्ति– उजाला, प्रभा, तेज, चमक, प्रकाश
141.	ष्वन्	शब्द– उच्चारण, बोली, क्षरण
142.	हल्	विलेखन– खुरेचना, खोदना, कुरेदना, जोतना, इत्यादि।
143.	टुवम	उदगिरण– वमन करना, ढेकरना, उल्टी करना।
144.	भ्रमु	सञ्चलनम्– इतत्वर घूमना, भ्रमण करना, धीरे–धीरे टहलना।
145.	क्षर	सञ्चनल– घूमना, किंचित चलना, धीरे–धीरे चलना जाना।
146.	षह	मर्षण– सहनशीलता, सहिष्णुता, धैर्य
147.	रमु	क्रीडा– रमण करना, परिभ्रमण करना, खेल करना।
148.	षदलृ	विशरण– टुकडे–टुकडे करना, फार डालना, हत्या विनाश, गति ज्ञान

		मोक्ष प्राप्ति गमन।
149.	अवसादन	दुःख, पतन, नाश, उत्पीड़न, समाप्त करना।
150.	बुध	अवगमनम्– समझना, निकट जाना, नीचे उतरना, ज्ञान प्रत्यक्षीकरण
151.	रूह	वीज जन्मनि– बीज अंकुरित होना या निकलना बीज जमना, प्रादुर्भाव अवतार स्वयं उद्भव
152.	अञ्जु	गति– ज्ञान मोक्ष प्राप्ति गमन याचन मांगना।
153.	टु याचृ	याञ्चा– भांगना, भीख मांगना।
154.	रेटृ	परिभाषणम्– रटना, याद करना, कण्ठस्थी करण करना बार बार पढ़ना।
155.	बुधिर्	अवबोधनम्– ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण
156.	खनुः	अवदारणम्– खोदना, फाड़ना, पाटना, कुदाल, खुर्पा
157.	गुहू	संवरणम्– आवरण, अच्छादन छिपाव, बटोरना।
158.	श्रिञ्	सेवा– सुश्रुषा, देखभाल करना।
159.	भृञ्	भरण– धारण करने वाला, निर्वाह करने वाला, सहारा देने वाला, पालन करने वाला, पालन पोषण करने वाला।
160.	हृञ्	हरण– चुराना, पकड़ना, ग्रहण करना, दूर ले जाना।
161.	धृञ्	धारम– सम्भालने वाला, थामने वाला, सहारा देने वाला, ले जाने वाला।
162.	णीञ्	प्रापणम्– प्राप्त करना, पंहुचना, बढ जाना, अधिग्रहण करना, ले जाना।
163.	घेट्	पाने– पीना, चुम्बन, दुग्धपान, जलपान, सुरापान
164.	ग्लै, म्लै	हर्षक्षय– धातु नाश या पतन या बल का क्षय
165.	ध्यै	चिन्ता– ध्यान करना, चिन्तन करना, शोच करना, विचार ध्यानमग्न होना।
166.	श्रै	पाक– पचन क्रिया, भोजन पकाना
167.	पा	पान– पीना, जल पीना, दुग्ध पीना।
168.	घ्रा	गन्धोपादान– गन्ध ग्रहण करना, गन्ध सूंघना।
169.	ष्ठा	गतिनिवृत्ति– गमन क्रिया से निवृत्ति बैठना, ठहरना, रूकना स्थिति
170.	दाण	दान– स्वत्वनिवृत्तिपूर्वक त्याग परस्वत्व की सत्ता
171.	ह्वृ	कौटिल्य– कुटिलता, दुष्ट, खल, टेढा मेढ़ा।
172.	स्मृ	चिन्ता– ध्यान करना, भूली हुई वस्तु विषय पदार्थ का स्मरण करना विगत व्हारों का स्मरण करना विचार करना।
173.	श्रृ (सृ) गति –	ज्ञान, मोक्ष प्राप्ति, गमन, सरकाना, धीरे धीरे चलना, घुसकना
174	ऋ	गति– ज्ञान, मोक्ष प्राप्ति, गमन, प्राषण– प्राप्त करना, पहुंचना, बढजाना, अधिग्रहण करना, ले जाना।
175.	षु	प्रसव– अभ्यनुज्ञान, स्वीकृति, सहमति, अनुमति। ऐश्वर्य– सर्वोपरिता, प्रभुता, शक्ति, ईश्वरत्व, तेजस्वी
176.	श्रु	श्रवण– श्रवण, श्रुति, कान, वेद
177.	स्मिङ्	ईषदहसन– स्मित, हास, हंसी, मुस्कुराहट, मुखपर हंसी का आना।
178.	गुङ्	अव्यक्तशब्द– अस्पष्ट उच्चारण करने वाला, गूंगा।
179.	तॄ	प्लवन– तैरना, गोता लगाना, छलांग मारना, कूदना, स्नान करना। तरण– पार करना, तैरना, नदी या तालाब, उद्धार करना, नाव बेड़ा जीतना, पराजित करना डाढ़

180.	गुप्	गोपन– रक्षण, रक्षा करना देखभाल करना, ख्याल करना।
181.	तिज्	निशान– तीक्ष्णीकरण तेज करना चाकू तलवार दंतिया इत्यादि पर निशान धराना।
182.	मान्	पूजा– इज्जत करना, आदर करना, सम्मान करना।
183.	वध	बन्धन– बांधना, सूत डोरी या रस्सी से कसना, दृढ करना।
184.	यभ	मैथून– स्त्री प्रसंग
185.	गम्लृ, सृप्लृ	गति– ज्ञान मोक्ष प्राप्ति साधन
186.	यम	उपरम– विरक्ति, निवृत्ति, परिर्वतन, त्याग, मृत्यु।
187.	तप	सन्ताप– गर्मी, प्रदाह, जलन, दुःख, सताना, पीडा, व्यथा, वेदना।
188.	त्यज	हानि– उत्सर्ग, त्याग करना, छोड़ना।
189.	दृशिर	प्रेक्षण– अवलोकन, देखना।
190.	दंश्	दशन– दांत से काटना , डसना
191.	कृष्	विलेखन– आकर्षण, खींचना, हल से जोतना।
192.	दह्	भस्मीकरण– राख करना, जला डालना।
193.	दान्	खण्डन– काटना, टुकडे टुकडे करना मत को काटना, न स्वीकार करना।
194.	शान्	तेजन– तीक्ष्णीकरण, तेज करना, चाकू, तलवार, दंतिया इत्यादि पर निशान धराना या तेज करना।
195.	डुपचष्	पाक– पाक क्रिया, पकाना।
196.	भज्	सेवा– भजन करना, बार बार नाम लेना, भक्ति करना।
197.	रञ्ज्	राग– रंगना, लालिमा, लालवर्ण
198.	शप्	आक्रोश– जोर से पुकारना या चिल्लाना, उच्च स्वर से रोना, भर्त्सना, दुर्वचन कहना।
199.	यज्	देव पूजा– देवताओं की पूजा अर्चना
		संगतीकरण– संगमन, एकीकरण
		दान– देना, स्वस्वस्व निवृत्तिपूर्वक त्याग पर स्वत्व की सत्ता।
200.	टुवप्	वीजसन्तान– खेत में वीज बोना, गर्भाधान क्रिया, बाल काटना।
201.	वस्	निवास– रहना, वसना, निवास करना, घर, आवास, वासगृह, विश्राम गृह या स्थल
200.	वेञ्	तन्तु सन्ताप– कपड़ा बुनना, धोती इत्यादि बुनना।
201.	व्येञ्	संवरण– आवरण, आच्छादन, छिपाव, बटोरना, समेटना।
202.	हेञ्	स्पर्धा– प्रतियोगिता, प्रतिद्वन्द्विता, होड़, लागडाट
203.	वद	व्यक्तवाक– स्पष्ट उच्चारण, साफ साफ कहना, बोलना।
204.	टुओखि	गति– ज्ञान मोक्ष, प्राप्ति गमन,
		वृद्धि– बढ़ना, बर्धन आगे की ओर बढ़ना।
205.	ऋति	जुगुप्सा– निन्दा, घृणा, वीभत्सा, नापसन्दी
		कृपा– दया रहम।

●

अदादिप्रकरणस्थधात्वर्थ–2

क्रसं0	धातु	अर्थ
1	अद्	भक्षण– खाना, चबाना, भोजन करना।
2.	हन्	हिंसा– मारना, बध करना, हनन करना, हत्या करना।
		गति– ज्ञान, मोक्ष, प्राप्ति, गमन
3.	द्विष्	अप्रीति– द्वेष करना, बैर करना, प्रेम का अभाव होना।
4.	दुह्	प्रपूरण– दुहना, पूरा करना, पूर्ति करना।
5.	दिह्	उपचय– वृद्धि, बर्धन, बढ़ना।
6.	लिह्	आस्वादन– चखना, चिखना, खाना, रसोई का वानगी लेना।
7.	चक्षिङ् व्यक्तायां वाक्	व्यक्तवाणी, स्पष्ट उच्चारण, साफ साफ बोलना।
8.	आस्	उपवेशनम्– बैठना, आसन लगाना।
9.	ईड	स्तुति– स्तवन करना, स्तोत्र बाचना, प्रार्थना करना, वन्दना करना।
10.	ईश	ऐश्वर्य– सवोपरिता प्रभुता, शक्ति, ईश्वरत्व, तेजवान
11.	वस	आच्छादन– ढंकना, छाना।
12.	आङ्शासु	इच्छा– कामना, अभिलाषा, रूचि
13.	णिसि	चुम्बन– चूमना।
14.	षूङ् प्राणिगर्भविमोचन	सन्तान गर्भ मुक्ति, प्रसव
15.	शीङ्	स्वप्न– शयन करना, स्वप्न देखना।
16.	यु	मिश्रण– मिलाना, एकीकरण, मिलावट,
		अमिश्रण– पृथक भाव, अलग होना या करना।
17.	रू	शब्द– उच्चारण करना, बोलना।
18.	णु	स्तुति– वंदना, स्तवन करना, स्तोत्र कहना, प्रार्थना करना।
19.	ऊर्णुञ्	आच्छादन– ढंकना, छावन करना
20.	द्यु	अभिगमन– पास में आना या जाना, दर्शनार्थ गमन करना।
21.	ष्टुञ्	स्तुति– वन्दना करना, प्रार्थना करना, स्तवन करना, स्तोत्र बाचना।
22.	ब्रुञ्	व्यक्तवाणी– स्पष्ट वाक् या शब्द या उच्चारण, साफ बोलना।
23.	इण्	गति– ज्ञान, मोक्ष प्राप्ति, गमन।
24.	इङ्	अध्ययन– पढ़ना, वाचना।
25.	इक्	स्मरण– याद करना, विगत बातों को या व्यवहार को याद करना, भूली हुई या विसरी हुई वस्तुओं को याद करना।
26.	वी	गति– ज्ञान, मोक्ष, प्राप्ति, गमन,
		व्याप्ति– व्याप करता, हर जगह प्राप्त होना।
		प्रजनम्– गर्भ धारण करना
		कान्ति– तेज
		असनम्– क्षेपण, फेंकना
		खादन्– भोजन करना।
27.	या	प्रापणम्– गति, ज्ञान मोक्ष, प्राप्ति, गमन
28.	भा	दीप्ति– प्रकाश, उजाला, तेज, चमक, प्रभा
29.	ष्णा	शौच– पवित्रता, स्नान, फ्रेस होना।
30.	श्रा	पाक– पाचन क्रिया, भोजन, पकाना।

31.	द्रा	कुत्सा– दुर्वचन, घृणा, भर्त्सना, गाली देना, निन्दा करना, कलंक लगाना।
32.	पा	रक्षण– पालन करना, देखभाल करना, ख्याल करना।
33.	रा	दान– स्वस्वत्व निवृत्ति पूर्वक त्याग परस्वत्व की सत्ता।
34.	ला	आदान–लाना, ग्रहण करना।
35.	दाप्	लवन– काटना, कटिया करना।
36.	मा	मानस– आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा, तथा परिमाप, तौलना, नापना।
37.	ख्या	प्रकथन– कहानी कहना, बढ़ाई कहना, वर्णन करना, वयान करना।
38.	वच्	परिभाषण– वक्ता, प्रवक्ता, प्रवचन करना, परिभाषित करना।
39.	विद्	ज्ञान– ऐहिलौकिक और पारलौकिक विषय की जानकारी बोध
40.	असि	भुवि– सत्ता, विद्यमानता, अस्तित्व, वास्तविकता।
41.	मृजुष्	शुद्धि– शुद्धिकरण, पवित्रता, शुद्धता, सफाई, स्वच्छता।
42.	रूदिर्	अश्रुविमोचन– आंसु गिरना, रोना।
43.	ञिष्वष्	शयन– शयन करना, सोना।
44.	श्वस्	प्राणने– श्वांस लेना, जीवन जीना।
45.	जक्ष	भक्षण– खाना, भोजन करना, चबाना, निगल जाना।
		हसन– हंसना
46.	जागृ	निद्राक्षण– निद्रा टूटना, जागना, जागरण करना।
47.	दरिद्रा	दुर्गति– धन की हानि होना, धनहीन होना, गरीब होना, दरिद्र होना।
48.	चकासृ	दीप्ति– उज्जवल, प्रकाश, प्रभा, तेज, चमक
49.	शासु	अनुशिष्ट– शासन, शास्त्र, अनुशासित रहना।
50.	वस	कान्ति– इच्छा, कामना, रूचि, अभिलाषा।

●

जुहोत्यादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–3

सं0	धातु	अर्थ
1	हु	दान– स्वस्वत्व निवृत्तिपूर्वक त्याग पर स्वत्व की सत्ता, खाना या भाष्य के मत में अग्नि में मन्त्र के द्वारा देवता उद्धेश्यक प्रक्षेपण
		आदान– ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना।
2.	ञिभी	भय– डरना, भयभीत होना
3.	ह्री	लज्जा– लजाना, संकोच करना, शर्म करना।
4.	पॄ	पालन– रक्षण करना, देखभाल करना, पोषण करना।
		पोषण– भरना, पूर्ति करना, पूर्ण करनां
5.	डुभृञ्	धारण– सम्भलना, थामने वाला, सहारा देने वाला, ले जाना वाला।
		पोषण– पालन करना, रक्षा करना, देखभाल करना, खिलाना, पिलाना।
6.	माङ्	मान– सम्मान, आदर, इज्जत करना,ऊंचाई लम्बाई नापना, तौल करना।
		शब्द– उच्चारण करना बोलना।
7.	ओ हाङ्	गति– ज्ञान, मोक्ष, प्राप्ति, गमन।
8.	ओ हाक	त्याग– अलग करना पृथक करना, छोड़ना।
9.	डु दाञ्	दान– स्वस्वत्वं निवृत्ति पूवर्क त्याग पर परस्वत्व की सत्ता।
10.	जन	जनन– पैदा होना, उत्पत्ति।
11.	गा	स्तुति– वन्दना, प्रार्थनां, स्तोत्र कहना या वांचना।

●

दिवादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–4

सं0	धातु	अर्थ
1	दिवु	क्रीडा– खेल विजिगीषा– जीतने या विजय पाने की इच्छा द्युति– कान्ति, स्तुति, वन्दना, मोद, हर्ष, मद, गर्व, स्वप्न, सोना, कान्ति, तेज, प्रभा, प्रकाश इत्यादि, गति–ज्ञान, मोक्ष, प्राप्ति, गमन, व्यवहार कार्यशैली।
2.	नृती	गात्र विक्षेप – नाचना, नृत्य करना, शरीर के अंग को इधर उधर फेंकना।
3.	त्रसी	उद्वेग– कांपना, हिलना, क्षोभ, उत्तेजना।
4.	कुथ्	पूतीभाव– दुर्गन्धता, बदबू।
5.	व्रीड्	चोदना– प्रेरण, उत्साह भरना, उकसाना, लज्जा– शर्म आना, संकोच करना।
6.	इष्	गति– ज्ञान, मोक्ष, प्राप्ति, गमन।
7.	जृष्, झृष्	बयहानि– वृद्धावस्था, जरावस्था, बुढापा, अवस्था का ढलना।
8.	दूङ्	परिताप– सन्ताप, गर्मी, दुःख, पीड़ा।
9.	धीङ्	आधार– अवलम्बन, सहारा, टेक
10.	मीङ्	हिंसा– जान से मारना, प्राण को शरीर से अलग करना।
11.	लीङ्	श्लेषण– चिपकना, जुडना, मिलना, संगम
12.	पीङ्	पान– पीना
13.	माङ्	मान– सम्मान, आदर, इज्जत, ऊँचाई, लम्बाई, चौडाई का मापक, तौल बटखरा
14.	ईङ्	गति– ज्ञान, मोक्ष प्राप्ति, गमन
15.	प्रीङ्	प्रीति– प्रेम, स्नेह, लगाव, प्रसन्नता, आह्लाद, सन्तोष, आनन्द
16.	शो	तनूकरण– शरीर रचना, शरीर की बनावट
17.	छो	छेदन– काटना, फाड़ना, टुकड़े–टुकड़े करना, खण्ड–खण्ड करना।
18.	षो	अन्तकर्मणि– समापन या विनाशन
19.	दो	अवखण्डन– बांटना, नष्ट करना।
20.	जनी	प्रादुर्भाव– उत्पन्न होना, प्रकट होना, दिखाई पड़ना, उदभव होना।
21.	दीपी	दीप्ति– प्रकाश, उज्जवल, तेज प्रभा, कान्ति
22.	पूरी	आप्यायन– मोटा, बलवान, हुष्टपुष्ट, ताकतवर
23.	तप्	ऐश्वर्य– सर्वोपरिता प्रभुता, शक्ति ईश्वरत्व, तेजवान
24.	वृतु	वरण– स्वीकार करना, चुनना, छांटना, मांगना, टकना, पर्दा डालना।
25.	काश	दीप्ति– उज्जव, प्रभा, कान्ति, चमक, तेज, प्रकाश
26.	शुचिर्	पूतीभाव– क्लेद गीलापन, आर्दता, तरावट, नदी।
27.	णह	बन्धन– बांधना, बद्ध करना, घेरना।
28.	शप्	आक्रोश– जोर से पुकारना, चिल्लाना, उच्च स्वर से रोना, भर्त्सना, दुर्वचन कहना।
29.	पद्	गति– ज्ञान, मोक्ष प्राप्ति, गमन
30.	खिद्	दैन्य– दीनता, दुःखी होना, दरिद्रता, हीनभावना युक्त होना।
31.	विद्	सत्ता– विद्यमानता, अस्तित्व, वास्तविकता, स्थिति
32.	बुध्	अवगमन– समझना, ज्ञान होना, निकट जाना, नीचे उतरना, प्रत्यक्षीकरण

33.	अण	प्राणन्– जीवन धारण करना, जीना, जीवित रहना।
34.	मन्	ज्ञान– मानना, स्वीकार करना, जानना।
35.	युज्	समाधि– अन्तःकरण की चेष्टाओं को रोकना।
36.	सृज्	विसर्ग– सम्बन्ध, रचना
37.	लिश्	अल्पीभाव– अत्यन्त कम नाम मात्र का, किंचित, बहुत थोड़ा।
38.	राध्	वृद्धि– बर्धन, बढना, द्रोह, विरोध
		सिध्– पकाना, पचाना, भाग्य कोशना, पर्यालोचन करना।
39.	तुष्	प्रीति– संतुष्ट, प्रेम, स्नेह, लगाव, प्रसन्नता, आह्नाद, सन्तोष, आनन्द
40.	श्लिष्	आलिङ्गन– गाढ मिलन, गले मिलना, गलबाहि
41.	शक्	विभाषितमर्षण– सामर्थ्य, शक्ति, क्षमता
42.	क्रुध्	क्रोध– रोष, कोप, गुस्सा, रिसियाना।
43.	शुध्	शौच– पवित्र, पावन, शुद्ध
44.	रध्	हिंसा– मारना, पीटना, हत्या करना, बध करना।
		संराद्ध– निष्पति–निष्पादन, उत्पत्ति।
45.	णश्	अदर्शन– न दिखाई पड़ना, नाश या नष्ट होना, गायब होना, विलाना।
46.	तृप्	प्रीणन– तृप्ति, संतुष्टि, तर्पण, ब्रह्मा इत्यादि देवतोद्देश्यक जलदान,ऋषि उददेश्यक जल दान दिव्य पितर और यमादि देवता उद्देश्यक जलदान, स्वपितरोद्देश्यक जलदान।
47.	दृप्	हर्ष– खुशी, प्रसन्नता, उल्लास
		मोहनम्– गर्व, अभिमान, घमण्ड
48.	द्रुह	जिघांसा– मार डालने की कामना
49.	मुह	वैचित्य– अविवेक, अज्ञान, मोह
50.	शमु	उपशम– शान्ति, उपशमन, शान्त होना, सान्त्वना।
51.	दमु	उपशन– शान्ति रखना, शान्त करना, चुप करना, बुलाना, विराम
52.	भ्रमु	अनवस्थान– एक स्थान पर स्थिर न रहना, इधर उधर घूमना, टहलना, इधर उधर आना जाना, भ्रमण हमेशा करनः।
53.	क्षमू	सहन– बर्दाशत करना।
54.	असु	प्रक्षेण– फेंकना, दूर से चलना।
55.	यसु	प्रयत्न– प्रयास
56.	लुट	विलोडन– लूटना, कोशिश, जबरदस्ती, लेना, डाका डालना।
57.	कृश	तनकरण– दुर्बल शरीर, पतला शरीर
58.	ञितृपा	पिपासा– पानी पीने की कामना या पीने की बार बार इच्छा करना लिप्सा लालच।
59.	कुप	क्रोध– रोष, कोप, गुस्सा।
60.	लुभ	गार्ध्य– आकांक्षा, लोभ, लालच
61.	क्षुभ	संचलन– विक्षोभ, कंपकपी, हिलना, थरथरी
62.	क्लिदू	आर्द्रीभाव– गिला करना, सिंचन करना, जलीकरण।
63.	ञिमिदा	स्नेहन– चिक्कन, चिकनापन
64.	ऋधु	वृद्धि– वर्धन, बढ़ना।
65.	गृधु	अभिकांक्षा– कामना, इच्छा, लालसा।

●

स्वादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–5

सं0	धातु	अर्थ
1	षु	अभिषव– अभिषेक, स्नान
2.	डुमिञ्	प्रक्षेपण– फेंकना।
3.	चिञ्	चयन– एकत्र करना, बटोरना।
4.	कृञ्	हिंसा– मारना, बध करना।
5.	वृञ्	वरण– चयन करना, चुनाव करना, स्वीकार करना।
6.	धुञ्	कम्पन्न– हिलना, कांपना, डोलना, धूनना।
7.	टु डु	उपताप– गर्मी, आंच, कष्ट, पीड़ा, शोक
3.	पृ, स्पृ	प्रीति– प्रेम, स्नेह, अभिलाषा, रूचि
9.	शक्लृ	शक्ति– सामर्थ्य
10.	राध, साध	संसिद्धि– पूर्णता, पूर्ण, निष्पन्नता
11.	अशू	व्यप्ति– व्यापकता, सर्वत्र प्राप्ति
		संघात– समूह, समुदाय, संघ
12.	दम्भु	दम्भन– दम्भ, गर्व, घमण्ड, अभिमान
13.	चभु	भक्षण– बचवाना, खाना।
14.	षिञ्	बन्धन– बांधना
15.	ञिधृषा	प्रागल्य– साहसीयन, हिम्मती,
16.	अह	व्याप्ति– व्यापकता।
17.	दध	घातन– पालन– घांत करना
18.	चभु	भक्षण– चबाना या खाना

●

तुदादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–6

सं0	धातु	अर्थ
1	तुद्	व्यथन– पीड़ा, दुःख, अशान्ति
2.	णुद्	प्रेरणा– उत्साह भरना, उकसाना, प्रेरित करना।
3.	भ्रस्ज्	पाक– पचन क्रिया, पकाना।
4.	क्षिप्	प्रेरण– क्षेपना, पतवार से नाव को चलाने की एक प्रक्रिया
5.	कृष्	विलेखन– खोदना, जोतना।
6.	ओविजी	भय संचलन– डरना, भयभीत होना।
		संचलन– विक्षोभ, कंपकंपी हिलना, थरथरी।
7.	व्यच्	व्याजीकरण– इन्द्रजाल, फौरेब
8.	उञ्छ उछौ	विवास– देश निर्वासन, देश निकाला
9.	मृड्	सुखम– सुख, आनन्द
10.	इषु	इच्छा– कामना, अभिलाषा, रूचि
11.	छुर्	छेदन– काटना, कतरना।
12.	तुड्	तोडन– तोडना, टुकडे टुकडे करना
13.	स्फुर, स्फुल	संचलन– विक्षोभ, कंपकंपी
14.	धू	विधूनन– हिलना, कांपना, डोलना।
15.	पृङ	व्यायाम– कसरत, रियाज, मेहनत मारना।
16.	मृङ	प्राण त्याग– प्राण निकलना, मरना, शरीर त्याग करना।
17	कॄ	विक्षेप– पागल, इधर उधर फेंकना, बखेरना, डालना।
18.	गॄ	निगरण– निगलना, घोंट जाना।
19.	सृज्	विसर्ग– सम्बन्ध, रचना, बनाना
20.	दुभस्ज	शुद्धि– पवित्रता, शुचिता
21.	मुच्लृ	मुञ्चन– छोड़ना, त्याग करना, मुक्त करना।
22.	विद्लृ	लाभ– प्राप्ति, मिल जाना।
23.	लिप्	उपदेह– वृद्धि, वर्धन
24.	षिच्	छरण– सिंचना, आद्र करना, गिला करना।
25.	कृती	छेदन– छेद करना, काटना, टुकडे टुकडे करना, खण्ड–खण्ड करना।
26.	जुषी	प्रीति– प्रेम करना, स्नेह करना
27.	ओलजी	प्रीडा– लजाना या लज्जा करना
28.	ओव्रश्चू	छेदन– काटना, फाड़ना
29.	लुभ	विमोहन– रिझाना, प्रलोभन देना
30.	प्रच्छ	ज्ञीप्सा– पूछना, सवाल करना
31.	उज्झ	उपसर्ग– छोड़ना, त्याग करना ।
32.	लिख	अक्षर विन्यास, लिखना या लेख लिखना
33.	कुच	संकोचन, संकुचित् होना, बटुरना, सिकुड़ना
34.	त्रुट	छेदन, छेद करना, छेदना
35.	णू	स्तवन, स्तुति करना, प्रार्थना करना
36.	मृङ्	प्राण त्याग, मृत्यु को प्राप्त होना
37.	मिल	संगम, दो लोगों का बहुतेरे लोगों को एक जगह मिलना

रूधादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–7

सं0	धातु	अर्थ
1	रूधिर	आवरण– ढंकना, छिपाना, लुकवाना।
2.	भिदिर	विदारण– विदीर्ण करना, काटना, गिराना।
3.	रिजिर	विरेचन– मलाशय को साफ करना, जुलाव की दवा
4.	त्रिइन्धी	दीप्ति– उजाला, प्रकाश, चमक, तेज, प्रभा, कान्ति
5.	शिष्लृ	विशेषण– प्रकार, विशेषता, कथना, युक्त।
6.	भञ्ज	आमर्दन– कुचलना, मसलना, निचोडना
7.	भुज्	पालन– रक्षण करना, देखभाल करना, भोग करना।
		अभ्व्यवहार– भोजन ग्रहण करना, आहार लेना।
8.	तृह	हिसि– हिंसा करना, मारना, पीटना, बध करना।
9.	उन्दी	क्लेदन– आद्रता, गीलापन, तरी करना, सिंचना
10.	वृजी	वर्जन– निषेध, रोकना, वर्जित करना।
11.	युजिर	योग– जोड़ना, मिलना
12.	क्षुदिर	संप्रेषण– भेजना
13.	कृती	वेष्टन– चारों तरफ लपेटना
14.	ओविजी	भय– डर होना, चलन–चलना, रीति–रिवाज
15.	पृची	संपर्क– मिश्रण, मिलाप, मेल होना ।

●

तनादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–8

सं0	धातु	अर्थ
1	तनु	विस्तार– फैलाव, व्यापक
2.	षणु	दान– स्वस्वत्व निवृत्तिपूर्वक त्याग, परस्वत्व की सत्ता
3.	क्षणु	हिंसा – मारना, पीटना, बध, हत्या, सताना।
4.	ऋणु	गति– ज्ञान, मोक्ष, प्राप्ति, गमन।
5.	डु कृञ्	करना– सम्पादन, कार्य सिद्ध करना।
6.	तृणु	अदन– भक्षण भोजन खाना
7.	वनु	याचन– माँगना

●

क्रयादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–9

सं0	धातु	अर्थ
1	डु क्रीञ्	द्रव्यविनिमय– रुपया देकर सामान लेना, खरीदना।
2.	प्रीञ्	तर्पण– देव ऋषि और पितर उद्धेश्यक जल दान करना।
3.	श्रीञ	पाक– पाक क्रिया या पकाना।
4.	मीञ	हिंसा– मारना, पिटना, हत्या, बध।
5.	युञ	बन्धन– बांधना, कसना।
6.	पूञ	पवन– पवित्र, शुद्ध
7.	लूञ	छेदन– छेद करना, काटना, टुकडे टुकडे करना।
8.	स्तृञ्	आच्छादन– छवाना, ढाकना, छिपाना, कुटीर खरफूस छबाना।
9.	वृञ्	वरण– स्वीकार करना, चयन करना।
10.	धुञ्	कम्पन्न– कांपना, हिलना, डुलना, कंपकंपी
11.	गृ	शब्द– उच्चारण, बोली, आवाज
12.	ज्या	वयहानि– वृद्धावस्था, बुढापा।
13.	ली	श्लेषण– चिपकना, जुड़ना, मिलना, संगम
14.	प्ली	गति– ज्ञान, मोक्ष, प्राप्ति, गमन
15.	ब्री	वरण– स्वीकार करना, चयन करना, चुनाव करना।
16.	भ्री	भय– डर, भय, भयावह
17.	ज्ञा	अववोधन– ज्ञान, जानकारी, समझना, जानना।
18.	वन्ध	बन्धन– बांधना, कसना, बन्धन देना।
19.	वृङ	सम्भक्ति– हिस्सा लेना, अधिकार करना, बांटना, वितरण करना।
20.	मन्थ	विलोडन– मथना, विक्षुब्ध करना, दोलायमान होना।
21.	मृद	क्षोद– चूरा करना, पिसना।
22.	मृड	सुख– सुख, आनन्द चित्त की शान्ति।
23.	कुष	निष्कर्ष– निर्णय, फैसला, तात्पर्य
24.	क्षुभ	सञ्चलन– हिलना, विक्षोभ, कंपकंपी
25.	क्लिशू	विवाधन– देश निकाला, देश निर्वासन, देश निष्कासन
26.	अशू	भोजन– खाद्य पदार्थ खाना, जेवन करना।
27.	दूष	पौनः पुन्य– बार–बार भृशार्थ– अधिक
28.	पुष	पुष्टि– पोषण, ताकंत, बल, शक्ति
29.	खच	भूतप्रादुर्भाव– अतिक्रान्त उत्पन्न
30.	ग्रह	उपादान– समीप में ग्रहण करना, स्वीकार करना, लेना।

●

चुरादि प्रकरणस्थधात्वर्थ–10

सं0	धातु	अर्थ
1	चुर	स्तेय – चोराना, चोरी करना।
2.	चिति	स्मृति– स्मरण करना, चिन्ता करना, भूली हुई वस्तु का या विषय का चिन्तन करना, सोचना, याद करना।
3.	स्फुडि,स्फुदि	परिहास– हंसी, मजाक, उपहास
4.	लड्	उपसेवा– लालच, पालन करना, देखभाल करना।
5.	ओ–लडि	उत्क्षेपण– ऊपर की ओर फेंकना।
6.	लज्	अपवारण– छिपाव, ओझल, आच्छादन
7.	पीड्	अवगाहन– स्नान करना, लोट पोटकर नहाना, डुबकी लगाना।
8.	नट	अवस्पन्दन– नाट्यम् नाचना, अभिनय करना।
9.	श्रथ	प्रयत्न– प्रयास
		प्रस्थान– चला जाना, प्रगमन करना, कूच करना, प्रयाण करना।
10.	प्रथ	प्रख्यान– साफ साफ कहना, उच्च स्वर से कहना, या आख्यान
11.	वर्ण	वर्णन– बड़ाई कहना, बढ़ चढ़कर बोलना।
12.	पृथ्	प्रक्षेप – फेंकना
13.	चह्	परिकल्पनम्– निर्णय करना, स्थिर करना, फैसला करना, निकालना, अविष्कार करना, जुटाना, सम्पन्न करना।
14.	रह्	त्याग– छोड़ना, ग्रहण न करना।
15.	बल्	प्राणन– जीवन, जीवित रहना, जीवधारण करना।
16.	चिञ्	चयन– बटोरना, इकटठा करना, एकत्रित करना।
17.	पूज्	पूजा– पूजन करना।
18.	तिज	निशान– तीक्षीकरण, चाकू इत्यादि की धार धराना।
19.	कृत्	संशब्दन– चरमर शब्द होना, या चूंचि शब्द होना या अस्पष्ट शब्द होना।
20.	चित्	संचेतन– भलीभांति संज्ञान में आना या जानकारी होना या जानना।
21.	दशि	दंशन– दांत से काटना या डसना।
22.	निष्क	परिमाण– मापने का बटखरा।
23.	शम	आलोचन– अच्छी तरह से देखना या परिष्कृत करना, गुणदोष का विचार करना।
24.	गृ	विज्ञान– विशिष्ट ज्ञान या विशेष जानकारी या समझ
25.	विद	चेतना– संज्ञान में रहना।
		आख्यान– प्रकथन, अच्छी तरह से कहना।
		निवास– आवास, रहने का स्थान, विश्राम स्थल, ठहरने की जगह
26.	यु	जुगुप्सा– निन्दा, घृणा, वीभत्सा, नापसन्दी
27.	कुस्म	कुत्सित– निंदित, घृणित।
28.	बुक्क	भक्षण, भषण– खाना, चबाना। बकना, लम्बी चौड़ी बातें करना
29.	जसु	ताडन– मारना, पीटना, हत्या, बध करना।
30.	पश्	बन्धन– बांधना, जकड़ना।
31.	स्फुट्	भेदन– अलग करना, भेद डालना
32.	घुषिर	विशब्दन– शब्द के माध्यम से अपने अभिप्राय या अर्थ को कहना या घोषणा करना।
33.	तसि	भूष, अलंकरण– अलंकृत होना, संजना, विभूषित होना, अलंकारों से सुसज्जित

		होना।
	ज्ञा	नियोग–किसी काम में लगना, उपभोग प्रयोग
	तुल	उन्मान– तौल करना, नापना
	तिल	स्नेह– चिकनापन
	पाल	रक्षण– देखभाल करना
	ज्ञप	ज्ञान–ज्ञापन, जानकारी प्रकाशन
	तड	आघात– प्रहार करना
	खड–खडि	भेदन– खण्डन करना, टुकड़ा
	अम	रोग व्याधि
	कृप	कल्पना
34.	आङःक्रन्द	सातत्य– निरन्तरता, हमेशा व्यवधान, शून्यता
35.	वृञ्	आवरण– टंकना, छिपाना, दिखाई न पड़ना।
36.	जृ	व्योहानि– बुढापा, बुढ़ाई
		ग्रन्थ– बन्धन, बांधना।
37.	अर्द	हिंसा– मारना, पिटना, हत्या, बध करना।
38.	हिसि	हिंसा– मारना, पिटना, हत्या और बध करना।
39.	अर्ह	पूजा– पूजन, सम्मान, आदर
40.	आङःषद्	पद्यर्थ– पद रचना, श्लोक रचना।
41.	धूञ्	कम्पन्न– हिलना, डुलना, कंपकपी होना।
42.	वद्	सन्देश बचन– सूचना शब्द या वाक्य
43.	बच	परिभाषण– वार्तालाप, प्रवचन, निन्दा, झिडकी, कलंक, गाली
44.	मान	पूजा– पूजन, सम्मान, आदर
45.	गर्ह	विनिन्दन– ग्रहण क्रने न योग्य विशिष्ट निंदित अग्राहय
46.	मार्ग	अन्वेषण– अनुसंधान, खोजना।
47.	मृज्	शोच– साफ करना, शुद्ध करना।
		अलंकार– सुशोभित होना, अलंकृत होना, सजना।
48.	मृष	तितिक्षा– सहन शक्ति, सहिष्णुता
49.	कथ	वाक्य प्रबन्ध– कथा, कहानी, उपाख्यान
50.	गण	संख्यान– गणना करना, गिनना, संख्या करना।
51.	पत	गति– अधोगमन, नीचे जाना।
52.	रच	प्रतियत्न– प्रयास, उद्योग, चेष्टा, तैयारी
53.	कल	गति– ज्ञान, मोक्ष प्राप्ति गमन।
54.	चह	परिकल्पन– दम्भ, घमण्ड, अभिमान, गर्व, शठता, कंजूसपन।
55.	गवेष	मार्गण– अन्वेषण, खोज
56.	समाज	प्रीति– प्रसन्नता, प्रेम, लगाव, स्नेह
57.	सूच	पैशुन्य– चुगली, इधर उधर की बात लगाने वाला या करने वाला बदनामी
58.	कुमार	क्रीडा– खेल
59.	ऊन	परिहाण– मखौल, मजाक, हंसी, ठट्ठा।
60.	ध्वन्	शब्द– उच्चारण
61.	पद	गति– ज्ञान, मोक्ष प्राप्ति, गमन
62.	गृह	ग्रहण– लेना, स्वीकार करना
63.	सूत्र	वेष्टन– लपेटना, बांधना, वेष्टित करना।

64.	पार	कर्म समाप्ति– कर्म का समापन
65.	कत्र, कर्तृ	शैथिल्य– शिथिलता, आलस्य
66.	चित्र	चित्रीकरण– आखेख्यकरण, चित्रकारी करना, फोटो बनाना, शिल्पीकरण।
67.	मिश्र	सम्पर्क– मिलना।
68.	संग्राम	युद्ध– लड़ाई, मारपीट
69.	दण्ड	दण्डनिपातन– दण्ड देना।
70.	सुख	सुख क्रिया– सुख के अनुकूल कार्य करना।
71.	दुःख	दुःख क्रिया– दुख के अनुकूल कार्य करना।
72.	रस	आस्वादन– चखना, स्वाद लेना।
		स्नेह– चिकना, प्रेम
	मह–पूजा	पूजन करना, सम्मान करना ।
	स्पृह	ईप्सा– प्राप्त करने की इच्छा करना, कामना ।
	अर्ध	उपयाञ्या– मांगना, प्रार्थी
	गर्व	मान– आदर करना सम्मान, प्रतिष्ठा
	मूत्र	प्रसवरण– वह निकलना, उमड़ना, टपकना ।
	पुट	संसर्ग– मिलना, सम्बन्ध ।
73.	व्यय	वित्त समुत्सर्ग– धन का खर्च करना, धन का त्याग करना।
74.	रूप	रूप क्रिया– रूप देखना, रूप बनाना।
75.	छेद	द्वैधीकरण– दो भाग करना या दो खण्ड या टुकडे करना।
76.	वर्ण	वर्ण किया–. वर्णन करना।
		वर्ण विस्तार– फैलाना, सोना को फैलाता है।
77.	वर्णागुणविचार–	कथना का कहना।
78.	गालोडिक	वाणीविभर्श– वाफ का विवेचन।
79.	अन्ध	दृष्टुपद्यात– आँख के प्रकाश का चला जाना
80.	अङ्क	पद या लक्षण– पैर चिन्ह
81.	व्रण	गात्रविचूर्णन– घाव, क्षत्र, चोट, जख्म
82.	सुख	सुख क्रिया– सुख के अनुकूल कार्य करना ।
83.	दुःख	दुःख क्रिया–दुःख के अनुकूल कार्य करना ।
84.	रस	आस्वादन–चखना, स्वाद लेना ।
.		स्नेह, चिकना, प्रेम ।

●

अथ णिजन्त

सं0	क्रिया—प्रयोग	अर्थ
1.	भावयति	होवाया जाता है।
2.	भावयते	होवाया जाता है।
3.	भावयाम्बभूवः	होवाये गये थे।
4.	अबीभवत्	होवाया हुआ
5.	अपीपवत्	पवित्र कराया गया
6.	अमीभवत	बांधा गया
7.	अयीयवत	मिश्रणा मिश्रण होवाया गया या कराया गया
8.	अरीखत्	शब्द करवाया गया
9.	अलीलवत्	छेदन करवाया गया
10.	अजीजवत्	तेज करवाया गया
11.	असिस्रवत, असुस्तवत्	गमन कंराया गया
12.	अशशासत्	अनुशासित कराया गया
13.	अशिश्रवत, अशुश्रवत्	सुनवाया गया
14.	अदिद्रवत, अदुद्रवत	गमन कराया गया
15.	अपिप्रवत्, अपुप्रवत्	गमन कराया गया
16.	अपिप्लवत्, अपुप्लवत्	मनन या उड़वाया गया
17.	अचिच्यवत्, अचुच्वयत्	गमन कराया गया या सहन कराया गया।
18.	अडुढौकत्	गमन कराया गया
19.	अचीचकाशत्, अचचकाशत्	प्रकाश कराया गया
20.	अचूचुरत	चोरी करवाया गया
21.	अशूशवत् अशिशवत्	गमन या वृद्धि कंराया गया
22.	अवातस्तम्भत्	अवरोध या स्तम्भित कराया गया
23.	पर्यसीषिवत्	विनवाया गया
24.	न्यसीषहत्	सहन करवाया गया
25.	आटिट्त्	भ्रमण करवाया गया
26.	आशिशत्	भोजन करवाया गया व्याप्त या समूह करवाया गया
27.	औन्दिदत्	दुःख करवाया गया क्लेद पहंचवाया गया
28.	आड्डित्	अभियोग करवाया गया
29.	आर्चिचत्	पूजा करवाया गया
30.	औब्जिजत्	सीधापन या सरलता करवाया गया
31.	अदिद्रपत	निंदित करवाया गया
32.	अररम्भत्	आरम्भ करवाया गया
33.	अललम्भत्	प्राप्त करवाया गया
34.	अजीहयत्	गमन या वर्धन करवाया गया
35.	असस्मरत्	स्मरण करवाया गया
36.	अददरत्	विदीर्ण करवाया गया
37.	अववेष्टत्—अविवेष्टत्	घेरवाया गया

38.	अचचेष्टत्–अचिचेष्टत्	चेष्टा करवाया गया
39.	अबिभ्रजत, अबभ्राजत	प्रकाशित करवाया गया
40.	अचीकणत् अचकाणत्	गमन या वन्द करवाया गया
41.	अरीरणत्–अरराणत्	गमन कराया गया
42.	अबीमणत्–अबभाणत्	शब्द बोलवाया गया
43.	अशिश्रणत्–अशशाणत्	दान करवाया गया
44.	अलूलुपत्–अलुलोपत्	मोहित करवाया गया
45.	अजीहिठत् अजिहेठत्	शठता करवाया गया
46.	अजूहवत्–अजुहावत्	स्पर्धा या ईर्ष्या करवाया गया
47.	अबीवणत्–अववाणत्	बोलवाया गया
48.	अलूलुठत्–अलुलोठत्	घात करने वाले से घात करवाया गया
49.	अलीलपत्–अललापत्	वक्ता करवाया गया
50.	अचीचणत्–अचचाणत्	दान करवाया गया
51.	अलूलुटत–अलुलोटत्	चोरी करवाया गया
52.	असूषुपत्	सुलवाया गया
53.	शाययति	पतला करवा रहा है।
54.	छाययति	छेदन करवाया जा रहा है।
55.	साययति	कर्म करवाया जा रहा है।
56.	ह्णाययति	ईष्या या शब्दोच्चारण करवाया जा रहा है।
57.	व्याययति	संवरण करवा रहा है या निगल रहा है।
58.	अजूहवत्–अजुहावत्	स्पर्धा या शब्दोच्चारण करवाया
59.	अपीप्यत्	पीलवाया गया
60.	अर्पयति	गमन और प्राप्त करवाता है।
61.	ह्रेपयति	लजवाता है।
62.	व्लेपयति	टुकडे–टुकड़े करवाता है या पकड़वाता है।
63.	रेपयति	क्षय या विनाश करवांता है।
64.	क्नोपयति	शब्दों का उच्चारण करवाता है।
65.	क्ष्मापयति	उथल पुथल करवाता है।
66.	स्थापयति	बैठवाता है।
67.	अतिष्ठिपत्	बैठवाया गया।
68.	अजिघ्रिपत्–अजिघ्रपत्	सूंघवाया गया।
69.	अचीकृतत्–अचीकीर्तत्	अच्छी तरह से शब्द करवाता है।
70.	अवीवृतत्–अववर्तत्	ठहरवाया गया था
71.	अभीमृजत्–अभमार्जत	पवित्र और अलंकृत करवाया गया।
72.	पालयति	पांलन या रक्षण करवाता है।
73.	वाजयति	कम्पन करवाता है या उथल पुथल करवाता है।
74.	वापयति	सुगन्धित करवाता है।
75.	विलीनयति	आलिंगन करवाया जा रहा है या पिघलवाया जा रहा है।
76.	विलापयति– विलालयति–विलापयति	स्वीकार करवाया जा रहा है या पिघलवाया जा रहा है।
77.	जटाभिर्लापयते	जटा से पूजा को प्राप्त हो रहा है।
78.	उल्लापायते	अभिनव और वञ्चना करवाया जा रहा है।

79.	मुण्डोभापयते	मुण्ड या भयभीत करवा रहा है।
80.	भीषयते	भयभीत करा रहा है।
81.	जटिलोविस्मापयते	जटाधारी अल्पहंसी करा रहा है।
82.	कुञ्चिकयैनं भाययति	बाल बांधने वाली कुञ्चिका से इसको डेरवा रहा है
83.	स्फावयति	वृद्धि करा रहा है।
84.	शातयति	तेज करवा रहा है कटवा रहा है या विनाश करवा रहा है।
85.	शादयति	हांकवा रहा है या ले जा रहा है।
86.	रोपयति–रोहयति	बीज की बोआई करवा रहा है।
87.	क्रापयति	द्रव्य को बदलवा रहा है।
88.	अध्यापयति	पढ़ा रहा है।
89.	जापयति	जीतवा रहा है।
90.	अध्यजीगपत्	अध्यापन कर रहा था।
91.	अध्यापिपत	अध्यापन कर रहा था या करा रहा था।
92.	अन्नंसाधयति	अन्न का निष्पादन करा रहा है।
93.	तापसः सिध्यति	तापस सार वस्तु को निश्चय कर रहा है।
94.	सेधयति तापसं तपः	तप तपस्वी को सिद्ध करवा रहा है।
95.	वापयति–वापयतिग्मः पुरोवातः	पुरोवात समय से गाय को गर्भधारण करवा रहा है।
97.	गूहयति	संवरण या छिपा रहा है।
98.	दूषयति	दूषित या विकृत करा रहा है।
99.	चितंदूषयति दोषयति वा कामः	इच्छा मन को अप्रीतता या पप्रतीति करा रहा है। अर्थात स्नान संध्या वन्दन इत्यादि नित्य कर्मों में काम मन को दूषित कर रहा है।
100.	घटयति	चेष्टा करवा रहा है।
101.	जनयति	उत्पन्न या प्रादुर्भाव करा रहा है।
102.	जरयति–जारयति	वृद्धापन हो रहा है।
103.	रञ्जयति पक्षिणः	पक्षियां पकड़ी जा रही है।
104.	रजयतिमृगान्	मृगों का शिकार बना रहा है।
105.	रञ्जयतिमृगान	घातक घास देने से मृगों को रञ्जित करा रहा है।
106.	चययति–चययति	चयन या एकत्र कराता है।
107.	चापयति–चाययति	चयन या एकत्र कराता है।
108.	स्फारयति–स्फोरयति	सञ्चलन या स्फुरण कराया गया।
109.	अपुस्फरत्–अपुस्फुरत	सञ्चलन या स्फुरण करा गया
110.	प्राणिणत्	जीवन जीलवाया गया था।
111.	गमयति	भेजवाया है या गमन कराया है।
112.	अधिगमयति	प्राप्त कराया गया है।
113.	प्रात्याययति	बोध कराया गया
114.	धातयति	मारा गया है या मरवाया जा रहा है।
115.	ईर्ष्ययति	ईष्याभाव कराया जा रहा है।
116.	ऐर्षियत्–ऐर्षिष्यत्	ईष्याभाव कराया गया था।

●

अथ सनन्त

सं०	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1.	पिपठिषति	पढ़ने की इच्छा करता है।
2.	जिघत्सति	भक्षण करने की इच्छा करता है।
3.	ईर्ष्यियतिषति— ईर्ष्यिषिषति	द्रोह या अपकार करने की इच्छा करता है।
4.	रुरूदिषति	रोने की इच्छा करता है।
5.	विविदिषति	जानने की इच्छा करता है।
6.	मुमुषिषति	चुराना चाहता है।
7.	जिघृक्षति	ग्रहण करने की इच्छा करता है।
8.	सुषुप्सति	शयन करने की इच्छा करता है।
9.	पिपृच्छिषति	पूछने या प्रश्न करने की इच्छा करता है।
10.	चिकरिषति	इधर उधर फेकना चाहता है।
11.	जिगरिषति	निगलना चाहता है।
12.	जिगलिषति	निगलना चाहता है।
13.	दिदरिषते	सम्मान करना चाहता है।
14.	दिघरिषते	खड़ा होना, रहना या बसना चाहता है।
15.	बुभूषति	सत्ता होने की या उत्पन्न होने की इच्छा करता है।
16.	दिदीषते	क्षय होना चाहता है या देना चाहता है।
17.	जुघुक्षति	संवरण या समेटना चाहता है।
18.	विभित्सति	भेदन करना या काटना चाहता है।
19.	यियक्षते	पूजा करने की इच्छा करता है।
20.	विवर्धिषते	बढ़ाना चाहता है या बढ़ने की इच्छा करता है।
21.	तितृंहिषति	हिंसा करने की इच्छा करता है।
22.	जिगीषति	जीतने की इच्छा करता है।
23.	चिकीषति—चिचीषति	एकत्रित करना चाहता है।
24.	जिंघासति	मारना या हिंसा करना चाहता है।
25.	जिगमिषति	जाना या गमन करना चाहता है।
26.	प्रतीषिषति	बोध करने की इच्छा करता है।
27.	अधिजिगमिषति	जाने की इच्छा करता है।
28.	जिगांस्यते, अधिजिगांस्यते	गमन करने की इच्छा करता है।
29.	अधिजिंगासते	पढ़ने की इच्छा करता है।
30.	दिद्युतिषते, दिद्योतिषते	प्रकाश होना चाहता है।
31.	रूरुचिषते, रूरोचिषते	प्रकाश करने की इच्छा करता है या अच्छा लगने की इच्छा करता है।

32.	लिलिखिषति, लिलेखिषति	लिखने की इच्छा करता है।
33.	दिदेविषति	क्रीडा या खेलने की इच्छा करता है।
34.	विवर्तिषते	विद्यमान में रहने की इच्छा करता है।
35.	एषिषिषति	जाने की इच्छा करता है या इच्छा करने के लिए इच्छा करता है।
36.	दुधूषति–दिदेविषति	क्रीडा या खेलने की इच्छा करता है।
37.	सुस्यूषति–सिसेविषति	बीनना चाहता है।
38.	ईर्प्सति	व्यापक होने की इच्छा करता है।
39.	ईर्त्सति–अर्दिधिषति	बढ़ने की इच्छा करता है।
40.	विभ्रज्जिषति, विभ्रक्षति, विभर्जिषति विभर्क्षति–	पकाने की इच्छा करता है।
41.	धिप्सति, धीप्सति, दिदम्भिषति	अभिमान करना चाहता है।
42.	शीश्रीषति–शिश्रयिषति	सेवा करने की इच्छा करता है।
43.	सुस्वूर्षति–सिस्वरिषति	शब्द करने की इच्छा करता है।
44.	युयूषति–यियविषति	मिश्रणा मिश्रण करना चाहता है।
45.	ऊर्णुनूषति, ऊर्णुनुविषति, ऊर्णनविषति	ढकने की या आच्छादन करने की इच्छा करता है।
46.	बुभूर्षति, बिभरिषति	निन्दा करने की इच्छा करता है या भरण पोषण करने की इच्छा करता है।
47.	ज्ञीप्सति, जिज्ञपयिषति, जिज्ञापयिषति	ज्ञापन या विज्ञापन करने की इच्छा करता है।
48.	सिषासति, सिसनिषति	दान देने की इच्छा करता है।
49.	तितांसति, तितंसति, तितनिषति	विस्तार या फैलाव करने की इच्छा करता है।
50.	मुमूर्षति	मरने की इच्छा कर रहा है।
51.	पिपतिषति–पित्सति	गिरना चाहता है।
52.	दिदरिद्रिषति– दिदरिद्रासति	दुर्गति करने की इच्छा करता है।
53.	मित्सति, मित्सते	फेकने या प्रक्षेय करने की इच्छा करता है या हिंसा करने की इच्छा करता है।
54.	मित्सति, मित्सते	नाप करना चाहता है।
55.	दित्सति	टुकड़ा–टुकड़ा करना चाहता है।
56.	दित्सते	रक्षण करना चाहता है।
57.	दित्सति	दान करने की इच्छा करता है।
58.	दित्सते	दान करने की इच्छा करता है।
59.	धित्सति	पान करने की इच्छा करता है।
60.	धित्सति–धित्सते	धारण पोषण और दान करने की इच्छा करता है।
61.	रिप्सते	शीघ्रता करना चाहता है।

62.	लिप्सते	प्राप्त करना चाहता है।
63.	शिक्षति	शक्तिमान होना चाहता है।
64.	शिक्षति–शिक्षते	सहन करने की इच्छा करना चाहता है।
65.	पित्सति	जाने की इच्छा करता है।
66.	पित्सते	गमन करने की इच्छा करता है।
67.	रित्सति	हिंसा करना चाहता है।
68.	आरिरात्सति	सम्यक रूप से सिद्ध करना चाहता है।
69.	मोक्षते–मुमुक्षते	मोक्ष या मुक्त होने की इच्छा करता है।
70.	विवृत्सति–विवर्तिषते	रहने की इच्छा करता है।
71.	निनर्तिषति–निनृत्सति	नाचने की इच्छा करता है।
72.	तितरिषति–तितरीषति, तितीर्षति	तैरना चाहता है।
73.	विवरिषति–विवरीषति, विवूर्षति	वरंण करने की इच्छा करता है।
74.	वुवूर्षते, विवरिषते	बांटना चाहता है हिस्सा लेना, लेना चाहता है अधिकार करना चाहता है।
75.	दुध्वूर्षति	कुटिलता करने की इच्छा करता है।
76.	सिस्मयिषते	मुस्कराना चाहता है।
77.	पिपविषते	पवित्र होने की इच्छा करता है।
78.	अरिरिषति	जाने की इच्छा करता है या प्राप्त करने की इच्छा करता है।
79.	अञ्जिजिषति	जाने की इच्छा करता है।
80.	अशिशिषते	व्यापक बनना चाहता है अथवा भोजन करने की इच्छा करता है।
81.	प्राणिणिषति	जीने की इच्छा करता है।
82.	उचिच्छिषति	निकालने की इच्छा करता है।
83.	अधिजिगापयिषति	पढवाने की इच्छा करता है।
84.	अध्यापिपयिषति	पढ़वाने की इच्छा करता है।
85.	शिश्वाययिषति, शुशवयिषति	गतिमान होना चाहता है बढना चाहता है।
86.	जुहावयिषति	शब्दोच्चारण करवाना चाहता है या प्रतिद्वन्दता अथवा होड़ करवाना चाहता है।
87.	पुस्फारयिषति	फरकवाना चाहता है।
88.	चुक्षावयिषति	शब्द करवाना चाहता है या बोलवाना चाहता है।
89.	पिपावयिषति	पवित्र करवाने की इच्छा करता है।
90.	रिरावयिषति	शब्दोच्चारण करवाना चाहता है।
91.	लिलावयिषति	कटवाना या फड़वाना चाहता है।
92.	जिजावयिषति	अतिवेग से जाने की इच्छा करवाना चाहता है।
93.	नुनावयिषति	स्तुति करवाने की इच्छा करता है।
94.	बुभूषति	हाने की इच्छा करता है।

95.	सिस्नावयिषति, सुस्नावयिषति	गमन क्रिया करवाने की इच्छा करता है।
96.	शुश्रुषते	सुनने की इच्छा करता है।
97.	तुष्टुषति	स्तुति करने की इच्छा करता है।
98.	सुष्वापयिषति	सुलवाने शयन करवाने की इच्छा करता है।
99.	सिषाधयिषति	सिद्ध करवाने की इच्छा करता है।
100.	सिसिक्षति	सिचने की इच्छा करता है।
101.	परिषिषिक्षति	चारो तरफ सिचने की इच्छा करता है।
102.	तिष्ठासति	बैठने या ठहरने की इच्छा करता है।
103.	सुषुप्सति	सोने की इच्छा करता है।
104.	प्रतीषिषति	जाने के प्रति इच्छा करता है।
105.	अधीषिषति	स्मरण करने की इच्छा करता है।
106.	सिस्वेदयिषति	स्नेह और मोचन करने की इच्छा करता है। या अस्पष्ट या शरीर का प्रक्षेपण करना चाहता है।
107.	सिस्वादयिषति	अस्वादन करवाने की इच्छा करता है।
108.	सिसाहयिषति	तृप्त करवाने की इच्छा करता है।
109.	अभिसुसूषति	चारो तरफ से प्रेरणा लेना चाहता है।
110.	जुगुप्सिषते	गुप्त रखने की इच्छा करता है या व्याकुल होना चाहता है या रक्षा करने की इच्छा करता है।
111.	मीमांसिषते	विचार करने की इच्छा रखता है।

●

अथ यङ्न्त

सं0	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1.	बोभूयते	बार–बार या पुनः–पुनः होता है।
2.	बोभूयाञ्चक्रे	पुनः पुनः हुआ था।
3.	अबोभूयिष्ट	पुनः पुनः हुआ
4.	रोरूच्यते	बार बार दीप्त हो रहा है या बार–बार प्रेम कर रहा है।
5.	सोसूच्यते	बार–बार चुगली करता है।
6.	सोसून्यते	बार बार या पुनः पुनः बांध रहा है या लपेट रहा है।
7.	मोमून्यते	अधिक प्रसवित या बार बार चू रहा है।
8.	सोसूचाञ्चक्रे	बार–बार चुगुली किया था।
9.	सोसूविता	बार बार या अधिक चुगुली करेगा।
10.	सोसूत्रिता	बार बार बांधेगा या लपेटेगा।
11.	अटाट्यते	बार बार या पुनः पुनः जाता है।
12.	अरार्यते	पुनः पुनः प्राप्त कर रहा है या बार बार जा रहा है।
13.	अरारिता	बार बार प्राप्त करेगा या बार बार जायेगा।
14.	अशाशिता	अधिक भोजन करेगा या बार बार भोजन करेगा।
15.	ऊर्णोनूयते	पुनः पुनः आच्छादन करता है।
16.	बेभिद्यते	बार बार काटता है या अधिक काटता है।
17.	बेभिदिता	पुनः पुनः काटेगा या अधिक काटेगा।
18.	वाव्रज़्यते	पुनः पुनः टेढा होकर चलता है
19.	लोलुप्यते	बार बार या अधिक विमोहित होता है।
20.	सासद्यते	बार बार दुःखित हो रहा है।
21.	चञ्चूर्यते चंचूर्यते	बार बार या अधिक चलता है।
22.	पम्फुल्यते पंफुल्यते	बार बार या अधिक या बहुत खिलाता है।
23.	जञ्जभ्यते	शरीर को बार बार टेढा करता है।
24.	जञ्जप्यते	बार बार निदिंत जप करता है।
25.	दन्दह्यते	पुनः पुनः भस्म हो रहा है।
26.	बम्भज्यते	बार बार सेवा कर रहा है।
27.	जेगिल्यते	बार बार निगलता है।
28.	देदीयते	बार बार दान देता है।
29.	दन्दश्यते	बार बार डस रहा है।
30.	पेपीयते	बार बार पान करता है या बार बार रक्षा करता है या अधिक पीता है।
31.	सेषीयते	बार बार समापन करता है।
32.	शोशूयते–शेश्वीयते	बार बार जाता है या बार बार वृद्धि करता है।
33.	सास्मर्यते	बार बार स्मरण या याद करता है।
34.	चेक्रीयते	बार बार विक्षेप होता है या बार बार हिंसा या मारता है।
35.	सञ्जेस्कीयते	बार बार अलंकृत होता है।
36.	कोकूयते	बार बार शब्द करता है।
37.	चोकूयते	बार बार शब्द करता है।
38.	वनीवञ्चते	बार बार ठगता है।

39.	सनीस्रस्यते	बार बार ध्वंस होता है।
	शोभुम्यते	बार बार शोभित होता है ।
	मोमूत्रिता	बार बार प्रसवित होता है ।
	निसेसिच्यते	बार बार सिंचता है ।
40.	दनीध्वंस्यते	बार बार ध्वंस या नष्ट होता है या बार बार गिरता है।
41.	वनीभ्रंस्यते	बार बार गिरता है।
42.	चनीकस्यते	बार बार जाता है।
43.	पनीपत्स्यते	बार बार निरन्तर चलता है।
44.	पनीपद्यते	बार बार गमन करता है।
45.	चनीस्कद्यते	बार बार जाता है या बार बार शोषण करता है। या बार बार चूसता है।
46.	यॅय्यभ्यते–यॅयभ्यते	बार बार उपरमण करता है या बार बार सहवास करता है।
47.	बाभाभ्यते	बार बार क्रोध करता है।
48.	जाजायते–जञ्जन्यते	बार बार पैदा होता है।
49.	जेघ्नीयते	बार बार हिंसा करता है या मारता है।
50.	जंधन्यते	बार बार निंदित करता है।
51.	वरीवृत्यते	बार बार रहता है या बार बार है।
52.	नरीनृत्यते	बार बार या पुनः पुनः नाचता है।
53.	जरीगृह्यते	बार बार प्राप्त करता है या अधिक प्राप्त करता है।
54.	चलीक्लृप्यते	बार बार या अधिक सामर्थ्यशाली हो रहा है।
55.	वरीवृश्च्यते	बार बार या अधिक काटता है।
56.	सोषुप्यते	बार बार या अधिक सोता है।
57.	सेमिम्यते	बार बार या अधिक शब्द करता है।
58.	वेवीयते	बार बार आच्छान या आवरण या अधिक छिपाव करता है।
59.	वावश्यते	बार बार या अधिक इच्छा करता है।
60.	चेकीयते	बार बार पूजा, अर्चना या अधिक पूजा या अर्चना करता है या बार बार दर्शन या अवलोकन करता है।
61.	जेघ्रीयते	बार बार गन्ध को ग्रहण करता है।
62.	देध्मीयते	बार बार शब्द या अधिक शब्द अथवा बार बार अग्नि का संयोग करता है।
63.	शाशय्यते	बार बार या अधिक सोता है, बार बार या अधिक स्वप्न भी देखता है।
64.	डोढौक्यते	बार बार या अधिक जाता है।
65.	तोत्रौक्यते	बार बार या अधिक जाता है।

●

अथ यङ्लुगन्त

सं0	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1.	बोभवीति	पुनः पुनः होता है।
2.	बोभोति	बार बार होता है।
3.	बोभूतः	वह दोनो बार बार होते हैं।
4.	बोभुवति	वे सब बार बार होते हैं।
5.	बोभवाञ्चकार	बार बार हुआ था।
6.	बोभविता	पुनः पुनः या अधिक होगा।
7.	अबोभवीत्–अबोभोत्	पुनः पुनः या अधिक हुआ।
8.	अबोभूताम्	वह दोनो बार बार हुए।
9.	अबोभवुः	वे सब बार बार हुए।
10.	बोभूयात्	बार बार या अधिक होवे।
11.	बोभूयाताम्	बार बार या अधिक होवे।
12.	बोभूयास्ताम्	पुनः पुनः वह दोनो होवे
13.	अबोभूवीत्–अबोभेत्	वह हुआ था।
14.	अबोभूताम्	पुनः पुनः वह दोनो हुए थे।
15.	अबोभुवुः	वे सब बार–बार हुए थे।
16.	पास्पर्द्धिः	पुनः पुनः संघर्ष करता है।
17.	पास्पर्द्धः	वह दोनो बार संघर्ष करते हैं।
18.	पास्पर्धति	वे सब बार बार संघर्ष करते हैं।
19.	पास्पर्त्सि	तुम बार बार संघर्ष करते हो।
20.	पास्पर्धि	तुम बार बार संघर्ष करते हो।
21.	अपास्पर्त्, अपास्पर्द्	बार बार संघर्ष किया
22.	अपास्पाः	तुमने बार बार संघर्ष किया
23.	जागार्द्धिः	पुनः पुनः प्राप्त करने की इच्छा करता है या अधिक अभिलाषा करता है। अथवा बार बार प्रतिष्ठा या सम्मान करता है।
24.	जागाधिति	बार बार प्राप्त करने की इच्छा करता है या बार बार बड़ाई सम्मान करता है।
25.	जागात्सि	तुमने बार बार प्राप्त करने की इच्छा करता है।
26.	अजाधात्	बार बार प्राप्त करने की इच्छा किया या अधिक अभिलाषा किया।
27.	अजाधाः	तुमने बार बार प्राप्त करने की इच्छा किया।
28.	नानात्ति	बार बार मांगता है या याचना करता है अथवा बार बार पीड़ित या दुखित होता है।
29.	नानात्तः	दोनो बार बार मांगते है या याचना करते हैं अथवा पीड़ित या दुःखित होते हैं।
30.	दादद्धि	पुनः पुनः धारण करता है।
31.	दादद्धः	दोनो बार बार धारण करते हैं।
32.	दाधत्सि	तुम पुनः पुनः धारण करते हो।
33.	अदाधत्	वह बार बार धारण किया
34.	अदादद्धाम	वह दोनो बार बार धारण किये
35.	अदादधुः	वह सभी बार बार धारण किये।
36.	अदाधः	तुम बार बार धारण किये।

37.	अदादधीः	तुम बार बार धारण किये
38.	अदाधत्	तुम बार बार धारण किया।
39.	अदादाधीत्, अदादधीत्	बार बार धारण किया गया।
40.	चोस्कुन्दीति	नीचे की ओर बार बार झुकता।
41.	चोस्कुन्ति	वे नीचे की ओर बार बार झुकते हैं।
42.	अचोस्कुन्	नीचे की ओर बार बार झुका।
43.	अचोस्कुन्ताम्	वह दोनो बार बार नीचे की ओर झुके।
44.	अचोस्कुन्दः	वे सब बार बार नीचे की ओर झुके।
45.	मोमूदीति	बार बार हंसता है।
46.	मोमोत्ति	बार बार हंसता है।
47.	मोमोदाञ्चकार	बार बार हंसा था।
48.	मोमोदिता	बार बार हंसेगा।
49.	अमोमुदीत्, अमोमोत	बार बार हंसा।
50.	अमोमुत्तान्	वह दोनो बार बार हंसे।
51.	अमोमुदः	वे सब बार बार हंसे।
52.	अमोमुदीः, अमोमोः, अमोमोत्	तुम बार बार हंसे।
53.	अमोमोदीत्	बार बार हंसा था।
54.	चोकूर्ति	पुनः पुनः खेलता है।
55.	चोकूदीर्ति	बार बार क्रीडा करता हैं।
56.	अचोकूर्त्–अचोकुर्दीत्	पुनः पुनः क्रीडा करता है।
57.	अचोकूः	तुमने बार बार क्रीडा किया।
58.	अचोखूः	तुमने बार बार क्रीडा किया।
59.	अजोगूः	तुमने बार बार क्रीडा किया।
60.	वनीवञ्चीति, वनीवङ्क्ति	बार बार गमन करता है।
61.	वनीवक्तः	वह दोनो बार बार गमन करते हैं।
62.	वनीवचति	वे सब बार बार गमन करते हैं।
63.	अवनीवञ्चीत्	पुनः पुनः गमन किया है।
64.	अवनीवन्	वे सब बार बार गये।
65.	जङ्गमीति	बार बार जाता है।
66.	जङ्गन्ति	बार बार जाता है।
67.	जङ्गतः	वह दोनो बार बार जाते हैं।
68.	जङ्गमति	वह सब बार बार जाते हैं।
69.	जङ्गन्मि	बार बार जाता है।
70.	जङ्गन्वः	हम दोनो बार बार जाते हैं।
71.	जङ्गमिता	बार बार जायेगा।
72.	जङ्गहि	बार बार जाओ।
73.	अजङ्गन्	बार बार वे गये।
74.	अजङ्गमीत्	बार बार गया था।
75.	अजङ्गमिष्टाम्	बार बार वह दोनो गये थे।
76.	जङ्धनीति, जङ्धन्ति	बार बार हनन करता है।

77.	जङ्घतः	वह दोनो बार बार मारते हैं।
78.	जङ्घनति, जङ्घ्नति	वे सब बार बार मारे जाते हैं।
79.	जङ्घनिता	बार बार मारेगा।
80.	अजङ्घनीत्	बार बार मारा गया।
81.	अजङ्घन्	वे सब बार बार मारे गये।
82.	जङ्घन्यते	बार बार हनन होता है।
83.	वध्यात्	बार बार मारे जावे।
84.	अवधीत्	बार बार मारा गया था।
85.	अवधिष्टाम्	वह दोनो बार बार मारे गये थे।
86.	चञ्चुरीति–चञ्चूर्ति	बार बार जाता है या बार बार भक्षण करता है।
87.	चञ्चूर्तः	दोनो बार बार जाते है या बार बार भक्षण करते हैं।
88.	चुञ्चुरति	वे सब बार बार जाते हैं या बार बार भक्षण करते हैं।
89.	अचुञ्चुरीत्	बार बार गया था या बार बार भक्षण किया था।
90.	अचञ्चूः	वे सब बार बार गये या बार बार भक्षण किये।
91.	चङ्खनीति	बार बार फाड़ता है, काटता है और खोदता है।
	चङ्घन्ति	बार बार फाड़ता है, बार बार काटता है, बार बार खोदता है।
92.	चङ्खातः	वह दोनो बार बार फाड़ते हैं, काटते हैं और खोदते हैं।
93.	चङ्ख्नति	वे सब बार बार फाड़ते है, काटते है और खोदते हैं।
94.	चङ्खाहि	बार बार फाड़ो, बार बार काटो और बार बार खोदो।
95.	चङ्खनानि	मैं बार बार फाड़ू, बार बार काटूं और बार बारु खोदूं।
96.	अचङ्नीत्	बार बार फाड़ा, बार बार काटा और बार बार खोदा।
97.	अचङ्खन्	बार बार, फाड़े, काटे, खोदे।
98.	अचङ्खाताम्	वह दोनो बार बार फाड़े, बार बार काटे और बार बार खोदे।
99.	अचङ्ख्नुः	वे सब बार बार फाड़े, बार बार काटे और बार बार खोदे।
100.	चङ्खायात्–चङ्खन्यात्	बार बार फाडे, बार बार खोदे या बार बार काटे।
101.	अचङ्खनीत्– अचङ्खानीत्	बार बार फाड़ा था, बार बार काटा था या बार बार खोदा था।
102.	योयोति, योयवीति	बार बार मिला है या बार बार मिश्रण नहीं करता है।
103.	अयोयवीत्, अयोयोत्	बार बार मिलाया गया या बार बार नहीं मिलाया गया।
104.	योयुयात्	बार बार मिलावे या न मिलावे
105.	योयूयात्–(आ)	बार बर मिलावें या न मिलावें।
106.	अयोयावीत्	बार बार मिलाया था या नही मिलाया था।
107.	नोनवीति–नोनोति	बार बार स्तुति करता है।
108.	जाहेति–जाहाति	बार बार जाता है या बार बार त्याग करता है यां बार बार छोड़ता है।
109.	जाहीतः	बार बार वह दोनों जाते हैं या बार बार छोडते हैं अथवा त्याग करते हैं।
110.	जाहति	वे सब बार बार जाते हैं या बार बार छोड़ते हैं या बार बार त्याग करते हैं।
111.	जहासि–जाहेषि	तुम बार बार जाते हो या बार बार त्याग या छोड़ते हो।
112.	जाहीथः	तुम दोनों बार बार जाते हो या बार बार त्याग या छोडते हो।
113.	जाहीथ	तुम सब बार बार जाते हो, त्याग करते हो या छोड़ते हो।
114.	जाहीहि	बार बार जाओ, बार बार त्याग करो या बार बार छोड़ो।
115.	अजाहेत्, अजाहात्	बार बार गया या बार बार त्याग किया।

116.	अजाहीताम	वह दोनो बार बार गये या बार बार त्याग किये या छोड़े।
117.	अजाहुः	वे बार बार गये या बार बार त्याग किये।
118.	जाहीयात्	वे बार बार जावे या बार बार त्यागें।
119.	जाहायात्–(आ)	बार बार जाय या बार बार त्याग करे।
120.	अजाहासीत्	बार बार गया था या बार बार त्याग किया था या बार बार छोड़ा था।
121.	अजाहासिष्टाम्	वह दोनों बार बार गये या बार बार छोड़े या बार बार त्याग किये।
122.	अजाहिष्यत्	बार बार जाना होगा या बार बार त्यागना होगा या बार बार छोड़ना होगा।
123.	सास्वपीति–सास्वप्ति	बार बार शयन करता है।
124.	सास्वप्तः	वह दोनों बार बार शयन करते हैं।
125.	सास्वपति	वे सब बार बार शयन करते हैं।
126.	अस्वास्वपीत्	बार बार शयन किया।
127.	अस्वास्वप	बार बार शयन किया।
128.	सास्वप्यात	बार बार शयन करें।
129.	सासुप्यात्	बार बार सोया जाय।
130.	अस्वास्वापीत्– अस्वास्वपीत्	बार बार सोया था।
131.	ववृतीति–वरिवृतीति– वरीवृतीति	बार बार है या पुनः पुनः हैं।
132.	वर्वति–परिवर्ति– वरीवर्ति	बार बार वरण करता है।
133.	ववृतः–वरिवृतः– वरीवृतः	वह दोनो ने बार बार वरण किये।
134.	ववृतति–वरिवृतति– वरीवृतति	वे सब बार बार रहते हैं।
135.	वर्वतामास–वरिवर्तामास– वरिवर्ताभास–	बार बार था
136.	वर्वर्तिता–वरिवर्तिता– वरिर्वर्तिता	बार बार रहेगा।
137.	वर्वतिष्यति–वरिवर्तिष्यति– वरीवर्तिष्यति	बार बार रहेगा या होगा।
138.	अवर्वृतीत्, अवरिवृतीत, अवरीवृतीत्	वह बार बार रहा था।
139.	अवर्वतत्, अवरिवर्त, अवरीवर्त	पुनः पुनः वरण किया।
140.	अवर्वाः–अवरिवाः– अवरीवाः	तुमने बार बार वरण किया।
141.	अवर्वर्तीत्–अवरिवर्तीत्– अवरीवर्तीत्	बार बार वरण किया था।
142.	चर्करीति–चर्कति– चरिकर्ति–चरीकर्ति	पुनः पुनः करता है।
143.	चर्कृतः	वह दोनो बार बार करते हैं।

144.	चर्क्रति	वे सब बार बार करते हैं।
145.	चर्कराञ्चकार	बार बार किया था।
146.	चर्करिता	बार बार करेगा।
147.	अचर्करीत्	बार बार किया था।
148.	अचकः	तुमने बार बार किया था।
149.	चर्कृयात्	बार बार करें।
150.	चक्रियात्	बार बार किये जाय।
151.	अचर्कारीत्	बार बार किया था।
152.	चाकर्ति	बार बार इतस्ततः फेकता है।
153.	चाकीर्तः	वह दोनों बार बार इधर उधर फेकते हैं।
154.	चाकरति–	वे सब बार बार इधर उधर फेकते हैं।
155.	चाकरीति	बार बार इधर उधर फेंकता है।
156.	चकीर्तः	वह दोनों बार बार इधर उधर फेंकते हैं।
157.	चाकरति	वे सब बार बार इधर उधर फेंकते हैं।
158.	चाकराञ्चकार	बार बार फेंका था।
159.	चाकरीता	बार बार फेंका जायेगा।
160.	चकर्तु–चाकीर्तात्– चकिरतु	बार बार फेंके।
161.	चार्कीर्हि	तुम बार बार फेंको।
162.	चाकिराणि	मैं बार बार फेंकूं।
163.	अचाकरीत्	बार बार इधर उधर फेंका गया।
164.	अचाकः	बार बार इधर उधर फेंका।
165.	अचाकीर्ताम्	वह दोनों बार बार इधर उधर फेंके।
166.	अचाकरूः	वे सब बार बार इधर उधर फेंकें।
167.	चाकीर्यात्	बार बार इधर उधर फेंके जाय।
168.	चाकीर्याताम्	बार बार इधर उधर फेकें।
169.	चाकीर्यास्ताम्	वह दोनो बार बार इधर उधर फेकें।
170.	अचकारीत्	बार बार फेंका गया था।
171.	अचाकरिष्टाम्	वह दोनो बार बार इधर उधर फेंके थे।
172.	तातर्ति	बार बार तैरता या स्नान करता है या बार बार गोता लगाता है या बार बार पार होता है।
173.	तातीर्तः	बार बार वह दोनो तैरते या स्नान करते हैं या बार बार गोता लगाते या बार बार पार होते हैं।
174.	तातिरति	वे सब बार बार तैरते है या स्नान करते है या बार बार गोता लगाते है या बार बार पार होते हैं।
175.	तातीर्हि	तुम बार बार तैरो या बार बार स्नांन करो या बार बार गोता लगाओ या बार बार पार करो।
176.	तातराणि	बार बार तैरू या बार बार पार होऊ या बार बार गोता लगाऊ या बार बार स्नान करूं।
177.	अतातरीत	बार बार तैराकी किया या बार बार स्नान किया या बार बार पार किया या बार बार गोता लगाया।

179.	अतातीर्ताम्	वह दोनो बार बार तैर किये गोता लगाये स्नान किये और बार बार पार किये।
180.	अतातरूः	वे सब बार बार तैर किये, स्नान किये, गोता लगाये या बार बार पार किये।
181.	अतातारीत्	बार बार पार किया था, स्नान किया था, गोता लगाया था या बार बार पार किया था।
182.	अतातरिष्टाम्	वह दोनो बार बार तैरे थे, स्नान किये, गोता लगाये थे या बार बार पार किये थे।
183.	अरति–अरियर्ति– अररीति–अरियरीति	बार बार प्राप्त करता है या बार बार जाता है।
184.	अर्त्रृतः–अरियृतः–	वह दोनो बार बार जाते हैं या बार बार प्राप्त करते हैं।
185.	आरति–अरिग्रति	वे सब बार बार जाते हैं या बार बार प्राप्त करते हैं।
186.	अरियात्–आरिप्रियात्	बार बार प्राप्त करें या बार बार जायें।
187.	आरारीत्–अरियारीत	बार बार प्राप्त किया था या बार बार गया था।
188.	जर्गृहीति, जर्गढि	बार बार ग्रहण करता हैं।
189.	जर्गृढः	वह दोनों बार बार ग्रहण करते हैं या स्वीकार करते हैं।
190.	जर्गृहति	वे सब बार बार ग्रहण करते हैं।
191.	अजर्घट्–अजरिर्घट्– अजरीघर्ट–अजर्गहीत् अजरिगृहीत्–अजरीग्रहीत्	बार बार ग्रहण किया गया।
192.	जाग्रहीति–जाग्रढि	बार बार ग्रहण करता है या बार बार स्वीकार करता है।
193.	जागृहति–	वे सब बार बार ग्रहण या स्वीकार करते हैं।
194.	जाग्रहीषि–जाघ्रक्षि	तुम बार बार ग्रहण या स्वीकार करते हो।
195.	जाग्रहिता	बार बार स्वीकार या ग्रहण करेगा।
196.	जार्गृधीति–जर्गृद्धिः	बार बार कामना या इच्छा करता है।
197.	जार्गृद्धः	वह दोनो बार बार कामना या इच्छा करते हैं।
198.	जार्गृधति	वे सब बार बार कामना या इच्छा करते हैं।
199.	जार्गृधीषि–जर्घात्सि	तुम बार बार कामना या इच्छा करते हो।
200.	अजर्गृधीत्–अजर्घर्त्	बार बार कामना या इच्छा किया गया।
201.	अजर्घाः	तुमने बार बार कामना या इच्छा किया।
202.	अजर्गर्धीत्	बार बार कामना या इच्छा किया गया था।
203.	अजर्गर्धिष्टाम्	वह दोनो बार बार कामना या इच्छा किये थे।
204.	पाप्रच्छीति–पाप्रष्टि	बार बार प्रश्न करता है।
205.	पाप्रष्टः	वह दोनो बार बार प्रश्न करते हैं या पूछते हैं।
206.	पाप्रच्छति	वे सब बार बार प्रश्न करते या पूछते हैं।
207.	पाप्रश्मि	मैं बार बार पूछता हूँ या प्रश्न करता हूँ।
208.	जाहयीति–जाहति	बार बार गतिमान होता है।
209.	पाप्रश्मः	हम सब बार बार प्रश्न पूछते हैं या प्रश्न करते हैं।
	जागृढः	वह दोनों बार बार ग्रहण करते हैं या स्वीकार करते हैं ।
	पाप्रच्छवः	हम दोनों बार बार पूछते हैं या प्रश्न करते हैं
210.	जाहतः	वह दोनो बार बार गतिमान होते हैं।
211.	जाहयति	वे सब बार बार गतिमान होते हैं।
212.	जाहामि	मैं बार बार गतिमान होता हूँ।
213.	जाहयीषि–जाहसि	तुम बार बार गतिमान होते हो।
214.	जाहावः	हम दोनों बार बार गतिमान होते हैं।

215.	जाहामः	हम सब बार बार गतिमान होते हैं।
216.	जाहर्यति जाहर्ति	बार बार जाता है या बार तेजवान् होता है।
217.	जाहर्तः	वह दोनो बार बार गतिमान और तेजवान होते हैं।
218.	जाहर्यति	वे सब बार बार गतिमान या तेजवान होते हैं।
219.	जाहर्हि	तुम बार बार गतिमान बनो या बार बार तेजवान बनो।
220.	अजाहः	बार बार गतिमान हुआ या बार बार तेजवान हुआ।
221.	अजाहर्ताम्	वह दोनो बार बार गतिमान हुए या तेजवान हुए।
222.	अजाहर्युः	वे सब बार बार गतिमान हुए या तेजवान हुए।
223.	मामोति–मामवींति	बार बार बन्धता है।
224.	मामूतः	वह दोनो बार बार बन्धते हैं।
225.	मामवति	वे सब बार बार बन्धते हैं।
226.	मामोषि	तुम बार बार बन्धते हो।
227.	मामोमि	मैं बार बार बन्धता हूँ।
228.	मामावः	हम दोनो बार बार बन्धते है।
229.	मामूमः	हम सब बार बार बन्धते हैं।
230.	मामोतु–मामूतात्	बार बार बन्धित होवे
231.	मामवानि	मैं बार बार बंधा।
232.	मामूहि	तुम बार बार बंधे।
233.	अमामोत्	बार बार बंध गया।
234.	अमामोः	तुम बार बार बंध गया।
235.	अमामवम्	मैं बार बार बंध गया।
236.	अमामाव	हम दोनो बार बार बंध गये।
237.	अमामूम	हम सब बार बार बंध गये।
238.	तोतूर्वीति–तोतोर्ति	बार बार हिंसा करता है।
239.	तोतूर्वः	वह दोनो बार बार हिंसा करते हैं।
240.	तोतूर्वति	वह सब बार बार हिंसा करते हैं।
241.	तोथोर्ति, दोदोर्ति	बार बार हिंसा करता है।
242.	दोधोर्ति	बार बार हिंसा करता है।
243.	मोमूर्च्छीति–मोमोर्ति	बार बार मूर्च्छित या बेहोश होता है।
244.	मोमूर्तः	वह दोनो बार बार मुर्च्छित या बेहोश होते हैं।
245.	मोमूर्च्छति	वे सब बार बार मूर्च्छित या बेहोश होते हैं।
246.	वेवीयते	बार बार जाता है या बार बार फेंकता है या बार बार क्षेपण करता है।
247.	पाप्रच्छवः	मै दोनो बार बार पूछते है या प्रशन करते हैं।
248.	जागृढः	वह दोनों बार बार ग्रहण करते हैं या स्वीकार करते हैं।

●

अथ नाम धातु

सं0	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1.	पुत्रीयती	अपने पुत्र को चाहता है।
2.	गव्यति	अपने गाय को चाहता है या इच्छा करता है।
3.	नाव्यम्	अपने का नौका चाहता है या इच्छा करता है।
4.	गव्याञ्चकार	अपने को गाय की इच्छा किया था।
5.	गव्यिता	अपने गाय की इच्छा करेगा।
6.	नव्यिता	अपने को नौका की इच्छा करेगा।
7.	राजीयति	अपने को राजः चाहता है या इच्छा करता है।
8.	नाव्याञ्चकार	अपने को नौका की इच्छा किया था।
9.	त्वद्यति	तुम लोगों को चाहता है।
10.	मद्यति	हम लोगों को चाहता है।
11.	युष्मद्यति	तुमको चाहता है।
12.	अस्मद्यति	हमको चाहता है।
13.	गीर्यति	अपने को शब्द या भाषा को चाहता है।
14.	पूर्यति	अपने को पूर्ण करना चाहता है।
15.	दिव्यति	अपने को स्वर्ग की इच्छा करता है।
16.	अदस्यति	इसको चाहता है।
17.	कर्त्रीयति	कर्ता होना चाहता है।
18.	गार्गीयति	गार्ग्य बनना चाहता है।
19.	वात्सीयति	वात्स होना चाहता है।
20.	कवीयति	कवि होना चाहता है या कवि बनना चाहता है।
21.	वाच्यति	वाच्य होना चाहता है।
22.	समिध्यति	हवनीय लकड़ी को चाहता है।
23.	समिधिता–समिध्यिता	हवनीय लकड़ी की इच्छा करता है।
24.	किमिच्छति	किसको चाहता है।
25.	इदमिच्छति	इसको चाहता है।
26.	स्वरिच्छति	स्वर को चाहता है।
27.	अशनायति	भूख मिटाने के लिए अन्न की इच्छा करता है।
28.	उदन्यति	प्यास मिटाने या बुझाने के लिए जल की इच्छा करता है।
29.	धनायति	जीवन को चलाने के लिए या धन के रहने पर भी और धन की इच्छा करता है।
30.	अशनीयति	अन्न संग्रह के लिए अन्न को चाहता है।
31.	उदकीयती	धान्य सीचनें के लिए जल को चाहता है।
32.	धनीयती	जीवन को चलाने के लिए धन की इच्छा करता है।
33.	अश्वस्यति बडवा	मैथुनेच्छा घोड़ी घोड़ा की इच्छा करती है।
34.	वृषस्यति गौः	मैथुनेच्छा गाय सांड़ की इच्छा करती है।
35.	क्षीरस्यति बालः	दूध की उत्कटेच्छुक बालक दुग्ध की इच्छा करता है।
36.	लवणस्यत्युष्ट्रः	नमक की उत्कटेच्छुक ऊँट नमक चाहता है।
37.	दधिस्यति–दध्यस्यति	दहि की उत्कट इच्छा रहने पर दही को चाहता है।
38.	मधुस्यति–मध्वस्यति	मधु की उत्कट इच्छा रहने पर मधु को चाहता है।

39.	पुत्रकाम्यति	पुत्र की उत्कट इच्छा रखने पर पुत्र की कामना या इच्छा करता है।
40.	यशस्काम्यति	यश की उत्कट इच्छा रहने पर यश की इच्छा करता है।
41.	सर्पिष्काम्यति	घृत की उत्कटेच्छा में घृत की कामना करता है।
42.	किंकाम्यति	अपने को क्या चाहता है।
43.	स्वःकाम्यति	अपने को चाहता है।
44.	पुत्रीयति छात्रम्	छात्र को पुत्र की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
45.	विष्णुयति द्विजम्	ब्राम्हण को विष्णु की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
46.	प्रासादीयति कुटयां भिक्षुः	भिक्षुकं कुटी में महल की तरह आचरण करता है।
47.	कुटीयति प्रासादे	महल में कुटी (झोपड़ी) की तरह आचरण करता है।
48.	कृष्णायते	कृष्ण भगवान की तरह आचरण करता है।
49.	ओजायते	तेजवान की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
50.	अप्सरायते	अप्सरा की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
51.	यशायते–यशस्यते	यशस्वी की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
52.	विद्वायते–विद्वस्यते	विद्वान की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
53.	त्वद्यते	तुम्हारे की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
54.	मद्यते	हमारे की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
55.	युष्मद्यते	तुम लोगों की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
56.	अस्मद्यते	हम लोगों की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
57.	कुमारायते	कुमारी की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
58.	हरितायते	हरिणी (मृगी) की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
59.	गुरूयते	प्रशस्तवान या लम्बवान की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
60.	सपात्नायते	शत्रु की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
61.	सपतीयते	स्वामी की तरह जो आचरण या व्यवहार करता है।
62.	सपत्नीयते	सौत की तरह जो आचरण या व्यवहार करती है।
63.	युवायते	युवती की तरह जो आचरण या व्यवहार करता है।
64.	पटवीमृदूयते	चतुरवान् और मधुरवान् की तरह जो आचरण करता है।
65.	पाचिकायते	भोजन बनाने वाली की तरह आचरण या व्यवहार करती है।
66.	अवगल्भते	धृष्टता या अवनीतवान् की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
67.	क्लीवते	हिजड़ा या नपुंसक की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
68.	होड़ते	आदरहीन व्यक्ति की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
69.	अवगल्भाञ्चक्रे	धृष्टता या अवनीतवान् की तरह आचरण या व्यवहार किया था।
70.	क्लीवाञ्चक्रे	हिजड़ा या नपुंसक की तरह आचरण या व्यवहार किया था।
71.	होडाञ्चक्रे	आदरहीन व्यक्ति की तरह आचरण या व्यवहार किया था।
72.	कृष्णयति	कृष्ण की तरह आचरण जो करता है।
73.	अति	वासुदेव की तरह आचरण करता है।
74.	अतः	दो वासुदेव की तरह आचरण करता है।
75.	अन्ति	बहुतेरे वासुदेव की तरह आचरण करता है।
76.	औ	विष्णु की तरह आचरण करता था।
77.	अतुः	दो विष्णु की तरह आचरण किया था।
78.	उः	बहुतेरे विष्णु की तरह आचरण किया था।
79.	मालाति	माला की तरह आचरण करता है।
80.	मालाञ्चकार	माला की तरह आचरण किया था।

81.	अमालात्	माला की तरह आचरण किया।
82.	अमालासीत्	माला की तरह आचरण किया गया।
83.	कवयति	कवि की तरह आचरण करता है।
84.	कवीयात्	कवि की तरह आचरणवान होवे।
85.	अकवयीत्–अकवायीत्	कवि की तरह आचरण किया था।
86.	वयति	पक्षी की तरह आचरण करता है।
87.	विवाय	पक्षी की तरह आचरण किया था।
88.	विव्यतुः	दो पक्षी की तरह आंचरण किया था।
89.	अवयीत्–अवायीत्	पक्षी की तरह आचरण किया गया।
90.	श्रयति	लक्ष्मी शोभावान की तरह आचरण करता है।
91.	शिश्राय	लक्ष्मी या शोभावान की तरह आचरण किया था।
92.	शिश्रियतुः	दो लक्ष्मी या दो शोभावान की तरह आचरण किया था।
93.	पितरति	पिता की तरह आचरण करता है।
94.	पित्रियात्	पिता की तरह आचरण होवे।
95.	भवति	पृथ्वी की तरह आचरण करता है।
96.	अभावीत्	पृथ्वी की तरह आचरण किया गया।
97.	द्रवति	वृक्ष की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
98.	अद्रावीत	वृक्ष की तरह आचरण किया था।
99.	इदामति	इसकी तरह आचरण करता हैं।
100.	राजानति	राजा की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
101.	पथीनति	रास्ता की तरह आचरण करता है।
102.	मथीनति	मथिनी (मन्थन दण्ड) की तरह आचरण करता है।
103.	ऋभुक्षीणति	इन्द्र की तरह या नेता की तरह आचरण करता है।
104.	देवतीति द्यवति	आकाश की तरह आचरण करता है।
105.	कति	कवर्ण की तरह या ब्रह्मा की तरह आचरण करता है।
106.	चकौ–चक	दो ब्रह्मा की तरह आचरण करता है।
107.	सस्वौ–सस्व	आत्मीय की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
108.	भृशायते	मजबूत एवं शक्तिशाली की तरह आचरण करना चाहता है।
109.	सुमनायते	सुन्दर मन वाले की तरह आचरण या व्यवहार करता है।
110.	स्वमनायत	सुन्दर मन वाले की तरह आचरण किया गया था।
111.	उन्मनायते	चञ्चल मन से या उठे हुए मन से आचरण करता है।
112.	उदभनायत	चञ्चल मन से या उठे हुए मन से आचरण किया था।
113.	औस्रीयत	प्रभातकाल (पौ फटना) या गाय की इच्छा की थी।
114.	औङ्कारीयत्	ओंकार की इच्छा की थी या ओंकार की तरह आचरण किया गया।
115.	औढीयत्	भार ले जाने वाले की तरह या ढोने वाले की तरह या विवाहित पुरूष की तरह आचरण करता है।
116.	लोहितायति–लोहितायते	लाल रंग की तरह लाल वर्ण हो रहा है।
117.	श्यामायते	पहले काला नही था अब काला हो रहा है।
118.	पटपटायति–पटपटायते	अव्यक्त पटत् शब्द के अनुकरण की तरह आचरण करता है।
119.	लोहिनीयती–लोहिनीयते	अब लाल वर्ण की चमड़ी हो रही है।
120.	कष्टायते इदानीम्	कष्ट हो रहा है या पाप कर्म करने के लिए उत्साहित हो रहा है।
121.	सत्रायते	पाप कर्म करने के लिए उत्साहित हो रहा है।

122.	कक्षायते	पाप कर्म करने के लिए उत्साहित हो रहा है।
123.	रोमन्थायते	चुगाली करता है अर्थात खाये हुए तृणादि को उदर से बाहर लाकर कण्ठ के माध्यम से पुनः चवर्ण (चबाना) चुगाली है।
124.	तपस्यति	तपस्या करता है।
125.	वाष्पायते	वाष्प उदवमन कर रहा है।
126.	उष्मायते	गर्मी निकाल रहा है।
127.	फेनायते	गाज निकाल रहा है।
128.	शब्दायते–शब्दयति	शब्द को कर रहा है।
129.	सुदिनायते	अच्छा दिन कर रहा है।
130.	सुखायते	सुख को जानता है।
131.	नमस्यति–देवान	देवों की पूजा करता है।
132.	वरिवस्यति गुरून	गुरू की सेवा करता है।
133.	चित्रीयते	आश्चर्य या विस्मित होता है।
134.	अत्पुच्छयते	विविध अथवा विरूद्ध पुच्छ को उत्क्षेपण करता है।
135.	समवाभाण्डत	पात्र या बर्तन को एकत्रित किया था।
136.	सम्भाण्डयते	पात्र या बर्तन को राशिकरण करता है।
137.	सञ्चीवरयते भिक्षुः	बौद्ध भिक्षुक, बौद्ध परिधान को धारण करता है या अर्जुन एकत्रित करता है।
138.	मुण्डयति	मुण्ड संस्कार को करता है या करवाता है।
139.	पयः शुद्रान्नं वा व्रतयति	दुग्ध को पीता है शुद्रन्न को छोडता है।
140.	संवस्त्रयति	वस्त्र से भलीभांति अच्छादन या छपता या ढकता है अथवा वस्त्र को पहनता है।
141.	हलयति	बड़ा हल को ग्रहण करता है।
142.	कलयति	कलह करता है।
143.	अजहलत्	बड़े हल को ग्रहण किया था।
144.	अचकलत्	कहल किया था।
145.	कृतयति	उपकार को स्वीकार करता है।
146.	वितूस्तयति	केशों को या जटीभूत केशों को या पाप को नष्ट करता है।
147.	मुण्डयतिमाणवकम्	बालक का मुण्डन कराता है।
148.	मिश्रयत्यन्नम्	अन्न को मिलवाता है।
149.	श्लक्षणयति	वस्त्र को निर्मल करता है। अर्थात धोता है।
150.	लवणयति व्यञ्जनम्	विविध प्रकार के भोजन को लवण मिश्रित या युक्त करता है।
151.	सत्यापयति	सत्यापित करता है मंजूरी प्रदान करता है या सही मानता है।
152.	अर्थापयति	अर्थ की इच्छा करता है या अर्थ को चाहता है।
153.	वेदापयति	वेद को चाहता है अर्थात वेद को पढ़ना चाहता है।
154.	विपाशयति	पाप या पापकर्म को त्यागता या छोड़ता है।
155.	रूपयति	रूप को देखता है।
156.	उपवीणयति	वीणा से गान करता हैं।
157.	अनुतूलयति	तराजू से अनुकर्षण करता है अर्थात तूला से खीचता है।
158.	उपश्लोकयति	श्लोकों से स्तुति करता है।
159.	अभिषेणयति	सेना के साथ कूच करता है।
160.	अम्यषेणपत्	सेना के साथ कूच किया था।
161.	अभिषिषेणपिषति	सेना के साथ कूच करने की इच्छा करता है।
162.	अनुलोमयति	रोमों को शुद्ध करता है या साफ करता है।

	अनुधदृयति	तृण के अग्रभाग को तूल उदघाटित करता है ।
163.	त्वचयति	त्वचा को ग्रहण करता है।
164.	संवर्मयति	कवच से भलीभांति बान्धता है या रक्षित करता है।
165.	वर्णयति	अक्षर को ग्रहण करता है।
166.	अवचूर्णयति	चूर्णो से अवध्वसित करता है।
167.	एतयति	हरिणी की चेष्टा या आचरण करता है।
168.	दारदयति	भय की या त्रास की आचेष्टा करता है।
169.	प्रथयति	मोटाई या चौडाई को चाहता है।
170.	अपिप्रथत् अपप्रथत	मोटाई या चौडाई की चाहना किया था।
171.	म्रदयति	कोमल या पतला को चाहता है।
172.	अमिद्रदत्–अमभ्रदत्	कोमल या पतला की चेष्टा किया था।
173.	भ्रशयति	अत्यधिक या शक्तिशाली की येष्टा करता है।
174.	क्रशयति	दुबला पतला की चेष्टा करता है।
175.	द्रढयति	मजबूत और स्थिर की चेष्टा करता है।
176.	अवभ्रशत्	अधिक या शक्तिशाली की चेष्टा किया।
177.	अचक्रशत्	दुबला पतला की चेष्टा किया।
178.	अदद्रढत्	मजबूत और स्थिर की चेष्टा किया था।
179.	परिव्रढयति	चारो तरफ से मजबूत और स्थिर करता है।
180.	पर्यव्रद्रढत्	चारो तरफ से मजबूत किया था।
181.	औजिढत्–औडिढत्	विवाह को कहा था।
182.	औजढत्–औडढत्	विवाहित को कहा था।
183.	स्वापयति	आत्मीय को कहता है।
184.	त्वापयति–त्वादयति	तुमको चाहता है।
185.	भापयति–मादयति	मुझे चाहता है।
186.	युष्मयति	तुम दोनो को चाहता है।
187.	अस्मयति	हम दोनो को चाहता है।
188.	विद्वयति	विद्वान बनने की चेष्टा करता है।
189.	उदीचयति	ऊपर की ओर जाने की या उत्तर की ओर जाने की चेष्टा करता है।
191.	उदैचिचत्	ऊपर की ओर जाने की या उत्तर की ओर जाने की चेष्टा किया।
192.	प्रतीचयति	पश्चिम दिशा की ओर जाने की चेष्टा करता है।
193.	प्रत्यचितत्, प्रतिअचितत्	पश्चिम दिशा की ओर जाने की चेष्टा की।
194.	समीचयति	साथ रहने वाले की चेष्टा करता है।
195.	सम्यचितत्–समिअचितत्	साथ रहने वाले की चेष्टा किया।
196.	तिरायति	तिरक्षा होने की चेष्टा करता है।
197.	अतिरिरायत्	तिरक्षा होने की चेष्टा किया।
198.	सध्राययति	साथ में जाने की आशंका करता है।
199.	अससध्रायत्	साथ में जाने की आशंका किया था।
200.	अविविष्वद्रायत्	सर्वत्र या सब ओर जाने की चेष्टा किया गया।
201.	आदिदेवद्रायत	देवों की उपासक की चेष्टा किया था।
202.	आददद्रायत्	यह साथ जाने की चेष्टा किया था।
203.	अमुमुआययति	इसको साथ ले जाने की चेष्टा करता है।
204.	भावयति	भुवलोक की चेष्टा करता है।

205.	अभीभवत्	भुवलोक की चेष्टा किया था।
206.	अबुभ्रवत्	भौंह की आकांक्षा किया गया था।
207.	अशिश्रयत्	लक्ष्मी की आशंका किया था।
208.	अजूगवत्	गौ की चेष्टा किया था।
209.	अरीश्यत्	धन की आकांक्षा किया था।
210.	अनूनवत्	नौका की इच्छा किया था।
211.	स्वाशश्वत्	सुन्दर घोड़ा की इच्छा किया था।
212.	स्वयति	स्वर्ग की चेष्टा या आकांक्षा करता है।
213.	असस्वत् असिस्वत्	स्वर्ग की चेष्टा या आकांक्षा किया था।
214.	बहयति	बहुतेरों की चेष्टा करता है।
215.	स्रजयति	माला की चेष्टा करता हैं।
216.	श्रययति	श्रीमती को या श्रीमान को चाहता है या आकांक्षा करता है।
217.	पयसयति	दुग्ध वाली की चेष्टा करता है।
218.	स्थययति	स्थूल वाले को चाहता है।
219.	दवयति	दूर वाले को चाहता है।
220.	यवयति	युवा को चाहता है।
221.	कनयति	युवा को चाहता है।
222.	नेदयति	अन्तिक अर्थात समीप को चाहता है।
223.	साधयति	बहुत सुन्दर को चाहता है।
224.	प्रशस्ययति	अति श्रेष्ठ को चाहता है।
225.	ज्यापयति	वृद्ध को चाहता है।
226.	प्रापयति	प्रिय को चाहता है।
227.	स्थापयति	स्थिर की चेष्टा करता है।
228.	स्फाफयति	प्रचुर यां बहुत की चेष्टा करता है।
229.	वरयति–वारयति	विस्तृत या प्रशस्त की चेष्टा करता है।
230.	वहयति	बहुलता को चाहता है।
231.	गरयति	गुरू की चेष्टा करता है।
232.	वर्षयति	वृद्ध की चेष्टा करता है।
233.	त्रापयति	पुरोडास की चेष्टा करता है।
234.	द्राघयति	लम्बा या दूर की चेष्टा करता है।
235.	वृन्दयति	अधिक, श्रेष्ठ या सुहावना की इच्छा या चेष्टा करता है।

●

अथ कण्डवादि

सं0	शब्द	अर्थ
1.	कण्डूयति–कण्डूयते	शरीर को खुझलाता है।
2.	मन्तूयति	अपराध करता है या रोष करता है।
3.	वल्गूयति	पूजा करता है या मधुरता करता है।
4.	अस्यति, असूयति–असूयते	दुःख या पीड़ा देता है या गर्मी देता है।
5.	इरस्यति	ईर्ष्या करता है।
6.	इरज्यति	ईर्ष्या करता है।
7.	ईर्यति ईर्यते	ईर्ष्या करता है।
8.	मेधायति	शीघ्र ग्रहण करता है।
9.	कुषुम्यति	इत स्वतः फेकता है।
10.	सुख्यति	सुख देता है।
11.	दुःख्यति	दुःख देता है।
12.	लिट्यति	कुछ घृणा करता है थोड़ा दुर्वचन करता है कुछ भर्त्सना करता है।
13.	महीयते	पूजा होती है।
14.	उरस्यति	बलवान होता है।
15.	उषस्यति	ऊषा काल या सुबेरा हो रहा है।
16.	लाटयति	जीवन होता है।
17.	तिरस्यति	अन्तर्धान या छिपता है या तिरोहित होता है।
18.	सम्भूयस्यति	बाहुल्य होता है।
19.	पयस्यति	प्रसारित या फैलाव होता है।
20.	सपर्यति	पूजा होता है या पूजा करता है।
21.	गद्गद्यति	वाणी का स्खलन होता है।
22.	ह्रणीयते	रोष या क्रोध और लज्जा करता है।

●

अथ प्रत्यय माला

सं0	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1.	कण्डूयियिषति	शरीर को खुजलाने की इच्छा करता है।
2.	पुपुत्रीयिषति, पुतित्रीयिषति, पुत्रीयियिषति	पुत्र चाहने वाला या पुत्र की इच्छा करने वाला।
3.	अशिश्वीयिषति, अश्वीयियिषति	अपने को घोड़ा चाहने वाला घोड़ा की इच्छा करता है।
4.	इन्दिद्रीयिषति, इन्द्रीयियिषति	अपने को इन्द्र चाहने वाला इन्द्र की इच्छा करता है।
5.	चिचन्द्रीयिषति– चिन्दिद्रीयिषति– चिन्द्रीयियिषति–	अपने को चन्द्रमा चाहने वाला चन्द्रमा की इच्छा करता है।
6.	पिप्रायिषति, प्रापिपयिषति, प्रापयियिषति	अपने को प्रिय कहलाने वाला प्रिय को चाहता है।
7.	वारिरयिषति, वारयियिषति	अपने को महान बनने वाला महान की इच्छा करता है।
8.	सिसाधयिषतिं	अपने को दृढ होने वाला दृढ की इच्छा करता है।
9.	बोभूयिषयिषति	बार बार होने की इच्छा वाला प्रेरित होकर होने की इच्छा करता है।

अथ आत्मनेपद

सं0	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1.	आस्ते	है।
2.	शेते	सोता है।
3.	वभूवे	था
4.	अनुवभूवे	अनुभव किया था।
5.	व्यतिलुनीते	अन्य की कटिया अन्य या दूसरा करता है अर्थात् दूसरे से होने वाली कटिया दूसरा करता है।
6.	व्यतिराते	अन्य के योग्य दान दूसरा करता है।
7.	व्यतिभाते	अन्य के योग्य प्रकाश दूसरा करता है।
8.	व्यतिगच्छन्ति	अन्य के योग्य गमन क्रिया अन्य लोग कर रहे हैं।
9.	व्यतिघ्नन्ति	अन्य के योग्य हनन क्रिया अन्य लोग कर रहे हैं।
10.	व्यतिहसन्ति	दूसरे को हंसना चाहिए दूसरे लोग हंस रहे हैं।
11.	व्यतिजलपन्ति	दूसरे लोगों को गप मारना या बकबकाना चाहिए दूसरे लोग गप मार रहे हैं या बकबका रहे हैं।
12.	सम्प्रहरन्ते राजानः	राजा आपस में युद्ध कर रहे हैं।
13.	निविशते	अच्छी तरह प्रवेश करता है।
14.	परिक्रीणीते	सामान देकर खरीदता है या बदलौन या विनमय करता है।
15.	विक्रीणीते	बेंचता या विक्रय करता है।
16.	अवकीणीते	बदल कर सामान खरीदता है।
17.	विजयते	विजयी होता है।
18.	पराजयते	पराजित होंता है या हारता है।
19.	विद्यामादते	विद्या को ग्रहण करता है।
20.	मुखं व्याददाति	मुख को फैलाता है।
21.	विपादिकां व्याददाति	पैर में फटी हुई व्यवाय मुहं बाये की तरह फैलाये है।
22.	नदी कूलं व्याददाति	नदी का किनारा कट रहा है।
23.	व्याददते पिपीलिका पतङ्गस्य मुखम्	पक्षी का मुख चीटी (कीड़े) को भक्षण के लिए विकसित होता है।
24.	अनुक्रीडते	खेलना, किकोल करना या तबियत बहलाना।
25.	परिक्रीडते आक्रीडते	कौतुक करना, खेलना
26.	संक्रीडते	कोलाहल करना।
27.	संक्रीडति चक्रम्	चक्का कूजता है।
28.	आगमयस्व	कुछ समय तक क्षमा करें।
29.	धनुषि शिक्षते	धनु विषय ज्ञान में समर्थ होने के लिए इच्छा करता है। अर्थात धनुष को चलाने के लिए अपने को समर्थ होना चाहता है।
30.	सर्पिषो नाथते	घृत हो इस प्रकार का आशिर्वाद देता है।
31.	पैतृकमश्वा अनुहरन्ते	घोड़ा अपने पिता की गतिशीलता का अनुसरण करता है।
32.	मातृकं गाव अनुहरन्ते	गायें की प्राकारता अर्थात विशेषणता का अनुसरण उसकी बछिया करती है। अधिक दूध देने वाली गायों की बछिया अधिक दूध देती है।
33.	अपस्किरते वृषोहृष्टः	हर्षित बैल अपने पैर के खुरों से भूमि को खोद कर धूल को इधर उधर फैलाता है।

34.	कुक्कुटोभक्षाक्षी अपस्किरते	मुर्गा भक्षण के लिए अपने पैर पञ्चों से भूमि को कुरेदता है।
35.	अश्वा आश्रयार्थी अपस्किरते	कुत्ता जिस जमीन पर बैठना चाहता है उस जमीन या भूमि को अपने पैर के नाखूनों से खोदता है।
36.	अपकिरति कुसमम्	फूल खिलता है या परिस्फुटित होता है।
37.	आनुते	उत्कण्ठा पूर्वक शब्द करता है।
38.	आपृच्छते	उत्कण्ठापूर्वक प्रश्न करता है या पूछता है।
39.	कृष्णाय शपते	कृष्ण को आक्रोश में उलाहना देती है।
40.	सन्तिष्ठते	अच्छी तरह से बैठता है या समाप्त होता है।
41.	अनुतिष्ठते	पीछे बैठता है।
42.	प्रतिष्ठते	प्रतिष्ठित होता है।
43.	वितिष्ठते	विस्थापित होता है।
44.	शब्दं नित्यमातिष्ठते	शब्द की नित्यता को भली भांति जानता है या शब्द की नित्यता की प्रतिज्ञा करता है।
45.	गोपीकृष्णायशपते	गोपी कृष्ण को अपना आशय प्रकाशित करती है।
46.	मुक्तावुतिष्ठते	गुरू के उपगमन इत्यादि से मुक्ति विषय में प्रयास करते हैं।
47.	पीठादुत्तिष्ठति	पीठ पर से उठता है।
48.	आग्नेय्या आग्नीध्रमुपतिष्ठते	आग्नयी ऋचा आग्नीध्र नामक मण्डप के पास बैठता है।
49.	भर्तार मुपतिष्ठति यौवनेन	युवा अवस्था के कारण पति के समीप बैठती है।
50.	आदित्यमुपतिष्ठते	सूर्य के सामने उपस्थित होकर स्तुति से पूजा करता है।
51.	गंगायमुनाभुपतिष्ठते	गंगा और यमुना का आलिंगन करता है।
52.	रथिकानुपतिष्ठते	रथिका का मित्रीकरण होता है। या मित्रता होती है।
53.	पन्था स्रुघ्नभूपतिष्ठते	रास्ता स्रुघ्न देश को जाता है या प्राप्त होता है।
54.	भिक्षुकः प्रभुभूपतिष्ठते	भिक्षुक स्वामी के पास लालच से जाता है।
55.	भोजन काले उपतिष्ठते	भोजन के समय पर सन्निहित होता है,या उपस्थित होता है।
56.	उत्तपते	उदीप्तमान होता है।
57.	वितपते	दीप्तमान होता है।
58.	उत्तपतेवितपते वा पाणिम्	हाथ को तपाता है।
59.	सुवर्णमुत्तपति	सोना को गलाता है।
60.	चैत्रः मैत्रस्य पाणिमुत्तपति	चैत मित्र के हाथ को गर्म कर रहा है सन्तापित कर रहा है।
61.	आयच्छते	पैर अथवा रस्सी को लम्बा कर रहा है।
62.	आहते	आहत हो रहा है।
63.	परस्य शिर आहन्ति	दूसरे के सिर को मारता है या फोड़ता है।
64.	उदायत	दोष को फैला रहा है।
65.	उदायस्तपादम्	पैर के खींच रहा है।
66.	संङ्गच्छते	संगत हो रहा है या साथ जा रहे हैं।
67.	ग्रामं संङ्गच्छति	गांव का संगत हो रहा है।
68.	संवित्ते	अच्छी तरह से जानता है।

69.	सम्पृच्छते	भली भांति पूछता है।
70.	संस्वरते	अच्छी तरह से शब्द हो रहा है।
71.	मास्मृत	पूर्ण रूप से प्राप्त नही किया या ठीक गया नही था।
72.	मासमरत	अच्छी तरह गया नही था।
73.	संश्रृणुते	अच्छी तरह सुनता है।
74.	सम्पृश्यते	अच्छी तरह देखता है।
75.	वहति मारम्	बोझा को ढोता है।
76.	नदी बहति	नदी बहती है।
77.	नृत्यति	शरीर के अंग का विक्षेपण करता है।
78.	मेघोवर्षति	बादल जल का वर्षण कर रहा है।
79.	वन्धंनिरस्यति निरस्यते	बन्धन को तोड़ता है।
80.	समूहति समूहते	विशेष तर्क करता है या सम्यक विचार करता है।
81.	ब्रह्मसमुह्यात्	ब्रह्म विषयक विचार किया करे।
82.	अग्निसमुह्य	अग्नि सम्बन्धी विचार करके अग्नि को चारो तरफ शुद्ध करके।
83.	निह्मयते	बुलाता है।
84.	संह्यते, उपह्यते, विह्यते	शब्द करता है या बुलाता है।
85.	कृष्णश्चारूणमाह्यते	कृष्ण चारूण को बुलाते हैं।
86.	पुत्रमाह्यति	पुत्र को बुलाता है।
87.	उत्कुरूते	हिंसा करता है।
88.	श्येनवर्तिका मुदाकुरूते	वाज पक्षी विशेष को मार्सित करता है।
89.	हरिमुपकुरूते	हरि की सेवा करता है।
90.	परदान्प्रकुरूते	अन्य स्त्री पर सहसा प्रवृत होता है।
91.	एधोदकस्योपकुरूते	काठ और जल के गुणों का आधान करता है।
92.	गाथा प्रकुरूते	कहानी या कथा को कहता है।
93.	शतं प्रकुरूते	एक सौ रुपये धमार्थ में नियोजित करता है या लगाता है।
94.	स्वरान् विकुरूते	स्वर वर्णों का उच्चारण करता है।
95.	चित्तं विकरोति कांमः	काम चित्त को विकृत या विकारयुक्त करता है।
96.	छात्रा विकुर्वते	छात्र विकारभाव प्राप्त हो रही है।
97.	शास्त्रे नयते	शास्त्रीय विषय में छात्र को ले आता है। अर्थात शास्त्र स्थित सिद्धान्त को छात्र के लिए प्राप्त करता है।
98.	दण्डमुन्नयते	दण्ड को उपर फेंकता है।
99.	माणवकमुपनयते	शास्त्र विधि से आध्यात्म के समीप प्राप्त कराते हैं। अर्थात उपनयन पूर्वक अध्यापन से उपनयन कराने वाले गुरू में आचार्यत्व सम्पादित करता है।
100.	तत्वं नयते	तत्व को निश्चित करता है।
101.	कर्मकारानुपनयते	वेतन के लिए कार्य करने वाला कर्मकरों को समीप प्राप्त करता है या ले आता है।
102.	करं विनयते	राजा के लिए देयभाग करके प्रत्यर्पित करता है परिशोधित करता है।
103.	शतं विनयते	सौ रूपया धर्मार्थ व्यय के लिए है।
104.	क्रोधं विनयते	क्रोध को हटाता है या क्रोध को दूर करता है।
105.	गंडु विनयति	कुबड़ा या कूबड़ को हटाता है अर्थात आपरेशन के द्वारा कटवाता है।

106.	ऋचिक्रमते बुद्धिः	बुद्धि ऋचा में अप्रतिबन्धित है। अर्थात ऋचा में वृद्धि का प्रतिहवन नही हुआ है।
107.	अध्ययनाय क्रमते	अध्ययन के लिए या पढ़ने के लिए उत्साहित होता है।
108.	क्रमन्तेऽस्मिन् शास्त्राणि	इसमें शास्त्रों की वृद्धि होती है।
109.	उपक्रमते	वृद्धि का प्रतिहनन नही होता है और वृद्धि का उत्साह होता है।
110.	पराक्रमते	प्रतिबन्धित नही होता है, उत्साह से युक्त होता है, वृद्धि होती है।
111.	संक्रामति	संक्रमण होता है।
112.	आक्रमते सूर्यः	सूर्य उदय होता है।
113.	आक्रामति धूमोहर्म्यबलात्	महल के नीचे तल से धूंआ उठ रहा है।
114.	साधु विक्रमते बाजी	घोड़ा सम्यक रूप से पैर को रखता है या बढ़ाता है।
115.	सन्धिः विक्रामति	सन्धि दो प्रकार की होती है।
116.	प्रक्रमते	पैर को शीघ्रता से धरता है।
117.	उपक्रमते	पैर को समीप मे रखता है।
118.	प्रकामति	जाता है।
119.	उपक्रामति	आता है।
120.	क्रामति–क्रमते	पैर को रखता है।
121.	शतमपजानीते	सौ रूपये का टालमटोल करता है।
122.	सर्पिषो जानीते	घृत के उपाय या व्याज से प्रवृत्त होता है।
123.	शतं सञ्जानीते	सौ रूपये को बार बार देखता है।
124.	शतं प्रतिजानीते	सौ रूपये को स्वीकार करता है।
125.	मातरं मातुर्वा संञ्जानाति	माता को या माता का उत्कण्ठापूर्वक स्मरण करता है।
126.	शास्त्रेवदते	शास्त्र के विषय में बोलता है या शास्त्र के विषय में नयी नयी युक्ति देकर बोलता है।
127.	भृत्यानुपवदते	नोकर को सन्तावना देता है।
128.	शास्त्रेवदते	शास्त्र विषयक व्यवहार करता है।
129.	क्षेत्रे वदते	क्षेत्र पर प्रयास करता है।
130.	क्षेत्रे विवदन्ते	क्षेत्र में विरूद्ध व्यवहार करता है।
131.	उपवदते	प्रलोभन में प्रार्थना करता है।
132.	सम्प्रवदन्ते ब्राह्मणाः	ब्राह्मण व्यञ्जन वर्णो का और स्वर वर्णों का भेद करके स्पष्ट बोलता है।
133.	सम्प्रवदन्ति खगाः	पक्षियां अस्पष्ट उच्चारण करती हैं।
134.	अनुवदते कठः कलापस्य	कठ कलाप के सादृश्य बोलता है।
135.	उक्तमनुवदति	कथित के समान बोलता है।
136.	अनुवदति वीणा	वीणा बजती है।
137.	विप्रवदन्ते, विप्रवदन्तिवा वैद्याः	वैद्य लोग विरूद्ध बचन को स्पष्ट कहते।
138.	अवगिरते	निगलता है या शब्द करता है।
139.	शब्दं नित्यं संगिरते	शब्द की नित्यता को स्वीकार करता है।
140.	सङ्गिरति ग्रासम्	कौर को निगलता है।
141.	धर्ममुच्चरते	धर्म का उल्लंघन करता है।
142.	वाष्पमुच्चरति	वाष्प को ऊपर निकालता है।
143.	रथेन सञ्चरते	रथ से परिभ्रमण करता है।
144.	दास्या संयच्छते	दासी को लिए देता है या दासी को देता है।

145.	भार्यामुपयच्छते	भार्या को स्वीकार करता है।
146.	रामः सीतामुपायत– उपायंस्त	राम ने सीता को स्त्रीत्व रूप से स्वीकार किया।
147.	धर्मं जिज्ञासते	धर्म को जानने की इच्छा करता है।
148.	शूश्रूषते	सुनने की इच्छा करता है।
149.	सुस्मूर्षते	स्मरण करने की इच्छा करता है।
150.	दिदृक्षते	देखने की इच्छा करता है।
151.	पुत्रमनुजिज्ञासति	पुत्र को जानने की इच्छा करता है।
152.	प्रतिशुश्रूषति	प्रत्येक को सुनने की इच्छा करता है।
153.	आशुश्रूषति	प्रारम्भ में सुनने की इच्छा करता है।
154.	एदिधिषते	बढ़ने की इच्छा करता है।
155.	शिशयिषते	सोने की या शयन की इच्छा करता है।
156.	निविविक्षते	प्रवेश करने की इच्छा करता है।
157.	बुभूषति	होने की इच्छा करता है।
158.	शिशत्सति	तेज करने की इच्छा करता है या काटने की इच्छा करता है पतला या छोटा होने की इच्छा करता है।
159.	मूमुर्षति	मरने की इच्छा करता है।
160.	प्रयुङ्क्ते	प्रयोग करता है।
161.	उपयुङ्क्ते	योग करता है।
162.	उत्युङ्क्ते	योग करता है।
163.	नियुङ्क्ते	नियोग करता है।
164.	संक्ष्णुतेशस्त्रम्	शस्त्र को तेज करता है या धारदार बनाता है।
165.	ओदनं भुङ्क्ते	भोजन को खा जाता है।
166.	वुभुजे पृथिवीपालः पृथिवीम् केवलाम्	पृथ्वी पाल केवल पृथिना का उपभोग किया।
167.	वृद्धोजनोदुःख शतानिभुङ्क्ते	वृद्ध जन सैकड़ों दुःख को भोगता है।
168.	महीं भुनक्ति	पृथिवी की रक्षा करता है।
169.	पश्यन्ति भवं भक्ताः	भक्त लोग भव को आख का विषय बना रहे हैं।
170.	पश्चति भवः	भव चाक्षुष का विषय हो रहे हैं।
171.	दर्शयन्ति भवं भक्ताः	भक्त लोग भव को देख रहे हैं।
172.	दर्शयते भव	भव दर्शन का विषय हो रहा है।
173.	आरोहयते हस्ती	हाथी बैठा रहा है या हाथी चढ़ा रहा है।
174.	आरोहन्ति हस्तिनं हस्तिपकाः	पिलवान हाथी को नीचे झुकाता है तत्पश्चात हाथी चढ़ाता है।
175.	आरोहती हस्ती	हाथी नीचे झुकती है।
176.	आरोहयन्ति	आरोहण कराती है।
177.	आरोहयते	नीचे झुकती है या बैठती है।
178.	माणवकंगर्धयते वञ्चयते	वामाणवक को प्रतारण करता है या ठगता है।
179.	श्वानंगर्धयति	कुत्ता की इच्छा को उत्पन्न करता है या कुत्ते प्रचारित होते हैं।
180.	अहिं वञ्चयति	सर्प का वर्जन करता है।

181.	पदं मिथ्या कारयते	स्वर इत्यादि से दूषित पद को बार बार उच्चारण करता है।
182.	पदं सुष्ठु कारयति	स्वरादि युक्त पद को उच्चारण करता है।
183.	सकृत्पदं मिथ्या कारयति	स्वरादि से दूषित मिथ्या पद को एक बार उच्चारण करता है।
184.	यजते	स्वयं यज्ञ करता है।
185.	सुनुते	स्वयं अभिषेक करता है।
186.	ऋत्विजो यजन्ति	ऋत्विज लोग यज्ञ कर रहे हैं।
187.	ऋत्विजः सुन्वन्ति	ऋत्विज लोग अभिषेक कर रहे हैं।
188.	न्याय मपवदते	न्याय को अपवाद करते हैं।
189.	अपवदति	विवाद करता है।
190.	कारयते	कराता है।
191.	व्रीहीन् संयच्छते	धान का संग्रह करता है।
192.	भारमुद्यच्छते	बोझा को ऊपर उठाता है।
193.	वस्त्रमायच्छते	वस्त्र को कमर आदि स्थानों पर बांधता है या धोती पहनता है।
194.	उद्यच्छति वेदम्	वेद को ग्रन्थित करता है।
195.	ब्रीहीन् संयच्छति	धान को दूसरे के लिए एकत्रित करता है।
196.	गां जानीते	गौ को जानता है।
197.	स्वर्गलोकं न प्रजानाति	स्वर्ग लोक के विषय में नही जानता है।
198.	स्वं यज्ञं यजति यजते वा	स्वकीय यज्ञ का यजन करता है।
199.	स्वं कटं करोति कुरूतेवा	स्वकीय या अपनी चटाई को बुनता है।
200.	स्वं पुत्र मपवदति अपवदतेवा	स्वकीय या अपने पुत्र के विषय में अपवाद करता है।
201.	स्व	
202.	स्वं यज्ञं करयति कारयते	अपने यज्ञ को करवाता है।
203.	स्वं ब्रीहिंसंयच्छति संयच्छेतवा	स्वकीय धान या स्वयं धान को एकत्र करता है।
203.	स्वां गां जानीते जानातिवा	अपनी गौ को जानता है।

●

अथ परस्मैपद

सं0	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1.	अत्ति	खाता है।
2.	अनुकरोति	अनुकरण करता है।
3.	पराकरोति	पराक्रम करता है।
4.	अभिक्षिपति	चारो तरफ फेकता हैं।
5.	प्रतिक्षिपति	प्रतिक्षेपण करता है।
6.	अतिक्षिपति	अतिक्षेपण करता हैं।
7.	प्रवहति	वेग से बहता है।
8.	परिमृष्यति	चारो तरफ या हर तरह से सहता है।
9.	आरमति	आराम करता है।
10.	विरमति	विराम करता है।
11.	यज्ञदत्तमुपरमति	यज्ञदत्त को विराम करवाता है।
12.	उपरमति उपरमतेवा	निर्वर्तित होता है।
13.	बोधयति पद्म्	कमल विकसित कराता है या खिलवाता है या कमल स्वयं खिलता है।
14.	काष्ठानि योधयति	काठ स्वयं प्रहार कर रहे हैं।
15.	बोधयति पद्मम्	कमल को विकसित कर रहा है या खिलवा रहा है अर्थात कमल स्वयं खिल रहा है।
16.	नाशयति दुःखम्	दुःख का नाश किया जा रहा है अर्थात हरि दुःख का नाश कर रहे हैं।
17.	जनयति सुखम्	सुख को उत्पन्न कराया जा रहा है अर्थात विष्णु सुख को उत्पन्न कर रहे हैं।
18.	अध्यापयति वेदम्	ब्रह्मा वेद को पढ़वा रहे हैं।
19.	प्रावयति	मिलवा रहा है।
20.	द्रावयति	विलाप करवा रहा है।
21.	स्रावयति	प्रसवण करा रहा है।
22.	निगारयति,	निगलवा रहा है या पूर्णरूप से लय करवा रहा है ।
	आशयति भोजयति	भक्षण करवा रहा है, भोजन करवा रहा है।
23.	चलयति, कम्पयति	कम्पन्न करवा रहा है या हिलवा रहा है।
24.	आदयते देव दत्तेन	देवदत्त के द्वारा खाया जा रहा है।
25.	आदयत्यन्नं वटुना	वटुक के द्वारा अन्न खाया जा रहा है।
26.	शेतेकृष्णस्तं	
	गोपीशाययति	कृष्ण सो रहा है उसको गोपी सुलवा रही है।
27.	पाययते	पान करवा रहा है।
28.	दमयते	दमन करवा रहा है।
29.	आयामयते	भोजन पात्र थाली में ओदन मालपूजा आदि भोज्य पदार्थ को रखवा रहा है।

30.	आयासयते	प्रयत्न करवा रहा है।
31.	परिमोहयते	मोहित करवा रहा है।
32.	रोचयते	प्रीति को बढ़ा रहा है।
33.	नर्तयते	शरीर के अंग को कलात्मक ढंग से प्रक्षेपण करा रहा है।
34.	वादयते	बजवा रहा है।
35.	वासयते	निवास करवा रहा है।
36.	धापयेते शिशुमेकम्	एक शिशु को पान करवा रहे हैं।
37.	वत्सान् पाययति पयः	बछड़ों को दूध पिलवा रहा है।
38.	भिक्षां वासयति	भिक्षा को रोकवाता है।
39.	लोहितायति, लोहितायते	लाल नही था अब लाल हो रहा है।
40.	अद्युतत–अद्योतिष्ट	दीप्त हुआ था।
41.	वर्त्स्यति–वर्तिष्यते	वर्तमान में रहेगा।
42.	विवृत्सति–विवर्तिषते	रहने की इच्छा करता है
43.	कल्पता	समर्थवान होगा।
44.	कल्प्तासि	तुम सामर्थवान होगे।
45.	कल्पितासे	समर्थवान होगे।
46.	कल्प्स्यति, कल्पिष्यते, कल्पस्यते	समर्थवान होगा।
47.	चिक्लृप्सति, चिकल्पिषते, चिक्लृप्सते	सामर्थ की इच्छा करोगे।

अथ भावकर्म

सं0	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1.	त्वयामया अन्यैश्च भूयते	तुम्हारे द्वारा मेरे द्वारा और अन्य के द्वारा हो रहा है।
2.	अन्यैः बभूवे	अन्य के द्वारा हुआ था।
3.	भाविता भविता	कल होगा।
4.	भाविष्यते–भविष्यते	होगा।
5.	भूयताम्	होवे।
6.	अभूयत्	हुआ।
7.	भवेत्	होना चाहिए।
8.	भाविषीष्ट–भविषीष्ट	होवे।
9.	अभावि	हुआ था।
10.	अभाविष्यत्–अभविष्यत	होगा।
11.	अनुभूयते आनन्दश्चैत्रेण त्वयाभयाच	तुम्हारे द्वारा मेरे द्वारा आनन्द और चैत्र के द्वारा आनन्द का अनुभव होता है।
12.	अनुभूयेते	दो के द्वारा आनन्द का अनुभव होता है।
13.	अनुभूयन्ते	सभी के द्वारा आनन्द का अनुभव होता है।
14.	त्वमनुयसे	तुम अनुभव करते हो।
15.	अहमनुयेसे	मैं अनुभव करता हूँ।
16.	अन्वभावि	मेरे द्वारा अनुभव किया गया था।
17.	अन्वभाविषाताम्, अन्वभविषताम्	हम दोनों के द्वारा अनुभव किया गया था।
18.	भाव्यते	होता है।
19.	भावयाञ्चक्रे भावयामासे, भावयाम्बभूवे	होया था या हुआ था।
20.	स्तूयते विष्णुः	विष्णु मेरे द्वारा स्तुत हो रहे हैं
21.	तुष्टुवे	स्तुति हुयी थी।
22.	स्ताविता–स्तोता	कल स्तुति होगा।
23.	स्ताविष्यते–स्तोष्यते	स्तुति किया जायेगा।
24.	अस्तावि	स्तुति हुई।
25.	अस्ताविषाताम्–अस्तोषाताम्	हम दो के द्वारा स्तुति हुई।
26.	अर्यते	जाया जाता है।
27.	स्मर्यते	स्मरण किया जाता है।
28.	आरिता–अर्ता	कल जाया जायेगा।
29.	स्मारिता–स्मर्ता	स्मरण किया जायेगा।
30.	संस्क्रियते	संस्कार किया जाता है।
31.	स्रस्यते	नष्ट किया जाता है।

32.	भ्रस्यते	भ्रसित हो रहा है।
33.	नन्द्यते	स्मृद्धि की जाती है।
34.	इज्यते	याग किया जाता है।
35.	शय्यते	सुलवाया जाता है।
36.	तायते तन्यते	विस्तार किया जाता है।
37.	जायते जन्यते	उत्पन्न किया जा रहा है।
38.	अन्वतप्तपापेन	पापी पाप से सन्तप्त हुआ।
39.	दीयते	दान दिया जाता है।
40.	धीयते	धारण किया जा रहा है।
41.	जग्ले	ग्लानि की गयी थी।
42.	दायिता–दाता	कल दिलवाया जायेगा।
43.	दायिषीष्ट, दीसीष्टि	दिया जावे।
44.	अदापि	दिया गया।
45.	अदायिषाताम्	हम दोनों से दिया गया।
46.	अधायिषाताम् अधिषाताम्	हम दोनों से धारण किया गया।
47.	अग्लायिषाताम्	हम दोनों से संग्लानि की गयी।
48.	हन्यते	मारा जाता है।
49.	धानिता हन्ता	कल मारा जायेगा।
50.	धानिष्यते, हनिष्यते	मारा जायेगा।
51.	धानिषीष्ट–वधिषीष्ट	मारा जाय।
52.	अधानि	मारा गया।
53.	अधानिषाताम्–अहसाताम्	हम दोनों से मारा गया।
54.	अवधि	मारा था।
55.	अवधिषाताम्	हम दोनों से मारा गया था।
56.	अधानिष्यत–अहनिष्यत	मारा जाया जायेगा।
57.	ग्राहिता–ग्रहीता	कल ग्रहण कराया जायेगा।
58.	ग्राहिष्यते–ग्रहिष्यते	ग्रहण कराया जायेगा।
59.	ग्राहिषीष्ट–ग्रहीषीष्ट	ग्रहण कराया जाय।
60.	अग्राहि	ग्रहण कराया था।
61.	दृश्यते	दिखाई पढ़ रहा है या देखा जा रहा है।
62.	अदर्शि	देखा गया था।
63.	शामिता, शमिता, शमयिता	कल शान्त किया जायेगा।
64.	शामिष्यते शमिष्यते, शमयिष्यते	शान्त कराया जायेगा।
65.	शंशम्यते	बार बार शान्त कराया जा रहा है।
66.	शंशमिता, शंशमयिता,	बार बार शान्त कराया जायेगा।
67.	अशमि	शान्त किया था या शान्त हुआ था।

68.	अदभि	दमन हुआ था या दमन किया गया था।
69.	अगमि	गया हुआ था।
70.	अवदि	बुलवाया गया था।
71.	आचामि	आचमन कराया गया था।
72.	अकामि	इच्छा की गयी।
73.	अवामि	वमन किया गया।
74.	अवधि	हिंसा करायी गयी थी।
75.	अजागरि	निद्रा तोड़ी गयी थी।
76.	अभाजि–अभञ्जि	भञ्जन कराया गया या तोड़वाया गया था।
77.	अलाम्भि–अलाभि	लाभ कराया गया था या लाभ हुआ था।
78.	गौर्दुह्यते पयः	दुग्ध गाय से दुहा जा रहा है।
79.	अजा ग्रामं नीयते	बकरी गांव लायी जा रही है।
80.	अजाग्रामं ह्रियते	बकरी गांव जबरजस्ती या बलात आ रही है।
81.	अजा कृष्यते	बकरी खसीटी जा रही है।
82.	अजा उह्यते	बकरी ढोयी जा रही है।
83.	बोध्यते भाणवकं धर्मम्	माणवक को धर्म ज्ञान कराया जा रहा है।
84.	माणवको धर्मं बोध्यते	बालक धर्म को गुरू से बाध कराया जा रहा है।
85.	भोज्यतेमाणवकमोदनः	माणवक को भात खिलाया जा रहा है।
86.	देवदत्तो ग्रामं गम्यते	देवदत्त गांव को जाया जा रहा है।
87.	मासो मासं वा आस्यते देवदत्तेन	देवदत्त के द्वारा महीने तक निवास किया गया या देवदत्त के द्वारा महीने में निवास किया गया।
88.	मासभास्यते माणवकः	बालक महीने तक निवास करा रहा हैं
89.	माणवक ओदनं भोज्यते	माणवक भात को खिला रहा है।

●

अथ कर्मकर्ता

सं०	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1.	साध्वसिश्छिनत्ति	सुगमतापूर्वक तलवार छेदन कर रहा है या काट करा है।
2.	काष्ठानिपचन्ति	काठ (जलौनी लकड़ी) पका रही है।
3.	स्थाली पचति	बटलोई पक रही है।
4.	ओदनेन पच्यते	ओदन कर्तृक पाक क्रिया हो रही है।
5.	काष्ठेन भिद्यते	काठ कर्तृक भेदन क्रिया हो रही है या काठ के द्वारा भेदन हो रहा है।
6.	पच्यते ओदनः	ओदन (भात) पक रहा है।
7.	भिद्यते काष्ठम्	काठ द्वैधीभाव हो रहा है।
8.	अपाचि	पका
9.	अभेदि	द्वैधीभाव हुआ।
10.	ग्रामः गच्छति	गांव जाता है।
11.	आरोहति हस्ती	हाथी चढ़ाता है।
12.	अधिगच्छति शास्त्रार्थम्	शास्त्र का अर्थ अब बोध हो रहा है।
13.	पक्वेषु तण्डलेषु	पके हुए चावलों में
14.	छिन्नेषु काष्ठेषु	द्वैधीभाव किये गये काठों में।
15.	अन्योऽन्यं स्पृशतः	एक दूसरे का स्पर्श करते हैं।
16.	अजा ग्रामं नयति	बकरी गांव का प्राप्त होती है।
17.	गौः पयो दुग्धे	गाय स्वयं दुग्ध दे रही है।
18.	अकारि–अकृत	स्वयं चटाई बनी
19.	अदोहि	स्वयं दुग्ध दिया।
20.	अदुग्ध–अदुक्षत	स्वयं दुग्ध दी।
21.	उदुम्बरः फलं पच्यते	गूलर फल को स्वयं पका रहा है।
22.	सृज्यते स्रजं भक्तः	भक्त माला का स्वयं सृजन कर रहा है।
23.	असर्जि	गूथी गयी।
24.	युज्यते ब्रह्मचारी योगम्	ब्रह्मचारी योग को स्वयं जोड़ता है या योग में समाधीस्थ होता है।
25.	अलङ्कृरूते कन्या	कन्या स्वयं अलंकृत हो रही है।
26.	अलमकृत	अलङ्कृत हुई या हुआ।
27.	अवकिरते हस्ती	हाथी स्वयं अपने ऊपर फूल को गिरा रहा है।
28.	अवाकीर्ष्ट	गिराया गया।
29.	गिरते	भात स्वयं निगल रहा है।
30.	अकीर्ष्ट	स्वयं निगल गया।
31.	आद्रियते	स्वयं आदृत हो रहा है।
32.	आद्रियते	अतिथि स्वयं आदरित हो रहा है।
33.	आदृत	स्वयं सम्मानित हुआ।
34.	चिकीर्षते कटः	चटाई स्वयं बनाने की इच्छा करती है।
35.	अचिकीर्षिष्ट	स्वयं बनने की इच्छा की।
36.	अवारूद्ध गौः	गो स्वयं अवरूद्ध हो रहा है।
37.	अवारोधि गौर्गोपेंन	गोप के द्वारा गौ रोकी गयी।

38.	तप्यते तपस्तापसः	तापस (तपस्वी) तप को तपा रहा है। अर्थात अर्जित कर रहा है।
39.	अतप्त	तपस्या किया।
40.	उत्तपति सुर्वणं सुवर्णकारः	सोनार सोना को तपा रहा है।
41.	प्रस्नुते	गाय स्वयं दुग्ध प्रस्तवण के लिए उत्कण्ठित हो रही है।
42.	प्रास्नाविष्ट–प्रास्नोष्ट	दुग्ध प्रस्तवण के लिए स्वयं उत्कण्ठित हुई।
43.	नमस्ते दण्डः	छड़ी स्वयं नमस्कार कर रही है।
44.	अनंस्त	नमस्कार किया गया।
45.	कारयते	देवदत्त स्वयं करवा रहा है।
46.	अचीकरत	करवाया गया।
47.	दण्डः उच्क्रूयते	छड़ी स्वयं गा रही है।
48.	पुच्छमुदस्यति	पूंछ को उपर उठाती है।
49.	उत्पुच्छयते गौः	गाय स्वयं पूंछ उपर उठा रही है।
50.	गामुत्पुच्छयते	गाय की पूंछ उपर उठवाई जा रही है।
51.	उदपुपुच्छत	पूंछ उठायी गयी थी।
52.	ग्रन्थति ग्रन्थम्	ग्रन्थ को बना रहा है या ग्रन्थ की नत्थी कर रहा है।
53.	श्रन्थति मेखलां देवदत्तः	मेखला का देवदत्त विमोजन कर रहा है।
54.	ग्रन्थः ग्रन्थते	ग्रन्थ स्वयं नत्थी हो रहा है।
55.	अग्रन्थिष्ट	ग्रन्थ नत्थी स्वयं हुई।
56.	श्रन्थते	मेखला स्वयं विमोचित हो रही है।
57.	अश्रन्थिष्ट	स्वयं विमोचित हुई थी।
58.	सैन्धवाः व़िकुर्वते	सिन्धु देश के घोड़े हिनहिना रहे हैं।
59.	कुष्यति कुष्यते पादः	पाद स्वयं निष्कर्ष ले रहा है।
60.	रज्जति रज्यते वा वस्त्रम्	कपड़ा स्वयं रंगा जा रहा है।
61.	कोषिषीष्ट	निकर्ष लिवाया जाय।
62.	रङ्क्षीष्ट	रंगवाया जाय।
63.	व्यकारिष्टः	स्वयं हिनहिनाये थे।

अथ लकारार्थ

सं०	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1.	स्मरसि कृष्ण गोकुलेवत्स्यामः	यहां अभिज्ञावचन उपपद स्मरसिहै एतदर्थ में लङलकार प्रयोग के स्थान पर लृट लकार का प्रयोग वत्स्योमः हुआ जिसका अर्थ निवास करेंगें, किन्तु इसका व्यवहार में लङ्लकार के अर्थ को ही कहेंगे।
2.	अभुञ्जमहि	खाये थे।
3.	वत्स्यामः	निवास किये थे।
4.	चारिष्यामः	चराये थे।
5.	अववात्सीः	निवास किये।
6.	जगाम	गया था।
7.	अकरोत्	किया
8.	चकार	किया था।
9.	अगच्छत्	गया
10.	जगाम	गया था।
11.	यजतिस्म	यज्ञ करता है (यज्ञ किया था)
12.	एवं स्मपिता व्रवीत	इस प्रकार पिता ने कहा अर्थात इस प्रकार पिताजी ने कहा था।
13.	अकार्षीः किम्	तुमने क्या किया।
14.	ननु करोमिभोः	मैं करता हूँ।
15.	न करोमि	नही करता हूँ।
16.	नाकर्षम्	नही किया हूँ।
17.	वसन्तीहपुरा छात्राः	पहले यहां पर छात्र लोग निवास करते हैं (करते थे)
18.	अवात्सुः	निवास किये थे।
19.	अवसन्	निवास किये।
20.	ऊषुर्वा	निवास किया था।
21.	यजतिस्मपुरा	पहले यज्ञ किया था।
22.	यावत् भुङ्क्ते	खाता है वस्तुतः खायेगें।
23.	पुरा भुङ्क्ते	खाता है वस्तुतः खायेगें।
24.	यावद् दास्यते	जितना दोगे।
25.	तावद् भोक्ष्यते	उतना खायेगें।
26.	कदा केर्हिवा भुङ्क्ते, मोक्ष्यते भोक्ता–	कब खायेगें।
27.	कं कतरं कतमं भोजयसि– भोजयिष्यसि– भोजयितासि	तुम इन दोनों में से किसको या इन सभी में से किसको खिलाओगे।
28.	यो अन्नं ददाति दास्यति दाता	जो अनाज को देता है या देगा।
29.	सः स्वर्ग याति यास्यति याता	वह स्वर्ग प्राप्त करता है या प्राप्त करेगा।

30.	कृष्णश्चेद् भुङ्क्ते त्वंगाश्चारय	कृष्ण यदि भोजन खाते हैं तो तुम गाय को चराओं
31.	ऊर्ध्वमौहूर्ति के भविष्यति	मुहुर्त के बाद (एक क्षण के वाद) होगा।
32.	मुहूर्तादुपरि उपाध्यायश्चेदागच्छेत आगच्छति, आगमिष्यति, आगन्तावा–	एक क्षण के बाद यदि उपाध्याय आवे या आते हैं या आवेंगें।
33.	अथत्वं छन्दोऽधीष्व	इसके बाद त्वं छन्द पढ़ो
34.	कदा आगतोऽसि	कब आये हो
35.	अयमागच्छामि	यह मैं आ रहा हूँ।
36.	अयमागभम	यह मैं आया।
37.	कदागमिष्यसि	कब गये थे।
38.	एष गच्छामि– गमिष्यामि	यह जाता हूँ–जाउंगा।
39.	देवश्चेदवर्षीत्	देव वर्षा किये थे।
40.	धान्यमवाप्सम्	धान्य बोआ गया था।
41.	देवश्चेद्वर्षिष्यति	देव यदि वर्षा करेंगें।
42.	धान्यंवपस्यामः	धान्य बोवेंगें।
43.	देवश्चेद वर्षिष्यति	देव यदि वर्षा करेंगें।
44.	धान्यं बपस्यामः	धान्य बोयेगें।
45.	वृष्टिश्चेत्क्षिप्रमा– शुत्वरिंतंवायास्यति	वृष्टि (वर्षा) यदि शीघ्र प्राप्त होगी
46.	शीघ्रं वपस्यामः	शीघ्र बोयेगें।
47.	गुरूश्चेदुपेयादाशंसेऽधीयीय	प्राप्त करने की इच्छा से यदि गुरू आशा करते हैं तो पढ़ो।
48.	याव्ज्जीवनमन्नम– दाद्दास्यतिवा	जब तक जिन्दगी है अन्न को दिया अथवा देगा।
49.	येयं पौर्णमास्यतिक्रान्ता तस्यामग्रीनाधित	जिससे यह पार्णमासी व्यतीत हुई है उस रात्रि में अग्नी का आधान किया।
50.	सोमेनायष्ट	सोमलता से यज्ञ किया।
51.	येयभमावास्याऽगमिनी तस्यभग्नीनाधास्यते	जिससे यह आंने वाली अमावश्या है उससे अग्नि का आधान करेगा।
52.	सोमेन यक्ष्यते	सोमलता से यज्ञ करेगा।
53.	योऽयमध्वागन्तव्य आपाटलिपुत्रात्तस्य पदवरं कौशाम्व्यास्तत्रसक्तून् पास्यामः –	मध्य मार्ग में कौशाम्बी नामक नगरी है उस नगरी में अपाटलीपुत्र से जो गन्तव्य मार्ग है उस मार्ग के मध्य में स्थित कौशाम्बी का यह जो छोटा प्रदेश है उसमें सतुआ पीयेगें।
54.	योऽयंवत्सर आगामी तस्य यदवरम–ग्रहायण्यास्तत्र युक्ता अध्येष्यामहे	आने वाला वर्ष है उसका यह छोटा अगहन माह है उसमें नियमित हम सब अध्ययन करेंगें।

55. योऽयंसम्वत्स आगामीतस्यर यत्परस– ग्रहायणयास्तत्रामध्येष्यामहे– अध्येतामहे — जो यह आने वाला सम्वत्सर है उसका मुख्य अगहन मास है उस मास में पढेगें

56. अपिजायां त्यजसि — हमेशा के लिए स्त्री को छोडते हो।

57. जातुगणिकामाधत्से — हमेशा के लिए वेश्या को स्वीकार करते हो।

58. कथं धर्मंत्यजेः त्यजेसिवा — क्यों धर्म को छोडना चाहते हो अथवा क्यों धर्म को छोड रहे हो।

59. कः कतरः कतमो हरिं निन्देत — कौन इन दोनों में से या कौन इन सभी में से कौन हरि की निन्दा करना चाहता है या निन्दा करेगा।

60. न सम्भवयामि न मर्षयेभवान् हरिं निन्देत– — निन्दिष्यतिवा आप हरि की निन्दा या निन्दा करेंगें यह मैं आशा नही करता हूँ या न क्षमा करता हूँ।

61. नश्रद्दधे नमर्षयेवा किं किंलत्वंशुद्रान्नं भोक्ष्यसे — मैं सम्भावना नही करता हू न क्षमा करता हूं न तुम शुद्रान्न खाओगे किकिलं– क्रोध को प्रदर्शित करता है।

62. अस्तिभवति विद्यतेवा शुद्रीं गमिष्यसि — तुम शुद्री के पास जाओगे यह बात है या ऐसा हो रहा है।

63 जातुयद्यदा यदिवा त्वादृशो हरिं निन्देन्नाव– कल्पयामि न मर्षयामि — यदि जब अथवा यदि तुम्हारे सदृश हरि की निन्दा करें तो ऐसी कल्पना नही करता हूँ और न क्षमा करता हूँ।

64. यच्च यत्रवात्मेवं कुर्याः नश्रृद्दधे नमर्षयामि — जो अथवा जहां पर तुम इस प्रकार करो न कल्पना करता हूँ न क्षमा करता हूँ।

65. यच्च यत्र वा त्वं शुद्रं याजयेः अन्याय्य — जो अथवा जहां पर तुम शुद्र का याग करे तो वह उचित नही है।

66. यच्च यत्रवा त्वं शुद्रं याजये, आश्चर्यमेतत् — जो जहां पर तुम शुद्र का याग करो तो यह आश्चर्य है।

67. आश्चर्यमन्धो कृष्णं द्रक्ष्यति — अन्धा मनुष्य कृष्ण को देखेगा यह आश्चर्य है।

68. आश्चर्ययदिमुकोऽधीयीत — यदि गूंगा अध्ययन करे तो आश्चर्य है।

69. उत अपि वा हन्यादघं हरिः — भगवान विष्णु पाप को खत्म करें तो बहुत अच्छा या सुन्दर है।

70. उत दण्डः पतिष्यति — अथवा दण्ड गिरेगा।

71. अपि धास्यति द्वारम् — अथवा दरवाजा का अच्छादन करेंगें।

72. कामोमेभुञ्जीत भवान् — मेरी इच्छा है आप भोजन करें।

73. गिरिंसिरसा भिन्धात् — सिरसे पहाड़ का भेदन करें।

74. अलं कृष्णो हस्तिनं हनिष्यति — कृष्ण पर्याप्त हैं हाथी को मारेंगें।

75. सम्भावयामि भुञ्जीत मोक्ष्यते वाभवान् — सम्भावना करता हूँ कि आप भोजन करें या करेगें।

76.	कृष्णं नमेच्चेत्सुखं यायात्	यदि कृष्ण को नमन करें तो सुख प्राप्त करें।
77.	कृष्णं नंस्यति चेत्सुखं यास्यनि	कृष्ण का नमन करेंगें तो सुख प्राप्त होगा।
78.	हन्तीति पलायते	मारता है, भागता है।
79.	इच्छामि भुञ्जीत भुङ्क्तावाम् भवान्	इच्छा करता हूं आप भोजन करें या भोजन करेंगें।
80.	इच्छेत–इच्छति	इच्छा करें। इच्छा करता है।
81.	कामयेत कामयते	कामना करें। कामना करता है।
82.	यजेत	यज्ञ करें।
83.	इह भुञ्जीत् भवान्	आप यहां भोजन करें।
84.	इहासीत्	यहां बैठें।
85.	पुत्र मध्यापयेद्भवान्	आप पुत्र को पढावें।
86.	किं भो वेदमधीयीत् उत्तर्कम	भो क्या वेद पढ़े अथवा तर्क
87.	भो भोजनं लभेय	भो भोजन को प्राप्त करें।
88.	भवता यष्टव्यम्	आप के द्वारा यज्ञ होना चाहिए।
89.	भवान् यजताम्	आप यज्ञ कर सकते हैं।
90.	ऊर्ध्व मुहूर्ताद्य जेत्यजताम यष्टव्यम्	एक क्षण के बाद यज्ञ करो। या यज्ञ करना चाहिए
91.	त्वंस्माऽध्यापय	तुम पढ़वायो।
92.	कालः समयोवेलावा यद्भुञ्जीत भवान्	आप भोजन करें यदि उसका समय है।
93.	त्वं कन्यां वहेः	तुम्हें कन्या को वहन करना चाहिए अर्थात कन्या विवाह के योग्य है।
94.	भारं त्वं वहेः	तुम्हे भार (बोझा) को ढोना चाहिए।
95.	वसन् ददर्श	निवास किया था, देखा था या निवास करते देखा था।
96.	सोमयाज्यस्य पुत्रोभविता	सोमलता से यक्ष्यभाण कर्तृक पुत्र की उत्पत्ति होगी
97.	याहि याहीति याति	प्राप्त करो, प्राप्त करो, प्राप्त करता है अथवा जाओ, जाओ, जाता है।
98.	अधीष्वाऽधीष्वेत्यधीते	पढ़ो, पढ़ो पढ़ता है।
99.	अधीध्वमधीध्वामिति यूयमधीध्वे	पढ़ो, पढ़ो, तुम सब पढ़ते हो।
100.	सक्तून् पिव	सतुआ पिवो
101.	धानाः खादत्यभ्यवहरति	धान खाता है। इस प्रकार का व्यवहार करता है।
102.	अन्नं भुङक्ष्व	अन्न खाओ।
103.	ऊर्ध्वं मुहूर्ताद यजतां स्म	एक क्षण के बाद यज्ञ करें।
104.	मा कार्षीः	मत करो।
105.	कथं माभवतु	क्यों न होवे ।
106.	या भविष्यति	नहीं होवेगा ।
107.	यातः	वह दोनों जाते हैं ।
108.	यन्ति	वे सब जाते हैं ।
109.	यासि	तुम जाते हो ।
110.	याथः	तुम दोनों जाते हो ।
111.	पाध	तुम सब जाते हो ।

●

चतुर्थ भाग

अथ कृदन्ते कृत्य प्रकरणम्

सं0	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1	एधनीयम्	तुम्हारे द्वारा वर्धन हुआ
2	एधितव्यम्	तुम्हारे द्वारा वर्धन किया हुआ
3.	चेतव्यः	तुम्हारे द्वारा एकत्रित किया गया
4.	चयनीयः	तुम्हारे द्वारा एकत्रित किया गया
5.	वास्तव्यः	निवासी
6.	पचेलिमाः	तुम्हारे द्वारा पकाया गया
7.	पक्तव्याः	तुम्हारे द्वारा पकाया गया
8.	भिलेलिमाः	तुम्हारे द्वारा सरल वृक्ष काटा गया या छेदन किया गया
9.	भेतव्याः	तुम्हारे द्वारा वृक्ष छिन्न–भिन्न किया गया
10.	प्रयाणीयम्	तुम्हारे द्वारा प्राप्त किया गया या गमन किया गया
11.	प्रमग्नः	डूबा हुआ या डूबोया गया
12.	निर्विण्णः	निर्वेद युक्त, खिन्न भय या शोक से अभिभूत
13.	प्रयापणीयम् प्रयापनीयम्	प्राप्त कराया गया या गमन कराया गया
14.	प्रयाप्यमाणं पश्य	प्राप्त कराने वाले या गमन करने वाले को देखो
15.	दुर्यानम्	कष्टकर सवारी
16.	प्रकोपनीयम्	कुद्ध किया जाने वाला
17.	दुर्यापनम्	अपमानित कर बाहर निकालना
18.	प्रोहणीयम्	अंकुरित किया जाने वाला
19.	प्रवपणीयम्	बुआई किया जाने वाला
20.	प्रेङ्खणीयम्	भुलाये जाने वाला
21.	प्रमङ्गनीयम्	डुबाया जाने वाला
22.	प्रणिंसितव्यम् प्रनिंसितव्यम्	चुम्बन किया जाने वाला
23.	प्रभानीयम्	प्रकाश किया जाने वाला
24.	प्रभवनीयम्	उत्पन्न किया जाने वाला
25.	प्रख्यानीयम्	आख्यान किया जाने वाला
26.	स्नानीयम्	जिस चूर्ण को शरीर में लगाकर स्नान किया जा सके
27.	दानीयः	दान जिसको दिया जा सके
28.	चेयम्	जिसका दमन किया जा सके या एकत्र करने योग्य
29.	जेयम्	जितने योग्य
30.	देयम्	देने योग्य वस्तु
31.	ग्लेयम्	ग्लानि करने योग्य
32.	तक्यम्	
33.	तक्यम्	हसन क्रिया योग्य
34.	शस्यम्	हिंसन क्रिया योग्य, अन्न, धान्य

35.	चत्यम्	पाचन क्रिया योग्य
36.	यत्यम्	यत्न क्रिया के योग्य
37.	जन्यम्	उद्भव क्रिया योग्य जन्म लेने वाला
38.	वध्यः	हनन क्रिया योग्य या मारे जाने योग्य
39.	घात्यः	हनन क्रिया योग्य
40.	शप्यम्	उलाहना के योग्य या अभिशाप देने योग्य
41.	लभ्यम्	प्राप्त होने के योग्य या पहुंचने के योग्य
42.	आलम्भ्योगौः	प्राप्त करने योग्य गाय
43.	उपलम्भ्यः साधुः	प्रशंसा योग्य साधू
44.	उपलभ्यः	प्राप्त करने के लिए योग्य
45.	शक्यम्	सम्भव किये जाने योग्य
46.	सह्यम्	सहन करने योग्य,बहन करने योग्य, सहारा दिये जाने योग्य
47.	गद्यम्	बोलने या उच्चारण करने योग्य
48.	मद्यम्	खुशी योग्य या मादक द्रव्य
49.	चर्चम्	इधर–उधर जाना, मार्ग
50.	आचार्यो देशः	जाने योग्य देश
51.	प्रयाम्यम्	भोजन पात्र में भोज्य पदार्थ रखने योग्य
52.	अवद्यं पापम्	निन्दा करने योग्य पाप या न कहने योग्य पाप
53.	अनुद्यं गुरूनाम	न कहने योग्य गुरू का नाम
54.	पण्यागौः	बेचने योग्य गाय
55.	पाण्यम्	स्तुति के योग्य
56.	वर्या	पुरूष के द्वारा वरण करने योग्या
57.	वृत्या	अनुरूप से वरण करने योग्या
58.	वह्यम्	जिससे ले जाया जाय अर्थात गाड़ी
59.	वाह्यम्	ढोने योग्य या जिसको ढोया जाय
60.	अर्यः	स्वामी या वैश्य
61.	आर्यः	ब्राह्मण या श्रेष्ठ जन
62.	उपसर्या गौः	गर्भ धारण योग्य गाय या सांड़ के समीप जाने योग्य
63.	उपसर्या–काशी	प्राप्त करने योग्य काशी
64.	अजर्यम्	सङ्गम के योग्य या मित्रता
65.	ब्रह्मवद्यम्, ब्रह्मोद्यम्	वेद कथन
66.	अनुवाद्यम्	पश्चात् कथन
67.	अपवाद्यम्	अपवाद कथन
68.	ब्रह्मभूयः	वेद या ब्रह्म होना
69.	भव्यम्	विद्यमान या होने वाला
70.	प्रभव्यम्	प्रभाव
71.	ब्रह्महत्या	वेद हनन या ब्राह्मण हनन
72.	इत्यः	समीप से जाना
73.	स्तुत्यः	जिसकी स्तुति की जाय
74.	शिष्यः	शासन के योग्य या छात्र या जिसको दीक्षित किया जाय

75.	वृत्यः	वरण के योग्य
76.	वार्या	आदरणीय ऋत्विज
77.	आदृत्यः	आदर या सम्मान योग्य
78.	जुष्यः	प्रीति योग्य
79.	शंस्यम्, शस्यम्	धान्य–कूटने के योग्य
80.	दुह्यम्, दोह्यम्	दोहने योग्य या जिसकी दोहन क्रिया हो सके
81.	गुह्यम्, गोह्यम्	छिपाने योग्य या जिसको छिपाया जा सके
82.	आज्यम्	पिघलाया हुआ घृत
83.	वृत्यम्	वर्तमान के योग्य
84.	वृध्यम्	वर्धन योग्य
85.	कल्प्यम्	सामर्थ्य
86.	चर्त्यम्	हिंसा के योग्य
87.	कीर्त्यम्	शब्द करने योग्य
88.	खेयम्	खनने के योग्य या अवदारण के योग्य
89.	भृत्याः	नौकर या कर्मचारी वर्ग
90.	सभृत्याः संभार्या	संवैधानिक नौकर
91	मृज्यः मार्ग्यः	शुद्धिकरण के योग्य
92	न्यङ्कुः	तीव्र गति या नियमित गति मान
93	राजसूयः	राजा के द्वारा निष्पादित यज्ञ या सोम लतात्मक यज्ञ
94	सूर्यः	आदित्य
95	मृषोद्यम्	विशेष अनुसेवी
96	रुच्यः	अच्छा लगने योग्य
97	कुप्यम्	अपधातु या सोने चाँदी से भिन्न धातु से बना हुआ वस्तु
98	कृष्टपच्याः	हल चलाये हुए खेत में स्वयं पकने वाली
99	अव्यथ्यः	जो व्यथा के योग्य न हो
100	भिद्यः उद्ध्यः	विशेष नद
101	पुष्यः	जिस नक्षत्र में कार्य विकसित हो या नक्षत्र विशेष
102	सिध्यः	जिस नक्षत्र में कार्य सिद्धः हो
103	विपूयः	मूञ्ज या काती हुई रस्सीको जिससे मांजना जाय
104	विनीयः	एक प्रकार की लेई या पेस्ट या औषधि विशेष या पाप
105	जित्यः	जोता हुआ खेत को बराबर करने वाला काठ का बना हुआ हेंगा
106	विपव्यम्	विशेष पवित्र के योग्य
107	विनेयम्	विशेष प्राप्त करने योगय
108	जेयम्	जीतने योग्य
109	अवगृह्यम् प्रगृह्यम्	जो पदों को विभाजित कर ग्रहण करने योग्य या जिसमें शुकबन्धित हो जाय पिञ्जरा, या ग्राम के बाहर सेना या आर्यो के द्वारा ग्रहण करने योग्य या उनके पक्षाशयण के योग्य
110	कृत्यम्–कार्यम्	उचित या सही कार्य जो किया जाना चाहिए
111	वृष्यम्–वर्ष्यम्	जिसके उपर वरसा जा सके या वौक्षार किया जा सके। माष या उड़द।
112	युग्योः गौः	गाड़ी से जो जुता जा सके

113	अमावस्या	जिस रात्री में सूर्य और चन्द्र एक साथ निवास करतें हैं
114	पाक्यम्	पकने या पचने के योग्य
115	पाणिसर्ग्या	दोनों हाथों से जो काती जा सके या रसरी
116	समवसर्ग्या	विधिपूर्वक काती जाने वाली रसरी
117	गर्ज्यम्	गरजने योग्य या जिसके उपर गरजा जा सके
118	समाज	समा, मिलन, मजलिस
119	परिव्राजः	सभी का त्याग करके जो भ्रमर करता है साधु सन्यासी या अवधूत
120	भुजः	जिससे खाया जाय या हाथ
121	न्यूब्जः	उपताप या रोग
122	भोगः	जीवन के लिए उपयोग सामग्री
123	समुद्गः	उगने वाला चढ़ने वाला
124	प्रयाजः	प्रधान यज्ञ सम्बन्धी अनुष्ठान
125	अनुयागः	यज्ञीय अनुष्ठान एक अंङ्ग
126	प्रयागः	प्रकृष्ट यज्ञ फल जहाँ होता है
127	अनुयाग	प्रज्ञीय अनुष्ठान का एक अंश
128	वञ्च्यम्	ठगना बदमाशी धोखा चालाकी
129	वङ्क्यम्	ढेड़ा काष्ठ
130	ओकः	घर शरण आश्रय पक्षी शुद्र
131	अवश्यपाच्यम्	अवश्य निश्चित पकने योग्य
132	याज्यम्	त्याग करने योग्य, या यज्ञ, या जिसके लिये यज्ञ किया जाय
133	याच्यम्	मांगने योग्य , या जिसके लिये मांगा जाय
134	रोच्यम्	अच्छा लगने योग्य
135	प्रवाच्यम्	ग्रन्थ विशेष
136	अर्च्यम्	पूजा के योगय
137	वाच्यम्	अर्थ
138	वाक्यम्	सुप् तिङ् समूह
139	प्रयोज्यम्	प्रयोग करने योग्य, या प्रयोग किया जा सकता है
140	नियोज्यः	नियोजित किया जा सकता है या किसी को रखा जा सकता
141	भोज्यम्	भक्षण करने योग्य
142	भोग्यम्	मनुष्य के जीवन में उपभोग पदार्थ धन स्त्री आदि
143.	लाप्यम्	स्पष्ट वाणी कहने के योग्य
144	दाभ्यः	ठगने के योग्य, धोखा
145	लाव्यम्	काटने योग्य फसल
146	पाव्यम्	पवित्र करने योग्य
147	आसाव्यम्	अभिषेक करने योग्य
148	याव्यम्	मिश्रण या मिलाने योग्य
149	वाप्यम्	वपन या बोने के योग्य
150	राप्यम्	स्पष्ट वाणी कहने योग्य
151	त्राप्यम्	लज्जा योग्य
152	चाम्यम्	खाने योग्य

153	आनाय्यः	दक्षिणाग्नि विशेष, हवन के लिये प्रतिदिन प्रज्वलित होने वाली अग्नि
154	प्रणाय्यः	चोरः या प्रीति के लिये अनर्ह या विरक्त
155	पाय्यम्	तौलने का उपकरण या सामान
156	सानाय्यम्	हवन के लिए अग्नि को जो दिया जाय या हवि
157	निकाय्यः	धान्य इत्यादि को जिसमें एकत्रित किया जाय या भण्डार गृह
158	धाय्या	समिधा आधान के लिए ऋचा विशेष
159	कुण्डपाय्यः	चमस पात्र विशेष से जिसमें सोमरस का पान किया जाय क्रतु या यज्ञ विशेष
160	सञचाय्यः	यज्ञ या कतु विशेष
161	चित्यः	अग्नि, आग
162	अग्निचित्या	अग्नि एकत्रित करना
163	गन्तव्यम्, गमनीयम्, गम्यम्	जाने योग्य स्थान या गमन करना चाहिए
164	स्तुत्यः	स्तुति या प्रार्थना के योग्य
165	स्तोता	स्तुति या प्रार्थना करने वाला
166	भव्यः	यह हो रहा है
167	गेयः	यह सामवेद गाये जाते हैं
168	वोढव्यः, वहनीयः, वाह्यः	वहन या ढोने के लिए समर्थ या वहन किया जा सकता है

●

अथ कुदन्त प्रकरणम्
पूर्व कृदन्त प्रकरणम्

सं0	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1	कारकः, कर्ता	कार्य करने वाला
2	वोढा	ढोने के योग्य या ढोने वाला
3.	कारिका, कत्री	कार्य करने वाली
4.	कुटिता, कोटकः	कुटिल कार्य करने वाला
5.	विजिताः	परास्त करने वाला
6.	घातकः	हिंसा करने वाला या मारने वाला
7.	दायकः	दान देने वाला
8.	शमकः	शमन या शान्ति करने वाला
9.	दमकः	दमन करने वाला या दबाने वाला
10.	नियामकः	नियमित करने वाला
11.	जनकः	उत्पन्न करने वाला या पिता
12.	बधकः	हिंसा करने वाला, कसाई
13.	रन्धकः, रधिता, रद्धा	हिंसकः निष्पाद करना
14.	जम्भकः	नाशक
15.	मङ्क्ता	शुद्ध करने वाला या शोधक
16.	नंष्टा, नशिता	नष्ट करने वाला
17.	रम्भकः रब्धा	आरम्भकः शब्दकर्ता
18.	लम्भकः, लब्धा	प्राप्त करने वाला
19.	एषिता, एष्टा	इच्छा करने वाला या जाने वाला
20.	सहिता सोढा	सहने वाला, तृप्ति वाला
21.	दरिद्रिता, दरिद्रायकः	दुर्गति वाला
22.	प्रक्रन्ता	प्रकर्ष या वेग के साथ पैर या पाद का न्यास रखना
23.	प्रक्रमितव्यम्	पाद विन्यास करना चाहिए।
24.	संक्रमिता	संक्रमण करने वाला
25.	क्रमिता	पैर रखने वाला
26.	संजिगमिषिता	सुव्यवस्थित रूप से जाने की इच्छा करने वाला
27.	विवृत्सिता	वर्तमान स्थिति को चाहने वाला
28.	पापचकः	पुनः पुनः पकाने वाला
29.	पापाचकः	बार–बार पकाने वाला
30.	जनार्दनः	जन समुदाय को बढ़ाने वाला या भगवान कृष्ण
31.	मधुसूदनः	मधु नामक राक्षस को मारने वाला या भगवान कृष्ण
32.	नन्दनः	प्रसन्न करने वाला या समृद्धि वाला
33.	विभीषणः	विशेष भय प्रदान करने वाला या रावण का लघु भ्राता
34.	लवणः	काटने वाला। हंसिया कुठार आदि
35.	ग्राही	ग्रहण करने वाला
36.	स्थायी	स्थिर रूप से रहने वाला

37.	मन्त्री	मन्त्रणा करने वाला
38.	विषयी	विशेष रूप से अनुबन्धन करने वाला
39.	परिभावी, परिभवी	पराजय करने वाला
40.	पचः	पकाने वाला
41.	नदी	सरिता
42.	चोरी	चुराने वाला
43.	देवी	दिव्य रूप वाली
44.	जारभरा	व्यभिचारिणी स्त्री
45.	श्वपचा	नीच जाति की स्त्री या चण्डालिनी
46.	चेक्रियः	बार बार खरीदने वाला
47.	नेन्यः	बार बार ले जाने वाला
48.	लोलुवः	बार बार काटने वाला
49.	पोपुवः	बार–बार पवित्र करने वाला
50.	मरीमृजः	बार बार शुद्ध होने वाला
51.	चराचरः	स्थावर जंगम खाने या भक्षण करने वाला
52.	चलाचलः	खिलाने वाला या विकसित होने वाला
53.	पतापतः	गिरने वाला
54.	वदावदः	बोलने वाला
55.	धनाधनः	इन्द्र, चिडचिड़ा, पानी बरसाने वाला बादल, या बार बार हिन्सा करने वाला
56.	पाटूपटः	चलने वाला या शब्द करने वाला
57.	चरः	चलने वाला या भक्षण करने वाला
	वदः	बोलने वाला
58.	चलः	विकसित प्रफुल्लित होने वाला
59.	हनः	मारने वाला
60	पाटः	चलने वाला या शब्द करने वाला
61.	रात्र्चिरः, रात्रिचरः	राक्षस या रात्रि में घूमने वाला
62.	क्षेप्ता, क्षिपः क्षेपकः	प्रेरणा देने वाला
63.	लेखिता, लिखः लेखकः	लिखने वाला
64.	बोधकः बोद्धा, बुधः	अवबोध करने वाला
65.	कर्शकः कृशः, कर्शिताः	दुर्बल शरीर वाला
66.	ज्ञाता, ज्ञः, ज्ञकः	जानने वाला
67.	प्रेयक, प्रेता, प्रियः	तर्पण करने वाला या कान्तिमान
68.	सुग्लः	धातुक्षय वाला
69.	प्रज्ञः	तीव्र वुद्धि वाला या अधिक जानकार
70.	पिवः	पीने वाला
71.	जिघ्रः	सूंघने वाला
72.	धमः	चौकने वाला
73.	धयः धयाः	पीने वाला या पीने वाली
74.	पश्यः	देखने वाला
75.	लिम्पः	लेप करना या लेपना

76.	विन्दः	लाभ प्रापकः
77.	धारयः	धारण करने वाला
78.	पारयः	अवस्थान करने वाला
79.	पारयः	पालन करने वाला या पूरा करने वाला
80.	वेदयः	वेदना करने वाला
81.	उदेजयः	अधिक कपाने वाला
82.	चेतयः	चेतन या संज्ञान वाला
83.	साहयः	सहन करने वाला या सहन कराने वाला
84.	गोविन्दः	श्री कृष्ण, भगवान
85.	अरविन्दम्	कमल
86.	ददः, प्रदः	देने वाला या प्रदान करने वाला
87.	दधः, प्रधः	धारण करने वाला या पोषण करने वाला
88.	ज्वालः, ज्वलः	प्रकाश वाला
89.	चालः चलः	गतिमान या प्रफुल्लित वाला
90.	उज्जवलः	प्रकाश वाला
91.	अवतानः	विस्तार वाला
92.	अवश्यायः, प्रतिश्यायः	कोहरा, ओस, जुकाम सर्दी
93.	दायः	दिया जाने वाला या उपहार
94.	व्याधः	शिकार करने वाला बहेलिया या शिकारी
95.	धायः	धारण करने वाला या पोषण करने वाला या दिया जाने वाला
96.	आस्त्र, सस्त्रावः	भलीभांति या अच्छी तरह से टपकना
97.	अत्यायः	अति गमनशील
98.	अवसायः	उपसंहार, अन्त, समाप्ति
99.	लेहः	चाटने वाला या आस्वादन करने वाला
100.	श्लेषः	आलिङ्गन करने वाला
101.	श्वासः	श्वास लेने वाला
102.	दावः	सन्ताप देने वाला
103.	दवः	गमन वाला या वन की अग्नि
104.	नायः	प्राप्त करने वाला
105.	ग्राहः	घड़ियाल
106.	ग्रहः	सूर्यादि ग्रह
107.	भवः	देव संसार
108.	भावः	पदार्थ
109.	गृहम्	घर
110.	गृहा	दारा, स्त्री
111.	नर्तकः	नाचने वाला
112.	नर्तकी	नाचने वाली
113.	खनकः	खनखन शब्द करने वाला
114.	खनकी	खनखन शब्द करने वाली
115.	रजकः	रंगरेज या धोबी
116.	रजकी, रजिका	वस्त्र को रंगने वाली या रंगरेज की स्त्री या धोबिन
117.	गाथकः	गाने वाला या गायक

	सातयः	सुखी वाला
	व्याधः	वहेलिया या शिकारी
	अवहारः	चोर शार्क नाम की मछली, युद्ध विराम, सन्धि ।
118.	गायन	गान करने वाला या गान की कला से परिचित
119.	गायनी	गान करने वाली स्त्री या गान की कला को रखने वाली।
120.	हायनः	धान या वर्ष
121.	प्रवकः	तेज चलने में समर्थ
122.	सरकः	सरकने वाला सांप, विच्छू आदि
123.	लवकः	काटने वाला
124.	जीवकः	जीव
125.	नन्दकः	समृद्धवान होवे या प्रसन्न होवे
126.	कुम्भकारः	कोहार, घड़ा, आदि बनाने वाला
127.	मांसशीला	स्वभाव से मांस भक्षण करने वाली
128.	मांसकामा	मांस की कामना करने वाली
129.	मांसभक्षा	मांस खाने वाली
130.	कल्याण चारा	कल्याण करने वाली या कल्याणकारी आचरण करने वाली
131.	सुखप्रतीक्षा	सुख की इन्तजार करने वाली
132.	बहुक्षामा	अधिक सहन करने वाली
133.	स्वर्गह्वायः	स्वर्ग की अभिलाषा करने वाला
134.	तन्तुवायः	जुलाहा
135.	धान्यमायः	अनाज मापने वाला
136.	गोदः	गाय का दान करने वाला
137.	पार्ष्णित्रम्	जूता, चप्पल आदि
138.	गोसन्दायः	गाय विधिपूर्वक दान करने वाला
139.	ब्रह्मज्यः	वृद्ध ब्राह्मण
140.	आह्वः प्रह्वः	आवाहन करने वाला
141.	द्विपः	पृथ्वी का वह भाग जो दोनो तरफ से पूर्व और पश्चिम तथा उत्तर और दक्षिण से जल से घिरा हो।
142.	समस्थः	बराबरी में बैठने वाला
143.	विषमस्थः	समान स्थान पर न बैठने वाला
144.	आरवूत्थः	चूहों से उत्पन्न
145.	प्रष्ठो गौः	चलने वाली, आगे जाने वाली या अग्रगामिनी गाय
146.	प्रष्ठोऽश्वः	आगे आगे घोड़ा चलने वाला
147.	द्विष्ठः	दो स्थान पर बैठने वाला
148.	त्रिष्ठः	तीन स्थान पर बैठने वाला
149.	अम्बष्ठः	महावत या ब्राह्मण पिता या वैश्य माता की सन्तान
150.	आम्बष्ठः	किसी जाति विशेष की उपाधि
151.	गोष्ठः	घोठा, गोशाला या समूह गायों के बाधने का स्थान या पशुओं को बांधने का स्थान
152.	भूमिष्ठः	जमीन पर बैठने वाला
153.	स्व्यष्ठः	दक्षिण भाग में बैठने वाला
154.	कुशेष्ठः	कुश पर बैठने वाला
155.	कुष्ठः	कोढ़ रोग, पृथ्वी पर बैठने वाला

156.	शङ्कुष्ठः	वर्क्षी पर रहने वाला
157.	अङ्गुष्ठः	हाथ पर रहने वाला या अंगूठा पर बैठने वाला
158.	मञ्जिष्ठः	फूलों का गुच्छा या लता पर रहने वाला या मजीठ
159.	पुञ्जिष्ठः	राशि पर रहने वाला
160.	परमेष्ठः	सर्वोत्तम स्थान पर रहने वाला
161.	बर्हिष्ठः	कुश पर रहने वाला
162.	दिविष्ठः	नीलकण्ठ पर रहने वाला
163.	अग्निष्ठः	अग्नि में रहने वाला
164.	तुन्दपरिमृजः	तोंद या उदर पर हाथ फेरने वाला आलसी
165.	शोकापनुदः	सुख का आहरण करने वाला
166.	शोकापनोदः	शोक को नष्ट करना
167.	मूलविभूजः	रथ
168.	महीध्रः	शेषनाग या पृथ्वी को धारण करने वाला
169.	कुध्रः	शेषनाग या धरती को धारण करने वाला
170.	गिलः	निगलने वाला
171.	सर्वप्रदः	सभी कुछ देने वाले
172.	पथिप्रज्ञः	रास्ता को भलीभांति जानने वाला
173.	गोसंख्यः	गायों के विषय में कहने वाला
174.	सामगः	सामवेद गान करने वाला
175.	सामगी	सामवेद गान करने वाली
176.	सामसंगायः	सामवेदगान करने वाला
177.	सुरापी	मदिरा पीने वाली
178.	सामसंगायः	सामवेद गान करने वाली
179.	शीध्रपी	अंगूरी शराब पीने वाला
180.	क्षीरपा ब्राह्मणी	दुग्ध को पीने वाली ब्राह्मणी
181.	सुरापा	मदिरा की रक्षा करने वाला
182.	अंशहरः	भाग को स्वीकार करने वाला
183.	भारहारः	बोझा को ढोने वाला
184.	शक्तिग्रहः	शक्ति नामक शस्त्र को ग्रहण करने वाला
185.	लाङ्गलग्रहः	हल को धारण करने वाला या बलराम
186.	अङ्कुशग्रहः	कांटा या हांकने की छड़ी को धारण करने वाला
187.	तोमरग्रहः	लोहे का डंडा या भाला को लेने वाला
188.	यष्टिग्रहः	छड़ी को लेने वाला
189.	घटग्रहः	घड़ा या मटका या मर्तवान को ग्रहण करने वाला
190.	घटीग्रहः	छोटा घड़ा को ग्रहण करने वाला
191.	सूत्रग्रहः	सूत्र को ग्रहण करने वाला
192.	सूत्रग्राह	सूत्र को ग्रहण करने वाला
193.	कवचहरः कुमारः	कवच को हरण अर्थात् बलात लेने वाला
194.	पुष्पाहरः	स्वाभाविक रुप से फूल लाने वाला या माली
195.	पूजार्हाब्राह्मणी	पूजा या अर्चना या आदर के योग्य ब्राह्मणी
196.	स्तम्बेरमः	खूंटे पर घूमने वाला हाथी
197.	कर्णेजपः	संकेत करने वाला चूगलखोर

198.	शम्भवः	सुखः होना
199.	शंवदः	सुखीपूर्वक बोलना
200.	शङ्करा	वौद्धभिक्षुणी स्वभाव वाली
201.	खशयः	आकाश में विश्राम करने वाला रहने वाला या सोने वाला
202.	पार्श्वशयः	बगल से सोने वाला
203.	पृष्ठशयः	पीठ भाग से सोने वाला
204.	उदरशयः	पेट से सोने वाला
205.	उत्तानशयः	चित होकर सोने वाला
	गो सम्प्रदायः	गौ का भलीभाँति दान करने वाला
	भार हरः	बोझा ढोने वाला
206.	अवमूर्धशयः	अधोमुख होकर सोता है
207.	गिरिशः गिरिशयः	पर्वत पर सोने वाला
208.	कुरुचरः	कुरुदेश को जाने वाला
209.	कुरुचरी	कुरुदेश को जाने वाली
210.	भिक्षाचरः	भिक्षुक, या भिक्षा मांगने वाला
211.	सेनाचरः	सेना को प्राप्त करने वाला
212.	आदायचरः	द्रव्य को लेकर जाने वाला
213.	पुरुःसरः	आगे जाने वाला
214.	अग्रतःसरः	सामने के आगे से चलने वाला
215.	अग्रेसरः	पहले या प्रथम चलने वाला
216.	पूर्वसरः	प्रथमगमन
217.	पूर्वसारः	पूर्वदेश को जाने वाला
218.	यशष्करी	कीर्ति को बढ़ाने वाली
219.	श्राद्धकरः	श्राद्ध किया को करने वाला
220.	वचनकरः	वचन को करने वाला या वचन का पालन अनुवर्तन करने वाला
221.	दिवाकरः	सूर्यः
222.	विभाकरः	प्रकाश करने वाला सूर्य
223.	निशाकरः	चन्द्रमा, रात्रि करने वाला
224.	प्रभाकरः	तेज प्रकाश करने वाला या सूर्य
225.	भास्करः	प्रकाश करने वाला या कान्ति देने वाला
226.	कारकरः	कार्य करने वाला
227.	अन्तकरः	अन्त न करने वाला
228.	अनन्तकरः	अन्तन करने वाला या हमेशा करने वाला
229.	आदिकरः	सृष्टिकर्ता या ब्रह्मा
230.	बहुकरः	अधिक करने वाला
231.	नान्दीकरः	आशीर्वचन प्रदान करने वाला या नान्दी श्राद्ध करने वाला
232.	किंकरः	नौकर, दास, सेवक
233.	लिपिकरः	लेखक, लिपिक, कर्णिक
234.	लिपिकरः	देवनागरी का लेखक
235.	बलिकरः	बलिदान करने वाला
236.	भक्तिकरः	भजन करने वाला
237.	कर्तृकरः	कर्ता को करने वाला

238.	चित्रकरः	फोटो बनाने वाला
239.	क्षेत्रकरः	किसान, कृषक, खेतिहर
240.	संख्याकरः	एकन्वादि संख्या को गिनने वाला
241.	जङ्घाकरः	धावक
242.	बाहुकरः	बाहुबली
243.	अहस्करः	दिन करने वाला
244.	यत्करः	जो करता है
245.	तत्करः	वह करता है
246.	धनुष्करः	धनुष बनाने वाला
247.	अरूष्करः	कुरूप या विरूप करने वाला या बनाने वाला
248.	कर्मकरः	नोकर या मजदूर
249.	कर्मकारः	कारीगर या शिल्पकार
	चित्रकारः	फोटो बनाने वाला
250.	शब्दकारः	शब्द करने वाला
251.	श्लोककारः	श्लोक बनाने वाला
252.	कलहकारः	झगड़ा करने वाला
253.	गाथाकारः	छन्द बनाने वला या प्राकृत काव्यकार
254.	वैरकारः	शत्रुता करने वाला
255.	चाटुकारः	चापलूसी करने वाला या ठकुर सुहाती करने वाला
256.	सूत्रकारः	सूत्र रचनाकार
257.	मन्त्रकारः	मन्त्र रचनाकार या मन्त्र बोलने वाला
258.	पदकारः	पद रचनाकार
259.	स्तम्बकरिः	धान
260.	शकृत्करिः	वत्स, बछड़ा
261.	स्तम्बकारः	खम्भा बनाने वाला
262.	शकृत्कारः	मल या विष्ठा करने वाला
263.	दुतिहरिः	कुत्ता
264.	नाथहरिः	पशु विशेष
265.	दृतिहरः	मछली को हरने वाला, मल्लाह
266.	नाथहरः	प्रभु को हरने वाले।
267.	फलेग्रहिः	फलों को ग्रहण करने वाला या फल विक्रेता
268.	आत्मम्भरिः	अपने को भरता है।
269.	कुक्षिम्भरिः	कोख को भरता है।
270.	जनमेजयः	जनता को बढाने वाला ब्रह्म या राजापरीक्षित का पुत्र
271.	वातमजाः	बहतेरे मृग
272.	शुनिन्धयः	कुतिया को पिलाने वाला
273.	तिलन्तुदः	तेली
274.	शर्द्धञ्जहाः	भाष या ऊर्द
275.	स्तनन्धयः	शिशु जो माता का दुग्ध पान करता है।
276.	स्तनन्धयी	मां का दूध पान करने वाली कन्या
277.	नासिकन्धमः, नासिकन्धयः	प्राणायाम करने वाला

278.	नाडिन्धमः, नाडिन्धयः	धमनी या पान करने वाली नलिका
279.	मुष्टिन्धमः, मुष्टिन्धयः	बालक, शिशु, बच्चा
280.	घटिन्धमः, घटिन्धय	मेटिया या पान करने वाला
281.	खारीन्धमः, खारीन्धयः	परिमाण विशेष
282.	खरिन्धमः खरिन्धयः	गर्दभी शब्द, गर्दभी पान
283.	कूलभुद्रुजः, कूलभुदवह्	नदी
284.	बहंलिहः	गौ
285.	अभ्रंलिहः	वायु–पवन
286.	प्रस्थम्पचा	बटलोई
287.	खारिम्पचा	कढ़ाई
288.	पितम्पचा	ब्राह्मणी
289.	नखम्पचा	यावगू
290.	विधुन्तुदः	राहु
291.	अरून्तुदः	मर्म को व्यथित करने वाला या मर्मस्थान को भेदन करने वाला
292.	असूर्यम्पश्या	राजरानी या राजदारा
293.	ललाटन्तपः	सूर्य
294.	उग्रम्पश्यः	उग्रता को देखनें वाला
295.	इरम्मदः	मेघ, प्रकाश
296.	पाणिन्धमः	अन्धकार से घिरा हुआ मार्ग
297.	प्रियंवदः	प्रिय बात बोलने वाला
298.	वशंवदः	वश में करने वाली वाणी
299.	मितङ्गमः	हाथी
300.	विहङ्गः विहङ्गमः	पक्षी
301.	भुजङ्गः, भुजङ्गमः	सर्प
302.	द्विषन्तपः परन्तपः	शत्रु को दुःख देने वाला या सन्ताप पॅहुचाने वाला
303.	वाचंयमः	मौन व्रत रहने वाला
304.	वाग्यामः	शक्ति के अभाव में बोलने में असमर्थ।
305.	पुरन्दरः	नगरी को विदीर्ण करने वाला
306.	सर्वसहः	सब कुछ सहने वाला
307.	भगन्दरः	स्त्री रोग विशेष
308.	सर्वङ्कषः	दुष्ट
309.	कूलङ्कषाः	नदी
310.	अभ्रङ्कषा	पवन
311.	करीषङ्कषा	तूफान, भंवर
312.	मेघङ्करः	बादल को बनाने वाला
313.	ऋतिङ्करः	गमन करने वाला
314.	भयंङ्करः	भय को प्रदान करने वाला
315.	अभयङ्करः	भय को न प्रदान करने वाला
316.	क्षेमङ्करः, क्षेमकारः	कुशल प्रदान करने वाला
317.	प्रियङ्करः, प्रियकारः	प्रेम देने वाला
318.	मद्रङ्करः, मद्रकारः	हर्ष को उत्पन्न करने वाला
319.	आशितम्भवः	खायां हुआ भात

320.	विश्वम्भरः	विष्णु
321.	रथन्तरम्	सामवेद की संज्ञा
322.	पतिंवरा	पति वरण करने वाली कन्या
323.	शत्रुञ्जयः	शत्रु को जीतने वाली हाथी
324.	युगन्धरः	पर्वत
325.	शत्रुंसहः	शत्रु या बैरी को सहने वाला
326.	अरिन्दमः	शत्रु
337.	उरगः	सर्प
338.	सुगः	सुखपूर्वक जाने वाला मार्ग
339.	दुर्गः	दुर्गम मार्ग
340.	ग्रामगः	गांव को जाने वाला मार्ग
341.	विहगः	पक्षी
342.	शत्रुहः	शत्रु को मारने वाला
343.	शत्रुघातः	शत्रु को मारने वाला
344.	दर्वाघाटः	लकड़ी को चीरने वाला
345.	चार्वाघाटः, चार्वाघातः	सुन्दरता का हनन करने वाला
346.	वर्णसंघाटः, वर्णसंघातः	वर्ण को मिटाने वाला
347.	पदसंघाटः पदसंघातः	पद को मिटाने वाला
348.	क्लेशापहः	क्लेश को दूर करने वाला पुत्र
349.	तमोपहः	अन्धकार को दूर करने वाला सूर्य
350.	जायाघ्नः	स्त्री को मारने वाले लक्षण युक्त पुरूष
351.	पतिघ्नी	पति को मारने वाले लक्षण युक्त स्त्री या रेखा
352.	जायाघ्नस्तिलकालकः	जाया को मारने वाला काला तिल
353.	पतिघ्नीपाणि रेखा	पति को मारने वाली स्त्री के हाथ की रेखा
354.	पितघ्नम्	पित्त को मारने वाला घृत
355.	हस्तिघ्नः	हाथी को मारने में समर्थ पुरूष
356.	कवाटघ्नः	किवाड़ को तोड़ने वाला चोर
357.	पाणिघ्नः	हाथ से मारने की कला को सिखाने वाला
358.	ताडघः	प्रहार से या घूसा से मारने वाला मल्ल युद्ध की क्रिया
359.	राजघः	राजा को मारने वाला
360.	आढ्यंकरणम्	निर्धन को धनी बनाना।
361.	आढ्यंम्भविष्णुः	निर्धन धनी हो रहा है।
362.	घृतस्पृक्	घृत का स्पर्श करने वाला
363.	मन्त्रस्पृक	मन्त्र से स्पर्श होने वाला
364.	सदृक, सदृशः	समान रूप से देखने वाला
365.	अन्यादृक, अन्यादृशः	अन्य प्रकार से देखने वाला
366.	तादृक्षः	उस प्रकार से देखने वाला
367.	सदृक्षः	समान रूप से देखने वाला
	प्रसूः	जन्म देन वाला प्रकाशित करने वाला
368.	अन्यादृक्षः	अन्य प्रकार से देखने वाला
369.	द्युसत्	दिव लोक में पतन, नाश, उत्पीड़न होना या दिव लोक में जाना या दिवलोक में विशीर्ण होना।

370.	उपनिषत्	वेदान्त
371.	अण्डसू:	पंख वाला जीव
372.	मित्रद्विट्	मित्र द्रोही
373.	प्रद्विट्	उग्र द्रोह करने वाला
374.	मित्रध्रुक्	मित्र को मार डालने की इच्छा वाला
375.	प्रध्रुक्	अधिक मारने की इच्छा वाला
376.	गोधुक:	गाय को दुहने वाला
377.	प्रधुक:	अच्छी तरह से गाय को दोहन करने वाला
378.	अश्वयुक्	घोड़ों को जोड़ने वाला
379.	प्रयुक्	विशेष रूप से जोड़ने वाला
380.	वेदवित्	वेद को जानने वाला
381.	निवित्	सम्पूर्ण जानने वाला
382.	काष्ठमित्	काठ या लकड़ी को फारने वाला
383.	रज्जुच्छित्	रस्सी को तोड़ने वाला या दो भाग में करने वाला
384.	शत्रुजित्	शत्रु को जीतने वाला
385.	सेनानी:	सेना को आगे ले जाने वाला या सेनापति
386.	विराट्	विराट नाम की नगरी या विशेष रूप से शोभित
387.	अग्रणी:	जनों को आगे ले जाने वाला नेता
388.	ग्रामणी:	गांव का मुखिया या सभापति
389.	अंशभाक्	हिस्सा को बाटने वाला
390.	प्रभाक्	भाग करने वाला
391.	आमात्	कच्चा पक्का खाने वाला
392.	सस्यात्	अनाज खाने वाला
393.	अन्नाद:	अन्न खाने वाला
394.	क्रव्यात्	कच्चा मांस खाने वाला या कच्चा पक्का मांस खाने वाला
395.	कामदुधा	इच्छा को पूर्ण करने वाली धेनु
396.	सुशर्मा	प्राचीन काल में ब्राह्मण वर्ण को शर्मा से सम्बोधित किया जाता रहा है या सुन्दर हिंसा करने वाला
397.	प्रातरित्वा	प्रातः काल जाने वाला
398.	विजावा	विशेष रूप से पैदा होने वाला या प्रादुर्भाव होने वाला
399.	अवावा	अस्पर्श न होने वाली ब्राह्मणी या अस्पर्शणीनीया
400.	रोट्	हिंसा करने वाला
401.	रेट्	हिंसा करने वाला
402.	सुगण्	भलीभांति संख्या करने वाला
403.	उरवास्रत्	पतेली से गिरा हुआ
404.	पर्णध्वत्	पत्ते से गिरा हुआ
405.	वाहभ्रट्	ले जाने वाले से या कुली से या घोड़े इत्यादि से गिरा हुआ।
406.	हे प्राण्	हे जीव वाले
407.	मित्रशी:	मित्र को अनुशासित करने वाला
408.	आशी:	पूर्ण इच्छा करने वाला
409.	गी:	निगलने वाला या शब्द करने वाला
410.	पू:	पालन और पूरा करने वाला

411.	तनुच्छत्	शरीर को अच्छादित करने वाला वस्त्रादि
412.	प्रतान्	फैलाव वाला
413.	प्रशान्	शान्त वाला
414.	जूः	रोगग्रसित वाला
415.	तूः	भ्रमित वाला
416.	सूः	गतिमान और शोषण वाला
417.	जनौः	जनरक्षक
418.	मूः	बन्धन वाला
419.	सुमूः	सुन्दर बन्धन वाला
420.	मूः	मोहित करने वाला (मोहक)
421.	धूः	हिंसक
422.	अङ्गत्	अङ्ग देश को जाने वाला
423.	पुरीतत्	हृदय स्थित मांस पिण्ड को अच्छादित करने वाला मेदा
424.	संयत्	संयम वाला
425.	सुनत्	भलीभांति झुकने वाला
426.	अग्रेगूः	आगे जाने वाला नेता
427.	अग्रेभूः	आगे भ्रमण करने वाला
428.	शंस्थः	सुखपूर्वक बैठने वाला
429.	शंस्थाः	सुख को स्थापित करने वाला
430.	उष्णभोजी	गर्म भोजन करने का स्वभाव वाला
431.	शीतभोजी	शीतल भोजन करने का स्वभाव वाला
432.	साधुकारी	अच्छा कार्य करने वाला
433.	साधुदायी	साधुता प्रदान करने वाला
434.	ब्रह्मवादी	ब्रह्म या वेद या ब्राह्मण के विषय में बोलने वाला
435.	उष्ट्रक्रोशी	ऊँट के शब्द की तरह शब्द करने वाला
436.	ध्वाङ्क्षराबी	कौवे की शब्द की तरह शब्द करने वाला
437.	स्थण्डिलशायी	भूखण्ड या वेदी पर शयन करने वाला
438.	क्षीरपायिणः	दूध को बार बार पान करने वाला या उशीनर
439.	दर्शनीयमानी	अपने को देखने लायक मानने वाला
440.	पण्डितम्मन्यः	अपने को पण्डित मानने वाला
441.	पण्डितमानी	स्वयं को पण्डित मानने वाला
442.	कालिम्मन्या	स्वयं को काली मानने वाली
443.	दिवामन्या	दिन को मानने वाली रात्रि
444.	गाम्मन्यः	स्वयं को गाय मानने वाला
445.	स्त्रियम्मन्यः, स्त्रीम्मन्यः	अपने को स्त्री मानने वाला हिजड़ा।
446	नरम्मन्यः	अपने को पुरुष मानने वाला
447.	भुवम्मन्यः	अपने को संसार मानने वाला
448.	श्रिमन्यः	अपने को लक्ष्मीवान कुल मानना।
449.	सोमयाजी	जिन्होने सोम यज्ञ किया है।
450.	अग्निष्टोमयाजी	जिन्होने अग्निस्टोम यज्ञ किया है।
451.	पितृव्यघाती	जिन्होने चाचा को मार दिया।
452.	ब्रह्महा	वेद अथवा ब्राम्हण को जो मारा हो।

453.	भ्रूणहा	भ्रूण हत्या जिसने किया है।
454.	वृत्रहा	वृत्रासुर को जो मारा है अर्थात इन्द्र
455.	सुकृत्	जिसने अच्छा कृत्य किया हो।
456.	कर्मकृत्	जिसने कर्म किया हो।
457.	पापकृत्	जिसने पाप किया हो।
458.	मन्त्रकृत्	जिसने मन्त्र या गोपनीय बात की हो।
459.	पुण्यकृत्	जिसने पुण्य की हो।
460.	शास्त्रकृत्	शास्त्र से किया गया।
461.	भाष्यकृत्	भाष्य के द्वारा किया गया।
462.	सोमसुत्	जो सोम योग किया है।
463.	अग्निचित्	जो अग्नि का चयन किया है।
464.	श्येनचित्	बाज पक्षी की तरह पकड़कर जीविका चलाने वाला
465.	सोमविक्रयी	जो सोमलता को विक्रय किया।
466.	घृतविक्रयी	जो घृत (घी) को बेचा है।
467.	पारदृश्वा	नदी के सामने वाले किनारा या तट को देखा है।
468.	राजयुध्वा	जो राजा को युद्ध कराया है।
469.	राजकृत्वा	जो राजा को किया है।
470.	सहयुध्वा	जो साथ में युद्ध किया
471.	सहकृत्वा	जो साथ में किया है।
472.	सरसिजम्	कमल
473.	मन्दुरजः	वाजिशाला (घुड़शाला) में उत्पन्न हुआ।
474.	अदृष्टजः	जो भाग्य से उत्पन्न हुआ
475.	पुमनुजा	जो पुरूष को पैदा की हो।
476.	अजः	जो उत्पन्न नही हुआ है।
477.	द्विजः	दो संस्कारों से उत्पन्न हुआ है।
478.	परिखा	किले के चारो तरफ रक्षार्थ की गयी खाई
479.	स्नातम्	स्नान कर लिया गया है।
480.	स्तुतः	स्तुति कर ली गयी है।
481.	कृतवान्	किया गया।
482.	क्षीणवान्	छय किया गया है।
483.	क्षितः	नष्ट किया गया ।
484.	श्रितः, श्रितवान्	सेवा की गयी।
485.	भूतः, भूतवान्	हुआ है।
486.	क्षुतः	शब्द किया।
487.	ऊर्णुतः	ढंका गया या अच्छादन किया।
488.	नुतः	स्तुति या स्तवन किया गया।
489.	वृतः	वरण किया गया।
490.	शीर्णः	हिंसा किया गया।
491.	छिन्नः	दो भाग किया गया।
	संस्कारजः	संस्कार से उत्पन्न होने वाला ।
492.	भिन्नः	भेदन किया गया।
493.	द्राणः	निन्दा किया गया।

494.	स्त्यानः	शब्द किया गया या संघ किया गया।
495.	ग्लानः	ग्लानि किया गया या खुशी को नष्ट किया गया।
496.	लूनः	छेदन या काटा गया।
497.	जीनः	अवस्था की हानि की गयी या बिताया गया
498.	दूनः	गमन किया गया।
499.	गूनः	विष्टा या शौच किया गया।
500.	पूनाः	विनाश किया गया या पक गया
501.	पूतम्	पवित्र किया गया।
502.	सिनः	लील लिया गया।
503.	सिता	बांधी गयी।
504.	भुग्नः	कुटिलता किया गया या टेढापन किया गया।
505.	उच्छूनः	वृद्धि की गयी या गमन क्रिया की गयी।
506.	प्रहीणः	त्याग की गयी।
507.	सूनः	प्रसूत हुआ।
508.	दूनः, दुनवान्	संताप हुआ।
509.	उड्डीनः	उड़ गयी।
507.	शीनं घृतम्	कड़ा घृत या जमा हुआ घृत।
508.	शीतं जलम्	स्पर्श किया गया जल।
509.	संश्यानोवृश्चिकः	सिकुड़ी हुई बिच्छी
510.	प्रतिशीनः	पिघला हुआ।
511.	अभिश्यानम्, अमिशीनम्	पिघला हुआ घृत
512.	अवश्यानः, अवशीनः	सिकुड़ी हुई बिच्छू
513.	समक्नः	संघ
514.	उदक्तम्	निकाला गया।
515.	विक्णः, विक्णवान्	छेदन किया, डंक मारा
516.	परिस्कन्दः	चारो तरफ गया, हर तरह से शोषण किया।
517.	द्यूनः	खेला, स्तुति किया।
518.	द्यूतः	जूआ खेला
519.	निर्वाणः	नष्ट हुआ।
520.	निर्वातः वातः	वायु वन्द हो गयी।
521.	शुष्कः	सुखा हुआ या शोषण किया गया।
522.	पक्वः	पका हुआ।
523.	क्षामः	नष्ट या नाश या कान्ति क्षय
524.	प्रस्तीमः, प्रस्तीतः	शब्द किया संघात किया
525.	स्त्यानः	शब्द हुआ।
526.	फुल्लः	खिला हुआ, विकसित हुआ।
527.	क्षीवः	मत्त या हर्षित।
528.	कृशः	पतला किया गया या शरीर
529.	उल्लाघः	नीरोग।
530.	प्रफुल्लतः	खिला हुआ, पूर्ण खिला हुआ।
531.	प्रक्षीवितः	पूर्ण मत्त या पूर्ण हर्षित
532.	प्रकृशितः	पूर्ण रूप से दुर्बल किया गया या सम्पूर्ण शरीर

533.	प्रोल्लाघितः	पूर्ण रूप से निरोग
534.	उत्फुल्लः	खिला हुआ, विकसित
535.	संफुल्लः	पूर्ण रूप से खिला हुआ।
536.	नुन्नः नुत्तः	समृद्ध हुआ, धनी हुआ।
537.	विन्नः, वित्तः	विचार हुआ या विचार किया।
538.	विदितः	जाना गया या ज्ञात हुआ।
539.	विन्नः	था
540.	उन्नः, उत्तः	भिगोया गया या गिला किया या आद्रपन किया गया।
541.	त्राणः, त्रातः	रक्षा किया गया या बचाया गया।
542.	घ्रातः, घ्राणः	सूंघा गया या गन्ध लिया गया।
543.	ह्रीणः ह्रीतः	लज्जा की गयी या लज्जित हुई।
544.	ध्यातः	ध्यान किया गया।
545.	ख्यातः	कहा गया।
546.	पूर्तः	भरा गया या पालन किया गया
547.	मूर्तः	मोहित हुआ या बेहोश शरीरधारी, मूर्तिमान
548.	मत्तः	मतवाला या नशा में चूर या मदोन्मत।
549.	वित्तम्	धन
550.	वित्तः	पुरूषः,प्रख्यात।
551.	विन्नः	प्राप्त
552.	भित्तम्	खण्ड
553.	भिन्नम्	पृथक्
554.	ऋणम्	अन्य के द्वारा लिया गया रूपया को स्वीकृत निश्चित वृद्धि दिया जाय या कर्ज
555.	ऋतम्	सत्य
556.	स्फीतः	बढ़ाया गया या वृद्धि हुई
557.	निष्कुषित	निचोड़ किया गया या निश्चित निर्णय किया।
558.	उषितः	निवास किया, स्नेह किया।
559.	क्षुधितः	भूखा हुआ।
560.	अञ्जितः	पूजित हुआ।
561.	अक्तः	गया या गमन किया
562.	लुभितः	मोहित हुआ।
563.	लुब्धः	लालायित हुआ या अभीच्छावान
564.	क्लिशितः क्लिष्टः	दुखित, पीड़ित संकटग्रस्त, सताया हुआ।
565.	पवितः पूतः	शुद्ध किया गया।
566.	शयितः, शयितवान्	सोया था
567.	प्रस्वेदितः	शब्द किया।
568.	प्रस्वेदितम्	शब्द किया गया।
569.	प्रमेदितः, प्रमेदितवान्	चिकना हुआ।
570.	प्रक्ष्वेदितः, प्रक्ष्वेदितवान्	चिकना हुआ।
571.	प्रधर्षितः प्रधर्षितवान्	हमला किया गया चोट पहुंचाया गया या अहंकारी
572.	मर्षितः, मर्षितवान्	सहन किया, त्याग किया, क्षमा किया।
573.	द्युतितम्, द्योतितम्	प्रकाशित किया।
574.	मुदितं, मोदितम्	हर्षित या प्रसन्न या सम्बन्ध किया गया।

575.	प्रद्युतितः, प्रद्योतितः	कान्तिमान हुआ।
576.	प्रमुदितः, प्रमोदितः	प्रसन्न या हर्षित हुआ।
577.	विदितम्	अवगत हुआ या जानकारी मिली
578.	रूचितं कार्षापणम्	पैसा अच्छा लगा
579.	गुधितम्	क्रोध किया
580.	भावितः, भावितवान्	पैदा किया गया या उत्पन्न किया गया।
581.	शूनः	गमन या वृद्धि किया गया।
582.	दीप्तः	प्रकाशित हुआ।
583.	गूढः	छिपाया गया, छिपाव या आच्छादन किया
584.	वतः	हिंसा किया या मारा
585.	ततः	विस्तार किया गया।
586.	पतितः	नीचे गया, गिर गया।
	अतिस्तब्धः	संज्ञा हीन होना या अचेत होना ।
	निस्तब्धः	गतिहीन होना ।
588.	क्षुब्धः	मन्थन या दण्ड
589.	स्वान्तम्	मन
590.	ध्वान्तम्	अन्धकार
591.	लग्नम	लगा हुआ, बंधा हुआ या जुड़ा हुआ।
592.	म्लिष्टम्	अस्पष्ट
593.	विरिब्धः	स्वरः
594.	फाण्टम्	कैशला या नयनू के पहले का रूप
595.	वाढम्	अधिक या बहुत अच्छा या सुन्दर
596.	धृष्टः	अविनीत
597.	विशस्तः	अविनीत दुष्ट
598.	घर्षितः	बलपूर्वक किया गया।
599.	विशसितः	हिंसा किया गया।
600.	दृढः	मोटा, बलवान
601.	दृहितः दृंहितः	बढाया गया
602.	परिवृढः	प्रभु, समर्थ
603.	परिवृहितः, परिवृंहितः	चारो तरफ से बढा हुआ।
604.	कष्टम्	दुःख या दुःख का कारण मोह दुखगाहन
605.	कषितम्	हिंसित या बांधा गया।
606.	घुष्टा	रगड़ या भांजी गयी रस्सी
607.	घुषितम्	स्पष्ट
608.	समर्णः	पीड़ित, घायल कष्टग्रस्त
609.	न्यर्णः	पूर्ण याचित
610.	व्यर्णः	विशेष याचित
611.	अर्दितः	मांगा गया या चला गया।
612.	अभ्यर्णम्	अत्यन्त दूर नही या समीप
613.	वृत्तं	पढ़ा सा सम्पादित किया।
614.	वर्तिता रज्जुः	रस्सी बरी गयी।
615.	श्रृतं, छीरम्	दुग्ध पक गया या उबल गया।

616.	दान्तम्	उपशमन कराया गया।
617.	शान्तम्	शान्त कराया गया।
618.	पूर्णः	पूर्ण भरा गया।
619.	दस्तः	रद्द किया गया, हानि की गयी, व्यय किया गया।
620.	स्पष्टम्	बंधवाया गया।
621.	छन्नः	हाटाया गया।
622.	ज्ञप्तः	जाना गया, अवगत हुआ, ज्ञापित हुआ।
623.	दमितः, शमितः	शान्त किया गया।
624.	पूरितः	पूरा भरा गया।
625.	दासितः	रद्द किया गया हानि की गयी, व्यय किया गया।
626.	स्पाशितः	बांधा गया।
627.	छादितः	दूर किया गया या हटाया गया।
628.	ज्ञापितः	ज्ञापित किया गया, जनवाया गया।
629.	रूष्टः रूषितः	नाराज हुआ।
630.	आन्तः, अमितः	ज्ञात हुआ, गमन हुआ, मोक्ष हुआ, प्राप्त हुआ।
631.	तूर्णः, त्वरितः	जल्दी, शीघ्रता
632.	हृष्टं, हृषितम्	रोमाञ्चित या प्रफुल्लित।
633.	हृष्टः हृषितः	आश्चर्य चकित या विस्मित। प्रतिहत
634.	अपचितः	हानि, व्यय, प्रायश्चित
635.	अपचायितः	प्रायश्चित दूर कराया गया।
636.	पीनम्	स्थूल, विशाल
637.	प्यानः पीनः	अतिपसीना
638.	प्रप्यानः	बडा हुआ।
639.	आपीनोऽन्धुः	विशाल या गहरा कूंआ
640.	आपीनमूधः	विशाल स्तन या विशाल छाती या सीना
641.	प्रह्वन्नः	सुखी
642.	दितः	खण्डन किया गया।
643.	सितः	सफेद, बंधा हुआ।
644.	मितः	नापा हुआ सीमाबद्ध किया
645.	स्थितः	खड़ा हुआ, जकड़ा हुआ।
646.	शितः शातः	पतला किया, तेज किया गया
647.	छितः छातः	काटा गया छेदन किया गया।
648.	अभिहितम्	कहा गया, बोला गया, घोषित किया गया।
649.	अभिहितम्	धारण किया गया
650.	निहितम्	रखा हुआ।
651.	दत्तः	दिया गया।
652.	दातः	बांटा हुआ, काटा हुआ, धोया हुआ।
653.	अवदत्तम्	सम्पूर्ण रूप से दिया गया।
654.	विदत्तम्	विशेष रूप से दिया गया।
655.	प्रदत्तम्	प्राप्त कर लिया गया या दे दिया गया।
656.	सुदत्तम्	सुन्दर ढंग से दिया गया।
657.	अनुदत्तम्	बाद में दिया गया।

658.	निदत्तम्	सभी दे दिया गया।
659.	नीत्तम्	सब कुछ दे दिया गया।
660.	धीत्तम्	चूसा गया, पिया गया।
661.	सूत्तम्	सुन्दर ढंग से दिया गया।
662.	गीतम्	गाया गया।
663.	पीतम्	पान कर लिया गया।
664.	जग्धः	भक्षण किया गया।
665.	प्रकृतः कटं सः	वह चटाई बनाना प्रारम्भ किया।
666.	प्रकृतः कटस्तेन	उसके द्वारा चटाई बनी।
667.	प्रक्षीणः	दुर्बल, कमजोर
668.	क्षीणायुर्भवः	कम आयु वाले हो।
669.	क्षितायुर्भवः	कम आयु वाले हो।
670.	क्षीणोऽयं तपस्वी	वह तपस्वी दुर्बल शरीर वाला
671.	निष्णातः	कुशल या दक्ष शास्त्रों में
672.	नदीष्णः	नदी में स्नान करने में कुशल
673.	प्रतिष्णातं सूत्रम्	प्रत्येक सूत्र शुद्ध या सही है।
674.	कपिष्ठलः.	कपिष्ठल नामक गोत्र
675.	कपिष्ठलिः पुत्रः	कपिष्ठल गोत्र में उत्पन्न पुत्र
676.	कपिस्थलम्	बन्दरों के रहने का स्थान
677.	विष्ठलम्	दूरवर्ती स्थान
678.	कुष्ठलम्	निंदित स्थान
679.	शमिष्ठलम्	शान्त स्थान
680.	परिष्ठलम्	चारो तरफ स्थान
681.	गंगागतः, गंगाप्राप्तः	गंगा को गया।
682.	ग्लानः सः	वह क्षीण हो गया।
683.	लक्ष्मीमाश्लिष्टोहरिः	हरि ने लक्ष्मी को आलिंगन किया।
684.	आश्लिष्टः	आलिंगन किया।
685.	शेषमधिशयितः	शेषनाग पर सोये।
686.	अधिशयितः	शयन किया।
687.	बैकुण्ठमधिष्ठितः	बैकुण्ठ में बैठे हैं
688.	अधिष्ठितः	बैठे हैं।
689.	शिवमुपासितः	शिव की उपासना या पूजा किया।
690.	उपासितः	उपासना या पूजा किया।
691.	हरिदिनमुपोषितः	हरि दिवस या भगवान विष्णु के दिन पर भोजन न किया।
692.	रामभनुजातः	राम का अनुकरण करके गया या राम का अनुसरण करके गया।
693.	गरुढमारूढः	गरूण भगवान पर चढ़े।
694.	विश्वमनुजीर्णः	संसार को मारे या संसार को व्याप्त किये।
695.	मुकुन्दस्यासितम्	मुकुन्द भगवान को बैठने ठहरने का स्थान
696.	आसितम्	ठहरने का स्थान
697.	इदंयातं रमापतेः	विष्णु का यह गमन मार्ग।
698.	यातम्	गया हुआ मार्ग

699.	भुक्तमेतदनन्तस्ये, त्यूचुगोप्योदिदृक्षवः	देखने की इच्छा करने वाली गोपियों ने कहा कि अनन्त भगवान का यह खाया गया है।
700.	भुक्तम्	खाया गया।
701.	क्ष्विणः	चिकना किया, मुक्त किया।
702.	इद्धः	दीप्त हुआ, प्रकाशित हुआ। चमका
703.	मतः इष्टः	इच्छावान् इच्छा वाला
704.	वुद्धः	ज्ञानवान् ज्ञान वाला
705.	विदितः	ज्ञानवान् ज्ञान वाला
706.	पूजितः	पूजावान् पूजा वाला
707.	अर्चितः	पूजावान् पूजा वाला
708.	शीलितः	अभ्यस्त, धारण किया हुआ कुशल
709.	रक्षितः	रक्षा किया हुआ।
710.	क्षान्तः	सहन किया।
711.	आक्रुष्टः	आक्रोश किया।
712.	जुष्टः	प्रेम किया।
713.	जल्पितम्	भाषण दिया या गुनगुनाया।
714.	शयितम्	शयन किया।
715.	हसितम्	हंसा
716.	सुत्वा	अभिषेक किया।
717.	यज्वा	यज्ञ किया, समाधि किया।
718.	जरन्	वृद्धावस्था हुआ।
719.	जीर्णः जीर्णवान्	वृद्धावस्था फटा पुराना।
720.	आदिवान्	भक्षण किया।
721.	आरिवान्	गमन किया गया।
722.	ददिवान्	दान किया।
723.	जक्षिवान्	भक्षण किया।
724.	निषेदुषीम्	बैठी
725.	अध्यूषुषः	निवास किया।
726.	शुश्रुवान्	सुना
727.	उपेयिवान्	समीप में गया।
728.	ईयिवान्	गया था।
729.	समीयिवान्	चला गया था।
730.	अनाशुषः	भोजन नही किया था।
731.	अनूचान्	वेद की व्याख्या की थी।
732.	जग्मिवान्	गया था।
733.	जगन्वान्	गया था।
734.	जघ्निवान्, जघन्वान्	मारा गया था।
735.	विविदिवान्, विविद्वान्	लाभ मिला था।
736.	विविशिवान्, विविश्वान्	प्रवेश किया था।
737.	ददृशिवान्, ददृश्वान्	देखा था।
738.	पचन्तम्	पकाते हुए को

658.	निदत्तम्	सभी दे दिया गया।
659.	नीत्तम्	सब कुछ दे दिया गया।
660.	धीत्तम्	चूसा गया, पिया गया।
661.	सूत्तम्	सुन्दर ढंग से दिया गया।
662.	गीतम्	गाया गया।
663.	पीतम्	पान कर लिया गया।
664.	जग्धः	भक्षण किया गया।
665.	प्रकृतः कटं सः	वह चटाई बनाना प्रारम्भ किया।
666.	प्रकृतः कटस्तेन	उसके द्वारा चटाई बनी।
667.	प्रक्षीणः	दुर्बल, कमजोर
668.	क्षीणायुर्भवः	कम आयु वाले हो।
669.	क्षितायुर्भवः	कम आयु वाले हो।
670.	क्षीणोऽयं तपस्वी	वह तपस्वी दुर्बल शरीर वाला
671.	निष्णातः	कुशल या दक्ष शास्त्रों में
672.	नदीष्णः	नदी में स्नान करने में कुशल
673.	प्रतिष्णातं सूत्रम्	प्रत्येक सूत्र शुद्ध या सही है।
674.	कपिष्ठलः	कपिष्ठल नामक गोत्र
675.	कपिष्ठलिः पुत्रः	कपिष्ठल गोत्र में उत्पन्न पुत्र
676.	कपिस्थलम्	बन्दरों के रहने का स्थान
677.	विष्ठलम्	दूरवर्ती स्थान
678.	कुष्ठलम्	निंदित स्थान
679.	शमिष्ठलम्	शान्त स्थान
680.	परिष्ठलम्	चारो तरफ स्थान
681.	गंगागतः, गंगाप्राप्तः	गंगा को गया।
682.	ग्लानः सः	वह क्षीण हो गया।
683.	लक्ष्मीमाश्लिष्टोहरिः	हरि ने लक्ष्मी को आलिंगन किया।
684.	आश्लिष्टः	आलिंगन किया।
685.	शेषमधिशयितः	शेषनाग पर सोये।
686.	अधिशयितः	शयन किया।
687.	बैकुण्ठमधिष्ठितः	बैकुण्ठ में बैठे हैं
688.	अधिष्ठितः	बैठे हैं।
689.	शिवमुपासितः	शिव की उपासना या पूजा किया।
690.	उपासितः	उपासना या पूजा किया।
691.	हरिदिनमुपोषितः	हरि दिवस या भगवान विष्णु के दिन पर भोजन न किया।
692.	रामभनुजातः	राम का अनुकरण करके गया या राम का अनुसरण करके गया।
693.	गरूढमारूढः	गरूण भगवान पर चढ़े।
694.	विश्वमनुजीर्णः	संसार को मारे या संसार को व्याप्त किये।
695.	मुकुन्दस्यासितम्	मुकुन्द भगवान को बैठने ठहरने का स्थान
696.	आसितम्	ठहरने का स्थान
697.	इदंयातं रमापतेः	विष्णु का यह गमन मार्ग।
698.	यातम्	गया हुआ मार्ग

699.	भुक्तमेतदनन्तस्ये, त्यूचुगोप्योदिदृक्षवः	देखने की इच्छा करने वाली गोपियों ने कहा कि अनन्त भगवान का यह खाया गया है।
700.	भुक्तम्	खाया गया।
701.	क्ष्विणः	चिकना किया, मुक्त किया।
702.	इद्धः	दीप्त हुआ, प्रकाशित हुआ। चमका
703.	मतः इष्टः	इच्छावान् इच्छा वाला
704.	बुद्धः	ज्ञानवान् ज्ञान वाला
705.	विदितः	ज्ञानवान् ज्ञान वाला
706.	पूजितः	पूजावान् पूजा वाला
707.	अर्चितः	पूजावान् पूजा वाला
708.	शीलितः	अभ्यस्त, धारण किया हुआ कुशल
709.	रक्षितः	रक्षा किया हुआ।
710.	क्षान्तः	सहन किया।
711.	आक्रुष्टः	आक्रोश किया।
712.	जुष्टः	प्रेम किया।
713.	जल्पितम्	भाषण दिया या गुनगुनाया।
714.	शयितम्	शयन किया।
715.	हसितम्	हंसा
716.	सुत्वा	अभिषेक किया।
717.	यज्वा	यज्ञ किया, समाधि किया।
718.	जरन्	वृद्धावस्था हुआ।
719.	जीर्णः जीर्णवान्	वृद्धावस्था फटा पुराना।
720.	आदिवान्	भक्षण किया।
721.	आरिवान्	गमन किया गया।
722.	ददिवान्	दान किया।
723.	जक्षिवान्	भक्षण किया।
724.	निषेदुषीम्	बैठी
725.	अध्यूषुषः	निवास किया।
726.	शुश्रुवान्	सुना
727.	उपेयिवान्	समीप में गया।
728.	ईयिवान्	गया था।
729.	समीयिवान्	चला गया था।
730.	अनाशुषः	भोजन नही किया था।
731.	अनूचान्	वेद की व्याख्या की थी।
732.	जग्मिवान्	गया था।
733.	जगन्वान्	गया था।
734.	जघ्निवान्, जघन्वान्	मारा गया था।
735.	विविदिवान्, विविद्वान्	लाभ मिला था।
736.	विविशिवान्, विविश्वान्	प्रवेश किया था।
737.	ददृशिवान्, ददृश्वान्	देखा था।
738.	पचन्तम्	पकाते हुए को

	वभूवान	विद्यवान या सत्तावान ।
739.	पचमानम्	पकाने वाले को
740.	जीवन्	जीते हुए।
741.	हेपचन्, हेपचमान्	हे पकाने वाले।
742.	शयानाः	शयने करने वाले
743.	अर्जयन्	एकत्र करने वाला।
744.	पश्यन्	देखते हुए।
745.	प्रपीयमाणः	पीने वाला।
746.	आसीनः	बैठने वाला
747.	विद्वान् विदन्	विषय ज्ञाता
748.	करिष्यन्तं करिष्यमाणम्	करने वाले को
749.	कारिष्यतः	करने वाले का सन्तान
750.	करिष्यद्भक्ति	करने वाले की भक्ति
751.	हे करिष्यन्	हे करने वाले।
752.	अर्जयिष्यन्	एकत्र करने वाले।
753.	पवपानः	पवित्र वाला।
754.	यजमानः	यज्ञ करने वाला।
755.	भुञ्जानः	भोजन करने वाला या भोग करने का स्वभाव वाला।
756.	विभ्राणः	धारण करने वाला।
757.	निघ्नानः	मारने में कुशल वाला।
758.	अधीयन्	अध्ययनशील वाला
759.	धारयन्	धारण करने वाला।
760.	द्विषन्	द्वेष करने वाला (शत्रु)
761.	सुन्वन्तः	सभी यज्ञ करने वाले अर्थात् सभी सत्री है।
762.	अर्हन्	पूजनीयता योग्य सम्मान के पात्र।
763.	कर्ताकटम्	चटाई बनाने वाला।
764.	निराकरिष्णुः	निराकरण की इच्छा वाला
765.	प्रजनिष्णुः	प्रजनन करने की इच्छा वाला।
766.	उत्पचिष्णुः	अधिक पकाने वाला।
767.	उत्पतिष्णुः	ऊपर की ओर गिरने वाला।
768.	उन्मदिष्णुः	उन्माद करने वाला।
769.	रोचिष्णुः	उज्जवल वाला, चमकदार वाला देदिप्यमान वाला।
770.	अपत्रपिष्णुः	न लजाने वाला निर्लज्ज।
771.	वार्तिष्णुः	रहने वाला
772.	वर्द्धिष्णुः	बढ़ने की इच्छा वाला या बढ़ने वाला।
773.	सहिष्णुः	वर्दास्त करने वाला।
774.	चरिष्णुः	चरने या जाने की इच्छा वाला।
775.	पारयिष्णवः	भरने वाला या पालन करने वाला।
776.	भविष्णुः	होने वाला।
777.	ग्लास्नुः	ग्लानि वाला।
778.	जिष्णुः	जीतने की इच्छा वाला

779.	स्थास्नुः	बैठने वाला।
	धारयति	धारण करता या धारण करवाता है ।
780.	भूष्णुः	होने की इच्छा वाला।
781.	दङ्क्ष्णवः	काटने वाला या मारने वाला।
782.	अलंकरिष्णुः	अलंकार करने वाला।
783.	त्रस्नुः	उद्वेग वाला या धारण वाला।
784.	गृध्नुः	कामना या इच्छा वाला।
785.	धृष्णुः	दिलवाला, साहसी, हंसी वाला।
786.	क्षिप्नुः	प्रेरणा वाला या प्रेरक।
787.	शमी	शान्त वाला
788.	तमी	इच्छा वाला, मनोरथ वाला।
789.	दमी	दमन वाला।
790.	श्रमी	तपस्या करने वाला या तपस्वी
791.	भ्रमी	अस्थिर बुद्धि वाला।
792.	क्षमी	सहने वाला।
793.	क्लमी	ग्लानि वाला
794.	प्रमादी	प्रमाद या उन्माद वाला।
795.	सम्पर्की	सम्पर्क वाला या सम्बन्ध वाला।
796.	अनुरोधी	विनयी
797.	आयामी	दीर्घ वाला, विस्तार वाला
798.	आंयासी	प्रयत्न या प्रयास वाला।
799.	परिसारी	चारो तरफ सरकने वाला।
800.	संसर्गी	सृष्टि वाला।
801.	परिदेवी	पासा या जूआ के खेल में परिपूर्ण
802.	संचारी	भलीभांति विचरण करने वाला
803.	परिक्षेपी	इधर उधर घूमने वाला या प्रेरणा देने वाला।
804.	परिराटी	चारो ओर बोलने वाला।
805.	परिवादी	चारो तरफ शिकायत करने वाला।
806.	परिदाही	चारो ओर या हर तरफ से जलाने वाला।
807.	परिमोही	हर प्रकार मोहित या बहकाने वाला।
808.	दोषी	त्रुटि या निन्दा वाला।
809	.द्वेषी	शत्रुता या विरोध वाला।
810.	द्रोही	ईर्ष्या या द्रोह करने वाला।
811.	दोही	पूरा करने वाला।
812.	योगी	योग साधना करने वाला या समाधिस्थ
813.	आक्रीडी	पूर्ण विहार करने वाला।
814.	विवेकी	विचार वान
815.	त्यागी	त्याग करने वाला।
816.	रागी	सुन्दर लय या राग वाला।
817.	भागी	सेवा करने वाला या पृथक कार्य करने वाला।
818.	अतिचारी	मर्यादा का उल्लंघन करने वाला
819.	अपचारी	दुष्कर्म करने वाला।

820. आमोषी — चोरी करने वाला।
821. अभ्याघाती — हमला करने वाला या मारने वाला।
822. विकाषी — विशेष रूप से मारने या हिंसा करने वाला।
823. विलासी — विशेष मनोरंजन या क्रीडा करने वाला।
824. विकत्थी — प्रसंशा या स्तुति करने वाला।
825. विस्रम्भी — भ्रम में पड़ने वाला।
826. अपलाषी — कान्तिहीन वाला
827. विलाषी — विशेष कान्ति वाला।
828. प्रलापी — वातूनी या ब्यर्थ बोलने वाला।
829. प्रसारी — प्रचार और प्रसार या विस्तार करने वाला।
830. प्रद्रापी — भागने वाला।
प्रमाथी — उत्पीडन या सन्ताप देने वाला
831. प्रमाथी — उत्पीड़न या सन्ताप देने वाला।
832. प्रवादी — प्रकथन करने वाला।
833. प्रवासी — विदेश गमन या विदेश यात्रा करने वाला, मूल जन्म स्थान को छोड़कर अन्य स्थान पर रहने वाला।
834. निन्दकः — निन्दा या शिकायत करने वाला।
835. हिंसकः — हिंसा करने वाला।
836. क्लेशकः — दुःख देने वाला।
837. खादकः — खाने वाला।
838. विनाशकः — नष्ट करने वाला।
839. परिक्षेपकः — इतस्तत भ्रमण करने वाला या प्रेरक।
840. परिराटकः — इतस्तत भाषण देने वाला।
841. परिवादकः — चारो तरफ विवाद करने वाला।
842. व्याभाषकः — व्यापक रूप से परिभाषित करने वाला।
843. असूयकः — ईर्ष्यालु, निन्दक, मान घटाने वाला।
844. आवेदकः — अच्छी तरह से क्रीडा करने वाला।
845. आक्रोशकः — अच्छी तरह से बुलाने वाला या रोदन करने वाला।
846. चलनः — कम्पन होना।
847. चोपनः — मन्द गमन
848. कम्पनः — कम्पन होना या कम्पित होना।
849. शब्दनः — शब्द उच्चारण करने वाला या ध्वननशील होना।
850. रणः — क्रन्दन करने, चिल्लाने या चिघाड़ने वाला भयंकर शब्द करने वाला।
851. वर्तनः — टिकाऊँ रहने वाला, ठहरने वाला, विद्यमान रहने वाला।
852. वर्धनः — बढ़ने वाला या उगने वाला।
853. जवनः — वेगवान, फुर्तीला, तेज जाने वाला।
854. चङ्क्रमणः — इधर उधर घूमना, आना–जाना, सैर करना।
855. दन्द्रमणः — इधर उधर जाने की इच्छा करने वाला।
856. सरणः — सरकने वाला।
857. गर्धनः — लोभ या लालच करने वाला।
858. ज्वलनः — जलने वाला।
859. शोचनः — शोक, अफसोस और विलाप करने वाला।

860.	लवणः	कान्तिवाला, सौन्दर्य वाला।
861.	पतनः	नीचे गिरने वाला।
862.	पदनः	जाने वाला या पैदल चलने वाला।
863.	क्रोधनः	क्रोध करने वाला।
864.	रोषणः	हिंसा करने वाला या क्रोध वाला।
865.	मण्डनः	अलंकृत करने वाला, सजावट करने वाला।
866.	भूषणः	अलंकरण, सजावट, श्रृंगार।
867.	क्नूयिता	शब्द करने वाला।
868.	क्ष्मायिता	हिलने वाला या कंपकंपी वाला।
869.	सूदिता	क्षरण वाला।
870.	दीपिता	तेज वाला, कान्ति वाला।
871.	दीक्षिता	याग, उपनयन संस्कार आदि उत्सवो पर गायत्री आदि मन्त्रों की दीक्षा लेने वाला।
872.	लाषुकः	लोभी लालची, लोलुप, कान्तिमान।
873.	पातुकः	पतनशील वाला
874.	पादुकः	पैदल चलने वाला, खड़ाऊँ
875.	स्थायुकः	एक स्थान पर बैठने वाला या स्थिर रहने वाला।
876.	भावुकः	भावना वाला या होने वाला बहनोई
877.	वषुकः	बरसने वाला, जल डालने वाला।
878.	घातुकः	मारने वाला, संहारकारी, चोट पहुँचाने वाला
879.	कामुकः	कामातुर, कामारक्त, काम करने का इच्छुक।
880.	गामुकः	गमनशील या जाने की इच्छा
881.	शारूकः	अनिष्टकर, चोट पहुँचाने वाला या उपद्रवी
882.	जल्पाकः	वातूनी, गप्पी।
883.	भिक्षाकः	भिखारी, साधु, भिक्षक।
	दवेयति	खेलने वाला
	क्रोष्टा	रोने वाला
884.	कुट्टाकः	विभाजन करने वाला, काटने वाला, चुटकी लेने वाला।
885.	लुण्टाकः	चोरी करने वाला, लूटने वाला।
886.	वराकः	बेचारा, दयनीय दशा वाला मन्दभाग्यवाला, अभागा, दुःखी, दुःखिया।
887.	वराकी	बेचारी, दयनीय दशा वाली, मन्दभागिनी, अभागिनी, दुःखिया।
888.	प्रजवी	आशुगमनशील, द्रुतगामी, दूत, हरकारा।
889.	जयी	जीतने वाला, विजयी, विजेता।
890.	दरी	गुफा, कन्दरा, आदरवाला।
891.	क्षयी	नष्ट होने वाला, मुर्छाने वाला, हास होने वाला मूर्तिमान।
892.	विश्रयी	सेवक, सेवा करने वाला।
893.	अत्ययी	अति गमनशील वाला।
894.	वमी	वमन करने वाला, उगलने वाला।
895.	अव्यथी	अतिगमनशील वाला।
896.	अभ्यमी	चारो तरफ घूमने वाला
897.	परिभवी	अनादर, तुच्छ अपमान करने वाला।
898.	प्रसवी	प्रसव होने वाला या बच्चा पैदा होने वाला।

899.	स्पृहालुः	इच्छा करने वाला, लालायित वाला, उत्सुक वाला, उत्कण्डित वाला।
900.	गृहयालुः	पकड़ने वाला, ग्रहण करने वाला।
901.	पतयालुः	पतनोन्मुख, पतनशील वाला।
902.	दयालुः	दया करने वाला, कृपालु।
903.	निद्रालुः	सोने का स्वभाव वाला, विष्णु की उपाधि।
904.	तन्द्रालुः	जमाही, आलसी, थका हुआ।
905.	श्रद्धालुः	श्रद्धा वाला।
906.	शयालुः	शयन करने वाला, सदा सोने का स्वभाव वाला।
907.	दारूः	फाड़ने वाला, चीरने वाला, दानशील वाला।
908.	धारूः	पान करने वाला या पीने वाला।
909.	सेरूः	बांधने वाला, कसने वाला।
910.	शद्रुः	जाने वाला, पतनशील, गतिशील, नश्वर।
911.	सद्रुः	विनाशशील, गतिशील, पृथक्शील।
912.	सृमरः	गमन करने वाला, जाने वाला।
913.	घस्मरः	खाऊ, पेटू, दवानल।
914.	अद्भरः	बहुत खाने वाला, अधिक खाने वाला पेटू।
915.	भंगुरः	टूटने के योग्य, दुबला, पतला, अनित्य, नश्वर।
916.	भासुरः	चमकीला, चमत्कार, भव्य।
917.	मेदुरः	मोटा, चिकना, स्निध, मृड, ठोस सघन।
918.	विदुरः	बुद्धिमान, मनीषी, घूर्त आदमी, षडयन्त्रकारी, पाण्डु के छोटे भाई का नाम।
919.	भिदुरः	तोड़ने वाला, फाड़ने वाला, टुकडे–टुकड़े करने वाला, शीघ्र टूटने वाला।
920.	छिदुरः	काटने वाला, विभक्त करने वाला, आसानी से टूटने वाला।
921.	इत्वरः	याने वाला, यात्रा करने वाला, क्रूर कठोर वाला।
922.	नश्वरः	नाशशील
923.	इत्वरी	यान वाली, यात्रा करने वाली, क्रूर स्वभाव वाली कठोर वाली।
924.	जित्वरः	विजयी, जीतने वाला, विजेता।
925.	सृत्वरः	जाने वाला, सरणशील, नदी, दरिया, माता।
926.	गत्वरः	गतिशील, नर, जगम।
927.	गत्वरी	गतिशीला।
928.	जागरूकः	जागने वाला, सचेत होने वाला।
929.	यायजूकः	बार–बार या लगातार यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला।
930.	जञ्जपूकः	बार–बार या सतत मन में जपने वाला
931.	दन्दशूकः	काटने वाला, सांप, उत्पाती, विषैला, रेंगने वाला जन्तु।
932.	नम्रः	विनय स्वभाव वाला, विनयी।
933.	कम्प्रः	कापने वाला, चलायमान, हिलने वाला, हलचल पैदा करने वाला।
934.	स्मेरः	मुस्कराने वाला, या मुसकी मारने वाला।
935.	अजस्रमः	निरन्तर, सतत, हमेशा।
936.	कम्रः	सुन्दर, लावण्य, मनोरम, मनोहर।
937.	हिंस्त्रः	हिंसा करने, जान मारने वाला, व्याघ्र, सिंह।
938.	दीप्रः	चमकीला, जगमगाता हुआ।
939.	चिकीर्षुः	करने की इच्छा करने वाला।
940.	आशंसुः	इच्छुक, आशावान

941.	विन्दुः	मनीषी, ज्ञानवान, ज्ञानशील।
942.	इच्छुः	इच्छा करने वाला, कामना करने वाला।
943.	सुम्नयुः	अपने को सुख की इच्छा करने वाला।
944.	पपिः सोमः	चन्द्रमा, सूर्य
945.	ददिः	गाना, श्लोक
946.	वभ्रिः	वज्र
947.	जग्मि	युवा, हवा
948.	जघ्निः	आक्रमणकारी, शस्त्र, हथियार
949.	जज्ञिः	पैदा करने वाला, उत्पन्न करने वाला
950.	दधिः	धारण और पोषण करने वाला।
951.	चक्रिः	करने वाला।
952.	सस्रिः	सरकने वाला जन्तु, जाने वाला सांप
953.	जग्मिः	जाने वाला हवा
954.	जज्ञिः	पैदा होने वाला।
955.	नेमिः	परिधि या पहिये का घेरा।
956.	सासहिः	बार बार सहन करने वाला या पुनः तृप्त होने वाला।
957.	वावहिः	बार बार या पुनः पुनः ढोने वाला।
958.	चाचलिः	पुनः पुनः विकसित होना, चलना।
959.	पापतिः	पुनः पुनः नीचे की ओर गिरना।
960.	स्वपनक्	सोने वाला, निद्रालु या ऊँघने वाला।
961.	तृष्णक्	लोभी, लालची, प्यासा।
962.	शरारूः	हिंसा वाला
963.	वन्दारूः	प्रणाम करने वाला या स्तुति करने वाला, अभिवादन करने वाला।
964.	भीरूः भीलुकः भीरूकः	डरपोक कायर, बुदजिल, साहसहीन
965.	स्थावरः	एक स्थान पर जमा हुआ वृक्ष, अचल, अडिग
966.	ईश्वरः	ऐश्वर्य वाला, भगवान, प्रभु।
967.	भास्वरः	चमकीला, प्रकाशमान, उज्जवल, चमकदार, सूर्य, दिन
968.	पेस्वरः	जाने वाले, घूमने वाला, विनाशकारी
969.	कस्वरः	गतिशील वाला, भ्रमण वाला।
970.	यायावरः	बार बार देशाटन करने वाला, इतस्तत पुनर्भ्रमर करने वाला।
971.	विभ्राट्	तेजस्वी, उज्जवल, दीप्तमान, आलोकन।
972.	भाः	चकमने वाला, जगमगाने वाला, कान्तिमान
973.	धूः	जूआ खेलने वाला हिंसा करने वाला
974.	विद्युत्	विजली आकाशीय, विजली, कान्तिमान
975.	ऊर्क्	सामर्थ्य बल, शक्तिमान सत्व
976.	पूः	पालन और पूरण करने वाला, भरण करने वाला।
977	जूः	चाल, पर्यावरण, राक्षसी
978.	ग्रावस्तुत्	ओला या पत्थर सम्बन्धी स्तवन
979.	छित्	काटने वाला, विभाग करने वाला।
980.	मिद्	तोंडनें वाला टुकडे–टुकड़े करने वाला, भेदन करने वाला।
981.	वाक्	बोलने वाला, कहने वाला
982.	प्राट्	पूछने वाला।
983.	आयतस्तुः	विशाल स्तुति या स्त्रोत कहने वाला।
984.	कटप्रूः	शिव, भूत, पिशाच्

985.	श्रीः	हरि की सेवा करने वाली लक्ष्मी
986.	दिद्युत्	चमकने वाला प्रकाश वाला।
987.	जगत्	गमन करने वाला, संसार
988.	जूहूः	सूवा, अग्नि घी, आहुति देने वाला अर्द्ध चन्द्राकार चम्मच
989.	ददृत्	भय प्रदान करने वाला।
990.	धीः	चिन्तन करने वाला, विचार करने वाला।
991.	मित्रभूः	किसी व्यक्ति का नाम
992.	प्रतिभूः	जमानत
993.	विभुः	व्यापक, सर्वत्र रहने वाला।
994.	प्रभुः	स्वामी, मालिक
995.	सम्भुः	उत्पन्न करने वाला।
996.	मित्रद्रुः	धीरे धीरे गमन करने वाला या चलने वाला।
997.	शतद्रुः	पञ्जाव की नदियों में एक नाम है सतलज
998.	शम्भुः	सुखको उत्पन्न करने वाला शंकर
999.	धात्री	दायी बच्चों की सेवा करने वाली स्त्री
1000.	दात्रम्	काटने का उपकरण, हंसिया
1001.	शस्त्रम्	हथियार
1002.	योत्रम्	डोरी, रस्सी, रज्जु
1003.	योक्तम्	डोरी, रस्सी, रज्जु
1004.	स्तोत्रम्	देवताओं, देवियों एवं भगवान योग्य स्तवन के श्लोक
1005.	तोत्रम्	हाथी के हांकने का अंकुश
1006.	सेत्रम्	बन्धन, हथकड़ी, बेड़ी
1007.	सेक्त्रम्	डोलची, सींचने का पात्र
1008.	मेढ्रम्	सींचने का यन्त्र या साधन
1009.	दंष्ट्रा	बड़ा दांत या हाथी का दांत या दांत वाला
1010.	नदध्री	नाथ चमड़े की रस्सी या फीता।
1011.	नेत्रम्	आंख
1012.	पोत्रम्	हल या सूकर का मुख
1013.	अरित्रम्	डाड, पतवार लंगण।
1014.	लवित्रम्	काटने का उपकरण, दंतिया हंथिया
1015.	धवित्रम्	मृगचर्म से बना पंखा
1016.	सवित्रम्	उत्पत्ति साधन का कारण
1017.	खनित्रम्	खन्ती या खनने का उपकरण
1018.	सहित्रम्	सहिष्णुता, सहनशीलता, धैर्य
1019	चरित्रम्	व्यवहार, आदत, चाल–चलन, जीवन शैली, इतिहास।
1020.	पवित्रम्	पवित्रीकृत मनुष्य या वस्तु पुनीत पावन शुद्ध निष्पाण पवित्र करना या पाप धोना चलनी या चालने का उपकरण, अग्नि
1021.	उच्छायः	ऊँचाई, वृद्धि
1022.	उद्यावः	मिलाना संयोग
1023.	उदद्रावः	ऊपर की ओर जाना।
1024.	उत्पावः	ऊपर का एक चौथा भाग
1025.	आरावः,आंखः	आवाज चिल्लाना
1026.	आप्लावाः, आप्लवः	स्नान, छिड़काव, पानी में डुबो देना।

●

अथ् उत्तर कृदन्त

सं0	क्रिया प्रयोग	अर्थ
1	गमी	जाने वाला या गमन करने वाला।
2	प्रस्थायी	प्रस्थान करने वाला।
3.	दाशः	जिसके लिए मारा जाय
4.	गोघ्नोऽतिथि	जिस अतिथि के लिए गाय मारी जाय।
5.	भीमः	जिससे डरा जाय
6.	भीष्मः	जिससे डरा जाय।
7.	प्रस्कन्दनः	जिससे गति और शोषण किया जाय।
8.	प्रक्षः	प्रहरी
9.	मूर्खः	मूढ
10.	तन्तुः	सूत, धागा, डोरा
11.	कृष्णं द्रष्टुं याति	कृष्ण को देखने के लिए जाता है।
12.	दर्शकः	देखने के लिए
13.	भोक्तुम्	खाने के लिए या भोजन के लिए।
14.	सारः	आवश्यक, सर्वोत्तम, बलवान, मजबूत, दृढ
15.	अतिसारः	पेचिस, व्याधि
16.	विसारः	मछली
17.	पाकः	सिद्ध ओदन, पका हुआ भात ।
18.	स्फारः	खिलना या संचरण होना।
19.	स्फाल	संचरण
20.	परीहारः	त्याग करना, हटाना, दूर करना, निवारण करना।
21.	नीकाशः	सामीप्य, भरपूर प्रकाश, दर्शन, दृष्टि
22.	अनूकाशः	छत के उपर लगने वाली एक प्रकार की खास
23.	शमः	शान्ति
24.	आचामः	आचमन करना, कुल्ला करना, मुंह धोना
25.	कामः	इच्छा
26.	वामः	वमन करना, उल्टी करना
27.	विश्रामः	आराम
28.	रागः	लालिमा
29.	स्यदः	वेग या तेज गति चलना
30.	अवोदः	छिड़काव करना, गिला करना।
31.	एधः	जलाने वाली लकड़ी
32.	ओदभः	गिला करना
33.	प्रश्रथः	छोड़ना, गिरना
34.	हिमश्रथः	वर्फ गिरना।
35.	निचायः	राशि ढेर या तौली गयी अनाज की राशि
36.	निष्पावः	अनाज फटकना या सूपा से साफ करना।
37.	कारः	धन्यादि को साफ करना।
38.	दाराः	भार्या, स्त्री
39.	जारः	उपपति

40.	उपाध्याय	समीप में जाकर जिसे पढ़ा जाय।
41.	उपाध्याया, उपाध्यायी	जो स्वयं पढाती है।
42.	शारः	वायु, पवन, वर्ण, चित्रण या रंग भरना या आवरण।
43.	संरावः	शोरगुल, कोलाहल, हल्ला गुल्ला
44.	रवः	शब्द
45.	अभिनिष्टानः	वर्ण
46.	संयावः	हलुआ, विशेष मालपूआ
47.	सन्द्रावः	पुनः वापस होना या भगदड़
48.	सन्द्रावः	पुनः वापस होना या भगदड़
49.	श्रायः	सहारा, बचाव, आश्रय
50.	नायः	नेता, मार्गदर्शक, निर्देशक
51.	भावः	होना, सत्ता, अस्तित्व
52.	प्रणयः	विवाह करना, पाणिग्रहण संस्कार
53.	प्रभवः	स्रोत, भूल
54.	प्रश्रयः	आदर, शिष्टता, सुजनता, विनम्रता
55.	विक्षावः	खांसी, छींक आना
56.	विश्रावः	चूना, टपकना, बहना।
57.	क्षवः	छींक, खांसी
58	श्रवः	कान, सुनना
59.	अवनायः	नीचे की ओर ले जाना।
60.	उन्नायः	ऊपर की ओर ले जाना।
61.	प्रद्रावः	भाग जाना, पलायन
62.	प्रस्तावः	आमुख, उल्लेख, संकेत, संदेश
63.	प्रस्रावः	बहाव, मूत्र
64.	द्रवः	चूने वाला, रिसने वाला, गीला, टपकने वाला
65.	स्तवः	प्रशंसा करना, स्तुति करना।
66.	स्रवः	गिरना, चूवना।
67.	निष्पावः	सूपा आदि से साफ किया गया धान्य आदि
68.	अभिलावः	काटना, लवन, कटाई।
69.	पवः	पवित्रीकरण, वायु
70.	लवः	उत्पाटन, उल्लुचन, कटाई।
71.	उद्‌गारः	हृदय में छिपी हुई वाणी को मुख निकाला
72.	निगारः	निकलना, डकारना
73.	गरः	निगलने वाला या विष
74.	उत्कारः	अनाज फटकना, अनाज की ढेरी करना या बटोरना।
75.	निकारः	अनाज फटक्ना।
76.	भिक्षोत्करः	भिक्षा का संग्रह, भिक्षा की गठरी
77.	पुष्पनिकरः	फूल का ढेर या संग्रह
78.	सस्तावः	जिस देश में छन्दोग लोक एकत्रित होकर स्तुति करते हैं।
79.	संस्तवः	संस्तुति, प्रशंसा, जान–पहचान
80.	प्रस्तारः	फैलाना, आच्छादित करना, बखेरना, पुष्पशय्या, पूर्णशय्या
81.	वर्हिषप्रस्तरः	एक मुटठी कुशा बिछाना

82.	विस्तारः	वस्त्र फैलाना या लम्बाई चौड़ाई।
83.	विस्तरः	फैलाव या ग्रन्थ वेष्टन
84.	उद्‌गाहः	उपर उठना या प्रतिवाद
85.	संग्राहः	पकड़ना, ग्रहण करना, बलात् पकड़ना।
86.	संग्रहः	एकत्र करना।
87.	परिणायः	इधर–उधर घूमना, शतरंज चौसर की गोटी, इधर उधर चलाना
88.	न्यायः	उचित विचार कर फैसला
89.	परिणयः	विवाह
90.	न्ययः	नाश
91.	अनुपात्ययः	क्रम से प्राप्त या उल्टा न होना।
92.	विशायः	बारी बारी सोना।
93.	उपशायः	अन्य पहरेदारों के साथ रात में बारी बारी से सोना या पहरेदारों को बारी बारी से सोना।
94.	विशयः	सन्देह, अनिश्चितता।
95.	संशयः	सन्देह, अनिश्चितता।
96.	उपशयः	समीप में सोना।
97.	प्रचायः	पुष्प आदि को एकत्र करना या हाथ से ग्रहण करना।
98.	प्रचयम्	छड़ी से फलों का मारता है
99.	प्रचयः	चोरी से फूल इत्यादि को चुराता या तोड़ता है।
100.	काशी निकायः	काशी निवास स्थल या निवास स्थान।
101.	आकायम्	चिता पर रखी हुई अग्नि का चयन।
102.	कायः	अस्थि मज्जा मांस इत्यादि जिसमें पाये जायें।
103.	गोमयनिकायः	गोबर का ढेर या समूह
104.	चयः	संघात, समूह, ढेर
105.	भिक्षुनिकायः	भिक्षुकों का समूह या संघ
106.	सूकरनिचयः	सूअरों का संग्रह
107.	समुच्चय	एक ही में ज्ञानकर्म पाया जाना।
108.	व्यावक्रोशी	परस्पर एक दूसरे को बुलाना।
109.	व्यावहाशी	परस्पर हंसी करना।
110.	सारविणम्	शोरगुल हो हल्ला
111.	अवग्राहः	अभिभव ह्रास
112.	निग्राहः	शाप ग्रस्त या कोशना।
113.	अवग्रहः	समस्त पद के घट को पृथक–पृथक करना।
114.	निग्रहः	रोकना या नियंत्रित करना।
115.	पात्रप्रगाहः	पात्र लेकर चलना या पात्र बहन करना अर्थात भिक्षा लाभ के लिए पात्र बहन करता है।
116.	पात्रप्रग्रहः	बर्तन को ग्रहण करना।
117.	परिग्राहः	यज्ञ की वेदी के चारो तरफ तीन तीन रेखाएं या तलवार की आकृति लकड़ी बना हुआ पात्र विशेष से वैदिक क्रिया में स्वीकार करना।
118.	नीवाराः	मुन्यन्न या ऋष्यन्न धान्य विशेष।
119.	निवरा कन्या	अत्यन्त वरण करने योग्य कन्या।
120.	प्रवरा सेना	प्रधान सेना।

121.	प्रवरा गौः	सर्वश्रेष्ठ गाय।
122.	उच्छायः	ऊँचाई, वृद्धि
123.	उद्यावः	अधिक मिलावट
124.	उदद्रावः	तेज गति।
125.	उत्पावः	अधिक पवित्र
126.	आरावः आरवः	आवाज चिल्लाना।
127.	आप्लावः, आप्लवः	स्नान चारो तरफ छिड़काव पानी में डुबो देना।
128.	देवस्य अवग्रहः	
	अवग्राहः	देव या ईश्वर कृत वर्षण।
129.	तुलां प्रग्राहः	सूत्र या घट ग्रहण
130.	प्रग्रहः प्रग्राहः	रस्सी ग्रहण, या रस्सी पकड़ना
131.	प्रावारः प्रवरः	चादर या आच्छादन
132.	परिभावः, परिभवः	तिरस्कार, अवहेलना
133.	चयः	संग्रड़, ढेर, राशि
134.	जयः	जीत होना, विजय, सफलता
135.	करः	जो करता है या कराता है।
136.	गरः	पेय या शरबत
137.	शरः	तीर, वाण, सरकण्डा
138.	यवः	जौ
139.	लवः	उत्पाटन, उल्लंघन, कटाई, लवनी
140.	स्तवः	प्रशंसा, स्तुति, स्त्रोत
141.	पवः	वायु, पवित्रीकरण
142.	विष्टरः	वृक्ष, पेंड़, आसन
143.	ग्रहः	ग्रहण करना, पकड़ना
144.	वरः	श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया, दूलया
145.	दरः	फाड़ने वाला, चीरने वाला।
146.	निश्चयः	स्थिरमत, दृढ विचार, खोज, पूछताछ
147.	गमः	जाने वाला, पहुंचाने वाला, प्राप्त करने वाला।
148.	वशः	अधीन, प्रभावित
149.	रणः	संग्राम, समर, युद्ध, लड़ाई।
150.	प्रस्थः	जाने वाला, दर्शन करने वाला, तौल विशेष
151.	विध्नः	बाधा, हस्तक्षेप, रूकावट, अड़चन।
152.	चक्रम्	गाड़ी की पहिया के आकार के शत्रुओं का वध करने वाला विष्णु भगवान का शस्त्र विशेष या कोहार का चाक या गाड़ी का चक्का, तेल पेड़ने का कोल्हू।
153.	चिक्लिदम्	तरावट, ताजगी, तरी
154.	चङ्क्रमः	चक्का, विष्णु का शस्त्र
155.	प्रघसः	खाऊ, पेटू।
156.	विघसः	आधा खाया हुआ घास या भोज्य पद्रार्थ का अवशेष।
157.	घासः	शष्प, बालतृणम्।
158.	न्यादः	आहार, खाना
159.	निघसः	खाना, भोजन करना, भोजन
160.	व्यधः	बीधना, प्रहार, टुकडे करना, आधा करना, घायल करना।

161.	जपः	किसी देवता के मन्त्र को मन में धीरे–धीरे उच्चारण करना।
162.	आव्याधः	पूर्ण शिकारी बहेलिया
163.	उपजापः	मन्त्रभेद, पैशुन्य
164.	स्वनः	शब्द, आवाज
165.	स्वानः	शब्द, आवाज
166.	हसः	हंसी, ठहाका मारना ।
167.	हासः	हंसी, ठहाका मारना।
168.	प्रस्वानः	तेज शब्द या तेज आवाज
169.	प्रहासः	ठहाका मारकर हंसना या तेज हंसी
170.	संयमः	प्रतिबन्ध रोकथाम
171.	संयामः	प्रतिबन्ध, रोकथाम
172.	उपयमः	विवाह
173.	उपयामः	विवाह करना।
174.	नियमः	नियन्त्रण, रोक
175.	नियामः	नियन्त्रण, धार्मिक व्रत
176.	वियमः	प्रतिवन्ध, रोक नियन्त्रण
177.	वियामः	प्रतिबन्ध, रोक, नियन्त्रण।
178.	यमः	रोक लगाना, नियन्त्रण
179.	यामः	निरोध, नियन्त्रण, धैर्य।
180.	निनदः	ऊँची आवाज में बोलना।
181.	निनादः	तेज आवाज में चिल्लाना।
182.	निगदः	सस्वर पाठ करना।
183.	निगादः	सस्वर पाठ करना, ऊँची आवाज में पाठ पढ़ना।
184.	निपठः	पाठ करना, अभ्यास करना।
185.	निपाठः	बार बार पढ़ना।
186.	निस्वनः	आवाज शब्द
187.	निस्वानः	आवाज, शब्द
188.	निक्वणः	वीणा की आवाज
189.	निक्वाणः	वीणा के शब्द
190.	क्वणः	शब्द
191.	क्वाणः	शब्द
192.	प्रक्वाणः	वीणा से भिन्न होने वाले शब्द
193.	प्रक्वणः	वीणा से भिन्न होने वाले तीव्र शब्द
194.	मूलक पणः	एक मुष्टि की कीमत वाला मूली
195.	शाक पणः	एक मुष्टि की कीमत वाली सब्जी
196.	धनमदः	धन से अभिमान
197.	उन्मादः	विवेक या विचार, शून्यता।
198.	प्रमदः	प्रसन्नता, उल्लास
199.	सम्मदः	हर्ष से उत्पन्न खुशी।
200.	प्रमादः	अवहेलना, असावधानी
201.	सम्मादः	मद, नशा, पागलपन।
202.	समजः	पशुओं का बटोर या संघ

203.	उदजः	पशु प्रेरणा।
204.	समाजः	ब्राह्मण समूह
205.	उदाजः	क्षत्रिय समूह
206.	अक्षस्यग्लहः	पाशा में रखे गये पैसा या रूपया जो जीतने के बाद ग्रहण किया जाता है।
207.	पादस्य ग्रहः	वन्दनादि के लिए ग्रहण
208.	गवामुपसरः	गायों का प्रथम गर्भधारण।
209.	अवसरः	समय
210.	प्रसरः	आगे चलना।
211.	निहवः	बुलाना, आवाहन।
212.	अभिहवः	आवाहन, निमन्त्रण।
213.	उपहवः	आवाहन, निमन्त्रण।
214.	विहवः	यज्ञ, युद्ध
215.	आहावः	संग्राम, युद्ध पशुओं के पीने के लिए कूप के समीप बना कुण्ड
216.	आह्वायः	बुलाना, नाम
217.	हवः	आवाहन, प्रार्थना।
218.	वधः	मारना।
219.	घातः	मारना।
220.	अभ्रघनः	बादल का जमना या कठोर रूप में पत्थर
221.	अन्तर्धनः	वाहीक ग्राम विशेष का नाम
222.	प्रघणः, प्रघाणः	घर के दरवाजे के सामने बनी डयौढ़ी, पौली लोहे का गदा या घन या तांवे का वर्तन।
223.	उद्धनः	जिस काठ पर दूसरा काठ छीला जाय, लकडी का ठेहा।
224.	अपघनः	हाथ पैर
225.	अपघात्	विश्वास का हनन या धोखा देना।
226.	अयोधनः	निहाई
227.	विघनः	मुगरी, हथौडा
228.	द्रुधणः, द्रुघनः	लोहे का हथौड़ा या जिस किसी का हथौड़ा।
229.	स्तम्वघ्नः स्तम्वधनः	दरांति, खुर्पा
230.	स्तम्बधातः	खूटा से बांधकर मारना
231.	परिधः	लोहे या लकड़ी का मूसल जो अनाज आदि के कूटने के काम आता है या लोहे का मूसल
232.	पलिधः	शीशे का वर्तन, घडा, लोहे की गदा या मूसल
233.	पल्यंकः	खटिया, चारपाई
234.	पर्यङ्कः	घटिया, चारपाई
235.	उपघ्न	अनवरत, सहारा, संरक्षा
236.	संघः	गण, समूह
237.	उद्घः	खुशी, हर्ष
238.	निघः	जितना चौडा, उतना लम्बा, गेंद, पाप
239.	पक्त्रिमम्	पक्का, पका हुआ, परिपक्व
240.	उपत्रिमम्	बोया गया।
241.	बेपथुः	शरीर कम्पन्न
242.	श्वयथुः	श्वास कम्पन्न या श्वास बढ़ना

243.	यज्ञः	याग
244.	याञ्आ	भांगना प्रार्थना
245.	यत्नः	प्रयास
	प्रहाय	बुलाना, निमन्त्रण
	आह्व	जो पुकारता है या बुलाता है
246.	विश्नः	जाना
247.	प्रश्नः	पूछना
248.	रक्षणः	रक्षा करना
249.	स्पप्नः	सपना
250.	प्रधिः	पहिये नाभिः परिग्रह कूंआ
251.	अन्तर्धिः	ओझल छिपना
252.	उपाधिः	जाति, गुण, क्रिया, संज्ञा या जालसाज, धोखा
253.	जलधिः	समुद्र
254.	कृतिः	कार्य यश
255.	चितिः	चयन, इकटठा, संग्रह करना
256.	स्तुतिः	प्रार्थना वन्दना, स्तोत्र पाठ करना।
257.	स्फातिः	सूजन, शोध, वृद्धि
258.	स्फीतिः	वढती, वृद्धि
259.	श्रुतिः	कान, वेद
260.	इष्टि	अभीष्ट, इच्छा, कामना, यज्ञ
261.	कीर्णिः	बखेरना छिपाना घायल करना।
262.	गीर्णि	खा लेना, निगल जाना, यश
263.	धूनिः	हिलाना क्षुब्ध करना, इधर उधर करना
264.	पूनिः	पवित्र
265.	लूनिः	काटा गया, छांटा गया।
266.	प्रह्लन्नीः	प्रशन्नता खुशी
267.	चूर्तिः	गमन
268.	फुल्तिः	फला हुआ, खिला हुआ।
269.	अपचितिः	हानि, नाश, व्यय, प्रायश्चित।
270.	सम्पत्	धन, दौलत
271.	विपत्	संकट, दुर्भाग्य, अनर्थ।
272.	सम्पत्तिः	धन, समृद्धि।
273.	विपत्तिः	संकट, दुर्भाग्य, अनर्थ।
274.	प्रस्थितिः	चले जाना, विदा होना, यात्रा।
275.	उपस्थितिः	सामीप्य, विद्यमान, हाजिरी।
276.	संगीतिः	मिलकर गाया हुआ।
277.	सम्पीतिः	मिलकर पीना, सहपान
278.	पक्तिः	पकाना, पचना, हाजमा, पाचन शक्ति
279.	ऊतिः	बुनना, सीना, संरक्षा, खेल।
280.	यूतिः	मिलाप, संग्राम
281.	जूति	चाल, वेष।
282.	सातिः	दान,उपहार,भेंट करना, प्राप्त करना।

283.	कीर्तिः	यश, अनुग्रह, अनुमोदन
284.	व्रज्या	साधु या भिक्षुक का इधर उधर घूमना।
285.	इज्या–यज्ञ	यज्ञ, उपहार, दान, प्रतिमा।
286.	समज्या	सभा, परिषद, बटोर
287.	निषद्या	बाजार, हाट, आपण।
288.	निपत्या	फिसलने वाली भूमि, युद्धक्षेत्र
	स्फायी	मोटा होना, विशाल होना, बढ़ना, फूलना
289.	मन्या	गले के पिछले भाग का सिरा, ज्ञान
290.	विद्या	ज्ञान, अवगम, शिक्षा
291.	सुत्या	सोमरस निकालना या तैयार करना।
292.	शय्या	विस्तरा, बिछौना।
293.	भृत्या	नौकरानी, सेविका।
294.	इत्या	डोली, पालकी, शिविका, चबूतरा।
295.	कृत्या, क्रिया, कृतिः	कार्य, व्यापार, यश
296.	इच्छा	अभीष्ट, मनोरथ, अभिलाषा।
297.	परिचर्या	पूजा, सेवा।
298.	परिसर्या	फैलाना, विस्तार करना, बिखेरना, फैलना, बढ़ना।
299.	मृगया	खोजना, ढूढना अन्वेषण करना।
300.	अटाट्या	इतस्ततः परिभ्रमण करना, जाना।
301.	जगरा जागर्या	जागरण, जागते रहना।
302.	चिकीर्षा	करने के लिए इच्छा करने वाला।
303.	पुत्रकाम्या	पुत्र की कामना करने वाला।
304.	ईहा	इच्छा कामना, चेष्टा
305.	ऊहा	तर्क पूर्ण विचार या विवेचन
306.	भक्तिः	भजन करना।
307.	नीतिः	नियम, कानून
308.	दीप्तिः	प्रकाश, तेज, आभाकान्ति
309.	निगृहीतिः	निग्रहण करने वाला दमन करने वाला।
310.	निपठितिः	पाठ करने वाला, अध्ययन करने वाला।
311.	जरा	बुढापा, वृद्धावस्था।
312.	त्रपा	लज्जा, शर्माना।
313.	भिदा	छिन्न भिन्न करना, काटना।
314.	भित्तिः	तोड़ना, खण्ड करना।
315.	छिदा	किसी वस्तु का दो भाग करना।
316.	छित्तिः	छिद्र, बिल काटना, टुकड़े–टुकड़े करना।
317.	गुहा	गुफा–छिपने योग्य पहाड़ों के मध्य स्थान जो अन्धकारों से छिपा रहता है।
318.	गूढिः	छिपी हुई, गुप्त रूप से रखी गयी।
319.	आरा	पीतल, कोण, किनारा।
320.	हारा	लाल भूरे रंग का अंगूर।
321.	कारा	कारावास, वन्दीकरण, जेलखाना।
322.	तारा	ग्रह, आकाश की तारिकायें।
323.	धारा	पानी की सरिता, बहते जल की रेखा या नदी के जल का बहाव

324.	रेखा	लकीर, धारी, पड़ना।
325.	लेखा	रेखा, धारी, लकीर
326.	चूड़ा	बालों की चोटी, चुटिया, मुर्गे या मोर की कलंङी
327.	धारा	पात, झरना।
328.	धृतिः	लेना, पकड़ना, रखना, हस्तगत करना।
329.	मृजा	स्वच्छ करना, धोना, निर्मल करना, नहाना।
330.	कृपा	दया, रहम, करूणा।
331.	चिन्ता	बार बार मनन करना या विचार करना या चिन्तन करना
332.	पूजा	आराधना, सम्मान
333.	कथा	कथा, कहानी, वृतान्त, सन्दर्भ
334.	कुम्बा	यज्ञभूमि का क्षेत्र या हाता।
335.	चर्चा	किसी की बार बार आवृत्ति, पूछताछ विचार अनुसंधान विमर्श
336.	तुला	तराजू
337.	प्रदा	उपहार, भेंट
338.	उपदा	उपहार, भेंट, नजराना।
339.	श्रद्धा	आस्था, निष्ठा, भरोसा, विश्वास।
340.	अन्तर्धा	आच्छादन, गोपन, छिपा हुआ।
341.	अन्तर्धिः	ओझल होना, गोपन, छिपा हुआ।
342.	कारणा	पीड़ा, वेदना, नरक में डालना
343.	हारणा	हरण करना, बलात् ले जाना।
344.	आसना	आसन, छोटा बिछावन
345.	श्रन्थना	ढीला, शिथिल करने क्रिया शिथलीकरण, खोलना, मुक्त करना।
346.	घट्टना	हिलाना, डूलाना, रगड़ना।
347.	वन्दना	प्रार्थना, स्तुति करना, स्तवन
348.	वेदना	पीड़ा, दुःख
349.	अन्वेषणा	खोजना, अनुसंधान करना, शोध कार्य करना।
350.	पर्येषणा	प्रत्येक बिन्दु पर शोध कार्य करना या खोजना, अनुसंधान करना।
351.	प्रच्छर्दिका	वमन, उलटी का आभास होना।
352.	प्रवाहिका	दस्त लगना, बार बार शौच
353.	विचर्चिका	खुजली, खाज
354.	अर्त्तिः	पीड़ा, दुःख, सिर का दर्द
355.	आसिका	आसन, बिछौना
356.	शयिका	शयन, निद्रा।
357.	पचिः	पच् धातु पकाना।
358.	पचतिः	पच् धातु पकाना।
359.	अकारः	अ वर्ण
360.	ककारः	क वर्ण
361.	रेफः	र वर्ण
362.	मत्वर्थीयः	मतुप् अर्थ बाला
363.	आजिः	युद्ध, लड़ाई, संघर्ष
364.	आतिः	एक पक्षी विशेष
365.	वापिः	कूंआ, बावड़ी, तालाब

366.	वाशिः	बसुला, छोटी कुल्हाड़ी
367.	कृषिः	खेती, किसान कार्य, कीड़ों से भरा हुआ मकड़ी
368.	गिरिः	पहाड़, पर्वत।
369.	उद्दालपुष्पभञ्जिका	उद्दाल नामक फूल को तोड़ने वाली की संज्ञा
370.	कारिन्:	कलाकार कार्य, मन्त्रविद्
371.	कारिकाम्	श्लोक बद्ध व्याकरण, नटी, नर्तकी।
372.	क्रियाम्	कार्य, व्यापार करना, उपचार।
373.	कृत्याम्	जो कार्य करनी जानी चाहिए।
374.	कृतिम्	करनी, निर्माण कार्य रचना।
375.	गणिमः	गिनना, गिनती करना
376.	गणिकाम्	रण्डी, वेश्या
377.	गणनाम्	हिसाब लगाना, गिनती करना, विचार करना।
378.	पाचिम्	पकाने वाला ।
379.	पाचिकाम्	पकाने वाली, पाचक क्रिया करने वाली।
380.	पचाम्	पकाने की क्रिया।
381.	पंक्तिम्	पकाना, पचना, हाजमा।
382.	इज्या	यज्ञ, उपहार, दान, प्रतिमा।
383.	इष्टिः	कामना, प्रार्थना, इच्छा अभीष्ट पदार्थ की सिद्धि
384.	आसिका	आसनी लघु विछौना।
385.	शायिका	शयन, निद्रा।
386.	अग्रगामिका	आगे जाने वाली।
387.	इक्षुभक्षिका	ईख चूसने वाली।
388.	अजीवनिः	आजीवन
389.	अप्रयाणिः	न जाना, न प्रगति करना।
390.	राजभोजनाः	राजा के द्वारा भोग किया जाने वाला।
391.	हसितम्, हसनम्	हंसना, मुस्कराना।
392.	पयः पानंसुखम्	दुग्ध पान का सुख
393.	ओदनं भोजनं सुखम्	भात खाने में सुख।
394.	प्रवयणम्	बह निकलना, उमड़ना, टपकना।
395.	प्राजनम्	हंटर, चाबुक, अंकुश
396.	प्रव्रश्चनः	कुल्हाड़ी, टांगा।
397.	दोहनी	जिस पात्र में दूध दूहा जाय।
398.	अर्न्तहणनम्	भीतरघात।
399.	अन्तरपणम्	अन्दर जाना, अन्दर हिलना।
400.	दन्तच्छदः	होठ
401.	प्रच्छदः	आवरण, आच्छादन, चादर, विछौवन।
402.	समुपच्छादः	बिछौना, चादर, गद्दा के ऊपर का चादर
403.	गोचरः	चारागाह, ग्रहचाल
404.	सञ्चरः	जाने का मार्ग, रास्ता
405.	वहः	स्कन्ध, कन्धा
406.	व्रजः	समुच्चय संग्रह, ग्वालों के रहने का स्थान ब्रज देश, गोष्ठ, गौशाला।
407.	व्यजः	तालवृन्त, पंखा।
408.	आपणः	बाजार।

409.	निगमः	छन्द, वेद
410.	निकषः	सोना, चांदी आदि धातु को जिसपर घिसकर परखा जाता है एक प्रकार विशेष काला पत्थर, कसौटी।
411.	- अवतारः	उतार, उदय, विष्णू आदि देवता या ईश्वर का मनुष्य रूप में प्रकट होना, कूंआ, तालाब
412.	अवस्तारः	चादर, चटाई, जवनिका।
413.	रामः	रामचन्द्र दशरथ के पुत्र
414	उपामार्गः	चिचिड़ा।
415.	विमार्गः	खराब सड़क, कुमार्ग, दुराचरण, कुपथ।
	अन्तर्हननो देशः	आन्तरिकघात करने वाला देश
	आकारः	खान्, मणि, खजाना ।
416.	अध्यायः	सर्ग, अङ्क, काण्ड
417.	न्यायः	नियम काननू कायदा।
418.	उद्यावः	शोरगुल, कोलाहल
419.	संहारः	विनाश, हानि, चोर
420.	अवहारः	शार्क नाम की मछली, अस्थायी, सन्धि।
421.	आधारः	आश्रय, सहायता।
422.	घृतोदङ्कः	चर्म निर्मित पात्र या बर्तन।
423.	उदकोदञ्चनः	जलपात्र
424.	आनायः	मछली फंसाने वाला जाल
425.	आनयः	लाने वाला साधन
426.	आखानः	कुदाल, वेलदार
427.	भगः	ऐश्वर्य या जिसको भोगा जाय।
428.	पदम्	पैर
429.	खलः	खलिहान
430.	आखः	फावड़ा, खुर्पा
431.	आखरः	फावड़ा, खोदने वाला।
432.	आखनिकः	खोदने वाला, खनिक चूहा।
433.	दुष्करः	कठिन कार्य
434.	ईषत्करः	थोड़ा या जरा सा कार्य
435.	सुकरः	सरल कार्य
436.	ईषन्निमयः	कुछ वस्तु का विनिमय, अदला–बदली।
437.	दुष्प्रमयः	दुष्प्रवृत्ति, किन्नर, हिरन।
438.	सुविलयः	भली भांति मिल जाना।
439.	निमयः	अदला बदली।
440.	मयः	मय नाम का दानव किन्नर हिरन।
441.	लयः	मिलना।
442.	ईषत्प्रलम्भः	कुछ प्राप्त करना या लाभ
443.	सुप्रलम्भः	अच्छा लाभ उठाना या प्राप्त करना।
444.	दुष्प्रलम्भः	कठिनाई से लाभ उठाना।
445.	उपालम्भः	दुर्वाचन, उलाहना, निन्दा।
446.	ईषल्लभः	कुछ लाभ या प्राप्ति।

447.	सुलभम्	आसानी से मिलना, लाभ होना या प्राप्ति होना।
448.	दुर्लभम्	कठिनाई से मिलना या प्राप्त होना या लाभ होना।
449.	सुप्रलम्भः	कठिनता से लाभ या मिलना।
450.	अतिदुर्लम्भः	अत्यन्त कठिनाई से मिलना लाभ या प्राप्त होना।
451.	अतिसुलभम्	अत्यन्त सरलता लाभ होना या मिलना या प्राप्ति होना।
452.	अतिदुर्लभम्	अत्यन्त कठिनाई से मिलना या प्राप्त होना।
453.	दुराढयम्भवम्	धन दुःख से हो रहा है।
454.	ईषदाढयभवम्	कुछ धनी हो रहा है।
455.	स्वाढयंभवम्	अच्छा धनी हो रहा है।
456.	ईषदाढयंकरः	कुछ धन कर रहा है।
457.	दुराढयंकरः	दुःख से धन कर रहा है।
458.	स्वाढयङ्करः	अच्छे ढंग से धन कर रहा है।
	निग्रहः	रोकना, रखना, नियन्त्रित करना ।
	लाभः	पूर्ण लाभ ।
459.	ईषत्पानः	कुछ पान किया या पीना।
460.	दुष्पानः	दूषित पान या पीना।
461.	सुपानः	अच्छा पान या पीना।
462.	दुःशासन	खराब शासन
463.	दुर्योधनः	भयंकर युद्ध करने वाला।
464.	निष्पानम्	सम्पूर्ण पान या पीना।
465.	सर्पिष्पानम्	घृत पान या पीना।
466.	निर्णयः	फैसला
467.	अश्वयंकारी	अवश्य किया जाने वाला।
468.	शतंदायी	सौ रूपया दिया जाने वाला।
469.	सेव्यः	अवश्य सेवनीय या पूजनीय।
470.	शतंदेयम्	सौ रूपया अवश्य देने वाला।
471.	भूतिः	कल्याण होना।
472.	यन्तिः	मांगने वाला।
473.	रन्तिः	रमण करने वाले की संज्ञा
474.	वन्तिः	मारने या याचने की संज्ञा।
475.	तन्तिः	रस्सी डोर या सूत्र
476.	सातिः, सतिः, सन्तिः	प्राप्त करे, हासिल करे, उपहार दें।
477.	अलं दत्वा	मत या न देकर।
478.	पीत्वा खलु	न पीकर
479.	अलंकारः	आभूषण, गहना।
480.	अपमित्य, याचते	दे करके उसके बदले मांगता है।
481.	अपमाय	कोई वस्तु देकर उसके बदले में भागता है।
482.	अप्राप्य नदीं पर्वतः	नदी को उलंघन के अभाव पर्वत।
483.	अतिक्रम्यपर्वतं स्थितानदी	पर्वत का अतिक्रमण करके या पार करके नदी स्थित है।
484.	भुक्त्वा व्रजति	भोजन करके जाता है।
485.	स्नात्वाभुक्त्वा	

	पीत्वा व्रजति	स्नान किया,भोजन किया और पानी पीकर तब गया।
486.	विष्णुं नत्वा स्तौति	विष्णु को नमस्कार करके स्तुति करता है।
487.	स्वृत्वा	शब्द या उपताप करके।
488.	सूत्वा	पैदा करके या पैदा होकर
489	.धूत्वा	धून करके।
490.	स्कन्त्वा	जाकर या शोषण करके।
491.	स्यन्त्वा, स्यन्दित्वा	चू करके
492.	शयित्वा	सो करके
493.	कृत्वा	करके
494	मृडित्वा	सुख भोग करके।
495.	क्लिशित्वा, क्लिष्टवा	क्लेश, दुःख करके
496.	उदित्वा	बोल करके।
497.	उषित्वा	निवास या रह करके।
498.	रूदित्वा	रो करके
499.	विदित्वा	जानकारी करके।
500.	मुषित्वा	चुरा करके।
501.	गृहीत्वा	ग्रहण करके या लेकर।
502.	श्रथित्वा, श्रन्थित्वा	भोजन करके सन्दर्भित करके।
503.	गुफित्वा, गुम्फित्वा	बांध करके, नत्थी करके
504.	कोथित्वा	दुर्गन्ध करके।
505.	रेफित्वा	हिंसा, निन्दा, दान करके।
506.	वचित्वा, वञ्चित्वा	जा करके, ठग करके।
507.	लुचित्वा, लुञ्जित्वा	हटा करके, ले जा करके।
508.	ऋतित्वा, अर्तित्वा	घृणा करके।
509.	तृषित्वा, तर्षित्वा	तृप्त करके या तर्पण करके।
510.	मृषित्वा, मर्षित्वा	सहन करके, त्याग करके, क्षमा करके।
511.	कृषित्वा, कर्षित्वा	खोद करके या जोत करके।
512.	द्युतित्वा, द्योतित्वा	पास जा करके।
513.	लिखित्वा, लेंखित्वा	लिख करके।
514.	सेवित्वा	सेवा करके।
515.	वर्तित्वा	रह करके।
516.	एषित्वा	इच्छा करके।
517.	भुक्ता	खा करके।
518.	उषित्वा	निवास करके, रह करके।
519.	क्षुधित्वा, क्षोधित्वा	क्षुधित होकरके।
520.	अञ्चित्वा, अङ्म्त्वा	पूजा या अर्चना करके।
521.	लुभित्वा, लोभित्वा	मोहित हो करके।
522.	लुब्ध्वा	लालच करके।
523.	जरीत्वा, जरित्वा	वृद्ध हो करके।
524.	व्रश्चित्वा	काट कर या छेदन करके।
525.	शमित्वा, शान्त्वा	शान्त होकरके।
526.	द्यूत्वा देवित्वा	क्रीडा आदि करके।

527.	क्रान्त्वा, क्रन्त्वा	पैर रख करके।
528.	क्रमित्वा	पाद रख करके।
529.	पवित्वा, पूत्वा	पवित्र हो करके।
530.	भक्त्वा, भङ्क्त्वा	मर्दन या मर्दित करके।
531.	रक्त्वा, रङ्क्त्वा	लाल या राग करके।
532.	नष्टवा, नंष्टवा	नाश करके।
533.	नशित्वा	नाश करके।
534.	अञ्चित्वा, अक्त्वा, अङ्क्त्वा	जा करके या पूजन करके।
535.	खात्वा, खनित्वा	खोद करके।
536.	दित्वा	खण्ड करके।
537.	सित्वा	समापन या विनाश करके।
538.	स्थित्वा	रूक करके स्थित होकरके, ठहर करके।
539.	हित्वा	धारण करके, पोषण या पालन करके।
540.	हित्वा	त्याग करके।
541.	हात्वा	जा करके।
542.	जग्धा	भक्षण करके।
543.	प्रकृत्य	तेजी से या तीव्रता से करके।
544.	अकृत्वा	न करके।
545.	परमकृत्वा	मुख्य कार्य करके।
546	अधीत्य	पढ करके।
547.	प्रेत्य	तीव्रता से जाकर या प्राप्त करके।
548.	आगत्य, आगम्य	आ करके।
549.	प्रणत्य, प्रणम्य	प्रणाम करके।
550.	प्रहत्य	मार करके या हिंसा करके।
551.	विरम्य, विरव्य	विराम करके, क्रीडा करके।
552.	प्रयत्य, प्रयम्य	मैथून या उपरमण करके।
553.	प्रवत्य	शब्द करके, हिंसा करके।
554.	वितत्य	विस्तार करके।
555.	विधाय	नियम करके या विधान करके।
556.	प्रदाय	दे करके प्रदान करके।
557.	प्रखन्य	खोद करके।
558.	प्रस्थाय	प्रस्थान करके।
559.	प्रकम्प	परिक्रमा करके या चारो तरफ घूम करके।
560.	आपृच्छय	आद्योपान्त पूछ करके।
561.	प्रदीव्य	प्रकाश करके, खेल करके या जीत करके।
562.	प्रपठ्य	विशेष पाठ को पढ़करके।
563.	प्रधाय	पान करके।
564.	प्रमाय	शब्द करके या नाप करके।
565.	प्रगाय	गा करके या गान करके।
566.	प्रपाय	पान करके या रक्षा करके।
567.	निपीय	पान करके।

568.	प्रहाय	त्याग करके।
569.	प्रसाय	विनाश करके।
570.	प्रमाय	जान से मार करके फेंक करके।
571.	निमाय	हिंसा करके या फेंक करके
572.	उपदाय	उपहार दे करके।
573.	विलाय–विलीय	विलीन हो करके या लय हो करके।
574.	उत्तार्य	उतार करके या पार करके।
575.	विचार्य	विचार करके।
576.	विगणय्य	गिन करके।
577.	प्रणमय्य	शब्द करके।
578.	प्रवेभिदय्य	बार बार भेदन करके।
579.	सम्प्रधार्य	भली भांति धारण करा करके।
580.	प्रापय्य	प्राप्त करा करके।
581.	प्राप्य	प्राप्त करके।
582.	प्रक्षीय	नाश करके।
583.	प्रवाय	संवरण करके, रोक करके।
585.	प्रज्याय	वृद्ध होकरके या अवस्था बिता करके।
	प्रमत्य	विचार करके
	प्रवत्य	शब्द करके ।
586.	उपव्याय	समीप में रोक करके।
587.	परिवीय	वन्द करके।
588.	परिव्याय	बन्द करके।
589.	स्मारं स्मारं	बार बार स्मरण या याद करके।
590.	स्मृत्वा, स्मृत्वा	स्मरण करके
591.	पायं पायम्	पी पी करके या बार बार पान करके।
592.	भोजं भोजम्	बार बार खा करके।
593.	श्रावं श्रावम्	बार बार श्रवण करके।
594.	गामं, गामम्	बार बार गमन करा करके।
595.	गमं, गमम्	बार बार गमन करा करके।
596.	लम्भं, लम्भम्	बार बार लाभ करा करके।
597.	लाभं, लाभम्	बार बार लाभ होकर
598.	प्रलम्भं, प्रलम्भम्	बार बार विशेष लाभ हो करके।
599.	जागरं, जागरम्	जाग जाग करके।
600.	यदयं भुङ्क्ते ततः पठति	जो यह भोजन करता है उसके बाद पढता है।
601.	यदयं भुक्त्वाव्रजति ततोऽधीते	जो यह खा करके तत्पश्चात पढता है।
602.	अग्रे भोजं व्रजति	पहले भोजन करके जाता है।
603.	अग्रे भुक्त्वा	आगे भोजन करके।
604.	प्रथमं भोजम्	पहले भोजन करके।
605.	प्रथमं भुक्त्वा	पहले भोजन करके।
606.	पूर्वं भुक्त्वा	पूर्व भोजन करके।
607.	पूर्वं भोजम्	पूर्व भोजन करके।
608.	चौरङ्कारम्	उच्चारण करता है। चोर शब्द का उच्चारण करता है।
609.	स्वादुं कृत्वा भुङ्क्ते	स्वादहीन को स्वाद युक्त बनाकर खाता है।
610.	स्वादुंकारं भुङ्क्ते	स्वाद बनाकर खाता है।

611.	अन्यथाकारं भुङ्क्ते	अन्य प्रकार से खाता है।
612.	एवङ्कारं भुङ्क्ते	इस प्रकार से खाता है।
613.	कथङ्कारं भुङ्क्ते	किस प्रकार से खाता है।
614.	कन्यादर्शं वरयति	कन्या को देखकर वरण करता है।
615.	ब्राह्मणवेदं भोजयति	ब्राम्हण को ज्ञात करके भोजन करवाता है।
616.	यावद्वेद भुङ्क्ते	जितने मिलते हैं उतने खाते हैं।
617.	यावज्जीवमधीते	जितने समय तक जीता है तबतक पढ़ता है।
618.	चर्मपुरं स्तृणाति	चर्माच्छन्न करता है।
619.	उदरपूरंभुङ्क्ते	भरपेट भोजन करता है।
620.	गोष्पदपूरं वृष्टोदेवः	इन्द्र ने गायों के स्थान को वर्षा से पूर्ण किया।
621.	चेलक्नोपंवृष्टोदेवः	इन्द्र शब्द कराता हुआ वर्षण किया।
622.	निमूलकाषं कषति	मूल रहित किनारा काटती है।
623.	समूलकाषं कषति	समूल तट को काटती है।
624.	शुष्कषेषं पिनष्टि	सूखे चूर्ण करके पीसता है।
625.	समूहघातं हन्ति	समूल प्रहार करके मारता है।
626.	अकृतकारं करोति	अकृत करके करता है।
627.	जीवग्राहं गृहाति	जीवन ग्रहण किये हुए को ग्रहण करता है।
628.	पादघातं हन्ति	पादघात करके मारता है।
629.	उदपेषंपिनष्टि	जल से पिसता है।
630.	हस्तवर्तं वर्तयति	हाथ से गोली बनाकर या जीविका करता या चलाता है।
631.	हस्तग्राहं गृहाति	हाथ से पकड़कर ग्रहण करता है।
632.	स्वपोषं पुष्णाति	धन की वृद्धि करके पुष्ट होता है।
633.	धनपोषं पुष्णाति	धन की वृद्धि करके पुष्ट होता है।
634.	गोपोषं पुष्णाति	गौ की वृद्धि करके पुष्ट होता है।
635.	चक्रवन्धं वधनति	चक्र में बंधता है।
636.	क्रौञ्चवन्धं	किसी की संज्ञा है।
637.	जीवनाशं नश्यति	जीवनाश को प्राप्त होता है।
638.	पुरूष वाहं वहति	पुरूष को ढोता है।
639.	ऊर्ध्वशोषं	वृक्षादि का उपरि भाग ही सूखता है।
640.	ऊर्ध्वपूर्यते	घट को मुख तक भरता है।
641.	घृतनिधायनिहितं जलम्	जैसे घृत को रखकरके सुरक्षित किया जाता है उसीप्रकार जल को।
642.	मूलकेनोपदशम्	मूली दांत से काट कर खाता है।
643.	दण्डोपघातंगाः कालयति	दण्ड से ताड़न करके गाय को विक्षिप्त करता है।
644.	दण्डताड्म्	दण्ड से ताडन करके
645.	पार्श्वोपपीडम् शेते	बगल में पीड़ित होकर सोता है।
646.	पार्श्वाम्यामुपपीडम्	दो पार्श्वो से पीड़ित होकर
647.	व्रजोपरोधंगाः स्थापयति	व्रज में रोक करके गायों को सुलवाता है।
648.	पाण्युपकर्षधानाः संगृहाति	हाथ से खीच धान एकत्रित करता है।
649.	केशग्राहं युध्यन्ते	बालों को खींचकर या पकड़कर युद्ध करता है।
650.	केशेषुगृहीत्वा	बालों में ग्रहण क्रिया करके।
651.	हस्तग्राहम्	हाथ से पकड़ करके।
652.	हस्तेनगृहीत्वा	हाथ से पकड़ करके।
653.	द्व्यङ्गुलोत्कर्ष खण्डिकां छिनत्ति	दो अंगुल से नाप करके टुकडे को काटता है।

654.	शय्योत्थायं धावति	बिस्तरा पर से या चारपाई पर से उठकर दौडता है।
655.	यष्टिग्राहं युध्यन्ते	छड़ी को पकड़ करके लड़ाई करता है।
656.	लोष्टग्राहम्	मिटटी के ढेला या टुकड़ा ले करके।
657.	अस्यपगारं युध्यन्ते	भारी तलवार से युद्ध करता है।
658.	भ्रूविक्षेपं कथयति	भौ विक्षेप करके या गिरा करके कहता है।
659.	भ्रुवं विक्षेपम्	भौ को गिरा करके।
660.	उरः प्रतिपेषं युध्यन्ते	वक्षस्थल को विदीर्ण करके युद्ध करते हैं।
661.	ग्रहानुप्रवेश मास्ते	गृह में पैठ करके बैठता है।
662.	गेहं गेहमनुप्रवेशम्	प्रत्येक घर में बैठ करके।
663.	द्वयहमत्यासम्	दो दिन के बाद पिलवाता है।
664.	द्वयहं तर्षम्	दो दिन तृष्णा युक्त करके।
	कर वर्तनाम	हाथ से गोली को पकड़ता है ।
	कर ग्राहम्	पाणि ग्राहण, हाथ से पकड़ता है या जकड़ता है ।
	मयूरिकावन्धनम्	मयूर बन्ध न किसी की संज्ञा है ।
665.	नामग्राहमाहयति	नाम को लेकर पुकारता है।
666.	उच्चैः कृत्य, उच्चैकृत्वा	ऊँची आवाज करके।
667.	उच्चैकारमप्रियं माचस्टे	ऊँची आवाज करके अप्रिय को बुलाता है।
668.	नीचैः कृत्य, नीचैःकृत्वा	कम आवाज करके।
669.	नीचैःकारं प्रियंव्रूते	धीमी आवाज से प्रिय को बुलाता है।
670.	तिर्यक्कृत्य, तिर्यक्कारम्	तिरछा या टेढा करके या समाप्त करके।
671.	तिर्यक्कृत्वकां गतः	लकड़ी को तिरछा करके चला गया।
672.	मुखतः कृत्यः गतः, मुखतः कृत्वा,मुखतः कारम्	मुख से करके गया।
673.	मुखतोभूय, मुखतोभूत्वा, मुखतोभावम्	मुख से होकर
674.	नानाकृत्य, नानाकृत्वा, नानाकारम्	जो विविध प्रकार नही था उसको विविध प्रकार करके।
675.	बिना कृत्य, बिनाकृत्वा, बिना कारम्	जिसका भाव था उसका अभाव या उसके सिवाय करके।
676.	एकधाभूय, एकधाभूत्वा, एकधाभावम्	अनेक द्रव्य एक द्रव्य होकर।
677.	एकधाकृत्य, एकधाकृत्वा, एकधा कारम्	अनेक द्रव्य को एकद्रव्य करके।
678.	हिरूक्कृत्वा	सिवाय करके या निकट करके नीचे करके।
679.	पृथक्कृत्वा	अलग करके।
680.	तूष्णीम्भूय, तूष्णीम्भूत्वा, तूष्णीभावम्	चुप हो करके।
681.	अन्वग्भूय, आस्ते	अनुकूल या मैत्री होकर बैठा है।
682.	अन्वग्भूत्वा, अन्वग्भावम्	अनुकूल होकरके, अर्थात आगे से बगल से पीछे से अनुकूल होकर बैठा है।
683.	अन्वग्भूत्वा तिष्ठति	पीछे होकर बैठा है।
684.	नानाभूय, नानाभूत्वा, नानाभावम्	जो विविध प्रकार नही था वह विविध प्रकार होकर।

हरिराम त्रिपाठी

पूर्व प्राचार्य

श्री विद्याधर्म सञ्जीवन संस्कृत महाविद्यालय

देवरिया (उ०प्र०)